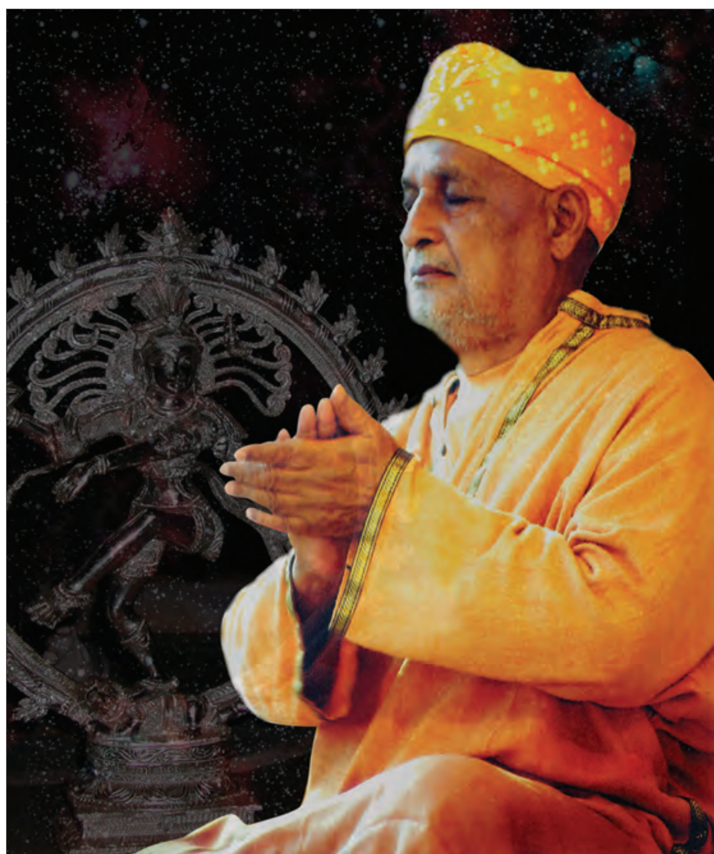
सिद्ध स्तोत्र माला

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के प्रिय स्तोत्रों का संकलन



योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत

सिद्ध स्तोत्र माला

सिद्ध स्तोत्र माला

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के प्रिय स्तोत्रों का संकलन



योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, भारत

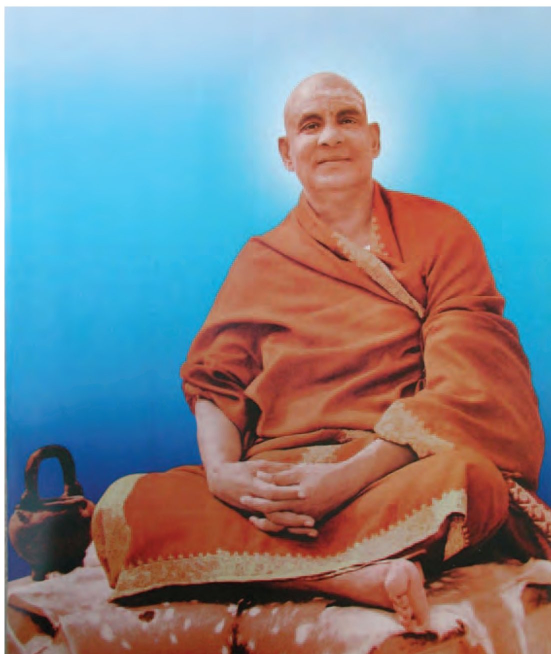
योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट द्वारा

प्रथम संस्करण 2004
द्वितीय संस्करण 2007
पुनर्मुद्रण 2008, 2009
तृतीय संस्करण 2013
चतुर्थ संस्करण 2018

ISBN: 978-81-86336-36-6

प्रकाशक एवं वितरक—योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट,
मुंगेर, बिहार, भारत
मुद्रक—थॉमसन प्रेस (इंडिया) लिमिटेड,
नई दिल्ली

वेबसाइट : www.biharyoga.net



सविनय समर्पण

स्वामी शिवानन्द सरस्वती के चरणों में
जिन्होंने स्वामी सत्यानन्द सरस्वती को योग के रहस्यों की शिक्षा दी



नमो नारायण

योगविद्या भारतवर्ष की सबसे प्राचीन संस्कृति और जीवन-पद्धति है तथा इसी विद्या के बल पर भारतवासी प्राचीनकाल में सुखी, समृद्ध और स्वस्थ जीवन बिताते थे। जब से भारत में योग विद्या का ह्रास हुआ, तभी से भारतवासी गरीब, दुःखी और अस्वस्थ हैं। पूजा-पाठ, धर्म-कर्म से शान्ति मिलती है और योगाभ्यास से धन-धान्य, समृद्धि और स्वास्थ्य। भारत में सुख, समृद्धि, शक्ति और स्वास्थ्य के लिए हर व्यक्ति को योगाभ्यास करना चाहिए।

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
रिखियापीठ, 2005

अनुक्रमणिका

परिचय

हम आत्मा तक कैसे पहुँचें, जो इन्द्रियों, मन या हमें उपलब्ध किसी भी साधन की पहुँच से परे है? क्या हमें इसके स्वरूप का कोई अनुभव है? उपनिषदों में घोषणा की गई है, *नैव वाचा न मनसा प्राप्तुम्,* अर्थात् वाणी या मन द्वारा आत्मा को प्राप्त नहीं किया जा सकता। सौभाग्य से अपने आपको पूर्णता और आत्म-साक्षात्कार की स्थिति में स्थापित करने वाले ऋषियों और सन्तों ने हमें कुछ संकेत दिये हैं। उनके अनुसार आनन्दावस्था का वह अनुभव एक स्तोत्र के रूप में नि:सृत होता है। स्तोत्र शब्द का शाब्दिक अर्थ है—सर्वोच्च सत्ता की महिमा का वर्णन करने वाले मन्त्रों का समूह, जैसे पुरुष-सूक्तम् सर्वोच्च सत्ता की एक शक्ति विशेष का वर्णन करने वाला वैदिक स्तोत्र है, या विष्णु-सहस्रनाम, जिसमें सर्वोच्च सत्ता की सर्वव्यापकता का वर्णन है। इस प्रकार स्तोत्रों का नियमित पाठ कर व्यक्ति उस दैवी सत्ता का स्मरण कर सकता है और उस अनुभव का साक्षी भी बन सकता है।

स्तोत्र चेतना की उस उच्च अवस्था का एक स्वरूप है, जहाँ भावना के केन्द्र, हृदय से सम्बन्ध जुड़ता है। सनातन परम्परा में, भावना जागृत करने के एक साधन के रूप में स्तोत्रों को बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। हृदय के साथ एक गहरा सम्बन्ध बनाकर हम उस शक्ति का अनुभव कर सकते हैं, जो इस ब्रह्माण्ड की सृष्टि करने वाली है, जो जीवन को एक सूत्र में पिरोने वाली शक्ति के रूप में जन्म देती, पालन करती और रूपान्तरण करती है। इस संदर्भ में, स्वामी शिवानन्द जी कहते हैं—'देवी स्तोत्र मन्त्रों के शक्तिशाली स्रोत हैं। प्रत्येक श्लोक एक संचालक शक्ति है, जो बलपूर्वक व्यक्ति के चरित्र को उन्नत बनाती है।'

सभी स्तोत्र ऋषियों और मुनियों की वाणी से नि:सृत हुए हैं। स्तोत्रों के मुख्य स्रोत वेद, पुराण, तंत्र और अन्य स्मृतियाँ हैं, जिन्हें स्मृति के माध्यम से संचारित

किया गया है। उपासना की प्रथा में भी स्तोत्रों को एक साधन के रूप में उपयोग किया जाता है। आदिगुरु शंकराचार्य ने कई स्तोत्रों की रचना की। इनमें से कई स्तोत्रों के पीछे इनसे सम्बन्धित रोचक घटनाएँ हैं। उदाहरणार्थ, हस्तामलक ने, जो शंकराचार्य के चार प्रमुख शिष्यों में से एक थे, न कभी सामान्य कार्यों की चर्चा की और न ही उनके प्रति कोई रुचि दिखाई। उनके पिता उन्हें शंकराचार्य के पास लाए, जिन्होंने उनसे पूछा, तुम कौन हो? उत्तर के रूप में उनकी उस अवस्था को दर्शाती एक अलौकिक कविता उनके मुख से निकली—'मैं मानव नहीं, ईश्वर नहीं, गृहस्थ नहीं, वानप्रस्थी नहीं, ब्राह्मण या क्षत्रिय नहीं, मैं केवल शुद्ध चेतना हूँ ...मैं वही शाश्वत, अभिन्न चेतना हूँ।' यह अभिव्यक्ति बाद में वैदिक परम्परा का एक महत्त्वपूर्ण स्तोत्र बन गयी।

स्तोत्र आध्यात्मिक शिक्षाओं को मन्त्रों के स्पन्दन द्वारा संचारित करने के साधन हैं। उदाहरणार्थ, शंकराचार्य द्वारा प्रणीत भज-गोविन्दम् एक ऐसा स्तोत्र है, जिससे वैराग्य जागृत होता है। स्तोत्र इस शाश्वत सत्य के साक्षी हैं कि नाम स्वयं भगवान से भी महान् होता है—*ब्रह्म राम ते नाम बड़।* सृष्टिकर्त्ता की विभिन्न शक्तियों के कितने नाम हैं, जैसे, शिव, विष्णु, ललिता, राम, कृष्ण आदि। नाम-रामायण भगवान राम के नाम की महिमा का एक उदाहरण है। इसी प्रकार विभिन्न स्तोत्रों, जैसे, शिव-महिम्न, विष्णु-सहस्रनाम या ललिता-सहस्रनाम की भी वही महिमा है।

मन्त्र-शास्त्र यह कहता है कि ध्वनि में रहस्यमय ऊर्जा निहित होती है। अभ्यास के द्वारा उस ऊर्जा को जागृत करना सम्भव है। जब अन्य चिकित्सा पद्धतियाँ विफल हो जाती थीं, तब स्वामी शिवानन्द जी नाम-चिकित्सा की सलाह देते थे। वे कहते थे, भगवद्-नाम में अगाध शक्ति होती है। सभी दिव्य शक्तियाँ भगवाद्-नाम में ही छिपी हुई हैं। इसका कारण है कि मन्त्रों के द्वारा व्यक्ति बाह्य रूप से उच्चारित शब्दों या *बैखरी* से लेकर अभिन्न क्षमतायुक्त *परा* के सूक्ष्म स्तर तक, जो कि सभी भाषाओं और ऊर्जाओं का अनित्य मूल आधार है, ध्वनि तरंगों के विभिन्न स्तरों का अनुभव प्राप्त करता है। *परा* शब्द ब्रह्म या शक्ति या शुद्ध ऊर्जा है।

स्तोत्रों का यह संकलन ईश्वर के कई रूपों के प्रति एक विशेष समर्पण है और इसे हर युग के सिद्धों और सन्तों का आशीर्वाद प्राप्त है। ये स्तोत्र साधक के मन और चेतना को उन्नत तथा हृदय को नम्र और उदार बनाते हुए उसे सहजता से आगे बढ़ाते हैं, ताकि अपने आध्यात्मिक जीवन में ईश्वर की साक्षात् अनुभूति की जा सके।

गुरु स्तोत्र



गुरु-पादुका-स्तोत्रम्

अनन्तसंसारसमुद्रतार-नौकायिताभ्यां गुरुभक्तिदाभ्याम्।
वैराग्यसाम्राज्यदपूजनाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 1 ॥

कवित्ववाराशिनिशाकराभ्यां दौर्भाग्यदावाम्बुदमालिकाभ्याम्।
दूरीकृतानम्रविपत्तिताभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 2 ॥

नता ययोः श्रीपतितां समीयुः कदाचिदप्याशु दरिद्रवर्याः।
मूकाश्च वाचस्पतितां हि ताभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 3 ॥

नालीकनीकाशपदाहृताभ्यां नानाविमोहादि निवारिकाभ्याम्।
नमज्जनाभीष्टततिप्रदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 4 ॥

नृपालिमौलिव्रजरत्नकान्ति-सरिद्विराजज्झषकन्यकाभ्याम्।
नृपत्वदाभ्यां नतलोकपङ्क्तेः नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 5 ॥

पापान्धकारार्क परम्पराभ्यां तापत्रयाहीन्द्रखगेश्वराभ्याम्।
जाड्याब्धिसंशोषणवाडवाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 6 ॥

शमादिषट्कप्रदवैभवाभ्यां समाधिदानव्रतदीक्षिताभ्याम्।
रमाधवाङ्घ्रिस्थिरभक्तिदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 7 ॥

स्वार्चापराणामखिलेष्टदाभ्यां स्वाहासहायाक्षधुरन्धराभ्याम्।
स्वान्ताच्छभावप्रद पूजनाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 8 ॥

कामादिसर्पव्रजगारुडाभ्यां विवेकवैराग्यनिधिप्रदाभ्याम्।
बोधप्रदाभ्यां द्रुतमोक्षदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 9 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ ॥



गुरु-स्तोत्रम्

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 1 ॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 2 ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 3 ॥

स्थावरं जंगमं व्याप्तं यत्किञ्चित् सचराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 4 ॥

चिन्मयं व्यापितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 5 ॥

सर्वश्रुतिशिरोरत्न विराजितपदाम्बुजः।
वेदान्ताम्बुजसूर्याय तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 6 ॥

चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरंजनः।
बिन्दुनादकलातीतः तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 7 ॥

ज्ञानशक्ति-समारूढः तत्त्व-माला विभूषितः।
भुक्ति-मुक्ति-प्रदाता च तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 8 ॥

अनेक जन्मसम्प्राप्त कर्मबन्धविदाहिने।
आत्मज्ञान प्रदानेन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 9 ॥

शोषणं भव-सिन्धोश्च ज्ञापनं सार-संपदः।
गुरोर्पादोदकं सम्यक् तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 10 ॥

न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः।
तत्त्व-ज्ञानात् परं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 11 ॥

मन्नाथः श्री जगन्नाथः मद्गुरुः श्री जगद्गुरुः।
मदात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 12 ॥

गुरुरादिरनादिश्च गुरुः परम-दैवतम्।
गुरोः परतरं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ 13 ॥

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्त्तिः पूजामूलं गुरोर्पदम्।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोर्कृपा ॥ 14 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ ॥

श्री-गुरु-स्तुतिः



नेतिनेतीत्यादि निगमवचनेन निपुणं निजिध्यमूर्तामूर्तराशिम्।
यदशक्यनिह्नत्वं स्वात्मरूपतया जानन्ति कोविदास्तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ 1 ॥

खाद्यमुत्पाद्यविश्वमनुप्रविश्य गूढमन्नमयादिकोशतुषजाले।
कवयोविविच्य युक्त्यवघाततो यत्तण्डुलवदाददति तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ 2 ॥

विषमविषयेषु सञ्चारिणोऽक्षाश्वान् दोषदर्शन कशाभिघाततः।
स्वैरं संनिवर्त्य स्वान्तरश्मिभिर्धीरा बध्नन्ति यत्र तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ 3 ॥

व्यावृत्तजाग्रदादिष्वनुस्यूतं तेभ्योऽन्यदिवपुष्पेभ्य इव सूत्रम्।
इति यदौपाधिकत्रयपृथक्त्वेन विदन्तिसूरयस्तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ 4 ॥

पुरुष एवेदमित्यादिवेदेषु सर्वकारणतया यस्य सार्वात्म्यम्।
हाटकस्येव मुकुटादि तादात्म्यं सरसमाम्नायते तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ 5 ॥

यश्चाहमत्रवर्ष्मणि भामिसोऽसौ योऽसौ विभाति रविमण्डले सोऽहमिति।
वेदवादिनो व्यतिहारतो यद्ध्यापयन्ति यत्नतस्तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ 6 ॥

वेदानुवचनसद्दानमुख धर्मैः श्रद्धयाऽनुष्ठितैर्विद्यया युक्तैः।
विविदिषन्त्यत्यन्तविमलस्वान्ता ब्राह्मणा यद्ब्रह्म तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ 7 ॥

शमदमोपरमादि साधनैर्धीराः स्वात्मनाऽऽत्मनि यदन्विष्य कृतकृत्याः।
अधिगतामित सच्चिदानन्दरूपा न पुनरिहखिद्यन्ते तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ 8 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥

गुर्वष्टकम्

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं यशश्चारु चित्रं धनं मेरुतुल्यम्।
गुरोः पाद पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ 1 ॥

कलत्रं धनं पुत्रपौत्रादि सर्वं गृहं बान्धवाः सर्वमेतद्धि जातम्।
गुरोः पाद पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ 2 ॥

षडंगादिवेदो मुखे शास्त्रविद्या, कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति।
गुरोः पाद पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ 3 ॥

विदेशेषु मान्यः स्वदेशेषु धन्यः, सदाचारवृत्तेषु मत्तो न चान्यः।
गुरोः पाद पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ 4 ॥

क्षमामण्डले भूपभूपालवृन्दैः सदा सेवितं यस्य पादारविन्दम्।
गुरोः पाद पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ 5 ॥

यशो मे गतं दिक्षु दानप्रतापात्-जगद्वस्तु सर्वं करे यत्प्रसादात्।
गुरोः पाद पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ 6 ॥

न भोगे न योगे न वा वाजिराजौ, न कान्तामुखे नैव वित्तेषु चित्तम्।
गुरोः पाद पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ 7 ॥

अरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये, न देहे मनो वर्तते मे त्वनर्घ्ये।
गुरोः पाद पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥ 8 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



शिवानन्द मंगलम्



सदा पावनी जाह्नवीतीरवासिं सदा स्वस्वरूपानुसंधानशीलम् ।
सदा सुप्रसन्नं दयालुं भजेऽहं शिवानन्दयोगीन्द्रमानन्दमूर्त्तिम् ॥ 1 ॥

हरेर्दिव्यनामं स्वयं कीर्तयन्तं हरे: पादभक्तिं सदा बोधयन्तम् ।
हरे: पादपद्मस्थभृंगं भजेऽहं शिवानन्दयोगीन्द्रमानन्दमूर्त्तिम् ॥ 2 ॥

जराव्याधिदौर्बल्यसम्पीडितानां सदाऽऽरोग्यदं यस्य कारुण्यनेत्रम् ।
भजेऽहं समस्तार्त्तसेवाधुरीणं शिवानन्दयोगीन्द्रमानन्दमूर्त्तिम् ॥ 3 ॥

सदा निर्विकल्पे स्थिरं यस्य चित्तं सदाकुम्भित: प्राणवायुर्निकामम् ।
सदायोगनिष्ठं निरीहं भजेऽहं शिवानन्दयोगीन्द्रमानन्दमूर्त्तिम् ॥ 4 ॥

महामुद्राबन्धादियोगांगदक्षं सुषुम्नान्तरे चित्स्वरूपे निमग्नम् ।
महायोगनिद्रा-विलीनं भजेऽहं शिवानन्दयोगीन्द्रमानन्दमूर्त्तिम् ॥ 5 ॥

दयासागरं सर्वकल्याणराशिं सदा सच्चिदानन्दरूपे निलीनम् ।
सदाचारशीलं भजेऽहं भजेऽहं शिवानन्दयोगीन्द्रमानन्दमूर्त्तिम् ॥ 6 ॥

भवाम्भोधिनौकानिभं यस्य नेत्रं महामोहघोरान्धकारं हरन्तम् ।
भजेऽहं सदा तं महान्तं नितान्तं शिवानन्दयोगीन्द्रमानन्दमूर्त्तिम् ॥ 7 ॥

भजेऽहं जगत्कारणं सत्स्वरूपं भजेऽहं जगद्व्यापकं चित्स्वरूपम् ।
भजेऽहं निजानन्दमानन्दरूपं शिवानन्दयोगीन्द्रमानन्दमूर्त्तिम् ॥ 8 ॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ ॥

श्री शिवानन्दमहिम्नः स्तोत्रम्

महिम्नः सत्तां ते जगति कलयेद्योऽयमिह सः
तरेदम्भोराशिं चटुलजलजन्तुप्रतिभयम्।
वहेन्मूर्ध्ना मालां गगनसुमसन्तानरचितां
शिवानन्दस्वामिन् नभसि पथि ताराश्च गणयेत् ॥ 1 ॥

तपोऽग्निज्वालानां विततिभिरधाक्षीः सुमशरं
परं ब्रह्माद्राक्षीर्हृदय कुहरे ज्योतिरसमम्।
जनानक्राक्षीस्त्वं विमलचरितैस्साधुभिरये
शिवानन्द त्वां तत्कथमिव समीडे यतिवरम् ॥ 2 ॥

विशालेयं पृथ्वी विविधविषयास्तत्र बहवो
महात्मानस्तत्र प्रथितचरितास्सन्ति कतिचित्।
जगत्पूज्यस्तेषु त्वमिति कविभिः ख्यातचरितः
शिवानन्दस्वामिन् मनसि बहुमन्ये चिरमहम् ॥ 3 ॥

तपस्तेपुः केचिद्ददृशुरपरे तत्त्वमितरे
पुराऽवापुर्मोक्षं तरणसरणिं चान्य अवदन्।
न ते सर्वे स्वामिन् त्वमिव मुनयो दीनजनताम्
अकुर्वन्नुद्धर्तुं किमपि यतनं किंचिदपि भोः ॥ 4 ॥

महात्मानो ये ये समजनिषत प्रागिह भुवि
विधिस्तेषां तेषां रचयति महोंऽशैरनुपमैः।
भवन्तं कालेऽस्मिन् इति मनसि मन्ये ऋतमिदं
न चेत्तेभ्योऽपि त्वं कथमिव वरः स्याः यतिवर ॥ 5 ॥

बभूवुर्व्यासाद्या नियमितहृषीका अविषयाः
महर्षीणां श्रेष्ठा न च खलु भवांस्तेभ्य इतरः।
यदा स्यादन्यस्त्वं कथमनुवदेस्तत्त्वममृतं
तदुक्तं तत्सर्वं यमिवर शिवानन्द वदतात् ॥ 6 ॥

विहाय त्वं भोगांस्तृणमिव महीध्रे हिमवति
तपस्तप्त्वा विघ्नैस्सुचिरमभिभूतोऽपि बहलैः।



परं तत्त्वं ज्ञात्वा भवजलधिमुत्तीर्य: विषयै:
शिवानन्द ग्रस्तानवसि कृपयाऽस्मान् यमिवर ॥ 7 ॥

भवान् भिक्षाजीवी चरति निकषा काननमहीं
न वाऽऽस्ते पाणौ ते तृणमपि विना कच्चरपटम्।
तथाऽपि त्वं भक्तैर्यदभिलषितं तद्वितरसि
कथं सम्पद्येत प्रतिवदतु पृष्ट: खलु भवान् ॥ 8 ॥

कुटीकायां वास: शयनमवनिर्भोज्यमरसा:
वनोत्खाता: कन्दा हिमपरिवृता: पर्वतगुहा:।
विहारस्थानानि प्रथितयतिलोकस्सहचर:
तथाऽपि त्वं स्वामिन् भवसि खलु मोक्षप्रभुरये ॥ 9 ॥

वयं भुक्ता भोगैरनवरतमायस्तनियमा:
परित्यक्ता यूयं किल विधिवदभ्यस्तनियमा:।
भवव्यालेनास्मान् विषयविषदंष्ट्रेण बहुशो
मुने दष्टान् पाहि त्वममृतकटाक्षै: सुभविकै: ॥ 10 ॥

लताकुंजे श्रान्तो मृगशिशुरयं दावशिखिनो
बिभेत्युच्चै: क्रन्दन् बहिरपि यथा यातुमपटु:।
सितस्तृष्णापाशै: प्रतिपदमये रोदिति तथा
तरन् संसाराब्धिं विकलकरणोऽयं जन इह ॥ 11 ॥

मनोध्वान्तं भंक्तुं विनतजनतायाः प्रभवताद्
भवन्नेत्रज्योतीरविकरसदृक्षं यतिवर
भवाम्भोधिं तर्त्तुं विषयजलमोहोर्मिचटुलं
भवद्बोधः पोतो भवतु विमलः पुण्यचरित ॥ 12 ॥

वधूग्राहैः क्षुण्णं विषयसुखभंगैः प्रतिभयं
दुराशाभूभृद्भिश्चितमसुखफेनैः परिवृतम्।
भृतं चिन्तासर्पैर्भवजलनिधिं तर्तुमुडुपं
भव त्वं भक्तानां तव चरणयुग्मे निपतताम् ॥ 13 ॥

मुखाब्जस्निग्धायामुरसिजरथांगाह्वयभृति
सुदीप्तायां मुग्धैः दृगनिमिषलीलाविलसितैः।
समुत्तुंगश्रोणीपुलिनयुजि कान्तासरिति मां
समुद्धर्तुं पोतो भव निपतितं कामदमन ॥ 14 ॥

वधूस्नेहक्लिन्नैर्विषयसुखशुष्केन्धनशतैः
प्रदीप्ते संसारज्वलनवदने प्राविशदयम्।
जनस्सम्मूढात्मा शलभ इव वर्षेर्न हि यदि
कृपाधारावृष्टिं यतितिलक दग्धः खलु भवेत् ॥ 15 ॥

अरीणां षट्कं मां तुदति मदनोऽप्यप्रतिहतैः
शरैर्हन्त्यश्रान्तं विषयगहनाद्वन्द्वरसनः।
भवव्यालो भीदः प्रसरति मुहुस्त्रस्तहृदयो
भवामि त्वां याचे प्रतिकलमवेमं जनमिति ॥ 16 ॥

शरीरारण्येऽस्मिन् बहुविधसिरावल्लिगहने
मदक्रोधाद्यैः स्वैर्धृतविषयशस्त्रैरनुचरैः।
समायुक्तः कामः प्रतिवसति गर्जन् प्रतिदिनं
शिवानन्दाऽमुं भोः प्रदहतु भवान् ज्ञानशिखिना ॥ 17 ॥

रिपूणां षट्कं मे तुदति हृदयं कण्टकमिव
पिशाचीवात्याशा पिशितकबलं वा ग्रसति माम्।
तटिल्लेखेव स्त्री नयनयुगलं मोहयति मे
ह्यतस्त्वां त्रातारं शरणमभजं संयमिवर ॥ 18 ॥

दुराशाऽम्भोदोऽसौ विषयजलदो गर्जति मुहुः
कृपाझंझावातस्तव शमयतीमं ध्रुवमिति।
विचिन्त्याऽहं याचे कुरु मयि कृपामित्यतितरां
शिवानन्द त्वं मां पदनतमवाऽनन्दनिलय ॥ 19 ॥

तृषार्तस्सारंगः पतति मृगतृष्णामभि यथा
यथा गौरन्नार्तो व्रजति कमलक्षेत्रसविधम्।
तथा मोहध्वान्तैः पिहितनयनोऽहं प्रतिभयैः
शरण्यं मन्ये त्वां प्रति विकिर बोधार्ककिरणान् ॥ 20 ॥

मुखं शुष्यत्यंगं पतति हृदयं मुह्यति करौ
न चेष्टेते पादौ न च विचलतश्चापि नयने।
मुहुर्यातो मूर्च्छां विषयविषभोक्तुर्मम मुने
प्रदेहि त्वं मह्यं विमलतरबोधामृतरसम् ॥ 21 ॥

न मे कश्चिद्गम्यस्त्रिजगति विना त्वां दितगतेः
न मे कश्चित् त्राता विषयफणिदष्टांगकभृतः।
न मे कश्चिद्दाता शमदमधनस्यातुरमतेः
शिवानन्दस्वामिन् मम भव शरण्यो यतिविभो ॥ 22 ॥

न मे कश्चित्काम्यो भवति जगति त्वत्त इतरो।
न वा त्वत्पादाब्जात्-ललितललितात्प्रार्थ्यमपरम्॥
न च त्वन्नाम्नोऽन्यो मधुरमधुरो मन्त्र इति ह।
शिवानन्दस्वामिन् कुरु मयि कटाक्षान् सुभविकान्॥ 23 ॥

न नौम्यन्यांस्त्वत्तो धनमदतमोदूषितदृशो।
न वा स्तौमि स्वामिन् शमदमविहीनान् कुपुरुषान्॥
हृषीकाणां जेता जनशुभविधाता मम भवान्।
परित्राता भूयाज्जनिफलमणीयां त्वदनघ॥ 24 ॥

न मे भोगेष्वास्था न वसुनिचये नैव यशसि
न वा कान्तालोके तव चरण एवास्ति निरतिः।
यदत्रत्यं वज्रं मम दुरितरूपान् क्षितिधरान्
मुने रम्भालावं विदलति शिवानन्द बहुलान्॥ 25 ॥



मुने दर्शंदर्शं तव विमलमाकारमनघं
यते श्रावंश्रावं तव मधुरवाचः सुकृतीनीः।
विभो स्मारंस्मारं तव सदुपदेशान् बहुमुखान्।
वहाम्यन्तस्तोषं शुचमपि जहाम्यार्तिजनिताम्॥ 26॥

तटिन्यब्धिं प्राप्ता पुनरपि नपश्चादभिवहेत्
विसृष्टाऽम्भोधारा कथमपि न पाथोधरमियात्।
मनोवृत्तिर्युष्मत्पदसरसिजद्वन्द्वनिहिता
निवृत्ता न स्यान्मे विषयगुणकृष्टाऽपि बहुधा॥ 27॥

समाकृष्टा तृण्या भवति बलभिन्नीलमणिना
निविष्टे खण्डानां समितिरयसश्चुम्बकमणौ।
श्रुते त्वन्नाम्नीय भवति विवशा भक्तजनता
विचित्रं चित्राणामिदमयि मुने भव्यचरित॥ 28॥

चरेयं भक्त्या त्वच्चरणसरसीजांकितभुवि
जपेयं सक्त्या त्वन्महितशुभनाम्नां च शतकम्।
पिबेयं सक्त्या त्वद्विमलतरबोधामृतरसं
स्मरेयं स्वामिन् त्वत्प्रथितशुभवृत्तं च सकलम्॥ 29॥

परे तत्त्वे तेषां निरतिरुदियाद्भव्यमनसां
ममैतद्वाक्यं ते प्रमितमपि शृण्वन्तु सुहितम्।

हृषीकेशक्षेत्रं हिमवति शिवानन्दनिलयं
तरेयुर्दृष्ट्वेति स्फुटमलघु घोषेयमनिशम्॥ 30॥

कराम्भोजावासे भुजकमलिनीनालनिचिते।
सुबोधाम्भोव्याप्ते श्रममुषि शिवानन्दसरसि।
वलीभंगाभंगे दृगनिमिषरम्ये सुकृतिभिः
विगाह्यैव त्याज्या भवमरुपरिश्रान्तिरखिला॥ 31॥

चिदानन्दाकारे भगवति महातत्त्वनिलये
प्रभाभाण्डागारे भवमुषि तमोदूरविषये।
त्वयि प्राप्ते याचे कथमधिप मोक्षार्थमितरं
मणौ लब्धे को वा मृगयति नरः काचमतुले॥ 32॥

समस्तं यात्वस्तं जगदिदमशेषा जलधयो
भजन्तां संक्षोभं कुलशिखरिणः सप्त पतनम्।
व्रजन्त्वादित्येन्दू झटिति चलतां द्यौश्च पततात्
भवद्बोधाः स्वामिन् इह जगति तिष्ठन्ति सुचिरम्॥ 33॥

सरीसर्तु स्थेम्नी तव महितकारुण्यतटिनी
नरीनर्तु स्तुत्या जगदवनदीक्षाप्रवणता।
चरीचर्तु व्यक्ता दरहसितचान्द्रीलहरिका
वरीवर्तूद्वेला नतजनसमावर्जनकला॥ 34॥

नमोऽविद्याहन्त्रे शमदमविनिष्ठाय च नमो
नमो मुक्तेर्भर्त्रे शुभगुणगरिष्ठाय च नमः।
नमो भक्तत्रात्रे कुचरितदविष्ठाय च नमो
नमस्तुभ्यं स्वामिन् यतिगणवरिष्ठाय च नमः॥ 35॥

नमो ब्रह्मज्ञाय प्रणुत शिवरूपाय च नमो
नमस्सर्वज्ञाय प्रहतभवतापाय च नमः।
नमस्सिद्धार्थाय प्रतिदलितपापाय च नमो
नमस्तुभ्यं स्वामिन् यमिवर शिवानन्दयतये॥ 36॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥

श्री-दक्षिणामूर्त्ति-स्तोत्रम्

विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतं पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं यथा निद्रया।
यस्साक्षात्कुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं तस्मै श्रीगुरुमूर्त्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्त्तये॥ 1॥

बीजस्यान्तरिवांकुरो जगदिदं प्राङ्निर्विकल्पं पुनः मायाकल्पितदेशकालकलना वैचित्र्य चित्रीकृतम्।
मायावीव विजृम्भयत्यपि महायोगीव यः स्वेच्छया तस्मै श्रीगुरुमूर्त्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्त्तये ॥ 2॥

यस्यैव स्फुरणं सदात्मकमसत्कल्पार्थकं भासते साक्षात्तत्त्वमसीति वेदवचसा यो बोधयत्याश्रितान्।
यत्साक्षात्करणाद्भवेन्न पुनरावृत्तिर्भवाम्भोनिधौ तस्मै श्रीगुरुमूर्त्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्त्तये॥ 3॥

नानाच्छिद्रघटोदरस्थित महादीपप्रभाभास्वरं ज्ञानं यस्य तु चक्षुरादिकरणद्वारा बहिः स्पन्दते।
जानामीति तमेव भान्तमनुभात्येतत्समस्तं जगत् तस्मै श्रीगुरुमूर्त्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्त्तये ॥ 4॥

देहं प्राणमपीन्द्रियाण्यपि चलां बुद्धिं च शून्यं विदुः स्त्रीबालान्धजडोपमास्त्वहमिति भ्रान्ता भृशं वादिनः।
मायाशक्तिविलासकल्पितमहाव्यामोहसंहारिणे तस्मै श्रीगुरुमूर्त्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्त्तये॥ 5॥

राहुग्रस्तदिवाकरेन्दुसदृशो मायासमाच्छादनात् सन्मात्रः करणोपसंहरणतो योऽभूत्सुषुप्तः पुमान्।
प्रागस्वाप्समिति प्रबोधसमये यः प्रत्यभिज्ञायते तस्मै श्रीगुरुमूर्त्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्त्तये ॥ 6॥

वाल्यादिष्वपि जाग्रदादिषु तथा सर्वास्ववस्थास्वपि व्यावृत्तास्वनुवर्तमानमहमित्यन्तः स्फुरन्तं सदा।
स्वात्मानं प्रकटीकरोति भजतां यो मुद्रया भद्रया तस्मै श्रीगुरुमूर्त्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्त्तये ॥ 7॥

विश्वं पश्यति कार्यकारणतया स्वस्वामिसम्बन्धतः शिष्याचार्यतया तथैव पितृपुत्राद्यात्मना भेदतः।
स्वप्ने जाग्रति वा य एष पुरुषो मायापरिभ्रामितः तस्मै श्रीगुरुमूर्त्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्त्तये ॥ 8॥

भूरम्भांस्यनलोऽनिलोऽम्बरमहर्नाथो हिमांशुः पुमान् इत्याभाति चराचरात्मकमिदं यस्यैवं मूर्त्त्यष्टकम्।
नान्यत्किञ्चन विद्यते विमृशतां यस्मात्परस्माद्विभोः तस्मै श्रीगुरुमूर्त्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्त्तये ॥ 9॥

सर्वात्मत्वमिति स्फुटीकृतमिदं यस्मादमुष्मिन्स्तवे तेनास्य श्रवणात्तदर्थमननाद्ध्यानाच्च संकीर्तनात्।
सर्वात्मत्वमहाविभूतिसहितं स्यादीश्वरत्वं स्वतः सिद्ध्येत्तत्पुनरष्टधा परिणतं चैश्वर्यमव्याहतम् ॥ 10॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥

गुरु-अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

1. ॐ गुरवे नमः
2. ॐ गुणवराय नमः
3. ॐ गोप्त्रे नमः
4. ॐ गोचराय नमः
5. ॐ गोपतिप्रियाय नमः
6. ॐ गुणिने नमः
7. ॐ गुणवतां श्रेष्ठाय नमः
8. ॐ गुरुणां गुरवे नमः
9. ॐ अव्ययाय नमः
10. ॐ जेत्रे नमः
11. ॐ जयंताय नमः
12. ॐ जयदाय नमः
13. ॐ जीवाय नमः
14. ॐ अनन्ताय नमः
15. ॐ जयावहाय नमः
16. ॐ आंगीरसाय नमः
17. ॐ अध्वरासक्ताय नमः
18. ॐ विविक्ताय नमः
19. ॐ अध्वरकृत्पराय नमः
20. ॐ वाचस्पतये नमः
21. ॐ वशिने नमः
22. ॐ वश्याय नमः
23. ॐ वरिष्ठाय नमः
24. ॐ वाग्विचक्षणाय नमः
25. ॐ चित्तशुद्धिकराय नमः
26. ॐ श्रीमते नमः
27. ॐ चैत्राय नमः
28. ॐ चित्रशिखण्डिजाय नमः
29. ॐ बृहद्रथाय नमः
30. ॐ बृहद् भानवे नमः
31. ॐ बृहस्पतये नमः
32. ॐ अभीष्टदाय नमः
33. ॐ सुराचार्याय नमः
34. ॐ सुराध्यक्षाय नमः
35. ॐ सुरकार्यहितंकराय नमः
36. ॐ गीर्वाणपोषकाय नमः
37. ॐ धन्याय नमः
38. ॐ गीष्पतये नमः
39. ॐ गिरिशाय नमः
40. ॐ अनघाय नमः
41. ॐ धीवराय नमः
42. ॐ दिव्यभूषणाय नमः
43. ॐ देवपूजिताय नमः
44. ॐ धनुर्धराय नमः
45. ॐ दैत्यहन्त्रे नमः
46. ॐ दयासाराय नमः
47. ॐ दयाकराय नमः
48. ॐ दारिद्र्यविनाशनाय नमः
49. ॐ धन्याय नमः
50. ॐ धिषणाय नमः
51. ॐ दक्षिणायनसंभवाय नमः
52. ॐ धनुर्भीनाधिपाय नमः
53. ॐ देवाय नमः
54. ॐ धनुर्बाणधराय नमः
55. ॐ हरये नमः
56. ॐ अंगीरसाब्दसंजाताय नमः
57. ॐ अंगिरसकुलोद्भवाय नमः
58. ॐ सिंधुदेशाधिपाय नमः
59. ॐ धीमते नमः
60. ॐ स्वर्णकायाय नमः

61. ॐ चतुर्भुजाय नमः
62. ॐ हेमांगदाय नमः
63. ॐ हेमवपुषे नमः
64. ॐ हेमभूषणभूषिताय नमः
65. ॐ पुष्यनाथाय नमः
66. ॐ पुष्यरागमणिमंडनमंडिताय नमः
67. ॐ काशपुष्पसमानाभाय नमः
68. ॐ कलिदोषनिवारकाय नमः
69. ॐ इन्द्रादिदेवदेवेशाय नमः
70. ॐ देवताभीष्टदायकाय नमः
71. ॐ असमानबलाय नमः
72. ॐ सत्वगुणसंपद्विभावसवे नमः
73. ॐ भूसुराभीष्टफलदाय नमः
74. ॐ भूरियशसे नमः
75. ॐ पुण्यविवर्धनाय नमः
76. ॐ धर्मरूपाय नमः
77. ॐ धनाध्यक्षाय नमः
78. ॐ धनदाय नमः
79. ॐ धर्मपालनाय नमः
80. ॐ सर्वदेवतार्थतत्त्वज्ञाय नमः
81. ॐ सर्वापाद्विनिवारकाय नमः
82. ॐ सर्वपापप्रशमनाय नमः
83. ॐ स्वमतानुगतामराय नमः
84. ॐ ऋग्वेदपारगाय नमः
85. ॐ सदानन्दाय नमः
86. ॐ सत्यसंधाय नमः
87. ॐ सत्यसंकल्पमानसाय नमः
88. ॐ सर्वागमज्ञाय नमः
89. ॐ सर्वज्ञाय नमः
90. ॐ सर्ववेदान्तविदुषे नमः
91. ॐ ब्रह्मपुत्राय नमः
92. ॐ ब्राह्मणेशाय नमः
93. ॐ ब्रह्मविद्याविशारदाय नमः
94. ॐ समानाधिकनिर्मुक्ताय नमः
95. ॐ सर्वलोकवशंकराय नमः
96. ॐ सुरासुरगंधर्ववन्दिताय नमः
97. ॐ सत्यभाषणाय नमः
98. ॐ बृहस्पतये नमः
99. ॐ सुराचार्याय नमः
100. ॐ दयावते नमः
101. ॐ शुभलक्षणाय नमः
102. ॐ लोकत्रयगुरवे नमः
103. ॐ श्रीमते नमः
104. ॐ सर्वगाय नमः
105. ॐ सर्वतोविभवे नमः
106. ॐ सर्वेशाय नमः
107. ॐ सर्वदा तुष्टाय नमः
108. ॐ सर्वपूजिताय नमः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



गुरु-नामावलिः

1. ॐ श्रीगुरवे नम:
2. ॐ अकिंचनाय नम:
3. ॐ अखण्ड मण्डलाकाराय नम:
4. ॐ अजाय नम:
5. ॐ अज्ञान हरणाय नम:
6. ॐ अधियज्ञाय नम:
7. ॐ अनन्ताय नम:
8. ॐ अनादिनिधनाय नम:
9. ॐ अमराय नम:
10. ॐ अमृतात्मने नम:
11. ॐ अत्याश्रमिने नम:
12. ॐ अव्ययाय नम:
13. ॐ आनन्दमूर्तये नम:
14. ॐ आत्मक्रीडाय नम:
15. ॐ आत्मसंस्थिताय नम:
16. ॐ आर्तजन परित्राण परायणाय नम:
17. ॐ आशुतोषिणे नम:
18. ॐ कर्मयोगिने नम:
19. ॐ कूटस्थाय नम:
20. ॐ कैवल्यानुभव प्रदायकाय नम:
21. ॐ कार्य कारण रूपाय नम:
22. ॐ करुणासागराय नम:
23. ॐ गुरुमूर्तये नम:
24. ॐ गुरुश्रेष्ठाय नम:
25. ॐ गुणसिन्धवे नम:
26. ॐ चैतन्य मूर्तये नम:
27. ॐ चिद्घनाय नम:
28. ॐ जरामरणवर्जिताय नम:
29. ॐ जितेन्द्रियाय नम:
30. ॐ जीवनमुक्ताय नम:
31. ॐ ज्ञानगम्याय नम:
32. ॐ ज्ञानपूर्णाय नम:
33. ॐ ज्ञानप्रभाय नम:
34. ॐ ज्ञानभास्कराय नम:
35. ॐ त्रिगुणातीताय नम:
36. ॐ दयासागराय नम:
37. ॐ दयामूर्तये नम:
38. ॐ दक्षिणामूर्ति स्वरूपाय नम:
39. ॐ द्वन्द्व रहिताय नम:
40. ॐ धर्माधर्म विवर्जिताय नम:
41. ॐ निर्गुणाय नम:
42. ॐ नित्यबोधाय नम:
43. ॐ नित्याय नम:
44. ॐ निरपेक्षाय नम:
45. ॐ निरीहाय नम:
46. ॐ निस्पृहाय नम:
47. ॐ निश्रेयस निधये नम:
48. ॐ नित्यानित्य विवेक प्रबोधकाय नम:
49. ॐ परब्रह्मणे नम:
50. ॐ परतत्त्वप्रबोधकाय नम:
51. ॐ प्रसन्नवदनाय नम:
52. ॐ परात्पराय नम:
53. ॐ पवित्रता स्वरूपिणे नम:
54. ॐ परिपूर्ण स्वरूपाय नम:
55. ॐ परिव्राजकाय नम:
56. ॐ परमात्मने नम:
57. ॐ पावनाय नम:
58. ॐ पुरुषोत्तमाय नम:
59. ॐ प्रेमस्वरूपाय नम:
60. ॐ ब्रह्मविद्या प्रचारकाय नम:
61. ॐ ब्रह्मानन्द प्रदायकाय नम:
62. ॐ भगवन्नामपारायण प्रियाय नम:



63. ॐ भक्ताभीष्ट प्रदायकाय नमः
64. ॐ भक्ति ज्ञान वर्धकाय नमः
65. ॐ भागवतधर्म प्रचारकाय नमः
66. ॐ भावातीताय नमः
67. ॐ मुक्तिप्रदात्रे नमः
68. ॐ मोक्षमार्ग प्रदर्शकाय नमः
69. ॐ यतीश्वराय नमः
70. ॐ युवजन हित जागरूकाय नमः
71. ॐ योगीन्द्राय नमः
72. ॐ लोकनाथाय नमः
73. ॐ लोकसंग्रह कांक्षिणे नमः
74. ॐ वेदान्त तत्त्व प्रबोधकाय नमः
75. ॐ विद्या स्वरूपिणे नमः
76. ॐ विवेक चक्षुषे नमः
77. ॐ विवेक वैराग्य निधये नमः
78. ॐ विश्वबन्धवे नमः
79. ॐ शाश्वताय नमः
80. ॐ शिवात्मने नमः
81. ॐ शिवाय नमः
82. ॐ शुद्धाय नमः
83. ॐ शुभांगाय नमः
84. ॐ शुभेक्षणाय नमः
85. ॐ श्रीशंकराचार्य गुरुपरम्परानुवर्तिने नमः
86. ॐ सज्जन हितैषिणे नमः
87. ॐ सच्चिदानन्द स्वरूपिणे नमः
88. ॐ सच्चित्सुखात्मने नमः
89. ॐ सत्संग पोषकाय नमः
90. ॐ सतांगतये नमः
91. ॐ सत्यानन्द स्वरूपाय नमः
92. ॐ सदाचार तत्पराय नमः
93. ॐ सदानन्दाय नमः
94. ॐ सदाशिवाय नमः
95. ॐ सदैकरूपाय नमः
96. ॐ संपूर्णाय नमः
97. ॐ समदर्शिने नमः
98. ॐ संयमिने नमः
99. ॐ सर्वभूतात्मने नमः
100. ॐ सर्वसंग विवर्जिताय नमः
101. ॐ सर्वात्मने नमः
102. ॐ संसारार्णव सेतवे नमः
103. ॐ साकार निराकार वर्जिताय नमः
104. ॐ साधुजन वत्सलाय नमः
105. ॐ स्थितप्रज्ञाय नमः
106. ॐ स्वतन्त्राय नमः
107. ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः
108. ॐ शिष्यगण सुपूजिताय नमः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥

गणेश स्तोत्र



गणपति-स्तवः

अजं निर्विकल्पं निराकारमेकं निरानन्दमानन्दमद्वैतपूर्णम्।
परं निर्गुणं निर्विशेषं निरीहं परब्रह्मरूपं गणेशं भजेम ॥ 1 ॥

गुणातीतमानं चिदानन्दरूपं चिदाभासकं सर्वगं ज्ञानगम्यम्।
मुनिध्येयमाकाशरूपं परेशं परब्रह्मरूपं गणेशं भजेम ॥ 2 ॥

जगत्कारणं कारणज्ञानरूपं सुरादिं सुखादिं युगादिं गणेशम्।
जगद्-व्यापिनं विश्ववन्द्यं सुरेशं परब्रह्मरूपं गणेशं भजेम ॥ 3 ॥

रजोयोगतो ब्रह्मरूपं श्रुतिज्ञं सदा कार्यसक्तं हृदाऽचिन्त्यरूपम्।
जगत्कारणं सर्वविद्यानिदानं परब्रह्मरूपं गणेशं नताः स्मः ॥ 4 ॥

सदा सत्त्वयोगं मुदा क्रीडमानं सुरारीन् हरन्तं जगत्पालयन्तम्।
अनेकावतारं निजज्ञानहारं सदा विश्वरूपं गणेशं नमामः ॥ 5 ॥

तं योगिनं रुद्ररूपं त्रिनेत्रं जगद्धारकं तारकं ज्ञानहेतुम्।
अनेकागमैः स्वं जनं बोधयन्तं सदा सर्वरूपं गणेशं नमामः ॥ 6 ॥

नमः स्तोमहारं जनाऽज्ञानहारं त्रयीवेदसारं परब्रह्मसारम्।
मुनिज्ञानकारं विदूरेविकारं सदा ब्रह्मरूपं गणेशं नमामः ॥ 7 ॥

निजैरोषधीस्तर्पयन्तं कराद्यैः सुरौघान् कलाभिः सुधास्राविणीभिः।
दिनेशांशु सन्तापहारं द्विजेशं शशाङ्क स्वरूपं गणेशं नमामः ॥ 8 ॥

प्रकाशस्वरूपं नभोवायुरूपं विकारादिहेतुं कलाधारभूतम्।
अनेकक्रियाऽनेकशक्तिस्वरूपं सदा शक्तिरूपं गणेशं नमामः ॥ 9 ॥

प्रधानस्वरूपं महत्तत्त्वरूपं धराचारिरूपं दिगीशादिरूपम्।
असत् सत्स्वरूपं जगद्धेतुरूपं सदा विश्वरूपं गणेशं नताः स्मः ॥ 10 ॥

त्वदीये मनः स्थापयेदङ्घ्रियुग्मे स न विघ्नसङ्घातपीडां लभेत।
लसत्सूर्यबिम्बे विशाले स्थितोऽयं जनो ध्वान्तपीडां कथं वा लभेत ॥ 11 ॥

वयं भ्रामिताः सर्वथाऽज्ञानयोगादलब्धास्तवाङ्घ्रिं बहून् वर्षपूगान्।
इदानीमवाप्तास्तवैव प्रसादात् प्रपन्नान् सदा पाहि विश्वम्भराद्य ॥ 12 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ ॥

संकटनाशन-गणेश-स्तोत्रम्

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायु:कामार्थसिद्धये ॥ 1 ॥

प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥ 2 ॥

लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥ 3 ॥

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥ 4 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री गणेशमहिम्नः स्तोत्रम्

अनिर्वाच्यं रूपं स्तवन-निकरोयत्र गणित:
तथा वक्ष्ये स्तोत्रं प्रथमपुरुषस्याऽत्र महत:।
यतो जातं विश्वं स्थितमपि सदा यत्र विलय:
स कीदृग् गीर्वाण: सुनिगमनुत: श्रीगणपति:॥ 1॥

गणेशं गाणेशा: शिवमिति च शैवाश्च विबुधा
रविं सौरा विष्णुं प्रथमपुरुषं विष्णुभजृका:।
वदन्त्येके शक्ता जगदुदयमूलां परशिवां
न जाने किं तस्मै नम इति परं ब्रह्म सकलम्॥ 2॥

तथेशं योगज्ञा गणपतिमिमं कर्मनिखिलं
समीमांसा वेदान्तिन इति परं ब्रह्म सकलम्।
अजां सांख्योब्रूते सकलगुणरूपां च सततं
प्रकर्तारं न्यायस्त्वथ जगति बौद्धा धियमिति॥ 3॥

कथं गेयो बुद्धे: परतर इयं बाह्यसरणि:
यथा धीर्यस्य स्यात् स च तदनुरूपोगणपति:।
महत्कृत्यं तस्य स्वयमपि महान् सूक्ष्ममणुवद्
ध्वनिज्योतिर्बिन्दुर्गगनसदृश: किञ्च सदसत्॥ 4॥

अनेकास्योऽपाराक्षिकरचरणोऽनन्त-हृदय:
तथा नानारूपोविविधवदन: श्रीगणपति:।
अनन्ताह्व: शक्त्या विविध-गुणकर्मैक-समये-
त्वसंख्यातानन्ताभिमत-फलदोऽनेकविषये॥ 5॥

न यस्याऽन्तोमध्यो न च भवति चादि: सुमहताम्
अलिप्त: कृत्वेत्थं सकलमपि खं वत्स च पृथक् ।
स्मृत: संस्मर्तृणां सकलहृदयस्थ: प्रियकरो
नमस्तस्मै देवाय च सकलवन्द्याय महते॥ 6॥

गणेशाद्यं बीजं दहन-वनिता-पल्लवयुतं
मनुश्चैकार्णोऽयं प्रणवसहितोऽभीष्टफलद:।
सबिन्दुश्चाद्यं गणकऋषिछन्दोऽस्य च निचृत्
स देव: प्राग्बीजं वियदपि च शक्तिर्जपकृताम्॥ 7॥

गकारो हेरम्ब सगुण इति पुंनिर्गुणमयो
द्विधाऽप्येको जात: प्रकृतिपुरुषो ब्रह्म हि गण:।

स चेशश्चोत्पत्ति-स्थिति-लयकरोऽयं प्रथमको
यतो भूतं भव्यं भवति पतिरीशो गणपतिः ॥ 8 ॥

गकारः कण्ठोर्ध्वं गजमुखसमोमर्त्यसदृशो
णकारः कण्ठाधो जठरसदृशाकार इति च।
अधोभागः कट्यां चरण इति हीशोऽस्य च तनुः
विभातीत्थं नाम त्रिभुवनसमं भूर्भुवः स्वः ॥ 9 ॥

गणेशेति त्र्यर्णात्मकमपि वरं नाम सुखदं
सकृत्प्रोच्चैरुच्चारितमिति नृभिः पावनकरम्।
गणेशस्यैकस्य प्रतिजपकरस्यास्य सुकृतं
न विज्ञातो नाम्नः सकलमहिमा कीदृशविधः ॥ 10 ॥

गणेशेत्याह्वं यः प्रवदति मुहुस्तस्य पुरतः
प्रपश्यंस्तद्वक्त्रं स्वयमपि गणस्तिष्ठति तदा।
स्वरूपस्य ज्ञानं त्वमुक इति नाम्नाऽस्य भवति
प्रबोधः सुप्तस्य त्वखिलमिह सामर्थ्यममुना ॥ 11 ॥

गणेशो विश्वेऽस्मिन् स्थित इह च विश्वं गणपतौ
गणेशो यत्रास्ते धृति-मतिरनैश्वर्यमखिलम्।
समुक्तं नामैकं गणपतिपदं मंगलमयं
तदेकास्यं दृष्टेः सकल-विबुधास्येक्षण-समम् ॥ 12 ॥

बहुक्लेशैर्व्याप्तः स्मृत उत गणेशे च हृदये
क्षणात् क्लेशान् मुक्तो भवति सहसा त्वभ्रचयवत्।
वने विद्यारम्भे युधि रिपुभये कुत्र गमने
प्रवेशे प्राणान्ते गणपतिपदं चाऽशु विशति ॥ 13 ॥

गणाध्यक्षो ज्येष्ठः कपिल अपरोमंगलनिधिः
दयालुर्हेरम्बो वरद इति चिन्तामणिरजः।
वरानीशो ढुण्ढिर्गजवदननामा शिवसुतो
मयूरेशो गौरीतनय इति नामानि पठति ॥ 14 ॥

महेशोऽयं विष्णुः सकविरविरिन्दुः कमलजः
क्षितिस्तोयं वह्निः श्वसन इति खं त्वद्रिरुदधिः।
कुजस्तारः शुक्रो गुरुरुडुबुधोऽगुश्च धनदो
यमः पाशीकाव्यः शनिरखिलरूपो गणपतिः ॥ 15 ॥

मुखं वह्निः पादौ हरिरपि विधाता प्रजननं
रविर्नेत्रे चन्द्रो हृदयमपि कामोऽस्य मदनः।

करौ शक्रः कट्यां अवनिरुदरं भाति दशनं
गणेशस्यासन् वै क्रतुमयवपुश्चैव सकलम्॥ 16॥

अनर्घ्यालंकारैः अरुण-वसनैर्भूषित-तनुः
करीन्द्रास्यः सिंहासनमुपगतो भाति बुधराट्।
स्मितः स्यात्तन्मध्येऽप्युदित-रविबिम्बोपम-रुचिः
स्थिता सिद्धिर्वामे मतिरितरगा चामरकरा॥ 17॥

समन्तात्तस्यासन् प्रवरमुनिसिद्धाः सुरगणाः
प्रशंसन्तीत्यग्रे विविधनुतिभिः साऽञ्जलिपुटाः।
विडौजाद्यैर्ब्रह्मादिभिरनुवृतो भक्तनिकरैः
गणक्रीडामोद-प्रमुद-विकटाद्यैः सहचरैः॥ 18॥

वशित्वाद्यष्टाष्टादश-दिगखिलाल्लोलमनुवाग्
धृतिः पादूः खड्गोऽञ्जनरसबलाः सिद्धय इमाः।
सदा पृष्ठे तिष्ठन्त्यनिमिषदृशस्तन्मुखलया
गणेशं सेवन्तेऽप्यतिनिकटसूपायनकराः॥ 19॥

मृगांकास्या रम्भाप्रभृतिगणिका यस्य पुरतः
सुसंगीतं कुर्वन्त्यपि कुतुकगन्धर्वसहिताः।
मुदा पारोनाऽत्रेत्यनुपमपदे दोर्विगलिता
स्थिरं जातं चित्तं चरणमवलोक्यास्य विमलम्॥ 20॥

हरेणाऽयं ध्यातस्त्रिपुरमथने चाऽसुरवधे
गणेशः पार्वत्या बलिविजयकालेऽपि हरिणा।
विधात्रा संसृष्टावुरगपतिना क्षोणिधरणे
नरैः सिद्धौ मुक्तौ त्रिभुवनजये पुष्पधनुषा॥ 21॥

अयं सुप्रासादे सुर इव निजानन्दभुवने
महान् श्रीमानाद्यो लघुतरगृहे रंकसदृशः।
शिवद्वारे द्वाःस्थो नृप इव सदा भूपतिगृहे
स्थितो भूत्वोमांके शिशुगणपतिर्लालनपरः॥ 22॥

अमुष्मिन् सन्तुष्टे गजवदन एवापि विबुधे
ततस्ते सन्तुष्टास्त्रिभुवनगताः स्युर्बुधगणाः।
दयालुर्हेरम्बो न च भवति यस्मिंश्च पुरुषे
वृथा सर्वं तस्य प्रजननमतः सान्द्रतमसि॥ 23॥

वरेण्यो भूशुण्डिर्भृगु-गुरु-कुजा-मुद्गलमुखाः
ह्यपारास्तद् भक्ता जप-हवन-पूजा-स्तुतिपराः।

गणेशोऽयं भक्तप्रिय इति च सर्वत्र गदितं
विभक्तिर्यत्रास्ते स्वयमपि सदा तिष्ठति गण: ॥ 24 ॥

मृद: काश्चिद्धातोश्छद-विलिखिता वाऽपि दृषद:
स्मृताव्याजान्मूर्ति: पथि यदि बहिर्येन सहसा।
अशुद्धोऽद्धा द्रष्टा प्रवदति तदाह्वा गणपते:
श्रुत: शुद्धोमर्त्यो भवति दुरिताद्विस्मय इति ॥ 25 ॥

बहिर्द्वारस्योर्ध्वं गजवदन-वर्ष्मेन्धनमयं
प्रशस्तं वा कृत्वा विविध-कुशलैस्तत्र निहतम्।
प्रभावात्तन्मूर्त्या भवति सदनं मंगलमयं
त्रिलोक्यानन्दस्तां भवति जगतो विस्मय इति ॥ 26 ॥

सिते भाद्रे मासे प्रतिशरदि मध्याह्नसमये
मृदो मूर्तिं कृत्वा गणपतितिथौ ढुण्ढिसदृशीम्।
समर्चन्त्युत्साह: प्रभवति महान् सर्वसदने
विलोक्यानन्दस्तां प्रभवति नृणां विस्मय इति ॥ 27 ॥

तथा ह्येक: श्लोको वरयति महिम्नो गणपते:
कथं स श्लोकेऽस्मिन् स्तुत इति भवेत् संप्रपठिते।
स्मृतं नामास्यैकं सकृदिदमनन्ताह्वयसमं
यतो यस्यैकस्य स्तवनसदृशं नाऽन्यदपरम् ॥ 28 ॥

गजवदन विभो यद्वर्णितं वैभवं ये
त्विह जनुषि ममेत्थां चारु तद्दर्शयाशु।
त्वमसि च करुणाया: सागर: कृत्स्नदाताऽ-
प्यति तव भृतकोऽहं सर्वदा चिन्तकोऽस्मि ॥ 29 ॥

सुस्तोत्रं प्रपठतु नित्यमेतदेव
स्वानन्दं प्रतिगमनेऽप्ययं सुमार्ग:।
संचिन्त्यं स्वमनसि सत्पदारविन्दं
स्थाप्याग्रेस्तवनफलं नती: करिष्ये ॥ 30 ॥

गणेशदेवस्य माहात्म्यमेतद्
य: श्रावयेद् वाऽपि पठेच्च तस्य।
क्लेशालयं यान्ति लभेच्च शीघ्रं
स्त्री-पुत्र-विद्यार्थ-गृहं च मुक्तिम् ॥ 31 ॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ ॥

विघ्नेश्वर-अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

1. ॐ विनायकाय नमः
2. ॐ विघ्नराजाय नमः
3. ॐ गौरीपुत्राय नमः
4. ॐ गणेश्वराय नमः
5. ॐ स्कन्दाग्रजाय नमः
6. ॐ अव्ययाय नमः
7. ॐ पूताय नमः
8. ॐ दक्षाय नमः
9. ॐ अध्यक्षाय नमः
10. ॐ द्विजप्रियाय नमः
11. ॐ अग्निगर्वच्छिदे नमः
12. ॐ इन्द्रश्रीप्रदाय नमः
13. ॐ वाणीप्रदाय नमः
14. ॐ अव्ययाय नमः
15. ॐ सर्वसिद्धिप्रदाय नमः
16. ॐ सर्वतनयाय नमः
17. ॐ शर्वरीप्रियाय नमः
18. ॐ सर्वात्मकाय नमः
19. ॐ सृष्टिकर्त्रे नमः
20. ॐ देवाय नमः
21. ॐ अनेकार्चिताय नमः
22. ॐ शिवाय नमः
23. ॐ शुद्धाय नमः
24. ॐ बुद्धिप्रियाय नमः
25. ॐ शान्ताय नमः
26. ॐ ब्रह्मचारिणे नमः
27. ॐ गजाननाय नमः
28. ॐ द्वैमातुराय नमः
29. ॐ मुनिस्तुताय नमः
30. ॐ भक्तविघ्नविनाशनाय नमः
31. ॐ एकदन्ताय नमः
32. ॐ चतुर्बाहवे नमः
33. ॐ चतुराय नमः
34. ॐ शक्तिसंयुताय नमः
35. ॐ लम्बोदराय नमः
36. ॐ शूर्पकर्णाय नमः
37. ॐ हरये नमः
38. ॐ ब्रह्मविदुत्तमाय नमः
39. ॐ कालाय नमः
40. ॐ ग्रहपतये नमः
41. ॐ कामिने नमः
42. ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः
43. ॐ पाशांकुशधराय नमः
44. ॐ चण्डाय नमः
45. ॐ गुणातीताय नमः
46. ॐ निरञ्जनाय नमः
47. ॐ अकल्मषाय नमः
48. ॐ स्वयंसिद्धाय नमः
49. ॐ सिद्धार्चितपदाम्बुजाय नमः
50. ॐ बीजपूरफलासक्ताय नमः
51. ॐ वरदाय नमः
52. ॐ शाश्वताय नमः
53. ॐ कृतिने नमः
54. ॐ द्विजप्रियाय नमः
55. ॐ वीतभयाय नमः
56. ॐ गदिने नमः
57. ॐ चक्रिणे नमः
58. ॐ इक्षुचापधृते नमः
59. ॐ श्रीदाय नमः
60. ॐ अजाय नमः



61. ॐ उत्पलकराय नम:
62. ॐ श्रीपतये नम:
63. ॐ स्तुतिहर्षिताय नम:
64. ॐ कुलाद्रिभृते नम:
65. ॐ जटिलाय नम:
66. ॐ कलिकल्मषनाशनाय नम:
67. ॐ चन्द्रचूडामणये नम:
68. ॐ कान्ताय नम:
69. ॐ पापहारिणे नम:
70. ॐ समाहिताय नम:
71. ॐ आश्रिताय नम:
72. ॐ श्रीकराय नम:
73. ॐ सौम्याय नम:
74. ॐ भक्तवाञ्छितदायकाय नम:
75. ॐ शान्ताय नम:
76. ॐ कैवल्यसुखदाय नम:
77. ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय नम:
78. ॐ ज्ञानिने नम:
79. ॐ दयायुताय नम:
80. ॐ दान्ताय नम:
81. ॐ ब्रह्मद्वेषविवर्जिताय नम:
82. ॐ प्रमत्तदैत्यभयदाय नम:
83. ॐ श्रीकण्ठाय नम:
84. ॐ विबुधेश्वराय नम:
85. ॐ रामार्चिताय नम:
86. ॐ विधये नम:
87. ॐ नागराजयज्ञोपवीतवते नम:
88. ॐ स्थूलकण्ठाय नम:
89. ॐ स्वयं कर्त्रे नम:
90. ॐ सामघोषप्रियाय नम:
91. ॐ परस्मै नम:
92. ॐ स्थूलतुण्डाय नम:
93. ॐ अग्रण्ये नम:
94. ॐ धीराय नम:
95. ॐ वागीशाय नम:
96. ॐ सिद्धिदायकाय नम:
97. ॐ दूर्वाबिल्वप्रियाय नम:
98. ॐ अव्यक्तमूर्तये नम:
99. ॐ अद्भुतमूर्तिमते नम:
100. ॐ शैलेन्द्रतनुजोत्संगखेलनोत्सुक-
मानसाय नम:
101. ॐ स्वलावण्यसुधासारजित-
मन्मथविग्रहाय नम:
102. ॐ समस्तजगदाधाराय नम:
103. ॐ मायिने नम:
104. ॐ मूषिकवाहनाय नम:
105. ॐ हृष्टाय नम:
106. ॐ तुष्टाय नम:
107. ॐ प्रसन्नात्मने नम:
108. ॐ सर्वसिद्धिप्रदायकाय नम:

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥

गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत् (श्रीगणेशाथर्वशीर्षम्)

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्ताऽसि। त्वमेव केवलं धर्ताऽसि। त्वमेव केवलं हर्ताऽसि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्माऽसि नित्यम् ॥ 1 ॥

ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि ॥ 2 ॥

अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात् ॥ 3 ॥

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाऽद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि ॥ 4 ॥

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि ॥ 5 ॥

त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं अवस्थात्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥ 6 ॥

गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादीं स्तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण ऋद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। सँहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्रीच्छन्दः। गणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः ॥ 7 ॥

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥ 8 ॥

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमंकुशधारिणम्। रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्।
रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानुलिप्तांगं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।
भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्।
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः ॥ 9 ॥

नमो व्रातपतये। नमो गणपतये। नमः प्रमथपतये। नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्री वरदमूर्तये नमः ॥ 10 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥




देवी स्तोत्र

देवी-सूक्तम्

ॐ ॥ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा ॥1॥ अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्। अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते ॥2॥ अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्या वेशयन्तीम् ॥3॥ मया सोऽअन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्। अमन्तवोमान्त उपक्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि ॥4॥

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः। यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ॥5॥ अहं रुद्राय धनुरातनोमि ब्रह्मद्विषे शरवेहन्तवा उ। अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आविवेश ॥6॥ अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे। ततो वितिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोपस्पृशामि ॥7॥ अहमेव वातऽइव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा। परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना संबभूव ॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

दुर्गा-सूक्तम्

ॐ॥ जातवेदसे सुनवाम सोम मरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्यग्निः॥

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवीँ शरणमहं प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः॥ अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान्-स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा। पूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय शंयोः॥ विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धुन्न नावा दुरितातिपर्षि। अग्ने अत्रिवन्मनसा गृणानोऽस्माकं बोध्यविता तनूनाम् ॥ पृतना जितँ सहमानमुग्रमग्निँ हुवेम परमाथ्सधस्थात्। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षामद्देवो अति दुरिताऽत्यग्निः॥ प्रत्नोषि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि। स्वाञ्चाऽग्ने तन्वं पिप्रयस्वास्मभ्यं च सौभगमायजस्व॥ गोभिर्जुष्टमयुजो निषिक्तं तवेन्द्र विष्णोरनुसंचरेम। नाकस्य पृष्ठमभि संवसानो वैष्णवीं लोक इह मादयन्ताम् ॥

ॐ कात्यायनाय विद्महे कन्यकुमारि धीमहि। तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥

भू-सूक्तम्

ॐ भूमिर्भूम्ना द्यौर्वरिणाऽन्तरिक्षं महित्वा। उपस्थे ते देव्यदितेऽग्निमन्नाद-मन्नाद्यायादधे। आऽयंगौः पृश्निरक्रमी दसनन्मातरं पुनः। पितरं च प्रयन्त्सुवः। त्रिँ्शद्धाम विराजति वाक्पतंगाय शिश्रिये। प्रत्यस्य वह द्युभिः। अस्य प्राणादपानत्यन्तश्चरति रोचना। व्यख्यन् महिषः सुवः। यत्त्वा क्रुद्धः परोवपमन्युना यदवर्त्या। सुकल्पमग्ने तत्तव पुनस्त्वोद्दीपयामसि। यत्ते मन्युपरोप्तस्य पृथिवीमनुदध्वसे। आदित्या विश्वे तद्देवा वसवश्च समाभरन्।

मेदिनी देवी वसुन्धरा स्याद्वसुधा देवी वासवी। ब्रह्मवर्चसः पितृणाँ् श्रोत्रं चक्षुर्मनः। देवी हिरण्यगर्भिणी देवी प्रसूवरी। सदने सत्यायने सीद। समुद्रवती सावित्रीह नो देवी मह्यंगी। महीधरणी महोव्यथिष्ठा-श्शृंगे शृंगे यज्ञे यज्ञे विभीषिणी। इन्द्रपत्नी व्यापिनी सुरसरिदिह। वायुमती जलशयनी श्रियंधाराजा सत्यन्धोपरिमेदिनी। श्वोपरिधत्तं परिगाय।

विष्णुपत्नीं महीं देवीं माधवीं माधवप्रियाम्। लक्ष्मी प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम्।

ॐ धनुर्धरायै विद्महे सर्वसिद्ध्यै च धीमहि। तन्नो धरा प्रचोदयात्। महीं देवीं विष्णुपत्नी-मजूर्याम्। प्रतीची मेनाँ् हविषा यजामः। त्रेधा विष्णुरुरुगायो विचक्रमे। महीं दिवं पृथिवीमन्तरिक्षम्। तच्छ्रोणैतिश्रव-इच्छमाना। पुण्यगग् श्लोकं यजमानाय कृण्वती॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



श्री-दुर्गा-देवी-ध्यानम्

ॐ जटाजूटसमायुक्तामर्धेन्दुकृत-शेखराम्।
लोचनत्रय-संयुक्तां पूर्णेन्दुसदृशाननाम् ॥

अतसीपुष्पवर्णाभां सुप्रतिष्ठां सुलोचनाम्।
नवयौवनसम्पन्नां सर्वाभरणभूषिताम् ॥

सुचारुदशनां तद्वत् पीनोन्नत-पयोधराम्।
त्रिभंगस्थानसंस्थानां महिषासुरमर्दिनीम् ॥

मृणालायतसंस्पर्श-दशबाहु-समन्विताम्।
त्रिशूलं दक्षिणे ध्येयं खड्गं चक्रं क्रमादधः ॥

तीक्ष्णबाणं तता शक्तिं दक्षिणेन विचिन्तयेत्।
खेटकं पूर्णचापञ्च पाशमंकुशमेव च ॥

घण्टां वा परशुं वाऽपि वामतः सन्निवेशयेत्।
अधस्तान्महिषं तद्वद्-विशिरस्कं प्रदर्शयेत् ॥

शिरच्छेदोद्भवं तद्वद्दानवं खड्गपाणिनम्।
हृदिशूलेन निर्भिन्नं निर्यदन्त्रविभूषितम् ॥

रक्तारक्तीकृतांगञ्च रक्तविस्फुरितेक्षणम्।
वेष्टितं नागपाशेन भ्रुकुटीभीषणाननाम् ॥

सपाशवाम हस्तेन-धृतकेशञ्च दुर्गया।
वमद्रुधिरवक्त्रञ्च देव्याः सिंहं प्रदर्शयेत् ॥

देव्यास्तु दक्षिणं पादं समं सिंहोपरिस्थितम्।
किञ्चिदूर्ध्वं तथा वाममंगुष्ठं महिषोपरि ॥

प्रसन्नवदनां देवीं सर्वकामफलप्रदाम् ।
शत्रुक्षयकरीं देवीं दैत्यदानवदर्पहाम् ॥

स्तूयमानञ्च तद्रूपममरैः सन्निवेशयेत्
उग्रचण्डा प्रचण्डा च चण्डोग्रा चण्डनायिका।
चण्डा चण्डवती चैव चण्डरूपाति चण्डिका॥

आभिः शक्तिभिरष्टाभिः सततं परिवेष्टिताम्।
चिन्तयेज्जगतां धात्रीं धर्मकामार्थ-मोक्षदाम् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥

श्री-देवी-अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

1. ॐ आदिशक्तये नमः
2. ॐ महादेव्यै नमः
3. ॐ अम्बिकायै नमः
4. ॐ परमेश्वर्यै नमः
5. ॐ ईश्वर्यै नमः
6. ॐ अनीश्वर्यै नमः
7. ॐ योगिन्यै नमः
8. ॐ सर्वभूतेश्वर्यै नमः
9. ॐ जयायै नमः
10. ॐ विजयायै नमः
11. ॐ जयन्त्यै नमः
12. ॐ शाम्भव्यै नमः
13. ॐ शान्त्यै नमः
14. ॐ ब्राह्म्यै नमः
15. ॐ ब्रह्माण्डधारिण्यै नमः
16. ॐ महारूपायै नमः
17. ॐ महामायायै नमः
18. ॐ माहेश्वर्यै नमः
19. ॐ लोकरक्षिण्यै नमः
20. ॐ दुर्गायै नमः
21. ॐ दुर्गपारायै नमः
22. ॐ भक्तचिन्तामण्यै नमः
23. ॐ मृत्यै नमः
24. ॐ सिद्ध्यै नमः
25. ॐ मूर्त्यै नमः
26. ॐ सर्वसिद्धिप्रदायै नमः
27. ॐ मंत्रमूर्त्यै नमः
28. ॐ महाकाल्यै नमः
29. ॐ सर्वमूर्तिस्वरूपिण्यै नमः
30. ॐ वेदमूर्त्यै नमः
31. ॐ वेदभूत्यै नमः
32. ॐ वेदान्तायै नमः
33. ॐ व्यवहारिण्यै नमः
34. ॐ अनघायै नमः
35. ॐ भगवत्यै नमः
36. ॐ रौद्रायै नमः
37. ॐ रुद्रस्वरूपिण्यै नमः
38. ॐ नारायण्यै नमः
39. ॐ नारसिंह्यै नमः
40. ॐ नागयज्ञोपवीतिन्यै नमः
41. ॐ शंखचक्रगदाधारिण्यै नमः
42. ॐ जटामुकुटशोभिन्यै नमः
43. ॐ अप्रमाणायै नमः
44. ॐ प्रमाणायै नमः
45. ॐ आदिमध्यावसानायै नमः
46. ॐ पुण्यदायै नमः
47. ॐ पुण्योपचारिण्यै नमः
48. ॐ पुण्यकीर्त्यै नमः
49. ॐ स्तुतायै नमः
50. ॐ विशालाक्ष्यै नमः
51. ॐ गम्भीरायै नमः
52. ॐ रूपान्वितायै नमः
53. ॐ कालरात्र्यै नमः
54. ॐ अनल्पसिद्ध्यै नमः
55. ॐ कमलायै नमः
56. ॐ पद्मवासिन्यै नमः
57. ॐ महासरस्वत्यै नमः
58. ॐ मनःसिद्धायै नमः
59. ॐ मनोयोगिन्यै नमः
60. ॐ मातंगिन्यै नमः
61. ॐ चण्डमुण्डचारिण्यै नमः
62. ॐ दैत्यदानवनाशिन्यै नमः

63. ॐ मेषज्योतिषायै नम:
64. ॐ परंज्योतिषायै नम:
65. ॐ आत्मज्योतिषायै नम:
66. ॐ सर्वज्योतिस्वरूपिण्यै नम:
67. ॐ सहस्रमूर्त्यै नम:
68. ॐ शर्वाण्यै नम:
69. ॐ सूर्यमूर्तिस्वरूपिण्यै नम:
70. ॐ आयुर्लक्ष्म्यै नम:
71. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नम:
72. ॐ सर्वलक्ष्मीप्रदायै नम:
73. ॐ विचक्षणायै नम:
74. ॐ क्षीरार्णववासिन्यै नम:
75. ॐ वागीश्वर्यै नम:
76. ॐ वाक्सिद्ध्यै नम:
77. ॐ अज्ञानज्ञानगोचरायै नम:
78. ॐ बलायै नम:
79. ॐ परमकल्याण्यै नम:
80. ॐ भानुमण्डलवासिन्यै नम:
81. ॐ अव्यक्तायै नम:
82. ॐ व्यक्तरूपायै नम:
83. ॐ अव्यक्तरूपायै नम:
84. ॐ अनन्तायै नम:
85. ॐ चन्द्रायै नम:
86. ॐ चन्द्रमण्डलवासिन्यै नम:
87. ॐ चन्द्रमण्डलमण्डितायै नम:-
88. ॐ भैरव्यै नम:
89. ॐ परमानन्दायै नम:
90. ॐ शिवायै नम:
91. ॐ अपराजितायै नम:
92. ॐ ज्ञानप्राप्त्यै नम:
93. ॐ ज्ञानवत्यै नम:
94. ॐ ज्ञानमूर्त्यै नम:
95. ॐ कलावत्यै नम:
96. ॐ श्मशानवासिन्यै नम:
97. ॐ मात्रे नम:
98. ॐ परमकल्पिन्यै नम:
99. ॐ घोषवत्यै नम:
100. ॐ दारिद्र्यहारिण्यै नम:
101. ॐ शिवतेजोमुख्यै नम:
102. ॐ विष्णुवल्लभायै नम:
103. ॐ केशविभूषितायै नम:
104. ॐ कूर्मायै नम:
105. ॐ महिषासुरघातिन्यै नम:
106. ॐ सर्वरक्षायै नम:
107. ॐ महाकाल्यै नम:
108. ॐ महालक्ष्म्यै नम:

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥

हरि: ॐ ॥



श्री-दुर्गा-अष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रम्

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने।
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती ॥ 1 ॥

ॐ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥ 2 ॥

पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः।
मनो बुद्धिरहंकारा चित्तरूपा चिता चितिः ॥ 3 ॥

सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागतिः ॥ 4 ॥

शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा।
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ 5 ॥

अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी ॥ 6 ॥

अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता ॥ 7 ॥

ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ॥ 8 ॥

विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा।
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना ॥ 9 ॥

निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी ॥ 10 ॥

सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा ॥ 11 ॥

अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी।
कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः ॥ 12 ॥

अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥ 13 ॥

अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी ॥ 14 ॥

शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी ॥ 15 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

दुर्गा-अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

1. ॐ सत्यै नमः
2. ॐ साध्व्यै नमः
3. ॐ भवप्रीतायै नमः
4. ॐ भवान्यै नमः
5. ॐ भवमोचन्यै नमः
6. ॐ आर्यायै नमः
7. ॐ दुर्गायै नमः
8. ॐ जयायै नमः
9. ॐ आद्यायै नमः
10. ॐ त्रिनेत्रायै नमः
11. ॐ शूलधारिण्यै नमः
12. ॐ पिनाकधारिण्यै नमः
13. ॐ चित्रायै नमः
14. ॐ चण्डघण्टायै नमः
15. ॐ महातपायै नमः
16. ॐ मन्यै नमः
17. ॐ बुद्ध्यै नमः
18. ॐ अहंकारायै नमः
19. ॐ चित्तरूपायै नमः
20. ॐ चितायै नमः
21. ॐ चित्यै नमः
22. ॐ सर्वमन्त्रमयै नमः
23. ॐ सत्तायै नमः
24. ॐ सत्यानन्दस्वरूपिण्यै नमः
25. ॐ अनन्तायै नमः
26. ॐ भाविन्यै नमः
27. ॐ भाव्यायै नमः
28. ॐ भव्यायै नमः
29. ॐ अभव्यायै नमः
30. ॐ सदागत्यै नमः
31. ॐ शाम्भव्यै नमः
32. ॐ देवमातायै नमः
33. ॐ चिन्तायै नमः
34. ॐ रत्नप्रियायै नमः
35. ॐ सर्वविद्यायै नमः
36. ॐ दक्षकन्यायै नमः
37. ॐ दक्षयज्ञविनाशिन्यै नमः
38. ॐ अपर्णायै नमः
39. ॐ अनेकवर्णायै नमः
40. ॐ पाटलायै नमः
41. ॐ पाटलावत्यै नमः
42. ॐ पट्टाम्बरपरीधानायै नमः
43. ॐ कलमञ्जीररञ्जिन्यै नमः
44. ॐ अमेयविक्रमायै नमः
45. ॐ क्रूरायै नमः
46. ॐ सुन्दर्यै नमः
47. ॐ सुरसुन्दर्यै नमः
48. ॐ वनदुर्गायै नमः
49. ॐ मातंग्यै नमः
50. ॐ मतंगमुनिपूजितायै नमः
51. ॐ ब्राह्म्यै नमः
52. ॐ माहेश्वर्यै नमः
53. ॐ ऐन्द्र्यै नमः
54. ॐ कौमार्यै नमः
55. ॐ वैष्णव्यै नमः
56. ॐ चामुण्डायै नमः
57. ॐ वाराह्यै नमः
58. ॐ लक्ष्म्यै नमः
59. ॐ पुरुषाकृत्यै नमः
60. ॐ विमलायै नमः
61. ॐ उत्कर्षिण्यै नमः
62. ॐ ज्ञानायै नमः



63. ॐ क्रियायै नमः
64. ॐ नित्यायै नमः
65. ॐ बुद्धिदायै नमः
66. ॐ बहुलायै नमः
67. ॐ बहुलप्रेमायै नमः
68. ॐ सर्ववाहनवाहनायै नमः
69. ॐ निशुम्भशुम्भहनन्यै नमः
70. ॐ महिषासुरमर्दिन्यै नमः
71. ॐ मधुकैटभहन्त्र्यै नमः
72. ॐ चण्डमुण्डविनाशिन्यै नमः
73. ॐ सर्वासुरविनाशायै नमः
74. ॐ सर्वदानवघातिन्यै नमः
75. ॐ सर्वशास्त्रमय्यै नमः
76. ॐ सत्यायै नमः
77. ॐ सर्वास्त्रधारिण्यै नमः
78. ॐ अनेकशस्त्रहस्तायै नमः
79. ॐ अनेकास्त्रधारिण्यै नमः
80. ॐ कुमार्यै नमः
81. ॐ एककन्यायै नमः
82. ॐ कैशोर्यै नमः
83. ॐ युवत्यै नमः
84. ॐ यत्यै नमः
85. ॐ अप्रौढायै नमः
86. ॐ प्रौढायै नमः
87. ॐ वृद्धमातायै नमः
88. ॐ बलप्रदायै नमः
89. ॐ महोदर्यै नमः
90. ॐ मुक्तकेश्यै नमः
91. ॐ घोररूपायै नमः
92. ॐ महाबलायै नमः
93. ॐ अग्निज्वालायै नमः
94. ॐ रौद्रमुख्यै नमः
95. ॐ कालरात्र्यै नमः
96. ॐ तपस्विन्यै नमः
97. ॐ नारायण्यै नमः
98. ॐ भद्रकाल्यै नमः
99. ॐ विष्णुमायायै नमः
100. ॐ जलोदर्यै नमः
101. ॐ शिवदूत्यै नमः
102. ॐ कराल्यै नमः
103. ॐ अनन्तायै नमः
104. ॐ परमेश्वर्यै नमः
105. ॐ कात्यायन्यै नमः
106. ॐ सावित्र्यै नमः
107. ॐ प्रत्यक्षायै नमः
108. ॐ ब्रह्मवादिन्यै नमः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ हरिः ॐ ॥

श्री-महिषासुरमर्दिनी-स्तोत्रम्

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते
गिरिवरविन्ध्यशिरोऽधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूतिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 1 ॥

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणि किल्विषमोषिणि घोषरते।
दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 2 ॥

अयि जगदम्बमदम्ब कदम्बवनप्रियवासिनि हासरते
शिखरिशिरोमणितुंगहिमालयशृंगनिजालय मध्यगते।
मधुमधुरे मधुकैटभगंजिनि कैटभभंजिनि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 3 ॥

अयि शतखण्ड विखण्डितरुण्ड वितुण्डितशुण्ड गजाधिपते
रिपुगजगण्ड विदारणचण्ड पराक्रमशौण्ड मृगाधिपते।
निजभुजदण्ड निपातितचण्डविपातितमुण्डभटाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 4 ॥

अयिरणदुर्मद शत्रुवधोदित दुर्धरनिर्जर शक्तिभृते
चतुरविचारधुरीणमहाशिव दूतकृत्त प्रमथाधिपते।
दुरितदुरीह दुराशयदुर्मति दानवदूतकृतान्तमते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 5 ॥

अयि शरणागतवैरिवधूवर वीरवराभयदायकरे
त्रिभुवन मस्तक शूलविरोधि शिरोऽधिकृतामल शूलकरे।
दुमिदुमितामर दुन्दुभिनाद मुहुर्मुखरीकृत दिङ्निकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 6 ॥

अयि निजहुंकृतिमात्र निराकृत धूम्रविलोचन धूम्रशते
समरविशोषित शोणितबीज समुद्भवशोणित बीजलते।
शिव शिव शुम्भनिशुम्भमहाहव तर्पित भूत पिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 7 ॥

धनुरनुषंग रणक्षणसंग परिस्फुरदंग नटत्कटके
कनक पिशंगपृषत्कनिषंगरसद्भटशृंग हतावटुके।
कृतचतुरंग बलक्षितिरंग घटद्बहुरंग रटद्वटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 8 ॥

जय जय जप्यजये जय शब्दपरस्तुति तत्पर विश्वनुते
झणझणझिञ्झिमि झिंकृतनूपुर शिंजितमोहित भूतपते।
नटितनटार्ध नटीनटनायक नाटितनाट्य सुगानरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 9 ॥

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर कान्तियुते
श्रितरजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रवृते।
सुनयनविभ्रमरभ्रमरभ्रमरभ्रमरभ्रमराधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 10 ॥

महितमहाहव वल्लभतल्लिक वल्लितरल्लित भल्लिरते
विरचितवल्लिक पल्लिकमल्लिक झिल्लिकभिल्लिक वर्गवृते।
श्रुतकृतफुल्ल समुल्लसितारुणतल्लजपल्लव सल्ललिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 11 ॥

अविरलगण्डगलन्मदमेदुर मत्तमतंगज राजपते
त्रिभुवनभूषणभूतकलानिधि रूपपयोनिधि राजसुते।
अयि सुदतीजन लालसमानस मोहनमन्मथ राजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 12 ॥

कमलदलामल कोमलकान्ति कलाकलितामल भाललते।
सकलविलास कलानिलयक्रम केलिचलत्कल हंसकुले।
अलिकुलसंकुल कुवलय मण्डल मौलिमिलद्वकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 13 ॥

करमुरलीरववीजितकूजित लज्जितकोकिल मंजुमते
मिलितपुलिन्द मनोहरगुंजित रंजितशैल निकुंजगते।
निजगणभूत महाशबरीगण रंगणसम्भृत केलिरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ 14 ॥

कटितटपीत दुकूलविचित्र मयूखतिरस्कृत चण्डरुचे
प्रणतसुरासुर मौलिमणिस्फुरदंशुलसन्नख चन्द्ररुचे ।



जितकनकाचल मौलिमदोर्जित निर्भरकुञ्जर कुम्भकुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥15॥

विजित सहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते
कृतसुरतारक संगरतारक संगरतारक सूनुसुते।
सुरथसमाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥16॥

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सु शिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्।
तव पदमेव परंपदमित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥17॥

कनकलसत्कल शीकजलैरनुषिञ्चति तेऽङ्गणरङ्गभुवम्
भजति स किं न शचीकुचकुंभ नटीपरिरम्भ सुखानुभवम्।
तवचरणं शरणं करवाणि मृडानि सदा मयि देहि शिवं
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥18॥

तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते
किमु पुरुहूतपुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमु न क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥19॥

अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननि कृपयासि यथासि तथाऽनुमितासिरते।
यदुचितमत्र भवत्युररी कुरुतादुरुतापमपाकुरुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥20॥

दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला

ॐ दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी ।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी ॥

दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा ।
दुर्गमज्ञानदा दुर्ग दैत्यलोकदवानला ॥

दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी ।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता ॥

दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी ।
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी ॥

दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी ।
दुर्गमांगी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी ॥

दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ 1 ॥
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥ 2 ॥
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥ 3 ॥
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥ 4 ॥
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥ 5 ॥
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 6 ॥
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 7 ॥
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 8 ॥
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 9 ॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 10 ॥
या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 11 ॥
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 12 ॥
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 13 ॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 14 ॥
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 15 ॥

या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 16 ॥
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 17 ॥
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 18 ॥
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 19 ॥
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 20 ॥
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 21 ॥
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 22 ॥
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 23 ॥
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 24 ॥
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 25 ॥
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 26 ॥
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ॥ 27 ॥
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ 28 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री-सूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ 1 ॥ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ 2 ॥ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ 3 ॥ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ 4 ॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽ लक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ 5 ॥ आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ 6 ॥ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ 7 ॥ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥ 8 ॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीँ सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ 9 ॥ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ 10 ॥ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ 11 ॥ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ 12 ॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ 13 ॥ आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ 14 ॥ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनप-गामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥15 ॥

श्री-लक्ष्मी-अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

1. ॐ प्रकृत्यै नमः
2. ॐ विकृत्यै नमः
3. ॐ विद्यायै नमः
4. ॐ सर्वभूतहितप्रदायै नमः
5. ॐ श्रद्धायै नमः
6. ॐ विभूत्यै नमः
7. ॐ सुरभ्यै नमः
8. ॐ परमात्मिकायै नमः
9. ॐ वाचे नमः
10. ॐ पद्मालयायै नमः
11. ॐ पद्मायै नमः
12. ॐ शुचये नमः
13. ॐ स्वाहायै नमः
14. ॐ स्वधायै नमः
15. ॐ सुधायै नमः
16. ॐ धन्यायै नमः
17. ॐ हिरण्मय्यै नमः
18. ॐ लक्ष्म्यै नमः
19. ॐ नित्यपुष्टायै नमः
20. ॐ विभावर्यै नमः
21. ॐ अदित्यै नमः
22. ॐ दित्यै नमः
23. ॐ दीप्तायै नमः
24. ॐ वसुधायै नमः
25. ॐ वसुधारिण्यै नमः
26. ॐ कमलायै नमः
27. ॐ कान्तायै नमः
28. ॐ कामाक्ष्यै नमः
29. ॐ क्षीरोदसंभवायै नमः
30. ॐ अनुग्रहप्रदायै नमः
31. ॐ बुद्ध्यै नमः
32. ॐ अनघायै नमः
33. ॐ हरिवल्लभायै नमः
34. ॐ अशोकायै नमः
35. ॐ अमृतायै नमः
36. ॐ दीप्तायै नमः
37. ॐ लोकशोकविनाशिन्यै नमः
38. ॐ धर्मनिलयायै नमः
39. ॐ करुणायै नमः
40. ॐ लोकमात्रे नमः
41. ॐ पद्मप्रियायै नमः
42. ॐ पद्महस्तायै नमः
43. ॐ पद्माक्ष्यै नमः
44. ॐ पद्मसुन्दर्यै नमः
45. ॐ पद्मोद्भवायै नमः
46. ॐ पद्ममुख्यै नमः
47. ॐ पद्मनाभप्रियायै नमः
48. ॐ रमायै नमः
49. ॐ पद्ममालाधरायै नमः
50. ॐ देव्यै नमः
51. ॐ पद्मिन्यै नमः
52. ॐ पद्मगन्धिन्यै नमः
53. ॐ पुण्यगन्धायै नमः
54. ॐ सुप्रसन्नायै नमः
55. ॐ प्रसादाभिमुख्यै नमः
56. ॐ प्रभायै नमः
57. ॐ चन्द्रवदनायै नमः
58. ॐ चन्द्रायै नमः
59. ॐ चन्द्रसहोदर्यै नमः
60. ॐ चतुर्भुजायै नमः
61. ॐ चन्द्ररूपायै नमः
62. ॐ इन्दिरायै नमः

63. ॐ इन्दुशीतलायै नमः
64. ॐ आह्लादजनन्यै नमः
65. ॐ पुष्ट्यै नमः
66. ॐ शिवायै नमः
67. ॐ शिवकर्यै नमः
68. ॐ सत्यै नमः
69. ॐ विमलायै नमः
70. ॐ विश्वजनन्यै नमः
71. ॐ तुष्ट्यै नमः
72. ॐ दारिद्र्यनाशिन्यै नमः
73. ॐ प्रीतिपुष्करिण्यै नमः
74. ॐ शान्तायै नमः
75. ॐ शुक्लमाल्याम्बरायै नमः
76. ॐ श्रियै नमः
77. ॐ भास्कर्यै नमः
78. ॐ बिल्वनिलयायै नमः
79. ॐ वरारोहायै नमः
80. ॐ यशश्विन्यै नमः
81. ॐ वसुन्धरायै नमः
82. ॐ उदाराङ्गायै नमः
83. ॐ हरिण्यै नमः
84. ॐ हेममालिन्यै नमः
85. ॐ धनधान्यकर्यै नमः
86. ॐ सिद्ध्यै नमः
87. ॐ स्त्रैणसौम्यायै नमः
88. ॐ शुभप्रदायै नमः
89. ॐ नृपवेश्मगतानन्दायै नमः
90. ॐ वरलक्ष्म्यै नमः
91. ॐ वसुप्रदायै नमः
92. ॐ शुभायै नमः
93. ॐ हिरण्यप्राकारायै नमः
94. ॐ समुद्रतनयायै नमः
95. ॐ जयायै नमः
96. ॐ मंगलायै देव्यै नमः
97. ॐ विष्णुवक्षःस्थलस्थितायै नमः
98. ॐ विष्णुपत्न्यै नमः
99. ॐ प्रसन्नाक्ष्यै नमः
100. ॐ नारायणसमाश्रितायै नमः
101. ॐ दारिद्र्यध्वंसिन्यै नमः
102. ॐ देव्यै नमः
103. ॐ सर्वोपद्रववारिण्यै नमः
104. ॐ नवदुर्गायै नमः
105. ॐ महाकाल्यै नमः
106. ॐ ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः
107. ॐ त्रिकालज्ञानसंपन्नायै नमः
108. ॐ भुवनेश्वर्यै नमः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ हरिः ॐ ॥



श्री-सरस्वती-स्तोत्रम्

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥1॥

आशासु राशीभवदङ्गवल्ली-भासैव दासीकृतदुग्धसिन्धुम्।
मन्दस्मितैर्निन्दितशारदेन्दुं वन्देऽरविन्दासनसुन्दरि त्वाम् ॥2॥

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ॥3॥

सरस्वतीं च तां नौमि वागधिष्ठातृदेवताम्।
देवत्वं प्रतिपद्यन्ते यदनुग्रहतो जनाः ॥4॥

पातु नो निकषग्रावा मतिहेम्नः सरस्वती।
प्राज्ञेतरपरिच्छेदं वचसैव करोति या ॥5॥

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥6॥

वीणाधरे विपुलमङ्गलदानशीले
भक्तार्तिनाशिनि विरञ्चिहरीशवन्द्ये।
कीर्तिप्रदेऽखिलमनोरथदे महार्हे
विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम् ॥7॥

श्वेताब्जपूर्णविमलासनसंस्थिते हे श्वेताम्बरावृतमनोहरमञ्जुगात्रे।
उद्यन्मनोज्ञसितपङ्कजमञ्जुलास्ये विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम् ॥8॥

मातस्त्वदीयपदपङ्कजभक्तियुक्ता ये त्वां भजन्ति निखिलानपरान्विहाय।
ते निर्जरत्वमिह यान्ति कलेवरेण भूवह्निवायुगगनाम्बुविनिर्मितेन ॥9॥

मोहान्धकारभरिते हृदये मदीये मातः सदैव कुरु वासमुदारभावे।
स्वीयाखिलावयवनिर्मलसुप्रभाभिः शीघ्रं विनाशय मनोगतमन्धकारम् ॥10॥



ब्रह्मा जगत् सृजति पालयतीन्दिरेशः
शम्भुर्विनाशयति देवि तव प्रभावैः।
न स्यात्कृपा यदि तव प्रकटप्रभावे
न स्युः कथञ्चिदपि ते निजकार्यदक्षाः ॥ 11 ॥

लक्ष्मीर्मेधा धरा पुष्टिर्गौरी तुष्टिः प्रभा धृतिः।
एताभिः पाहि तनुभिरष्टाभिर्मां सरस्वति ॥ 12 ॥

सरस्वत्यै नमो नित्यं भद्रकाल्यै नमो नमः।
वेदवेदान्तवेदाङ्गविद्यास्थानेभ्य एव च ॥ 13 ॥

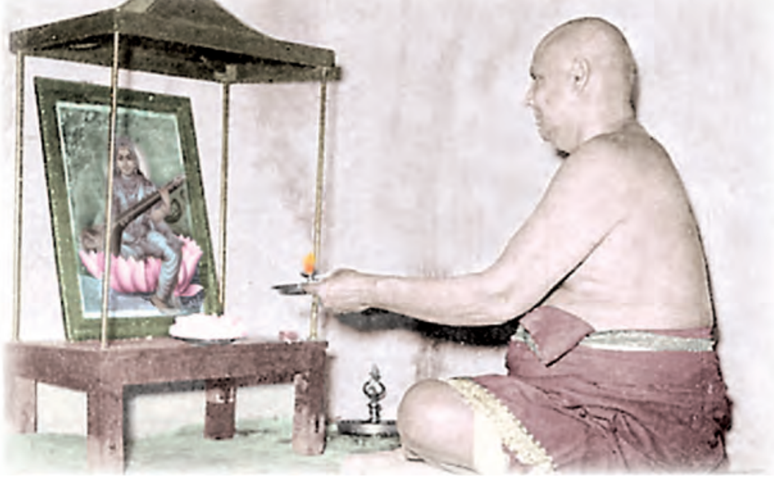
सरस्वति महाभागे विद्ये कमललोचने।
विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तु ते ॥ 14 ॥

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ 15 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

श्री-सरस्वती-अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

1. ॐ श्रीसरस्वत्यै नमः
2. ॐ महामायायै नमः
3. ॐ वरप्रदायै नमः
4. ॐ श्रीप्रदायै नमः
5. ॐ पद्मनिलयायै नमः
6. ॐ पद्माक्ष्यै नमः
7. ॐ पद्मवक्त्रायै नमः
8. ॐ शिवानुजायै नमः
9. ॐ पुस्तकहस्तायै नमः
10. ॐ ज्ञानमुद्रायै नमः
11. ॐ रमायै नमः
12. ॐ कामरूपिण्यै नमः
13. ॐ महाविद्यायै नमः
14. ॐ महापातकनाशिन्यै नमः
15. ॐ महाश्रयायै नमः
16. ॐ मालिन्यै नमः
17. ॐ महाभोगायै नमः
18. ॐ महाभुजायै नमः
19. ॐ महाभायै नमः
20. ॐ महोत्साहायै नमः
21. ॐ दिव्याङ्ग्यै नमः
22. ॐ सुरवन्दितायै नमः
23. ॐ महाकाल्यै नमः
24. ॐ महापाशायै नमः
25. ॐ महाकारायै नमः
26. ॐ महांकुशायै नमः
27. ॐ पीतायै नमः
28. ॐ विमलायै नमः
29. ॐ विश्वायै नमः
30. ॐ विद्युन्मालायै नमः
31. ॐ वैष्णव्यै नमः
32. ॐ चन्द्रिकायै नमः
33. ॐ चन्द्रलेखाविभूषितायै नमः
34. ॐ सावित्र्यै नमः
35. ॐ सुरसायै नमः
36. ॐ देव्यै नमः
37. ॐ दिव्यालंकारभूषितायै नमः
38. ॐ वाग्देव्यै नमः
39. ॐ वसुदायै नमः
40. ॐ तीव्रायै नमः
41. ॐ महाभद्रायै नमः
42. ॐ महाबलायै नमः
43. ॐ भोगदायै नमः
44. ॐ भारत्यै नमः
45. ॐ भामायै नमः
46. ॐ गोविन्दायै नमः
47. ॐ गोमत्यै नमः
48. ॐ जटिलायै नमः
49. ॐ विन्ध्यावासायै नमः
50. ॐ चण्डिकायै नमः
51. ॐ ब्राह्म्यै नमः
52. ॐ ब्रह्मज्ञानैकसाधनायै नमः
53. ॐ सौदामिन्यै नमः
54. ॐ सुधामूर्त्यै नमः
55. ॐ सुभद्रायै नमः
56. ॐ सुरपूजितायै नमः
57. ॐ सुवासिन्यै नमः
58. ॐ सुनासायै नमः
59. ॐ विनिद्रायै नमः
60. ॐ पद्मलोचनायै नमः
61. ॐ विद्यारूपायै नमः
62. ॐ विशालाक्ष्यै नमः



63. ॐ ब्रह्मजायायै नमः
64. ॐ महाबलायै नमः
65. ॐ त्रयीमूर्त्तये नमः
66. ॐ त्रिकालज्ञायै नमः
67. ॐ त्रिगुणायै नमः
68. ॐ शास्त्ररूपिण्यै नमः
69. ॐ शुम्भासुरप्रमथिन्यै नमः
70. ॐ शुभदायै नमः
71. ॐ सर्वात्मिकायै नमः
72. ॐ रक्तबीजनिहन्त्र्यै नमः
73. ॐ चामुण्डायै नमः
74. ॐ अम्बिकायै नमः
75. ॐ मुण्डकायप्रहरणायै नमः
76. ॐ धूम्रलोचनमर्दनायै नमः
77. ॐ सर्वदेवस्तुतायै नमः
78. ॐ सौम्यायै नमः
79. ॐ सुरासुरनमस्कृतायै नमः
80. ॐ कालरात्र्यै नमः
81. ॐ कलाधरायै नमः
82. ॐ वाग्देव्यै नमः
83. ॐ वरारोहायै नमः
84. ॐ वाराह्यै नमः
85. ॐ वारिजासनायै नमः
86. ॐ चित्राम्बरायै नमः
87. ॐ चित्रगन्धायै नमः
88. ॐ चित्रमाल्यविभूषितायै नमः
89. ॐ कान्तायै नमः
90. ॐ कामप्रदायै नमः
91. ॐ वन्द्यायै नमः
92. ॐ रूपसौभाग्यदायिन्यै नमः
93. ॐ श्वेताननायै नमः
94. ॐ सुभुजायै नमः
95. ॐ श्वेतस्तनसुपूजितायै नमः
96. ॐ रक्तमध्यायै नमः
97. ॐ नीलभुजायै नमः
98. ॐ निरञ्जनायै नमः
99. ॐ चतुराननसाम्राज्यायै नमः
100. ॐ चतुर्वर्गफलप्रदायै नमः
101. ॐ हंसासनायै नमः
102. ॐ ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः
103. ॐ विन्ध्याचल विराजितायै नमः
104. ॐ परायै नमः
105. ॐ स्वरात्मिकायै नमः
106. ॐ चन्द्रवदनायै नमः
107. ॐ शिवायै नमः
108. ॐ शारदायै नमः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ हरिः ॐ ॥

सरस्वती-सूक्तम्

ॐ इयमददाद रभसमृणच्युतं दिवोदासं वध्र्यश्वाय दाशुषे। या शश्वन्तमाचखादावसं पणिं ता ते दात्राणि तविषा सरस्वती॥ 1॥ इयं शुष्मेभिर्बिसखा इवारुजत् सानु गिरीणां तविषेभिरूर्मिभि:। पारावतघ्नीमवसे सुवृक्तिभि: सरस्वतीमा विवासेम धीतिभि:॥ 2॥ सरस्वति देवनिदो नि बर्हय प्रजां विश्वस्य बृसयस्य मायिन:। उत क्षितिभ्योऽवनीर-विन्दो विषमेभ्यो अस्रवो वाजिनीवति॥ 3॥ प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। धीनामवित्र्यवतु ॥ 4॥

यस्त्वा देवि सरस्वत्युपब्रूते धनेहिते। इन्द्रं न वृत्रतूर्ये॥ 5॥ त्वं देवि सरस्वत्यवा वाजेषु वाजिनि। रदा पूषेव न: सनिम् ॥ 6॥ उत स्या न: सरस्वती घोरा हिरण्यवर्तनि:। वृत्रघ्नी वष्टि सुष्टुतिम्॥ 7॥ यस्या अनन्तो अह्रुतस्त्वेषश्चरिष्णुरर्णव:। अमश्चरति रोरुवत् ॥ 8॥

सा नो विश्वा अति द्विष: स्वसृरन्या ऋतावरी। अतन्नहेव सूर्य:॥ 9॥ उत न: प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सुजुष्टा। सरस्वती स्तोम्याभूत्॥ 10॥ आपप्रुषी पार्थिवान्युरु रजो अन्तरिक्षम्। सरस्वती निदस्पातु॥ 11॥ त्रिषधस्था सप्तधातु: पञ्च जाता वर्धयन्ती। वाजेवाजे हव्याभूत् ॥ 12॥

प्र या महिम्ना महिनासु चेकिते द्युम्नेभिरन्या अपसामपस्तमा। रथ इव बृहती विभ्वने कृतोपस्तुत्या चिकितुषा सरस्वती॥ 13॥ सरस्वत्यभि नो नेषि वस्यो माप स्फरी: पयसा मा न आ धक्। जुषस्व न: सख्या वेश्या च मा त्वत् क्षेत्राण्यरणानि गन्म ॥ 14॥ प्र क्षोदसा धायसा सस्र एषा सरस्वती धरुणमायसी पू:। प्रबाबधाना रथ्येव याति विश्वा अपो महिना सिन्धुरन्या:॥ 15॥ एकाचेतत् सरस्वती नदीनां शुचिर्यती गिरिभ्य आ समुद्रात्। रायश्चेतन्ती भुवनस्य भूरेर्घृतं पयो दुदुहे नाहुषाय ॥ 16॥

स वावृधे नर्यो योषणासु वृषा शिशुर्वृषभो यज्ञियासु। स वाजिनं मघवद्भ्यो दधाति वि सातये तन्वं मामृजीत॥ 17॥ उत स्या न: सरस्वती जुषाणोप श्रवत् सुभगा यज्ञे अस्मिन्। मितज्ञुभिर्नमस्यैरियाना राया युजा चिदुत्तरा सखिभ्य: ॥ 18॥ इमा जुह्वाना युष्मदा नमोभि: प्रति स्तोमं सरस्वति जुषस्व। तव शर्मन् प्रियतमे दधाना उप स्थेयाम शरणं न वृक्षम्॥ 19॥ अयमु ते सरस्वति वसिष्ठो द्वारावृतस्य सुभगे व्याव:। वर्ध शुभ्रे स्तुवते रासि वाजान् यूयं पात स्वस्तिभि: सदा न:॥ 20॥

बृहदु गायिषे वचोऽसुर्या नदीनाम्। सरस्वतीमिन्महया सुवृक्तिभि: स्तोमैर्वसिष्ठ रोदसी॥ 21॥ उभे यत्ते महिना शुभ्रे अन्धसी अधिक्षियन्ति पूरव:। सा नो बोध्यवित्री मरुत्सखा चोद राधो मघोनाम्॥ 22॥ भद्रमिद् भद्रा कृणवत् सरस्वत्यकवारी चेतति

वाजिनीवती। गृणाना जमदग्निवत् स्तुवाना च वसिष्ठवत्॥ 23॥ जनीयन्तो न्वग्रव: पुत्रीयन्त: सुदानव:। सरस्वन्तं हवामहे ॥ 24॥

ये ते सरस्व ऊर्मयो मधुमन्तो घृतश्चुत:। तेभिर्नोऽविता भव॥ 25॥ पीपिवांसं सरस्वत: स्तनं यो विश्वदर्शत:। भक्षीमहि प्रजामिषम्॥ 26॥ अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति। अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि॥ 27॥ त्वे विश्वा सरस्वति श्चितायूंषि देव्याम्। शुनहोत्रेषु मत्स्व प्रजां देवि दिदिड्ढि न:॥ 28॥

इमा ब्रह्म सरस्वति जुषस्व वाजिनीवति। या ते मन्म गृत्समदा ऋतावरि प्रिया देवेषु जुह्वति॥ 29॥ पावका न: सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसु:॥ 30॥ चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्। यज्ञं दधे सरस्वती॥ 31॥ महो अर्ण: सरस्वती प्र चेतयति केतुना। धियो विश्वा वि राजति॥ 32॥

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने। सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्त सरस्वती दाशुषे वार्यं दात्॥ 33॥ सरस्वति या सरथं ययाथ स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ती। आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयस्वानमीवा इष आ धेह्यस्मे॥ 34॥ सरस्वतीं यां पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणा:। सहस्रार्घमिलो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानेषु धेहि॥ 35॥ आ नो दिवो बृहत: पर्वतादा सरस्वती यजता गन्तु यज्ञम्। हवं देवी जुजुषाणा घृताची शग्मां नो वाचमुशती शृणोतु॥ 36॥

राकामहं सुहवां सुष्टुती हुवे शृणोतु न: सुभगा बोधतु त्मना। सीव्यत्वप: सूच्याच्छिद्यमानया ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यम्॥ 37॥ यास्ते राके सुमतय: सुपेशसो याभिर्ददासि दाशुषे वसूनि। ताभिर्नो अद्य सुमना उपागहि सहस्रपोषं सुभगे रराणा॥ 38॥ सिनीवालि पृथुष्टुके या देवानामसि स्वसा। जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि दिदिड्ढि न:॥ 39॥ या सुबाहु: स्वंगुरि: सुषूमा बहुसूवरी। तस्यै विश्पत्न्यै हवि: सिनीवाल्यै जुहोतन॥ 40॥ या गुंगूर्या सिनीवाली या राका या सरस्वती। इन्द्राणीमह्व ऊतये वरुणानीं स्वस्तये ॥ 41॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:॥ हरि: ॐ॥



श्री-सरस्वती-स्तोत्रम्

सौन्दर्य-माधुर्य-सुधासमुद्र-विनिद्र-पद्मासन-सन्निविष्टाम्।
चंचद्-विपंचीकल-नादमुग्धां शुद्धां दधेऽन्तर्विसरत्सुगन्धाम् ॥ 1 ॥

श्रुति-स्मृतिस्तत्पद-पद्मगन्धि-प्रभामयं वाङ्मयमस्तपारम् ।
यत्कोण-कोणाभिनिविष्टमिष्टं तामम्बिकां सर्वसितां श्रिताः स्मः ॥ 2 ॥

न कान्दिशीकं रवितोऽतिवेलं तं कौशिकं संस्पृहये निशातम्।
सावित्र-सारस्वतधामपश्यं शस्यं तपोब्राह्मणमाद्रिये तम् ॥ 3 ॥

श्रीशारदां प्रार्थित-सिद्धविद्यां श्रीशारदाम्भोज-सगोत्रनेत्राम्।
श्रीशारदाम्भोज-निवीज्यमानां श्रीशारदांकानुजनिं भजामि ॥ 4 ॥

चक्रांग-राजाञ्चित-पादपद्मां पद्मालयाऽभ्यर्थित-सुस्मितश्रीः।
स्मितश्रिया वर्षित-सर्वकामा वामा विधेः पूरयतां प्रियं नः ॥ 5 ॥

बाहो रमायाः किल कौशिकोऽसौ हंसो भवत्याः प्रथितो विविक्तः।
जगद्विधातुर्महिषिं त्वमस्मान् विधेहि सभ्यान्नहि मातरिभ्याम् ॥ 6 ॥

स्वच्छव्रतः स्वच्छचरित्रचुंचुः स्वच्छान्तरः स्वच्छ-समस्त-वृत्तिः।
स्वच्छं भवत्याः प्रपदं प्रपन्नः स्वच्छे त्वयि ब्रह्मणि जातु यातु ॥ 7 ॥

रवीन्दु-वह्नि-द्युति-कोटि-दीप्तं सिंहासनं सन्तत-वाद्य-गानम्।
विदीपयन्मातृकधाम यामः कारुण्य-पूर्णामृत-वारिवाहम् ॥ 8 ॥

शुभ्रां शुभ्र-सरोज-मुग्धवदनां शुभ्राम्बरालंकृतां
शुभ्रांगीं शुभ-शुभ्रहास्यविशदां शुभ्रस्त्रगाशोभिनीम् ।
शुभ्रोद्दाम-ललाम-धाममहिमां शुभ्रान्तरंगगतां
शुभ्राभां भयहारि-भाव-भरितां श्रीभारतीं भावये ॥ 9 ॥

मुक्तालंकृत-कुन्तलान्तसरणिं रत्नालिहारावलिं
काञ्ची-कान्त-वलग्न-लग्नवलयां वज्रांगुलीयांगुलिम् ।
लीला-चंचल-लोचनांचल-चलल्लोकेश-लोलालकां
कल्यामाकलयेऽतिवेलमतुलां वित्कल्पवल्लीकलाम् ॥ 10 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

सिद्धसरस्वतीस्तोत्रम्

ध्यानम्

शुक्लां ब्रह्मविचार-सार-परमां आद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिक-मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥ 1 ॥

दोर्भिर्युक्तैश्चतुर्भिः स्फटिक-मणिमयीं अक्षमालां दधानां
हस्तेनैकेन पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण ।
पाशं वीणां मुकुन्द-स्फटिकमणिनिभां भासमाना समाना
सा मे वादे च तथ्यं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना ॥ 2 ॥

या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणा-वरदण्ड-मण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माऽच्युत-शंकर-प्रभृतिभिः देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥ 3 ॥

इति ध्यात्वा 108 मन्त्रं जपेत् –

ॐ ह्रीं ऐं धीं क्लीं सौं श्रीं सरस्वत्यै नमः ।

ह्रीं ह्रीं ह्रीं हृद्यैकबीजे शशि-रुचि-कमले कल्पविस्पष्टशोभे
भव्ये भव्यानुकूले शुभमतिवरदे विश्ववन्द्यांघ्रिपद्मे ।
पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणत-जनमनोमोद-सम्पादयित्रि
प्रोत्फुल्लज्ञानकूले हरिहरनमिते देवि संसारसारे ॥ 1 ॥

ऐं ऐं ऐं जाप्यतुष्टे हिमरुचि-मुकुटे वल्लकीव्यग्रहस्ते
मातर्मातर्नमस्ते दह दह जडतां देहि बुद्धिं प्रशस्ताम् ।
विद्ये वेदान्तवेद्ये श्रुतिपरिपठिते मोक्षदे मुक्तिमार्गे
मार्गातीतस्वरूपे भव मम वरदे शारदे शुभ्रहारे ॥ 2 ॥

धीं धीं धीं धारणाख्ये धृति-मति-नुतिभिः नामभिः कीर्त्तनीये
नित्ये नित्ये निमित्ते मुनिजन-नमिते-नूतने वै पुराणे ।
पुण्ये पुण्यप्रभावे हरिहरनमिते पूर्णतत्त्वस्वरूपे
मातर्मात्रार्थतत्त्वे मति-मति-मतिदे माधवप्रीतिनादे ॥ 3 ॥

क्लीं क्लीं क्लीं सुस्वरूपे दह दह दुरितं पुस्तक-व्यग्रहस्ते
सन्तुष्टाकारचित्ते स्मितमुखि सुभगे जृम्भणि स्तम्भनीये ।
मोहे मुग्धप्रबोधे मम कुरु कुमति-ध्वान्त-विध्वंसमीड्ये
गी-गौं-र्वाग्भारतीत्वं कविधृतरसने सिद्धिदे सिद्धिसाध्ये ॥ 4 ॥

सौं सौं सौं शक्तिबीजे कमल-भवसुखाम्भोजमूर्त्तिस्वरूपे
रूपे रूपप्रकाशे सकलगुणमये निर्गुणे निर्विकल्पे ।
न स्थूले नैव सूक्ष्मेऽप्यविहितविभवे जाप्यविज्ञानतुष्टे
विश्वे विश्वान्तराले सकलगुणमये निष्कले नित्यशुद्धे ॥ 5 ॥

श्रीं श्रीं श्रीं स्तौमि त्वाऽहं मम खलु रसनां मा कदाचित् त्यज त्वं
मा मे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु मम मनो पातु मां देवि पापात् ।
मा मे दुःखं कदाचित् क्वचिदपि विषये पुस्तके नाकुलत्वं
शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीः मास्तु कुण्ठा कदाऽपि ॥ 6 ॥

इति पठित्वा 108 मन्त्रं जपेत्

ॐ ह्रीं ऐं धीं क्लीं सौं श्रीं वद वद वाग्वादिन्यै स्वाहा।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



नीलसरस्वती स्तोत्रम्

घोररूपे महारावे सर्वशत्रुभयंकरि ।
भक्तेभ्यो वरदे देवि त्राहि मां शरणागतम् ॥ 1 ॥

ॐ सुराऽसुरार्चिते देवि सिद्धगन्धर्वसेविते ।
जाड्य-पापहरे देवि त्राहि मां शरणागतम् ॥ 2 ॥

जटाजूटसमायुक्ते लोलजिह्वान्तकारिणि ।
द्रुतबुद्धिकरे देवि त्राहि मां शरणागतम् ॥ 3 ॥

सौम्यक्रोधधरे रूपे चण्डरूपे नमोऽस्तु ते ।
सृष्टिरूपे नमस्तुभ्यं त्राहि मां शरणागतम् ॥ 4 ॥

जडानां जडतां हन्ति भक्तानां भक्तवत्सला ।
मूढतां हर मे देवि त्राहि मां शरणागतम् ॥ 5 ॥

वं ह्रूं ह्रूं कामये देवि बलिहोमप्रिये नमः।
उग्रतारे नमो नित्यं त्राहि मां शरणागतम् ॥ 6 ॥

बुद्धिं देहि यशो देहि कवित्वं देहि देहि मे ।
मूढत्वं च हरेद् देवि त्राहि मां शरणागतम् ॥ 7 ॥

इन्द्रादि-विलसद्-द्वन्द्व-वन्दिते करुणामयि ।
तारे ताराधिनाथास्ये त्राहि मां शरणागतम् ॥ 8 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ ॥



ललिता-पञ्चरत्नम्

प्रातः स्मरामि ललितावदनारविन्दं
बिम्बाधरं पृथुलमौक्तिकशोभिनासम्।
आकर्णदीर्घनयनं मणिकुण्डलाढ्यं
मन्दस्मितं मृगमदोज्ज्वलभालदेशम् ॥1॥

प्रातर्भजामि ललिताभुजकल्पवल्लीं
रक्तांगुलीयलसदंगुलिपल्लवाढ्याम्।
माणिक्यहेमवलयांगदशोभमानां
पुण्ड्रेक्षुचापकुसुमेषुसृणीर्दधानाम् ॥2॥

प्रातर्नमामि ललिताचरणारविन्दं
भक्तेष्टदाननिरतं भवसिन्धुपोतम्।
पद्मासनादिसुरनायकपूजनीयं
पद्मांकुशध्वजसुदर्शनलाञ्छनाढ्यम् ॥3॥

प्रातः स्तुवे परशिवां ललितां भवानीं
त्रय्यन्तवेद्यविभवां करुणानवद्याम् ।
विश्वस्य सृष्टिविलयस्थितिहेतुभूतां
विद्येश्वरीं निगमवाङ्मनसातिदूराम् ॥4॥

प्रातर्वदामि ललिते तव पुण्यनाम
कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति ।
श्रीशाम्भवीति जगतां जननी परेति
वाग्देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति ॥5॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं।
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

श्री-ललिता-सहस्त्रनाम-स्तोत्रम्

ॐ श्रीमाता श्रीमहाराज्ञी श्रीमत्सिंहासनेश्वरी। चिदग्नि-कुण्ड-सम्भूता देवकार्य-समुद्यता ॥
उद्यद्भानु-सहस्राभा चतुर्बाहु-समन्विता। रागस्वरूप-पाशाढ्या क्रोधाकारांकुशोज्ज्वला ॥
मनोरूपेक्षु-कोदण्डा पञ्चतन्मात्र-सायका। निजारुण-प्रभापूर-मज्जद्ब्रह्माण्ड-मण्डला ॥
चम्पकाशोक-पुन्नाग-सौगन्धिक-लसत्कचा। कुरुविन्दमणि-श्रेणी-कनत्कोटीर-मण्डिता ॥
अष्टमीचन्द्र-विभ्राजत्-अलकस्थल-शोभिता। मुखचन्द्र-कलंकाभ-मृगनाभि-विशेषका ॥
वदनस्मर-मांगल्य-गृहतोरण-चिल्लिका। वक्त्रलक्ष्मी-परीवाह-चलन्मीनाभ-लोचना ॥
नवचम्पक-पुष्पाभ-नासादण्ड-विराजिता। ताराकान्ति-तिरस्कारि-नासाभरण-भासुरा ॥
कदम्बमञ्जरी-क्लृप्त-कर्णपूर-मनोहरा। ताटंक-युगली-भूत-तपनोडुप-मण्डला ॥
पद्मरागशिलादर्श-परिभावि-कपोलभूः। नवविद्रुम-बिम्बश्री-न्यक्कारि-रदनच्छदा ॥
शुद्धविद्यांकुराकार-द्विजपंक्ति-द्वयोज्ज्वला। कर्पूरवीटिकामोद-समाकर्षि-दिग्दन्तरा ॥10॥

निज-संलाप-माधुर्य-विनिर्भर्त्सित-कच्छपी। मन्दस्मित-प्रभापूर-मज्जत्कामेश-मानसा ॥
अनाकलित-सादृश्य-चिबुकश्री-विराजिता। कामेश-बद्ध-मांगल्य-सूत्र-शोभित-कन्धरा ॥
कनकांगद-केयूर-कमनीय-भुजान्विता। रत्नग्रैवेय-चिन्ताकल्लोल-मुक्ता-फलान्विता ॥
कामेश्वर-प्रेमरत्न-मणि-प्रतिपन्न-स्तनी। नाभ्यालवाल-रोमालि-लता-फल-कुचद्वयी ॥
लक्ष्यरोम-लताधारता-समुन्नेय-मध्यमा। स्तनभार-दलन्मध्य-पट्टबन्ध-वलित्रया ॥
अरुणारुणकौसुम्भ-वस्त्र-भास्वत्-कटीतटी। रत्न-किंकिणिका-रम्य-रशना-दाम-भूषिता ॥
कामेश-ज्ञात-सौभाग्य-मार्दवोरु-द्वयान्विता। माणिक्य-मुकुटाकार-जानुद्वय-विराजिता ॥
इन्द्रगोप-परिक्षिप्तस्मरतूणाभ-जंघिका। गूढगुल्फा कूर्मपृष्ठ-जयिष्णु-प्रपदान्विता ॥
नख-दीधिति-संछन्न-नमज्जन-तमोगुणा। पदद्वय-प्रभाजाल-पराकृत-सरोरुहा ॥
सिञ्जान-मणिमञ्जीर मण्डित-श्री-पदाम्बुजा। मराली-मन्दगमना महालावण्य-शेवधिः ॥20॥

सर्वारुणाऽनवद्यांगी सर्वाभरण-भूषिता। शिव-कामेश्वरांकस्था शिवा स्वाधीन-वल्लभा ॥
सुमेरु-मध्य-शृंगस्था श्रीमन्नगर-नायिका। चिन्तामणि गृहान्तस्था पञ्च-ब्रह्मासन-स्थिता ॥
महापद्माटवी-संस्था कदम्बवन-वासिनी। सुधासागर-मध्यस्था कामाक्षी कामदायिनी ॥
देवर्षि-गण-संघात-स्तूयमानात्म-वैभवा। भण्डासुर-वधोद्युक्त-शक्तिसेना-समन्विता ॥
सम्पत्करी-समारूढ-सिन्धुर-व्रज-सेविता। अश्वारूढाधिष्ठिताश्व-कोटि-कोटिभिरावृता ॥
चक्रराज-रथारूढ-सर्वायुध-परिष्कृता। गेयचक्र-रथारूढ-मन्त्रिणी-परिसेविता ॥
किरिचक्र-रथारूढ-दण्डनाथा-पुरस्कृता। ज्वालामालिनिकाक्षिप्त-वह्निप्राकार-मध्यगा ॥
भण्डसैन्य-वधोद्युक्त-शक्ति-विक्रम-हर्षिता। नित्या-पराक्रमाटोप-निरीक्षण-समुत्सुका ॥
भण्डपुत्र-वधोद्युक्त-बाला-विक्रम-नन्दिता। मन्त्रिण्यम्बा-विरचित-विषंग-वध-तोषिता ॥
विशुक्र-प्राणहरण-वाराही-वीर्य-नन्दिता। कामेश्वर-मुखालोक-कल्पित-श्रीगणेश्वरा ॥30॥

महागणेश-निर्भिन्न-विघ्नयन्त्र-प्रहर्षिता। भण्डासुरेन्द्र-निर्मुक्त-शस्त्र-प्रत्यस्त्र-वर्षिणी ॥
करांगुलि-नखोत्पन्न-नारायण-दशाकृतिः। महा-पाशुपतास्त्राग्नि-निर्दग्धासुर-सैनिका ॥
कामेश्वरास्त्र-निर्दग्ध-सभण्डासुर-शून्यका। ब्रह्मोपेन्द्र-महेन्द्रादि-देव-संस्तुत-वैभवा ॥
हर-नेत्राग्नि-संदग्ध-काम-सञ्जीवनौषधिः। श्रीमद्वाग्भव-कूटैक-स्वरूप-मुख-पंकजा ॥
कण्ठाधः-कटि-पर्यन्त-मध्यकूट-स्वरूपिणी। शक्तिकूटैकतापन्न-कट्यधोभाग-धारिणी ॥
मूलमन्त्रात्मिका मूलकूटत्रय-कलेवरा। कुलामृतैक-रसिका कुलसंकेत-पालिनी ॥
कुलांगना कुलान्तस्था कौलिनी कुलयोगिनी। अकुला समयान्तस्था समयाचार-तत्परा ॥
मूलाधारैक-निलया ब्रह्मग्रन्थि-विभेदिनी। मणिपूरान्तरुदिता विष्णुग्रन्थि-विभेदिनी ॥
आज्ञाचक्रान्तरालस्था रुद्रग्रन्थि विभेदिनी। सहस्राराम्बुजारूढा सुधासाराभिवर्षिणी ॥
तडिल्लता समरुचिः षट्चक्रोपरि-संस्थिता। महासक्तिः कुण्डलिनी बिसतन्तु-तनीयसी॥40॥

भवानी भावनागम्या भवारण्य-कुठारिका। भद्रप्रिया भद्रमूर्त्ति-र्भक्त-सौभाग्यदायिनी ॥
भक्तिप्रिया भक्तिगम्या भक्तिवश्या भयापहा। शाम्भवी शारदाराध्या शर्वाणी शर्मदायिनी ॥
शांकरी श्रीकरी साध्वी शरच्चन्द्र-निभानना। शातोदरी शान्तिमती निराधारा निरञ्जना ॥
निर्लेपा निर्मला नित्या निराकारा निराकुला। निर्गुणा निष्कला शान्ता निष्कामा निरुपप्लवा ॥
नित्यमुक्ता निर्विकारा निष्प्रपञ्चा निराश्रया। नित्यशुद्धा नित्यबुद्धा निरवद्या निरन्तरा ॥
निष्कारणा निष्कलङ्का निरुपाधि-र्निरीश्वरा। नीरागा रागमथनी निर्मदा मदनाशिनी ॥
निश्चिन्ता निरहंकारा निर्मोहा मोहनाशिनी। निर्ममा ममताहन्त्री निष्पापा पापनाशिनी ॥
निष्क्रोधा क्रोधशमनी निर्लोभा लोभनाशिनी। निःसंशया संशयघ्नी निर्भवा भवनाशिनी ॥
निर्विकल्पा निराबाधा निर्भेदा भेदनाशिनी। निर्नाशा मृत्युमथनी निष्क्रिया निष्परिग्रहा ॥
निस्तुला नीलचिकुरा निरपाया निरत्यया। दुर्लभा दुर्गमा दुर्गा दुःखहन्त्री सुखप्रदा ॥50॥

दुष्टदूरा दुराचारशमनी दोष-वर्जिता। सर्वज्ञा सान्द्रकरुणा समानाधिक-वर्जिता ॥
सर्वशक्तिमयी सर्वमंगला सद्गतिप्रदा। सर्वेश्वरी सर्वमयी सर्वमन्त्र-स्वरूपिणी ॥
सर्व-यन्त्रात्मिका सर्व-तन्त्ररूपा मनोन्मनी। माहेश्वरी महादेवी महालक्ष्मीर्मृडप्रिया ॥
महारूपा महापूज्या महापातक-नाशिनी। महामाया महासत्त्वा महाशक्तिर्महारतिः ॥
महाभोगा महैश्वर्या महावीर्या महाबला। महाबुद्धि-र्महासिद्धि-र्महायोगेश्वरेश्वरी ॥
महातन्त्रा महामन्त्रा महायन्त्रा महासना। महायाग क्रमाराध्या महाभैरव-पूजिता ॥
महेश्वर-महाकल्प-महाताण्डव-साक्षिणी। महाकामेश-महिषी महात्रिपुरसुन्दरी ॥
चतुष्षष्ट्युपचाराढ्या चतुष्षष्टिकलामयी। महाचतुः-षष्टिकोटि-योगिनी-गणसेविता ॥
मनुविद्या चन्द्रविद्या चन्द्रमण्डल-मध्यगा। चारुरूपा चारुहासा चारुचन्द्र-कलाधरा ॥
चराचर जगन्नाथा चक्रराज-निकेतना। पार्वती पद्मनयना पद्मराग-समप्रभा ॥ 60॥

पञ्चप्रेतासनासीना पञ्चब्रह्मस्वरूपिणी। चिन्मयी परमानन्दा विज्ञानघनरूपिणी ॥
ध्यान-ध्यातृ-ध्येयरूपा धर्माधर्म-विवर्जिता। विश्वरूपा जागरिणी स्वपन्ती तैजसात्मिका ॥

सुप्ता प्राज्ञात्मिका तुर्या सर्वावस्था-विवर्जिता। सृष्टिकर्त्री ब्रह्मरूपा गोप्त्री गोविन्दरूपिणी ॥
संहारिणी रुद्ररूपा तिरोधानकरीश्वरी। सदाशिवाऽनुग्रहदा पञ्चकृत्यपरायणा ॥
भानुमण्डल-मध्यस्था भैरवी भगमालिनी। पद्मासना भगवती पद्मनाभ-सहोदरी ॥
उन्मेष-निमिषोत्पन्न-विपन्न-भुवनावली। सहस्रशीर्षवदना सहस्राक्षी सहस्रपात् ॥
आब्रह्म-कीट-जननी वर्णाश्रम-विधायिनी। निजाज्ञारूप-निगमा पुण्यापुण्य-फलप्रदा ॥
श्रुति-सीमन्त-सिन्दूरी-कृत-पादाब्जधूलिका। सकलागम-सन्दोह-शुक्ति-सम्पुट-मौक्तिका ॥
पुरुषार्थ-प्रदा पूर्णा भोगिनी भुवनेश्वरी। अम्बिकाऽनादि-निधना हरिब्रह्मेन्द्र-सेविता ॥
नारायणी नादरूपा नामरूप-विवर्जिता। ह्रीं कारी ह्रीमती हृद्या हेयोपादेय-वर्जिता ॥ 70 ॥

राजराजार्चिता राज्ञी रम्या राजीव-लोचना। रञ्जनी रमणी रस्या रणत्किंकिणि-मेखला ॥
रमा राकेन्दु-वदना रतिरूपा रतिप्रिया। रक्षाकरी राक्षसघ्नी रामा रमणलम्पटा ॥
काम्या कामकलारूपा कदम्ब-कुसुम-प्रिया। कल्याणी जगती-कन्दा करुणा-रस-सागरा ॥
कलावती कलालापा कान्ता कादम्बरी-प्रिया। वरदा वामनयना वारुणी-मद-विह्वला ॥
विश्वाधिका वेदवेद्या विन्ध्याचल-निवासिनी। विधात्री वेदजननी विष्णुमाया विलासिनी ॥
क्षेत्रस्वरूपा क्षेत्रेशी क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ-पालिनी। क्षयवृद्धि-विनिर्मुक्ता क्षेत्रपाल-समर्चिता ॥
विजया विमला वन्द्या वन्दारु-जन-वत्सला। वाग्वादिनी वामकेशी वह्निमण्डल-वासिनी ॥
भक्तिमत्-कल्पलतिका पशुपाश-विमोचिनी। संहृताशेष-पाषण्डा सदाचार-प्रवर्तिका ॥
तापत्रयाग्नि-सन्तप्त-समाह्लादन-चन्द्रिका। तरुणी तापसाराध्या तनुमध्या तमोऽपहा ॥
चितिस्तत्पद-लक्ष्यार्था चिदेकरस-रूपिणी। स्वात्मानन्द-लवीभूत-ब्रह्माद्यानन्द-सन्ततिः ॥ 80 ॥

परा प्रत्यक्-चितीरूपा पश्यन्ती परदेवता। मध्यमा वैखरीरूपा भक्त-मानस-हंसिका ॥
कामेश्वर-प्राणनाडी कृतज्ञा कामपूजिता। शृंगार-रस-सम्पूर्णा जया जालन्धर-स्थिता ॥
ओड्याण-पीठ-निलया बिन्दु-मण्डलवासिनी। रहोयाग-क्रमाराध्या रहस्तर्पण-तर्पिता ॥
सद्यःप्रसादिनी विश्वसाक्षिणी साक्षिवर्जिता। षडंगदेवता-युक्ता षाड्गुण्य-परिपूरिता ॥
नित्य-क्लिन्ना निरुपमा निर्वाण-सुख-दायिनी। नित्याषोडशिका-रूपा-श्रीकण्ठार्ध-शरीरिणी ॥
प्रभावती प्रभारूपा प्रसिद्धा परमेश्वरी। मूलप्रकृतिरव्यक्ता व्यक्ताव्यक्त-स्वरूपिणी ॥
व्यापिनी विविधाकारा विद्याऽविद्या-स्वरूपिणी। महाकामेश-नयन-कुमुदाह्लाद-कौमुदी ॥
भक्त-हार्द-तमो-भेद-भानुमद्भानु-सन्ततिः। शिवदूती शिवाराध्या शिवमूर्तिः शिवंकरी ॥
शिवप्रिया शिवपरा शिष्टेष्टा शिष्टपूजिता। अप्रमेया स्वप्रकाशा मनो-वाचामगोचरा ॥
चिच्छक्तिश्चेतना-रूपा जडशक्तिर्जडात्मिका। गायत्री व्याहृतिः सन्ध्या द्विजवृन्द-निषेविता ॥ 90 ॥

तत्त्वासना तत्त्वमयी पञ्चकोशान्तर-स्थिता। निःसीम-महिमा नित्य-यौवना मदशालिनी ॥
मदघूर्णित-रक्ताक्षी मदपाटल-गण्डभूः। चन्दन-द्रव-दिग्धांगी चाम्पेय-कुसुम-प्रिया ॥
कुशला कोमलाकारा कुरुकुल्ला कुलेश्वरी। कुलकुण्डालया कौलमार्ग-तत्पर-सेविता ॥
कुमार-गणनाथाम्बा तुष्टिः पुष्टिर्मतिर्धृतिः। शान्तिः स्वस्तिमती कान्तिर्नन्दिनी विघ्ननाशिनी ॥

तेजोवती त्रिनयना लोलाक्षी-कामरूपिणी। मालिनी हंसिनी माता मलयाचल-वासिनी ॥
सुमुखी नलिनी सुभ्रूः शोभना सुरनायिका। कालकण्ठी कान्तिमती क्षोभिणी सूक्ष्मरूपिणी ॥
वज्रेश्वरी वामदेवी वयोवस्था-विवर्जिता। सिद्धेश्वरी सिद्धविद्या सिद्धमाता यशस्विनी ॥
विशुद्धिचक्र-निलयाऽऽरक्तवर्णा त्रिलोचना। खट्वांगादि-प्रहरणा वदनैक-समन्विता ॥
पायसान्न-प्रिया त्वक्स्था पशुलोक-भयंकरी। अमृतादि-महाशक्ति-संवृता डाकिनीश्वरी ॥
अनाहताब्ज-निलया श्यामाभा वदनद्वया। दंष्ट्रोज्ज्वलाक्षमालादिधरा रुधिर-संस्थिता ॥100॥

कालरात्र्यादि शक्त्यौघवृता स्निग्धौदन-प्रिया। महावीरेन्द्र-वरदा राकिण्यम्बा-स्वरूपिणी ॥
मणिपूराब्ज-निलया वदनत्रय-संयुता। वज्रादिकायुधोपेता डामर्यादिभिरावृता ॥
रक्तवर्णा मांसनिष्ठा गुडान्न-प्रीत-मानसा। समस्तभक्त-सुखदा लाकिन्यम्बा-स्वरूपिणी ॥
स्वाधिष्ठानाम्बुजगता चतुर्वक्त्र-मनोहरा। शूलाद्यायुध-सम्पन्ना पीतवर्णाऽतिगर्विता ॥
मेदो-निष्ठा मधुप्रीता बन्धिन्यादि-समन्विता। दध्यन्नासक्त-हृदया काकिनी-रूप-धारिणी ॥
मूलाधाराम्बुजारूढा पञ्चवक्त्रास्थि-संस्थिता। अंकुशादि-प्रहरणा वरदादि-निषेविता ॥
मुद्गौदनासक्त-चित्ता साकिन्यम्बा-स्वरूपिणी। आज्ञा-चक्राब्ज-निलया-शुक्लवर्णा षडानना॥
मज्जा-संस्था हंसवती-मुख्य-शक्ति-समन्विता। हरिद्रान्नैक-रसिका हाकिनी-रूप-धारिणी॥
सहस्रदल-पद्मस्था सर्ववर्णोप-शोभिता। सर्वायुध-धरा शुक्ल-संस्थिता सर्वतोमुखी ॥
सर्वौदन-प्रीतचित्ता याकिन्यम्बा-स्वरूपिणी। स्वाहा स्वधाऽमतिर्मेधा श्रुति-स्मृतिरनुत्तमा॥110॥

पुण्यकीर्तिः पुण्यलभ्या पुण्यश्रवण-कीर्तना। पुलोमजार्चिता बन्धमोचिनी बन्धुरालका ॥
विमर्शरूपिणी विद्या वियदादि-जगत्प्रसूः। सर्वव्याधि-प्रशमनी सर्वमृत्यु-निवारिणी ॥
अग्रगण्याऽचिन्त्यरूपा कलिकल्मष-नाशिनी। कात्यायनी कालहन्त्री कमलाक्ष-निषेविता ॥
ताम्बूल-पूरित-मुखी दाडिमी-कुसुम-प्रभा। मृगाक्षी मोहिनी मुख्या मृडानी मित्ररूपिणी ॥
नित्यतृप्ता भक्तनिधिर्नियन्त्री निखिलेश्वरी। मैत्र्यादि-वासनालभ्या महाप्रलय-साक्षिणी ॥
पराशक्तिः परानिष्ठा प्रज्ञानघन-रूपिणी। माध्वीपानालसा मत्ता-मातृका-वर्ण-रूपिणी ॥
महाकैलास-निलया मृणाल-मृदु-दोर्लता। महनीया दयामूर्त्तिः महासाम्राज्य-शालिनी ॥
आत्मविद्या महाविद्या श्रीविद्या कामसेविता। श्रीषोडशाक्षरीविद्या त्रिकूटा कामकोटिका ॥
कटाक्ष-किंकरी-भूत-कमला-कोटि-सेविता। शिरःस्थिता चन्द्रनिभा भालस्थेन्द्र-धनुः-प्रभा॥
हृदयस्था रविप्रख्या त्रिकोणान्तर-दीपिका। दाक्षायणी दैत्यहन्त्री दक्षयज्ञविनाशिनी ॥120॥

दरान्दोलित-दीर्घाक्षी दरहासोज्ज्वलन्मुखी। गुरुमूर्त्तिः गुणनिधिः गोमाता गुहजन्म-भूः ॥
देवेशी दण्डनीतिस्था दहराकाश-रूपिणी। प्रतिपन्मुख्य-राकान्त-तिथि-मण्डल-पूजिता ॥
कलात्मिका कलानाथा काव्यालाप-विनोदिनी। सचामर-रमा-वाणी-सव्य-दक्षिण-सेविता ॥
आदिशक्तिरमेयाऽऽत्मा परमा पावनाकृतिः। अनेक-कोटि-ब्रह्माण्ड-जननी दिव्य-विग्रहा॥
क्लींकारी केवला गुह्या कैवल्य-पद-दायिनी। त्रिपुरा त्रिजगद्वन्द्या त्रिमूर्तिस्त्रिदशेश्वरी ॥
त्र्यक्षरी दिव्य-गन्धाढ्या सिन्दूर-तिलकाञ्चिता। उमा शैलेन्द्रतनया गौरी गन्धर्व-सेविता ॥

विश्वगर्भा स्वर्णगर्भा ऽवरदा वागधीश्वरी। ध्यानगम्याऽपरिच्छेद्या ज्ञानदा ज्ञानविग्रहा ॥
सर्ववेदान्त-सम्वेद्या सत्यानन्द-स्वरूपिणी। लोपामुद्रार्चिता लीलाक्लृप्त-ब्रह्माण्ड-मण्डला॥
अदृश्या दृश्यरहिता विज्ञात्री वेद्य-वर्जिता। योगिनी योगदा योग्या योगानन्दा युगन्धरा ॥
इच्छाशक्ति-ज्ञानशक्ति-क्रियाशक्ति-स्वरूपिणी। सर्वाधारा सुप्रतिष्ठा सदसद्रूप-धारिणी॥ 130॥

अष्टमूर्तिरजाजैत्री लोकयात्रा-विधायिनी। एकाकिनी भूमरूपा निर्द्वैता द्वैतवर्जिता ॥
अन्नदा वसुदा वृद्धा ब्रह्मात्मैक्य-स्वरूपिणी। बृहती ब्राह्मणी ब्राह्मी ब्रह्मानन्दा बलिप्रिया ॥
भाषारूपा बृहत्सेना भावाभाव-विवर्जिता। सुखाराध्या शुभकरी शोभनासुलभागतिः ॥
राजराजेश्वरी राज्यदायिनी राज्यवल्लभा। राजत्कृपा राजपीठ-निवेशित-निजाश्रिता ॥
राज्यलक्ष्मीः कोशनाथा चतुरंग-बलेश्वरी। साम्राज्यदायिनी सत्यसन्धा सागरमेखला ॥
दीक्षिता दैत्यशमनी सर्वलोकवशंकरी। सर्वार्थदात्री सावित्री सच्चिदानन्द-रूपिणी ॥
देशकालापरिच्छिन्ना सर्वगा सर्वमोहिनी। सरस्वती शास्त्रमयी गुहाम्बा गुह्यरूपिणी ॥
सर्वोपाधि-विनिर्मुक्ता-सदाशिव-पतिव्रता। सम्प्रदायेश्वरी साध्वी गुरुमण्डल-रूपिणी ॥
कुलोत्तीर्णा भगाराध्या माया मधुमती मही। गणाम्बा गुह्यकाराध्या कोमलांगी गुरुप्रिया ॥
स्वतंत्रा सर्वतन्त्रेशी दक्षिणामूर्त्ति-रूपिणी। सनकादि-समाराध्या शिवज्ञान-प्रदायिनी॥140॥

चित्कलाऽऽनन्दकलिका प्रेमरूपा प्रियंकरी। नामपारायण-प्रीता नन्दिविद्या नटेश्वरी ॥
मिथ्या-जगदधिष्ठाना मुक्तिदा मुक्तिरूपिणी। लास्यप्रिया लयकरी लज्जा रम्भादिवन्दिता॥
भवदाव-सुधावृष्टिः पापारण्य-दवानला। दौर्भाग्य-तूलवातूला जराध्वान्तरविप्रभा ॥
भाग्याब्धि-चन्द्रिका भक्त-चित्त-केकि-घनाघना। रोगपर्वत-दम्भोलिर्मृत्युदारु-कुठारिका॥
महेश्वरी महाकाली महाग्रासा महाशना। अपर्णा चण्डिका चण्डमुण्डासुर-निषूदिनी ॥
क्षराक्षरात्मिका सर्वलोकेशी विश्वधारिणी। त्रिवर्गदात्री सुभगा त्र्यम्बका त्रिगुणात्मिका ॥
स्वर्गापवर्गदा शुद्धा जपापुष्प-निभाकृतिः। ओजोवती द्युतिधरा यज्ञरूपा प्रियव्रता ॥
दुराराध्या दुराधर्षा पाटली-कुसुम-प्रिया। महती मेरुनिलया मन्दार-कुसुम-प्रिया ॥
वीराराध्या विराड्रूपा विरजा विश्वतोमुखी। प्रत्यग्-रूपा पराकाशा प्राणदा प्राणरूपिणी॥
मार्त्तण्ड-भैरवाराध्या मन्त्रिणी-न्यस्त-राज्यधूः। त्रिपुरेशी जयत्सेना निस्त्रैगुण्या परापरा॥150॥

सत्यज्ञानानन्दरूपा सामरस्य-परायणा। कपर्दिनी कलामाला कामधुक्काम-रूपिणी ॥
कलानिधिः काव्यकला रसज्ञा रसशेवधिः। पुष्टा पुरातना पूज्या पुष्करा पुष्करेक्षणा ॥
परञ्ज्योतिः परन्धाम परमाणुः परात्परा। पाशहस्ता पाशहन्त्री परमन्त्र-विभेदिनी ॥
मूर्ताऽमूर्ताऽनित्यतृप्ता मुनिमानस-हंसिका। सत्यव्रता सत्यरूपा सर्वान्तर्यामिनी सती ॥
ब्रह्माणी ब्रह्मजननी बहुरूपा बुधार्चिता। प्रसवित्री प्रचण्डाऽऽज्ञा प्रतिष्ठा प्रकटाकृतिः ॥
प्राणेश्वरी प्राणदात्री पञ्चाशत्पीठ-रूपिणी। विशृंखला विविक्तस्था वीरमाता वियत्प्रसूः॥
मुकुन्दा मुक्तिनिलया मूलविग्रह-रूपिणी। भावज्ञा भवरोगघ्नी भवचक्र-प्रवर्तिनी ॥
छन्दः सारा शास्त्रसारा मन्त्रसारा तलोदरी। उदारकीर्तिरुद्दामवैभवा वर्णरूपिणी ॥



जन्ममृत्यु-जरातप्त-जन-विश्रान्ति-दायिनी। सर्वोपनिषदुद्घुष्टा शान्त्यतीत-कलात्मिका॥
गम्भीरा गगनान्तस्था गर्विता गानलोलुपा। कल्पनारहिता काष्ठाऽकान्ता कान्तार्ध-विग्रहा ॥160॥

कार्यकारण-निर्मुक्ता कामकेलि-तरंगिता। कनत्कनक-ताटंका लीला-विग्रह-धारिणी ॥
अजा क्षयविनिर्मुक्ता मुग्धा क्षिप्रप्रसादिनी। अन्तर्मुख-समाराध्या बहिर्मुख-सुदुर्लभा ॥
त्रयी त्रिवर्ग-निलया त्रिस्था त्रिपुर-मालिनी। निरामया निरालम्बा स्वात्मारामा सुधासृतिः ॥
संसारपंक-निर्मग्न-समुद्धरण-पण्डिता। यज्ञप्रिया यज्ञकर्त्री यजमान-स्वरूपिणी ॥
धर्माधारा धनाध्यक्षा धनधान्य-विवर्धिनी। विप्रप्रिया विप्ररूपा विश्वभ्रमणकारिणी ॥
विश्वग्रासा विद्रुमाभा वैष्णवी विष्णुरूपिणी। अयोनिर्योनि-निलया कूटस्था कुलरूपिणी॥
वीरगोष्ठीप्रिया वीरा नैष्कर्म्या नादरूपिणी। विज्ञानकलना कल्या विदग्धा बैन्दवासना ॥
तत्त्वाधिका तत्त्वमयी तत्त्वमर्थ-स्वरूपिणी । सामगानप्रिया सौम्या सदाशिव-कुटुम्बिनी ॥
सव्यापसव्य-मार्गस्था सर्वापद्विनिवारिणी। स्वस्था स्वभावमधुरा धीरा धीरसमर्चिता ॥
चैतन्यार्घ्य-समाराध्या चैतन्य-कुसुम-प्रिया। सदोदिता सदातुष्टा तरुणादित्य-पाटला ॥170॥

दक्षिणा-दक्षिणाराध्या दरस्मेर-मुखाम्बुजा। कौलिनी-केवलाऽनर्घ्य-कैवल्य-पद-दायिनी॥
स्तोत्रप्रिया स्तुतिमती श्रुति-संस्तुत-वैभवा। मनस्विनी मानवती महेशी मंगलाकृतिः ॥
विश्वमाता जगद्धात्री विशालाक्षी विरागिणी। प्रगल्भा परमोदारा परामोदा मनोमयी ॥
व्योमकेशी विमानस्था वज्रिणी वामकेश्वरी। पञ्चयज्ञप्रिया पञ्चप्रेत-मञ्चाधिशायिनी ॥
पञ्चमी पञ्चभूतेशी पञ्चसंख्योपचारिणी। शाश्वती शाश्वतैश्वर्या शर्मदा शम्भुमोहिनी ॥
धरा धरसुता धन्या धर्मिणी धर्मवर्धिनी। लोकातीता गुणातीता सर्वातीता शमात्मिका ॥
बन्धूक-कुसुम-प्रख्या बाला लीला-विनोदिनी। सुमंगली सुखकरी सुवेषाढ्या सुवासिनी ॥
सुवासिन्यर्चन-प्रीताऽऽशोभना शुद्ध-मानसा। बिन्दु-तर्पण-सन्तुष्टा पूर्वजा त्रिपुराम्बिका॥
दशमुद्रा-समाराध्या त्रिपुराश्रीवशङ्करी। ज्ञानमुद्रा ज्ञानगम्या ज्ञान-ज्ञेय-स्वरूपिणी ॥
योनिमुद्रा त्रिखण्डेशी त्रिगुणाम्बा त्रिकोणगा। अनघाऽद्भुत-चारित्रा वाञ्छितार्थ-प्रदायिनी॥180॥

अभ्यासातिशय-ज्ञाता षडध्वातीत-रूपिणी। अव्याज-करुणा-मूर्तिरज्ञान-ध्वान्त-दीपिका॥
आबाल-गोप-विदिता सर्वानुल्लंघ्य-शासना। श्रीचक्रराज-निलया श्रीमत्-त्रिपुरसुन्दरी ॥
श्रीशिवा शिव-शक्त्यैक्य-रूपिणी ललिताम्बिका ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

श्री-ललिता-अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

1. ॐ रजताचलशृंगाग्र मध्यस्थायै नमो नमः
2. ॐ हिमाचलमहावंशपावनायै "
3. ॐ शंकरार्धांगसौन्दर्यशरीरायै "
4. ॐ लसन्मरकतस्वच्छविग्रहायै "
5. ॐ महातिशयसौन्दर्यलावण्यायै "
6. ॐ शशांकशेखरप्राणवल्लभायै "
7. ॐ सदापञ्चदशात्मैक्यस्वरूपायै "
8. ॐ वज्रमाणिक्यकटककिरीटायै "
9. ॐ कस्तूरीतिलकोल्लासिनिटिलायै "
10. ॐ भस्मरेखांकितलसन्मस्तकायै "
11. ॐ विकचाम्भोरुहदललोचनायै "
12. ॐ शरच्चाम्पेयपुष्पाभनासिकायै "
13. ॐ लसत्कनकताटंकयुगलायै "
14. ॐ मणिदर्पणसंकाशकपोलायै "
15. ॐ ताम्बूलपूरितस्मेरवदनायै "
16. ॐ सुपक्वदाडिमीबीजरदनायै "
17. ॐ कम्बुपूगसमच्छायकन्धरायै "
18. ॐ स्थूलमुक्ताफलोदारसुहारायै "
19. ॐ गिरीशबद्धमांगल्यमंगलायै "
20. ॐ पद्मपाशांकुशलसत्कराब्जायै "
21. ॐ पद्मकैरवमन्दारसुमालिन्यै "
22. ॐ सुवर्णकुम्भयुग्माभसुकुचायै "
23. ॐ रमणीयचतुर्बाहुसंयुक्तायै "
24. ॐ कनकांगदकेयूरभूषितायै "
25. ॐ बृहत्सौवर्णसौन्दर्यवसनायै "
26. ॐ बृहन्नितम्बविलसज्जघनायै "
27. ॐ सौभाग्यजातशृंगारमध्यमायै "
28. ॐ दिव्यभूषणसन्दोहरञ्जितायै "
29. ॐ पारिजातगुणाधिक्यपदाब्जायै "
30. ॐ सुपद्मरागसंकाशचरणायै "
31. ॐ कामकोटिमहापद्मपीठस्थायै "
32. ॐ श्रीकण्ठनेत्रकुमुदचन्द्रिकायै "
33. ॐ सचामररमावाणीवीजितायै "
34. ॐ भक्तरक्षणदाक्षिण्यकटाक्षायै "
35. ॐ भूतेशालिंगनोद्भूतपुलकांग्यै "
36. ॐ अनंगजनकापांगवीक्षणायै "
37. ॐ ब्रह्मोपेन्द्रशिरोरत्नरञ्जितायै "
38. ॐ शचीमुख्यामरवधूसेवितायै "
39. ॐ लीलाकल्पितब्रह्माण्डमण्डलायै "
40. ॐ अमृतादिमहाशक्तिसंवृतायै "
41. ॐ एकातपत्रसाम्राज्यदायिकायै "
42. ॐ सनकादिसमाराध्यपादुकायै "
43. ॐ देवर्षिभिस्स्तूयमानवैभवायै "
44. ॐ कलशोद्भवदूर्वास पूजितायै "
45. ॐ मत्तेभवक्त्रषड्वक्त्रवत्सलायै "
46. ॐ चक्रराजमहायन्त्रमध्यवर्त्तिन्यै "
47. ॐ चिदग्निकुण्डसम्भूतसुदेहायै "
48. ॐ शशांकखण्डसंयुक्तमुकुटायै "
49. ॐ मत्तहंसवधूमन्दगमनायै "
50. ॐ वन्दारुजनसन्दोहवन्दितायै "
51. ॐ अन्तर्मुखजनानन्दफलदायै "
52. ॐ पतिव्रतांगनाभीष्टफलदायै "
53. ॐ अव्याजकरुणापुरपूरितायै "
54. ॐ निरञ्जनचिदानन्दसंयुक्तायै "
55. ॐ सहस्रसूर्यसंयुक्तप्रकाशायै "
56. ॐ रत्नचिन्तामणिगृहमध्यस्थायै "
57. ॐ हानिवृद्धिगुणाधिक्यरहितायै "
58. ॐ महापद्माटंवीमध्यनिवासायै "
59. ॐ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तीनां साक्षिभूत्यै "
60. ॐ महापापौघपापानां विनाशिन्यै "



61. ॐ दुष्टभीतिमहाभीतिभञ्जनायै ॥
62. ॐ समस्तदेवदनुजप्रेरकायै ॥
63. ॐ समस्तहृदयाम्भोजनिलयायै ॥
64. ॐ अनाहतमहापद्ममन्दिरायै ॥
65. ॐ सहस्रारसरोजातवासितायै ॥
66. ॐ पुनरावृत्तिरहितपुरस्थायै ॥
67. ॐ वाणीगायत्रीसावित्रीसन्नुतायै ॥
68. ॐ नीलारमाभूसंपूज्यपदाब्जायै ॥
69. ॐ लोपामुद्रार्चितश्रीमच्चरणायै ॥
70. ॐ सहस्ररतिसौन्दर्यशरीरायै ॥
71. ॐ भावनामात्रसन्तुष्टहृदयायै ॥
72. ॐ नतसम्पूर्णविज्ञानसिद्धिदायै ॥
73. ॐ त्रिलोचनकृतोल्लासफलदायै ॥
74. ॐ श्रीसुधाब्धिमणिद्वीपमध्यगायै ॥
75. ॐ दक्षाध्वरनिर्भेदसाधनायै ॥
76. ॐ श्रीनाथसोदरीभूतशोभितायै ॥
77. ॐ चन्द्रशेखरभक्तार्तिभञ्जनायै ॥
78. ॐ सर्वोपाधिविनिर्मुक्तचैतन्यायै ॥
79. ॐ नामपारायणाभीष्टफलदायै ॥
80. ॐ सृष्टिस्थितितिरोधानसंकल्पायै ॥
81. ॐ श्रीषोडशाक्षरीमन्त्रमध्यगायै ॥
82. ॐ अनाद्यन्तस्वयम्भूतदिव्यमूर्त्यै ॥
83. ॐ भक्तहंसपरीमुख्यवियोगायै ॥
84. ॐ मातृमण्डलसंयुक्तललितायै ॥
85. ॐ भण्डदैत्यमहासत्वनाशनायै ॥
86. ॐ क्रूरभण्डशिरच्छेदनिपुणायै ॥
87. ॐ धात्रच्युतसुराधीशसुखदायै ॥
88. ॐ चण्डमुण्डनिशुम्भादिखण्डनायै ॥
89. ॐ रक्ताक्षरक्तजिह्वादिशिक्षणायै ॥
90. ॐ महिषासुरदोर्वीर्यनिग्रहायै ॥
91. ॐ अभ्रकेशमहोत्साहकारणायै ॥
92. ॐ महेशयुक्त-नटनतत्परायै ॥
93. ॐ निजभर्तृमुखाम्भोजचिन्तनायै ॥
94. ॐ वृषभध्वजविज्ञानभावनायै ॥
95. ॐ जन्ममृत्युजरारोगभञ्जनायै ॥
96. ॐ विधेयमुक्तिविज्ञानसिद्धिदायै ॥
97. ॐ कामक्रोधादिषड्वर्गनाशनायै ॥
98. ॐ राजराजार्चितपदसरोजायै ॥
99. ॐ सर्ववेदान्तसिद्धान्तसुतत्त्वायै ॥
100. ॐ श्रीवीरभक्तविज्ञाननिधनायै ॥
101. ॐ अशेषदुष्टदनुजसूदनायै ॥
102. ॐ साक्षाच्छ्रीदक्षिणामूर्ति मनोज्ञायै ॥
103. ॐ हयमेधाग्रसम्पूज्यमहिमायै ॥
104. ॐ दक्षप्रजापतिसुतावेषाढ्यायै ॥
105. ॐ सुमबाणेक्षुकोदण्डमण्डितायै ॥
106. ॐ नित्ययौवनमांगल्यमंगलायै ॥
107. ॐ महादेवसमायुक्तमहादेव्यै ॥
108. ॐ श्री चतुर्विंशतितत्त्वैकस्वरूपायै ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

श्री-ललिता-सहस्त्र-नामावलिः

ॐ श्रीमात्रे नमः
ॐ श्रीमहाराज्ञ्यै नमः
ॐ श्रीमत्सिंहासनेश्वर्यै नमः
ॐ चिदग्निकुण्डसंभूतायै नमः
ॐ देवकार्यसमुद्यतायै नमः
ॐ उद्यद्भानुसहस्राभायै नमः
ॐ चतुर्बाहुसमन्वितायै नमः
ॐ रागस्वरूपपाशाढ्यायै नमः
ॐ क्रोधाकारांकुशोज्ज्वलायै नमः
ॐ मनोरूपेक्षुकोदण्डायै नमः 10
ॐ पञ्चतन्मात्रसायकायै नमः
ॐ निजारुण-प्रभापूर-मज्जद्-ब्रह्माण्ड-मण्डलायै नमः
ॐ चम्पकाशोक-पुन्नाग-सौगन्धिक-लसत्कचायै नमः
ॐ कुरुविन्दमणि-श्रेणी-कनत्कोटीर-मण्डितायै नमः
ॐ अष्टमीचन्द्र-विभ्राजत्-अलक-स्थल-शोभितायै नमः
ॐ मुखचन्द्र-कलंकाभ-मृगनाभि-विशेषकायै नमः
ॐ वदनस्मर-मांगल्य-गृहतोरण-चिल्लिकायै नमः
ॐ वक्त्रलक्ष्मी-परीवाह-चलन्मीनाभ-लोचनायै नमः
ॐ नवचम्पक-पुष्पाभ-नासादण्ड-विराजितायै नमः
ॐ ताराकान्ति-तिरस्कारि-नासाभरण-भासुरायै नमः 20
ॐ कदम्बमञ्जरी-क्लृप्त-कर्णपूर-मनोहरायै नमः
ॐ ताटंक-युगली-भूत-तपनोडुप-मण्डलायै नमः
ॐ पद्मराग-शिलादर्श-परिभावि-कपोलभुवे नमः
ॐ नवविद्रुम-बिम्बश्री-न्यक्कारि-रदनच्छदायै नमः
ॐ शुद्धविद्यांकुराकार-द्विजपंक्ति-द्वयोज्ज्वलायै नमः
ॐ कर्पूरवीटिकामोद-समाकर्षि-दिग्दन्तरायै नमः
ॐ निज-संलाप-माधुर्य-विनिर्भर्त्सित-कच्छप्यै नमः
ॐ मन्दस्मित-प्रभापूर-मज्जत्कामेश-मानसायै नमः
ॐ अनाकलित-सादृश्य-चिबुकश्री-विराजितायै नमः
ॐ कामेश-बद्ध-मांगल्य-सूत्र-शोभित-कन्धरायै नमः 30
ॐ कनकांगद-केयूर-कमनीय-भुजान्वितायै नमः
ॐ रत्नग्रैवेय-चिन्ताकल्लोल-मुक्ता-फलान्वितायै नमः
ॐ कामेश्वर-प्रेमरत्न-मणि-प्रतिपन्न-स्तन्यै नमः
ॐ नाभ्यालवाल-रोमालि-लता-फल-कुचद्वय्यै नमः
ॐ लक्ष्यरोम-लताधारता-समुन्नेय-मध्यमायै नमः

ॐ स्तनभार-दलन्मध्य-पट्टबन्ध-
वलित्रयायै नमः
ॐ अरुणारुणकौसुम्भ-वस्त्र-भास्वत्-
कटीतट्यै नमः
ॐ रत्न-किंकिणिका-रम्य-रशना-दाम-
भूषितायै नमः
ॐ कामेश-ज्ञात-सौभाग्य-मार्दवोरु-
द्वयान्वितायै नमः
ॐ माणिक्य-मुकुटाकार-जानुद्वय-
विराजितायै नमः 40
ॐ इन्द्रगोप-परिक्षिप्तस्मरतूणाभ-
जंघिकायै नमः
ॐ गूढगुल्फायै नमः
ॐ कूर्मपृष्ठ-जयिष्णु-प्रपदान्वितायै
नमः
ॐ नखदीधिति-सम्छन्न-नमज्जन-
तमोगुणायै नमः
ॐ पदद्वय-प्रभाजाल-पराकृत-
सरोरुहायै नमः
ॐ शिञ्जान-मणिमञ्जीर-मण्डित-
श्रीपदाम्बुजायै नमः
ॐ मराली-मन्दगमनायै नमः
ॐ महालावण्य-शेवधये नमः
ॐ सर्वारुणायै नमः
ॐ अनवद्यांग्यै नमः 50
ॐ सर्वाभरण-भूषितायै नमः
ॐ शिव-कामेश्वराङ्कस्थायै नमः
ॐ शिवायै नमः
ॐ स्वाधीनवल्लभायै नमः
ॐ सुमेरु-मध्य-शृंगस्थायै नमः
ॐ श्रीमन्नगरनायिकायै नमः
ॐ चिन्तामणिगृहान्तस्थायै नमः
ॐ पञ्च-ब्रह्मासन-स्थितायै नमः
ॐ महापद्माटवी-संस्थायै नमः
ॐ कदम्बवन-वासिन्यै नमः 60
ॐ सुधासागर-मध्यस्थायै नमः
ॐ कामाक्ष्यै नमः
ॐ कामदायिन्यै नमः
ॐ देवर्षि-गण-संघात-
स्तूयमानात्म-वैभवायै नमः
ॐ भण्डासुर-वधोद्युक्त-
शक्तिसेना-समन्वितायै नमः
ॐ सम्पत्करी-समारूढ-सिंधुर-
व्रज-सेवितायै नमः
ॐ अश्वारूढाधिष्ठिताश्व-कोटि-
कोटिभिरावृतायै नमः
ॐ चक्रराज-रथारूढ-सर्वायुध-
परिष्कृतायै नमः
ॐ गेयचक्र-रथारूढ-मन्त्रिणी-
परिसेवितायै नमः
ॐ किरिचक्र-रथारूढ-दण्डनाथा-
पुरस्कृतायै नमः 70
ॐ ज्वालामालिनिकाक्षिप्त-
वह्निप्राकार-मध्यगायै नमः
ॐ भण्डसैन्य-वधोद्युक्त-शक्ति-
विक्रम-हर्षितायै नमः
ॐ नित्या-पराक्रमाटोप-निरीक्षण-
समुत्सुकायै नमः
ॐ भण्डपुत्र-वधोद्युक्त-बाला-
विक्रम-नन्दितायै नमः
ॐ मन्त्रिण्यम्बा-विरचित-विषंग-
वध-तोषितायै नमः
ॐ विशुक्र-प्राणहरण-वाराही-वीर्य-
नन्दितायै नमः
ॐ कामेश्वर-मुखालोक-कल्पित-
श्रीगणेश्वरायै नमः

ॐ महागणेश-निर्भिन्न-विघ्नयन्त्र-
प्रहर्षितायै नमः
ॐ भण्डासुरेन्द्र-निर्मुक्त-शस्त्र-
प्रत्यस्त्र-वर्षिण्यै नमः
ॐ करांगुलि-नखोत्पन्न-नारायण-
दशाकृत्यै नमः 80
ॐ महापाशुपतास्त्राग्नि-निर्दग्धासुर-
सैनिकायै नमः
ॐ कामेश्वरास्त्र-निर्दग्ध-सभण्डासुर-
शून्यकायै नमः
ॐ ब्रह्मोपेन्द्र-महेन्द्रादि-देव-संस्तुत-
वैभवायै नमः
ॐ हर-नेत्राग्नि-संदग्ध-काम-
संजीवनौषध्यै नमः
ॐ श्रीमद्वाग्भव-कूटैक-स्वरूप-मुख-
पंकजायै नमः
ॐ कण्ठाधः-कटिपर्यन्त-मध्यकूट-
स्वरूपिण्यै नमः
ॐ शक्तिकूटैकतापन्न-कट्यधोभाग-
धारिण्यै नमः
ॐ मूलमन्त्रात्मिकायै नमः
ॐ मूलकूटत्रय-कलेवरायै नमः
ॐ कुलामृतैक-रसिकायै नमः 90
ॐ कुलसंकेत-पालिन्यै नमः
ॐ कुलांगनायै नमः
ॐ कुलान्तस्थायै नमः
ॐ कौलिन्यै नमः
ॐ कुलयोगिन्यै नमः
ॐ अकुलायै नमः
ॐ समयान्तस्थायै नमः
ॐ समयाचार-तत्परायै नमः
ॐ मूलाधारैक-निलयायै नमः
ॐ ब्रह्मग्रन्थि-विभेदिन्यै नमः 100

ॐ मणिपूरान्तरुदितायै नमः
ॐ विष्णुग्रन्थि-विभेदिन्यै नमः
ॐ आज्ञाचक्रान्तरालस्थायै नमः
ॐ रुद्रग्रन्थि-विभेदिन्यै नमः
ॐ सहस्राराम्बुजारूढायै नमः
ॐ सुधासाराभिवर्षिण्यै नमः
ॐ तडिल्लतासमरुच्यै नमः
ॐ षट्चक्रोपरि-संस्थितायै नमः
ॐ महासक्त्यै नमः
ॐ कुण्डलिन्यै नमः 110
ॐ बिसतन्तु-तनीयस्यै नमः
ॐ भवान्यै नमः
ॐ भावनागम्यायै नमः
ॐ भवारण्यकुठारिकायै नमः
ॐ भद्रप्रियायै नमः
ॐ भद्रमूर्त्तये नमः
ॐ भक्तसौभाग्यदायिन्यै नमः
ॐ भक्तिप्रियायै नमः
ॐ भक्तिगम्यायै नमः
ॐ भक्तिवश्यायै नमः 120
ॐ भयापहायै नमः
ॐ शाम्भव्यै नमः
ॐ शारदाराध्यायै नमः
ॐ शर्वाण्यै नमः
ॐ शर्मदायिन्यै नमः
ॐ शाङ्कर्यै नमः
ॐ श्रीकर्यै नमः
ॐ साध्व्यै नमः
ॐ शरच्चन्द्रनिभाननायै नमः
ॐ शातोदर्यै नमः 130
ॐ शान्तिमत्यै नमः
ॐ निराधारायै नमः
ॐ निरञ्जनायै नमः

ॐ निर्लेपायै नमः
ॐ निर्मलायै नमः
ॐ नित्यायै नमः
ॐ निराकारायै नमः
ॐ निराकुलायै नमः
ॐ निर्गुणायै नमः
ॐ निष्कलायै नमः 140
ॐ शान्तायै नमः
ॐ निष्कामायै नमः
ॐ निरुपप्लवायै नमः
ॐ नित्यमुक्तायै नमः
ॐ निर्विकारायै नमः
ॐ निष्प्रपञ्चायै नमः
ॐ निराश्रयायै नमः
ॐ नित्यशुद्धायै नमः
ॐ नित्यबुद्धायै नमः
ॐ निरवद्यायै नमः 150
ॐ निरन्तरायै नमः
ॐ निष्कारणायै नमः
ॐ निष्कलङ्कायै नमः
ॐ निरुपाधये नमः
ॐ निरीश्वरायै नमः
ॐ नीरागायै नमः
ॐ रागमथन्यै नमः
ॐ निर्मदायै नमः
ॐ मदनाशिन्यै नमः
ॐ निश्चिन्तायै नमः 160
ॐ निरहंकारायै नमः
ॐ निर्मोहायै नमः
ॐ मोहनाशिन्यै नमः
ॐ निर्ममायै नमः
ॐ ममताहन्त्र्यै नमः
ॐ निष्पापायै नमः
ॐ पापनाशिन्यै नमः
ॐ निष्क्रोधायै नमः
ॐ क्रोधशमन्यै नमः
ॐ निर्लोभायै नमः 170
ॐ लोभनाशिन्यै नमः
ॐ निःसंशयायै नमः
ॐ संशयघ्न्यै नमः
ॐ निर्भवायै नमः
ॐ भवनाशिन्यै नमः
ॐ निर्विकल्पायै नमः
ॐ निराबाधायै नमः
ॐ निर्भेदायै नमः
ॐ भेदनाशिन्यै नमः
ॐ निर्नाशायै नमः 180
ॐ मृत्युमथन्यै नमः
ॐ निष्क्रियायै नमः
ॐ निष्परिग्रहायै नमः
ॐ निस्तुलायै नमः
ॐ नीलचिकुरायै नमः
ॐ निरपायायै नमः
ॐ निरत्ययायै नमः
ॐ दुर्लभायै नमः
ॐ दुर्गमायै नमः
ॐ दुर्गायै नमः 190
ॐ दुःखहन्त्र्यै नमः
ॐ सुखप्रदायै नमः
ॐ दुष्टदूरायै नमः
ॐ दुराचारशमन्यै नमः
ॐ दोषवर्जितायै नमः
ॐ सर्वज्ञायै नमः
ॐ सान्द्रकरुणायै नमः
ॐ समानाधिकवर्जितायै नमः
ॐ सर्वशक्तिमय्यै नमः

ॐ सर्वमंगलायै नमः 200
ॐ सद्गतिप्रदायै नमः
ॐ सर्वेश्वर्यै नमः
ॐ सर्वमय्यै नमः
ॐ सर्वमन्त्रस्वरूपिण्यै नमः
ॐ सर्वयन्त्रात्मिकायै नमः
ॐ सर्वतन्त्ररूपायै नमः
ॐ मनोन्मन्यै नमः
ॐ माहेश्वर्यै नमः
ॐ महादेव्यै नमः
ॐ महालक्ष्म्यै नमः 210
ॐ मृडप्रियायै नमः
ॐ महारूपायै नमः
ॐ महापूज्यायै नमः
ॐ महापातकनाशिन्यै नमः
ॐ महामायायै नमः
ॐ महासत्त्वायै नमः
ॐ महाशक्त्यै नमः
ॐ महारत्यै नमः
ॐ महाभोगायै नमः
ॐ महैश्वर्यायै नमः 220
ॐ महावीर्यायै नमः
ॐ महाबलायै नमः
ॐ महाबुद्ध्यै नमः
ॐ महासिद्ध्यै नमः
ॐ महायोगेश्वरेश्वर्यै नमः
ॐ महातन्त्रायै नमः
ॐ महामन्त्रायै नमः
ॐ महायन्त्रायै नमः
ॐ महासनायै नमः
ॐ महायागक्रमाराध्यायै नमः 230
ॐ महाभैरवपूजितायै नमः
ॐ महेश्वरमहाकल्प-महाताण्डव-साक्षिण्यै नमः
ॐ महाकामेशमहिष्यै नमः
ॐ महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः
ॐ चतु:षष्ट्युपचाराढ्यायै नमः
ॐ चतु:षष्टिकलामय्यै नमः
ॐ महाचतु:षष्टिकोटि-योगिनीगण-सेवितायै नमः
ॐ मनुविद्यायै नमः
ॐ चन्द्रविद्यायै नमः
ॐ चन्द्रमण्डलमध्यगायै नमः 240
ॐ चारुरूपायै नमः
ॐ चारुहासायै नमः
ॐ चारुचन्द्रकलाधरायै नमः
ॐ चराचरजगन्नाथायै नमः
ॐ चक्रराजनिकेतनायै नमः
ॐ पार्वत्यै नमः
ॐ पद्मनयनायै नमः
ॐ पद्मरागसमप्रभायै नमः
ॐ पञ्चप्रेतासनासीनायै नमः
ॐ पञ्चब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः 250
ॐ चिन्मय्यै नमः
ॐ परमानन्दायै नमः
ॐ विज्ञानघनरूपिण्यै नमः
ॐ ध्यानध्यातृध्येयरूपायै नमः
ॐ धर्माधर्मविवर्जितायै नमः
ॐ विश्वरूपायै नमः
ॐ जागरिण्यै नमः
ॐ स्वपन्त्यै नमः
ॐ तैजसात्मिकायै नमः
ॐ सुप्तायै नमः 260
ॐ प्राज्ञात्मिकायै नमः
ॐ तुर्यायै नमः
ॐ सर्वावस्थाविवर्जितायै नमः
ॐ सृष्टिकर्त्र्यै नमः

ॐ ब्रह्मरूपायै नमः
ॐ गोप्त्र्यै नमः
ॐ गोविन्दरूपिण्यै नमः
ॐ संहारिण्यै नमः
ॐ रुद्ररूपायै नमः
ॐ तिरोधानकर्यै नमः 270
ॐ ईश्वर्यै नमः
ॐ सदाशिवायै नमः
ॐ अनुग्रहदायै नमः
ॐ पञ्चकृत्यपरायणायै नमः
ॐ भानुमण्डलमध्यस्थायै नमः
ॐ भैरव्यै नमः
ॐ भगमालिन्यै नमः
ॐ पद्मासनायै नमः
ॐ भगवत्यै नमः
ॐ पद्मनाभसहोदर्यै नमः 280
ॐ उन्मेषनिमिषोत्पन्नविपन्न-
भुवनावल्यै नमः
ॐ सहस्रशीर्षवदनायै नमः
ॐ सहस्राक्ष्यै नमः
ॐ सहस्रपदे नमः
ॐ आब्रह्मकीटजनन्यै नमः
ॐ वर्णाश्रमविधायिन्यै नमः
ॐ निजाज्ञारूपनिगमायै नमः
ॐ पुण्यापुण्यफलप्रदायै नमः
ॐ श्रुतिसीमन्तसिन्दूरीकृत-
पादाब्जधूलिकायै नमः
ॐ सकलागमसन्दोहशुक्ति-
सम्पुटमौक्तिकायै नमः 290
ॐ पुरुषार्थप्रदायै नमः
ॐ पूर्णायै नमः
ॐ भोगिन्यै नमः
ॐ भुवनेश्वर्यै नमः
ॐ अम्बिकायै नमः
ॐ अनादिनिधनायै नमः
ॐ हरिब्रह्मेन्द्रसेवितायै नमः
ॐ नारायण्यै नमः
ॐ नादरूपायै नमः
ॐ नामरूपविवर्जितायै नमः 300
ॐ ह्रीङ्कार्यै नमः
ॐ ह्रीमत्यै नमः
ॐ हृद्यायै नमः
ॐ हेयोपादेयवर्जितायै नमः
ॐ राजराजार्चितायै नमः
ॐ राज्ञ्यै नमः
ॐ रम्यायै नमः
ॐ राजीवलोचनायै नमः
ॐ रञ्जन्यै नमः
ॐ रमण्यै नमः 310
ॐ रस्यायै नमः
ॐ रणत्किंकिणि-मेखलायै नमः
ॐ रमायै नमः
ॐ राकेन्दुवदनायै नमः
ॐ रतिरूपायै नमः
ॐ रतिप्रियायै नमः
ॐ रक्षाकर्यै नमः
ॐ राक्षसघ्न्यै नमः
ॐ रामायै नमः
ॐ रमणलम्पटायै नमः 320
ॐ काम्यायै नमः
ॐ कामकलारूपायै नमः
ॐ कदम्बकुसुमप्रियायै नमः
ॐ कल्याण्यै नमः
ॐ जगतीकन्दायै नमः
ॐ करुणारससागरायै नमः
ॐ कलावत्यै नमः

ॐ कलालापायै नमः
ॐ कान्तायै नमः
ॐ कादम्बरीप्रियायै नमः 330
ॐ वरदायै नमः
ॐ वामनयनायै नमः
ॐ वारुणीमदविह्वलायै नमः
ॐ विश्वाधिकायै नमः
ॐ वेदवेद्यायै नमः
ॐ विन्ध्याचलनिवासिन्यै नमः
ॐ विधात्र्यै नमः
ॐ वेदजनन्यै नमः
ॐ विष्णुमायायै नमः
ॐ विलासिन्यै नमः 340
ॐ क्षेत्रस्वरूपायै नमः
ॐ क्षेत्रेश्यै नमः
ॐ क्षेत्रक्षेत्रज्ञपालिन्यै नमः
ॐ क्षयवृद्धिविनिर्मुक्तायै नमः
ॐ क्षेत्रपालसमर्चितायै नमः
ॐ विजयायै नमः
ॐ विमलायै नमः
ॐ वन्द्यायै नमः
ॐ वन्दारुजनवत्सलायै नमः
ॐ वाग्वादिन्यै नमः 350
ॐ वामकेश्यै नमः
ॐ वह्निमण्डलवासिन्यै नमः
ॐ भक्तिमत् कल्पलतिकायै नमः
ॐ पशुपाशविमोचिन्यै नमः
ॐ संहृताशेषपाषण्डायै नमः
ॐ सदाचारप्रवर्तिकायै नमः
ॐ तापत्रयाग्निसन्तप्त-
समाह्लादनचन्द्रिकायै नमः
ॐ तरुण्यै नमः
ॐ तापसाराध्यायै नमः
ॐ तनुमध्यायै नमः 360
ॐ तमोपहायै नमः
ॐ चित्यै नमः
ॐ तत्पदलक्ष्यार्थायै नमः
ॐ चिदेकरसरूपिण्यै नमः
ॐ स्वात्मानन्दलवीभूत-
ब्रह्माद्यानन्दसन्तत्यै नमः
ॐ परायै नमः
ॐ प्रत्यक्चितिरूपायै नमः
ॐ पश्यन्त्यै नमः
ॐ परदेवतायै नमः
ॐ मध्यमायै नमः 370
ॐ वैखरीरूपायै नमः
ॐ भक्तमानसहंसिकायै नमः
ॐ कामेश्वरप्राणनाड्यै नमः
ॐ कृतज्ञायै नमः
ॐ कामपूजितायै नमः
ॐ शृंगाररससम्पूर्णायै नमः
ॐ जयायै नमः
ॐ जालन्धरस्थितायै नमः
ॐ ओड्याणपीठ-निलयायै नमः
ॐ बिन्दुमण्डलवासिन्यै नमः 380
ॐ रहोयागक्रमाराध्यायै नमः
ॐ रहस्तर्पणतर्पितायै नमः
ॐ सद्यःप्रसादिन्यै नमः
ॐ विश्वसाक्षिण्यै नमः
ॐ साक्षिवर्जितायै नमः
ॐ षडंगदेवतायुक्तायै नमः
ॐ षाड्गुण्यपरिपूरितायै नमः
ॐ नित्यक्लिन्नायै नमः
ॐ निरुपमायै नमः
ॐ निर्वाणसुखदायिन्यै नमः 390
ॐ नित्याषोडशिका-रूपायै नमः

ॐ श्रीकण्ठार्धशरीरिण्यै नमः
ॐ प्रभावत्यै नमः
ॐ प्रभारूपायै नमः
ॐ प्रसिद्धायै नमः
ॐ परमेश्वर्यै नमः
ॐ मूलप्रकृत्यै नमः
ॐ अव्यक्तायै नमः
ॐ व्यक्ताव्यक्त-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ व्यापिन्यै नमः 400
ॐ विविधाकारायै नमः
ॐ विद्याविद्यास्वरूपिण्यै नमः
ॐ महाकामेशनयन-
कुमुदाह्लादकौमुद्यै नमः
ॐ भक्तहार्दतमोभेद-
भानुमद्भानुसन्तत्यै नमः
ॐ शिवदूत्यै नमः
ॐ शिवाराध्यायै नमः
ॐ शिवमूर्त्यै नमः
ॐ शिवंकर्यै नमः
ॐ शिवप्रियायै नमः
ॐ शिवपरायै नमः 410
ॐ शिष्टेष्टायै नमः
ॐ शिष्टपूजितायै नमः
ॐ अप्रमेयायै नमः
ॐ स्वप्रकाशायै नमः
ॐ मनोवाचामगोचरायै नमः
ॐ चिच्छक्त्यै नमः
ॐ चेतनारूपायै नमः
ॐ जडशक्त्यै नमः
ॐ जडात्मिकायै नमः
ॐ गायत्र्यै नमः 420
ॐ व्याहृत्यै नमः
ॐ संध्यायै नमः
ॐ द्विजवृन्दनिषेवितायै नमः
ॐ तत्त्वासनायै नमः
ॐ तस्मै नमः
ॐ तुभ्यं नमः
ॐ अय्यै नमः
ॐ पञ्चकोशान्तर-स्थितायै नमः
ॐ निःसीममहिम्ने नमः
ॐ नित्ययौवनायै नमः 430
ॐ मदशालिन्यै नमः
ॐ मदघूर्णितरक्ताक्ष्यै नमः
ॐ मदपाटलगण्डभुवे नमः
ॐ चन्दनद्रवदिग्धाङ्ग्यै नमः
ॐ चाम्पेयकुसुमप्रियायै नमः
ॐ कुशलायै नमः
ॐ कोमलाकारायै नमः
ॐ कुरुकुल्लायै नमः
ॐ कुलेश्वर्यै नमः
ॐ कुलकुण्डालयायै नमः 440
ॐ कौलमार्गतत्पर-सेवितायै नमः
ॐ कुमारगणनाथाम्बायै नमः
ॐ तुष्ट्यै नमः
ॐ पुष्ट्यै नमः
ॐ मत्यै नमः
ॐ धृत्यै नमः
ॐ शान्त्यै नमः
ॐ स्वस्तिमत्यै नमः
ॐ कान्त्यै नमः
ॐ नन्दिन्यै नमः 450
ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः
ॐ तेजोवत्यै नमः
ॐ त्रिनयनायै नमः
ॐ लोलाक्षीकामरूपिण्यै नमः
ॐ मालिन्यै नमः

ॐ हंसिन्यै नमः
ॐ मात्रे नमः
ॐ मलयाचलवासिन्यै नमः
ॐ सुमुख्यै नमः
ॐ नलिन्यै नमः 460
ॐ सुभ्रुवे नमः
ॐ शोभनायै नमः
ॐ सुरनायिकायै नमः
ॐ कालकण्ठ्यै नमः
ॐ कान्तिमत्यै नमः
ॐ क्षोभिण्यै नमः
ॐ सूक्ष्मरूपिण्यै नमः
ॐ वज्रेश्वर्यै नमः
ॐ वामदेव्यै नमः
ॐ वयोवस्थाविवर्जितायै नमः 470
ॐ सिद्धेश्वर्यै नमः
ॐ सिद्धविद्यायै नमः
ॐ सिद्धमात्रे नमः
ॐ यशस्विन्यै नमः
ॐ विशुद्धिचक्रनिलयायै नमः
ॐ आरक्तवर्णायै नमः
ॐ त्रिलोचनायै नमः
ॐ खट्वांगादिप्रहरणायै नमः
ॐ वदनैकसमन्वितायै नमः
ॐ पायसान्नप्रियायै नमः 480
ॐ त्वक्स्थायै नमः
ॐ पशुलोकभयंकर्यै नमः
ॐ अमृतादिमहाशक्ति-संवृतायै नमः
ॐ डाकिनीश्वर्यै नमः
ॐ अनाहताब्जनिलयायै नमः
ॐ श्यामाभायै नमः
ॐ वदनद्वयायै नमः
ॐ दंष्ट्रोज्ज्वलायै नमः
ॐ अक्षमालादिधरायै नमः
ॐ रुधिरसंस्थितायै नमः 490
ॐ कालरात्र्यादि-शक्त्यौघवृतायै नमः
ॐ स्निग्धौदनप्रियायै नमः
ॐ महावीरेन्द्रवरदायै नमः
ॐ राकिण्यम्बा-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ मणिपूराब्ज-निलयायै नमः
ॐ वदनत्रयसंयुतायै नमः
ॐ वज्रादिकायुधोपेतायै नमः
ॐ डामर्यादिभिरावृतायै नमः
ॐ रक्तवर्णायै नमः
ॐ मांसनिष्ठायै नमः 500
ॐ गुडान्नप्रीतमानसायै नमः
ॐ समस्तभक्तसुखदायै नमः
ॐ लाकिन्यम्बा-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ स्वाधिष्ठानाम्बुज-गतायै नमः
ॐ चतुर्वक्त्रमनोहरायै नमः
ॐ शूलाद्यायुधसम्पन्नायै नमः
ॐ पीतवर्णायै नमः
ॐ अतिगर्वितायै नमः
ॐ मेदोनिष्ठायै नमः
ॐ मधुप्रीतायै नमः 510
ॐ बन्धिन्यादि-समन्वितायै नमः
ॐ दध्यन्नासक्तहृदयायै नमः
ॐ काकिनीरूपधारिण्यै नमः
ॐ मूलाधाराम्बुजारूढायै नमः
ॐ पञ्चवक्त्रायै नमः
ॐ अस्थिसंस्थितायै नमः
ॐ अंकुशादिप्रहरणायै नमः
ॐ वरदादिनिषेवितायै नमः
ॐ मुद्गौदनासक्तचित्तायै नमः
ॐ साकिन्यम्बा-स्वरूपिण्यै नमः 520
ॐ आज्ञाचक्राब्ज-निलयायै नमः

ॐ शुक्लवर्णायै नमः
ॐ षडाननायै नमः
ॐ मज्जासंस्थायै नमः
ॐ हंसवतीमुख्यशक्ति-समन्वितायै नमः
ॐ हरिद्रान्नैकरसिकायै नमः
ॐ हाकिनीरूपधारिण्यै नमः
ॐ सहस्रदलपद्मस्थायै नमः
ॐ सर्ववर्णोपशोभितायै नमः
ॐ सर्वायुधधरायै नमः 530
ॐ शुक्लसंस्थितायै नमः
ॐ सर्वतोमुख्यै नमः
ॐ सर्वौदनप्रीतचित्तायै नमः
ॐ याकिन्यम्बा-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ स्वाहायै नमः
ॐ स्वधायै नमः
ॐ अमत्यै नमः
ॐ मेधायै नमः
ॐ श्रुत्यै नमः
ॐ स्मृत्यै नमः 540
ॐ अनुत्तमायै नमः
ॐ पुण्यकीर्त्यै नमः
ॐ पुण्यलभ्यायै नमः
ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनायै नमः
ॐ पुलोमजार्चितायै नमः
ॐ बन्धमोचन्यै नमः
ॐ बन्धुरालकायै नमः
ॐ विमर्शरूपिण्यै नमः
ॐ विद्यायै नमः
ॐ वियदादिजगत्प्रसुवे नमः 550
ॐ सर्वव्याधिप्रशमन्यै नमः
ॐ सर्वमृत्युनिवारिण्यै नमः
ॐ अग्रगण्यायै नमः
ॐ अचिन्त्यरूपायै नमः
ॐ कलिकल्मषनाशिन्यै नमः
ॐ कात्यायन्यै नमः
ॐ कालहन्त्र्यै नमः
ॐ कमलाक्षनिषेवितायै नमः
ॐ ताम्बूलपूरितमुख्यै नमः
ॐ दाडिमीकुसुमप्रभायै नमः 560
ॐ मृगाक्ष्यै नमः
ॐ मोहिन्यै नमः
ॐ मुख्यायै नमः
ॐ मृडान्यै नमः
ॐ मित्ररूपिण्यै नमः
ॐ नित्यतृप्तायै नमः
ॐ भक्तनिधये नमः
ॐ नियन्त्र्यै नमः
ॐ निखिलेश्वर्यै नमः
ॐ मैत्र्यादिवासनालभ्यायै नमः 570
ॐ महाप्रलयसाक्षिण्यै नमः
ॐ परस्यै शक्त्यै नमः
ॐ परायै निष्ठायै नमः
ॐ प्रज्ञानघनरूपिण्यै नमः
ॐ माध्वीपानालसायै नमः
ॐ मत्तायै नमः
ॐ मातृकावर्णरूपिण्यै नमः
ॐ महाकैलासनिलयायै नमः
ॐ मृणालमृदुदोर्लतायै नमः
ॐ महनीयायै नमः 580
ॐ दयामूर्त्यै नमः
ॐ महासाम्राज्यशालिन्यै नमः
ॐ आत्मविद्यायै नमः
ॐ महाविद्यायै नमः
ॐ श्रीविद्यायै नमः
ॐ कामसेवितायै नमः
ॐ श्रीषोडशाक्षरीविद्यायै नमः

ॐ त्रिकूटायै नमः
ॐ कामकोटिकायै नमः
ॐ कटाक्षकिंकिरीभूत-कमलाकोटि-
सेवितायै नमः 590
ॐ शिरःस्थितायै नमः
ॐ चन्द्रनिभायै नमः
ॐ भालस्थायै नमः
ॐ इन्द्रधनुःप्रभायै नमः
ॐ हृदयस्थायै नमः
ॐ रविप्रख्यायै नमः
ॐ त्रिकोणान्तर-दीपिकायै नमः
ॐ दाक्षायण्यै नमः
ॐ दैत्यहन्त्र्यै नमः
ॐ दक्षयज्ञविनाशिन्यै नमः 600
ॐ दरान्दोलितदीर्घाक्ष्यै नमः
ॐ दरहासोज्ज्वलन्मुख्यै नमः
ॐ गुरुमूर्त्तये नमः
ॐ गुणनिधये नमः
ॐ गोमात्रे नमः
ॐ गुहजन्मभुवे नमः
ॐ देवेश्यै नमः
ॐ दण्डनीतिस्थायै नमः
ॐ दहराकाशरूपिण्यै नमः
ॐ प्रतिपन्मुख्यराकान्ततिथि-
मण्डलपूजितायै नमः 610
ॐ कलात्मिकायै नमः
ॐ कलानाथायै नमः
ॐ काव्यालाप-विनोदिन्यै नमः
ॐ सचामर रमावाणी-सव्यदक्षिण-
सेवितायै नमः
ॐ आदिशक्त्यै नमः
ॐ अमेयायै नमः
ॐ आत्मने नमः
ॐ परमायै नमः
ॐ पावनाकृतये नमः
ॐ अनेककोटिब्रह्माण्ड-जनन्यै नमः 620
ॐ दिव्यविग्रहायै नमः
ॐ क्लींकार्यै नमः
ॐ केवलायै नमः
ॐ गुह्यायै नमः
ॐ कैवल्यपददायिन्यै नमः
ॐ त्रिपुरायै नमः
ॐ त्रिजगद्वन्द्यायै नमः
ॐ त्रिमूर्त्तये नमः
ॐ त्रिदशेश्वर्यै नमः
ॐ त्र्यक्षर्यै नमः 630
ॐ दिव्यगन्धाढ्यायै नमः
ॐ सिन्दूरतिलकाञ्चितायै नमः
ॐ उमायै नमः
ॐ शैलेन्द्रतनयायै नमः
ॐ गौर्यै नमः
ॐ गन्धर्वसेवितायै नमः
ॐ विश्वगर्भायै नमः
ॐ स्वर्णगर्भायै नमः
ॐ अवरदायै नमः
ॐ वागधीश्वर्यै नमः 640
ॐ ध्यानगम्यायै नमः
ॐ अपरिच्छेद्यायै नमः
ॐ ज्ञानदायै नमः
ॐ ज्ञानविग्रहायै नमः
ॐ सर्ववेदान्तसंवेद्यायै नमः
ॐ सत्यानन्दस्वरूपिण्यै नमः
ॐ लोपामुद्रार्चितायै नमः
ॐ लीलाक्लृप्तब्रह्माण्ड-मण्डलायै नमः
ॐ अदृश्यायै नमः
ॐ दृश्यरहितायै नमः 650

ॐ विज्ञात्र्यै नमः
ॐ वेद्यवर्जितायै नमः
ॐ योगिन्यै नमः
ॐ योगदायै नमः
ॐ योग्यायै नमः
ॐ योगानन्दायै नमः
ॐ युगन्धरायै नमः
ॐ इच्छाशक्ति-ज्ञानशक्ति-
क्रियाशक्ति-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ सर्वाधारायै नमः
ॐ सुप्रतिष्ठायै नमः 660
ॐ सदसद्रूपधारिण्यै नमः
ॐ अष्टमूर्त्यै नमः
ॐ अजाजेत्र्यै नमः
ॐ लोकयात्राविधायिन्यै नमः
ॐ एकाकिन्यै नमः
ॐ भूमरूपायै नमः
ॐ निर्द्वैतायै नमः
ॐ द्वैतवर्जितायै नमः
ॐ अन्नदायै नमः
ॐ वसुदायै नमः 670
ॐ वृद्धायै नमः
ॐ ब्रह्मात्मैक्य-स्वरूपिण्यै नमः
ॐ बृहत्यै नमः
ॐ ब्राह्मण्यै नमः
ॐ ब्राह्म्यै नमः
ॐ ब्रह्मानन्दायै नमः
ॐ बलिप्रियायै नमः
ॐ भाषारूपायै नमः
ॐ बृहत्सेनायै नमः
ॐ भावाभावविवर्जितायै नमः 680
ॐ सुखाराध्यायै नमः
ॐ शुभकर्यै नमः
ॐ शोभनायै सुलभायै-गत्यै नमः
ॐ राजराजेश्वर्यै नमः
ॐ राज्यदायिन्यै नमः
ॐ राज्यवल्लभायै नमः
ॐ राजत्कृपायै नमः
ॐ राजपीठनिवेशित-निजाश्रितायै नमः
ॐ राज्यलक्ष्म्यै नमः
ॐ कोशनाथायै नमः 690
ॐ चतुरंगबलेश्वर्यै नमः
ॐ साम्राज्यदायिन्यै नमः
ॐ सत्यसन्धायै नमः
ॐ सागरमेखलायै नमः
ॐ दीक्षितायै नमः
ॐ दैत्यशमन्यै नमः
ॐ सर्वलोकवशंकर्यै नमः
ॐ सर्वार्थदात्र्यै नमः
ॐ सावित्र्यै नमः
ॐ सच्चिदानन्दरूपिण्यै नमः 700
ॐ देशकालापरिच्छिन्नायै नमः
ॐ सर्वगायै नमः
ॐ सर्वमोहिन्यै नमः
ॐ सरस्वत्यै नमः
ॐ शास्त्रमय्यै नमः
ॐ गुहाम्बायै नमः
ॐ गुह्यरूपिण्यै नमः
ॐ सर्वोपाधिविनिर्मुक्तायै नमः
ॐ सदाशिवपतिव्रतायै नमः
ॐ सम्प्रदायेश्वर्यै नमः 710
ॐ साधुने नमः
ॐ यै नमः
ॐ गुरुमण्डलरूपिण्यै नमः
ॐ कुलोत्तीर्णायै नमः
ॐ भगाराध्यायै नमः

ॐ मायायै नमः
ॐ मधुमत्यै नमः
ॐ मह्यै नमः
ॐ गणाम्बायै नमः
ॐ गुह्यकाराध्यायै नमः 720
ॐ कोमलांग्यै नमः
ॐ गुरुप्रियायै नमः
ॐ स्वतन्त्रायै नमः
ॐ सर्वतन्त्रेश्यै नमः
ॐ दक्षिणामूर्त्तिरूपिण्यै नमः
ॐ सनकादिसमाराध्यायै नमः
ॐ शिवज्ञानप्रदायिन्यै नमः
ॐ चित्कलायै नमः
ॐ आनन्दकलिकायै नमः
ॐ प्रेमरूपायै नमः 730
ॐ प्रियंकर्यै नमः
ॐ नामपारायणप्रीतायै नमः
ॐ नन्दिविद्यायै नमः
ॐ नटेश्वर्यै नमः
ॐ मिथ्याजगदधिष्ठानायै नमः
ॐ मुक्तिदायै नमः
ॐ मुक्तिरूपिण्यै नमः
ॐ लास्यप्रियायै नमः
ॐ लयकर्यै नमः
ॐ लज्जायै नमः 740
ॐ रम्भादिवन्दितायै नमः
ॐ भवदावसुधावृष्ट्यै नमः
ॐ पापारण्यदवानलायै नमः
ॐ दौर्भाग्यतूलवातूलायै नमः
ॐ जराध्वान्तरविप्रभायै नमः
ॐ भाग्याब्धिचन्द्रिकायै नमः
ॐ भक्तचित्तकेकि-घनाघनायै नमः
ॐ रोगपर्वतदम्भोलये नमः
ॐ मृत्युदारुकुठारिकायै नमः
ॐ महेश्वर्यै नमः 750
ॐ महाकाल्यै नमः
ॐ महाग्रासायै नमः
ॐ महाशनायै नमः
ॐ अपर्णायै नमः
ॐ चण्डिकायै नमः
ॐ चण्डमुण्डासुरनिषूदिन्यै नमः
ॐ क्षराक्षरात्मिकायै नमः
ॐ सर्वलोकेश्यै नमः
ॐ विश्वधारिण्यै नमः
ॐ त्रिवर्गदात्र्यै नमः 760
ॐ सुभगायै नमः
ॐ त्र्यम्बकायै नमः
ॐ त्रिगुणात्मिकायै नमः
ॐ स्वर्गापवर्गदायै नमः
ॐ शुद्धायै नमः
ॐ जपापुष्पनिभाकृतये नमः
ॐ ओजोवत्यै नमः
ॐ द्युतिधरायै नमः
ॐ यज्ञरूपायै नमः
ॐ प्रियव्रतायै नमः 770
ॐ दुराराध्यायै नमः
ॐ दुराधर्षायै नमः
ॐ पाटलीकुसुमप्रियायै नमः
ॐ महत्यै नमः
ॐ मेरुनिलयायै नमः
ॐ मन्दारकुसुमप्रियायै नमः
ॐ वीराराध्यायै नमः
ॐ विराड्रूपायै नमः
ॐ विरजसे नमः
ॐ विश्वतोमुख्यै नमः 780
ॐ प्रत्यग्रूपायै नमः

ॐ पराकाशायै नमः
ॐ प्राणदायै नमः
ॐ प्राणरूपिण्यै नमः
ॐ मार्त्तण्डभैरवाराध्यायै नमः
ॐ मन्त्रिणीन्यस्त-राज्यधुरे नमः
ॐ त्रिपुरेश्यै नमः
ॐ जयत्सेनायै नमः
ॐ निस्त्रैगुण्यायै नमः
ॐ परापरायै नमः 790
ॐ सत्यज्ञानानन्दरूपायै नमः
ॐ सामरस्यपरायणायै नमः
ॐ कपर्दिन्यै नमः
ॐ कलामालायै नमः
ॐ कामदुहे नमः
ॐ कामरूपिण्यै नमः
ॐ कलानिधये नमः
ॐ काव्यकलायै नमः
ॐ रसज्ञायै नमः
ॐ रसशेवधये नमः 800
ॐ पुष्टायै नमः
ॐ पुरातनायै नमः
ॐ पूज्यायै नमः
ॐ पुष्करायै नमः
ॐ पुष्करेक्षणायै नमः
ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः
ॐ परस्मै धाम्ने नमः
ॐ परमाणवे नमः
ॐ परात्परायै नमः
ॐ पाशहस्तायै नमः 810
ॐ पाशहन्त्र्यै नमः
ॐ परमन्त्रविभेदिन्यै नमः
ॐ मूर्तायै नमः
ॐ अमूर्तायै नमः
ॐ अनित्यतृप्तायै नमः
ॐ मुनिमानसहंसिकायै नमः
ॐ सत्यव्रतायै नमः
ॐ सत्यरूपायै नमः
ॐ सर्वान्तर्यामिन्यै नमः
ॐ सत्यै नमः 820
ॐ ब्रह्माण्यै नमः
ॐ ब्रह्मणे नमः
ॐ जनन्यै नमः
ॐ बहुरूपायै नमः
ॐ बुधार्चितायै नमः
ॐ प्रसवित्र्यै नमः
ॐ प्रचण्डायै नमः
ॐ आज्ञायै नमः
ॐ प्रतिष्ठायै नमः
ॐ प्रकटाकृतये नमः 830
ॐ प्राणेश्वर्यै नमः
ॐ प्राणदात्र्यै नमः
ॐ पञ्चाशत्पीठ-रूपिण्यै नमः
ॐ विश्रृंखलायै नमः
ॐ विविक्तस्थायै नमः
ॐ वीरमात्रे नमः
ॐ वियत्प्रसुवे नमः
ॐ मुकुन्दायै नमः
ॐ मुक्तिनिलयायै नमः
ॐ मूलविग्रहरूपिण्यै नमः 840
ॐ भावज्ञायै नमः
ॐ भवरोगघ्न्यै नमः
ॐ भवचक्रप्रवर्तिन्यै नमः
ॐ छन्दःसारायै नमः
ॐ शास्त्रसारायै नमः
ॐ मन्त्रसारायै नमः
ॐ तलोदर्यै नमः

ॐ उदारकीर्तये नमः
ॐ उद्दामवैभवायै नमः
ॐ वर्णरूपिण्यै नमः 850
ॐ जन्ममृत्युजरातप्तजन-
विश्रान्तिदायिन्यै नमः
ॐ सर्वोपनिषदुद्घुष्टायै नमः
ॐ शान्त्यतीत-कलात्मिकायै नमः
ॐ गम्भीरायै नमः
ॐ गगनान्तस्थायै नमः
ॐ गर्वितायै नमः
ॐ गानलोलुपायै नमः
ॐ कल्पनारहितायै नमः
ॐ काष्ठायै नमः
ॐ अकान्तायै नमः 860
ॐ कान्तार्धविग्रहायै नमः
ॐ कार्यकारणनिर्मुक्तायै नमः
ॐ कामकेलितरंगितायै नमः
ॐ कनत्कनकताटंकायै नमः
ॐ लीलाविग्रहधारिण्यै नमः
ॐ अजायै नमः
ॐ क्षयविनिर्मुक्तायै नमः
ॐ मुग्धायै नमः
ॐ क्षिप्रप्रसादिन्यै नमः
ॐ अन्तर्मुखसमाराध्यायै नमः 870
ॐ बहिर्मुखसुदुर्लभायै नमः
ॐ त्रय्यै नमः
ॐ त्रिवर्गनिलयायै नमः
ॐ त्रिस्थायै नमः
ॐ त्रिपुरमालिन्यै नमः
ॐ निरामयायै नमः
ॐ निरालम्बायै नमः
ॐ स्वात्मारामायै नमः
ॐ सुधास्रुत्यै नमः
ॐ संसारपंकनिर्मग्न-समुद्धरण-
पण्डितायै नमः 880
ॐ यज्ञप्रियायै नमः
ॐ यज्ञकर्त्र्यै नमः
ॐ यजमानस्वरूपिण्यै नमः
ॐ धर्माधारायै नमः
ॐ धनाध्यक्षायै नमः
ॐ धनधान्यविवर्धिन्यै नमः
ॐ विप्रप्रियायै नमः
ॐ विप्ररूपायै नमः
ॐ विश्वभ्रमणकारिण्यै नमः
ॐ विश्वग्रासायै नमः 890
ॐ विद्रुमाभायै नमः
ॐ वैष्णव्यै नमः
ॐ विष्णुरूपिण्यै नमः
ॐ अयोन्यै नमः
ॐ योनिनिलयायै नमः
ॐ कूटस्थायै नमः
ॐ कुलरूपिण्यै नमः
ॐ वीरगोष्ठिप्रियायै नमः
ॐ वीरायै नमः
ॐ नैष्कर्म्यायै नमः 900
ॐ नादरूपिण्यै नमः
ॐ विज्ञानकलनायै नमः
ॐ कल्यायै नमः
ॐ विदग्धायै नमः
ॐ बैन्दवासनायै नमः
ॐ तत्त्वाधिकायै नमः
ॐ तत्त्वमय्यै नमः
ॐ तत्त्वमर्थस्वरूपिण्यै नमः
ॐ सामगानप्रियायै नमः
ॐ सौम्यायै नमः 910
ॐ सदाशिवकुटुम्बिन्यै नमः

ॐ सव्यापसव्यमार्गस्थायै नमः
ॐ सर्वापद्विनिवारिण्यै नमः
ॐ स्वस्थायै नमः
ॐ स्वभावमधुरायै नमः
ॐ धीरायै नमः
ॐ धीरसमर्चितायै नमः
ॐ चैतन्यार्घ्यसमाराध्यायै नमः
ॐ चैतन्यकुसुमप्रियायै नमः
ॐ सदोदितायै नमः 920
ॐ सदातुष्टायै नमः
ॐ तरुणादित्यपाटलायै नमः
ॐ दक्षिणादक्षिणाराध्यायै नमः
ॐ दरस्मेरमुखाम्बुजायै नमः
ॐ कौलिनीकेवलायै नमः
ॐ अनर्घ्यकैवल्यपद-दायिन्यै नमः
ॐ स्तोत्रप्रियायै नमः
ॐ स्तुतिमत्यै नमः
ॐ श्रुतिसंस्तुतवैभवायै नमः
ॐ मनस्विन्यै नमः 930
ॐ मानवत्यै नमः
ॐ महेश्यै नमः
ॐ मंगलाकृतये नमः
ॐ विश्वमात्रे नमः
ॐ जगद्धात्र्यै नमः
ॐ विशालाक्ष्यै नमः
ॐ विरागिण्यै नमः
ॐ प्रगल्भायै नमः
ॐ परमोदारायै नमः
ॐ परामोदायै नमः 940
ॐ मनोमय्यै नमः
ॐ व्योमकेश्यै नमः
ॐ विमानस्थायै नमः
ॐ वज्रिण्यै नमः
ॐ वामकेश्वर्यै नमः
ॐ पञ्चयज्ञप्रियायै नमः
ॐ पञ्चप्रेतमञ्चाधि-शायिन्यै नमः
ॐ पञ्चम्यै नमः
ॐ पञ्चभूतेश्यै नमः
ॐ पञ्चसंख्योपचारिण्यै नमः 950
ॐ शाश्वत्यै नमः
ॐ शाश्वतैश्वर्यायै नमः
ॐ शर्मदायै नमः
ॐ शम्भुमोहिन्यै नमः
ॐ धरायै नमः
ॐ धरसुतायै नमः
ॐ धन्यायै नमः
ॐ धर्मिण्यै नमः
ॐ धर्मवर्धिन्यै नमः
ॐ लोकातीतायै नमः 960
ॐ गुणातीतायै नमः
ॐ सर्वातीतायै नमः
ॐ शमात्मिकायै नमः
ॐ बन्धूककुसुमप्रख्यायै नमः
ॐ बालायै नमः
ॐ लीलाविनोदिन्यै नमः
ॐ सुमंगल्यै नमः
ॐ सुखकर्यै नमः
ॐ सुवेषाढ्यायै नमः
ॐ सुवासिन्यै नमः 970
ॐ सुवासिन्यर्चनप्रीतायै नमः
ॐ आशोभनायै नमः
ॐ शुद्धमानसायै नमः
ॐ बिन्दुतर्पणसन्तुष्टायै नमः
ॐ पूर्वजायै नमः
ॐ त्रिपुराम्बिकायै नमः
ॐ दशमुद्रासमाराध्यायै नमः

ॐ त्रिपुराश्रीवशंकर्यै नमः
ॐ ज्ञानमुद्रायै नमः
ॐ ज्ञानगम्यायै नमः 980
ॐ ज्ञानज्ञेयस्वरूपिण्यै नमः
ॐ योनिमुद्रायै नमः
ॐ त्रिखण्डेश्यै नमः
ॐ त्रिगुणायै नमः
ॐ अम्बायै नमः
ॐ त्रिकोणगायै नमः
ॐ अनघायै नमः
ॐ अद्भुतचारित्रायै नमः
ॐ वाञ्छितार्थ-प्रदायिन्यै नमः
ॐ अभ्यासातिशय-ज्ञातायै नमः 990
ॐ षडध्वातीत-रूपिण्यै नमः
ॐ अव्याज-करुणा-मूर्त्तये नमः
ॐ अज्ञान-ध्वान्त-दीपिकायै नमः
ॐ आबाल-गोप-विदितायै नमः
ॐ सर्वानुल्लंघ्य-शासनायै नमः
ॐ श्रीचक्रराज-निलयायै नमः
ॐ श्रीमत्-त्रिपुरसुन्दर्यै नमः
ॐ श्रीशिवायै नमः
ॐ शिव-शक्त्यैक्य-रूपिण्यै नमः
ॐ ललितांबिकायै नमः 1000

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ हरिः ॐ ॥



अन्नपूर्णा-स्तोत्रम्

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिलदोषपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी।
प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥1॥

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
मुक्ताहारविलम्बमानविलसद्वक्षोजकुम्भान्तरी।
काश्मीरागरुवासितारुचिकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥2॥

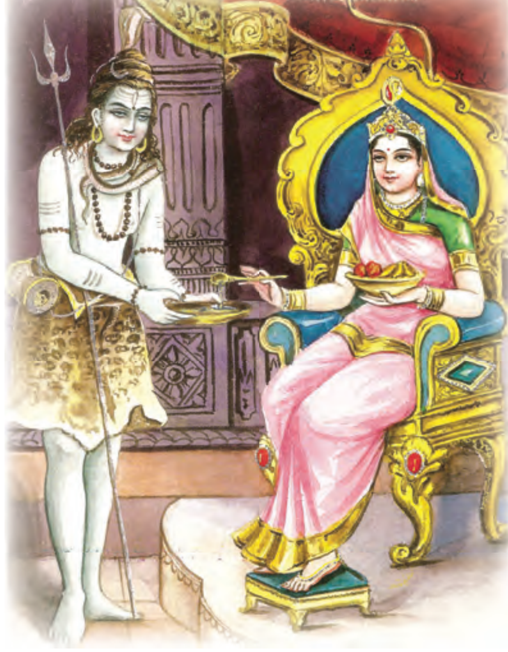
योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मैकनिष्ठाकरी
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी।
सर्वैश्वर्यसमस्तवाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥3॥

कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शंकरी
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओंकारबीजाक्षरी।
मोक्षद्वारकपाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥4॥

दृश्यादृश्यप्रभूतपावनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपांकुरी।
श्रीविश्वेशमन:प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥5॥

उर्वीसर्वजनेश्वरी भगवती मातान्नपूर्णेश्वरी
वेणीनीलसमानकुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी।
सर्वानन्दकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥6॥

आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
काश्मीरा त्रिजनेश्वरी त्रिलहरी नित्यांकुरा शर्वरी।
कामाकांक्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥7॥



दर्वी स्वर्णविचित्ररत्नखचिता दक्षे करे संस्थिता
वामे स्वादुपयोधरी सहचरी सौभाग्यमाहेश्वरी।
भक्ताभीष्टकरी दृशा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥8॥

चन्द्रार्कानलकोटिकोटिसदृशी चन्द्रांशुबिम्बाधरी
चन्द्रार्काग्निसमानकुण्डलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी।
मालापुस्तकपाशसांकुशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥9॥

क्षत्रत्राणकरी महाऽभयकरी माता कृपासागरी
साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरश्रीधरी।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥10॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकरप्राणवल्लभे।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥11॥

माता मे पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥12॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

कनकधारा-स्तोत्रम्

अंगं हरेः पुलक-भूषणमाश्रयन्ती
भृंगांगनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अंगीकृताखिल-विभूतिरपांगलीला
मांगल्यदाऽस्तु मम मंगलदेवतायाः ॥1॥

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि।
मालादृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥2॥

विश्वामरेन्द्र-पदविभ्रमदानदक्षम्
आनन्दहेतुरधिकं मधुविद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्थम्
इन्दीवरोदर-सहोदरमिन्दिरायाः ॥3॥

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दम्
आनन्दकन्दं अनिमेषमनंगतन्त्रम्।
आकेकरस्थित-कनीनिकपक्ष्मनेत्रम्
भूत्यै भवेन्मम भुजंगशयांगनायाः ॥4॥

बाह्वन्तरे मुरजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥5॥

कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेः
धाराधरे स्फुरति या तडिदंगनेव।
मातुस्समस्तजगतां महनीय मूर्त्तिः
भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥6॥

प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत्प्रभावात्
मांगल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्थम्
मन्दालसं च मकरालय-कन्यकायाः ॥7॥

दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधाराम्-
अस्मिन्नकिञ्चन-विहंगशिशौ विषण्णे।
दुष्कर्मधर्ममपनीय चिराय दूरम्
नारायणप्रणयिनी नयनाम्बुवाहः ॥8॥

इष्टा-विशिष्टमतयोऽपि नरा यया द्राक्
दृष्टाः त्रिविष्टपपदं सुलभं भजन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदर-दीप्तिरिष्टाम्
पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्कर-विष्टरायाः ॥9॥

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति
शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।
सृष्टिस्थितिप्रलय-केलिषु संस्थितायै
तस्यै नमस्त्रिभुवनैक गुरोस्तरुण्यै ॥10॥

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीय-गुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम-वल्लभायै ॥11॥

नमोऽस्तु नालीक-निभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधि-जन्मभूत्यै।
नमोऽस्तु सोमामृत-सोदरायै
नमोऽस्तु नारायण-वल्लभायै ॥12॥

नमोऽस्तु हेमाम्बुजपीठिकायै
नमोऽस्तु भूमण्डलनायिकायै।
नमोऽस्तु देवादि-दयापरायै
नमोऽस्तु शार्ङ्गायुधवल्लभायै ॥13॥

नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै
नमोऽस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै।
नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै
नमोऽस्तु दामोदर-वल्लभायै ॥14॥

नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै
नमोऽस्तु भूत्यै भुवन-प्रसूत्यै।

नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै
नमोऽस्तु नन्दात्मज-वल्लभायै ॥15॥

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदान-निरतानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये ॥16॥

यत्कटाक्ष-समुपासनाविधिः
सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।
सन्तनोति वचनांगमानसैः
त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ॥17॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतमांशुकगन्धमाल्य-शोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥18॥

दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्टः
स्वर्वाहिनी-विमलचारुजल-प्लुतांगीम्।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-
लोकाधिनाथ-गृहिणीं अमृताब्धि-पुत्रीम् ॥19॥

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं
करुणापूरतरंगितैरपांगैः।
अवलोकय मामकिंचनानाम्
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ॥20॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



देवी-अपराध-क्षमापन-स्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥1॥

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥2॥

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥3॥

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥4॥

परित्यक्ता देवा विविधविधिसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ॥5॥

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥6॥

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥7॥

न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव-शिव भवानीति जपतः ॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

मीनाक्षी-पञ्चरत्नम्

उद्यद्भानुसहस्रकोटिसदृशां केयूरहारोज्ज्वलां
विम्बोष्ठीं स्मितदन्तपंक्तिरुचिरां पीताम्बरालंकृताम्।
विष्णुब्रह्मसुरेन्द्रसेवितपदां तत्त्वस्वरूपां शिवां
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं कारुण्यवारांनिधिम् ॥1॥

मुक्ताहारलसत्किरीटरुचिरां पूर्णेन्दुवक्त्रप्रभां
शिञ्जन्नूपुरकिंकिणीमणिधरां पद्मप्रभाभासुराम्।
सर्वाभीष्टफलप्रदां गिरिसुतां वाणीरमासेविताम्
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं कारुण्यवारांनिधिम् ॥2॥

श्रीविद्यां शिववामभागनिलयां ह्रींकारमन्त्रोज्ज्वलां
श्रीचक्रांकितबिन्दुमध्यवसतिं श्रीमत्सभानायिकाम्।
श्रीमत्षण्मुखविघ्नराजजननीं श्रीमज्जगन्मोहिनीम्
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं कारुण्यवारांनिधिम् ॥3॥

श्रीमत्सुन्दरनायिकां भयहरां ज्ञानप्रदां निर्मलां
श्यामाभां कमलासनार्चितपदां नारायणस्यानुजाम्।
वीणावेणुमृदंग वाद्यरसिकां नानाविधामम्बिकाम्
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं कारुण्यवारांनिधिम् ॥4॥

नानायोगिमुनीन्द्रहृत्सुवसतिं नानार्थसिद्धिप्रदां
नानापुष्पविराजितांघ्रियुगलां नारायणेनार्चिताम्।
नादब्रह्ममयीं परात्परतरां नानार्थतत्त्वात्मिकाम्
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं कारुण्यवारांनिधिम् ॥5॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

उमामहेश्वर-स्तोत्रम्

नम: शिवाभ्यां नवयौवनाभ्यां परस्पराश्लिष्ट वपुर्धराभ्याम्।
नगेन्द्रकन्यावृषकेतनाभ्यां नमो नम: शंकरपार्वतीभ्याम् ॥1॥

नम: शिवाभ्यां सरसोत्सवाभ्यां नमस्कृताभीष्टवरप्रदाभ्याम्।
नारायणेनार्चितपादुकाभ्यां नमो नम: शंकरपार्वतीभ्याम् ॥2॥

नम: शिवाभ्यां वृषवाहनाभ्यां विरिञ्चिविष्ण्विन्द्रसुपूजिताभ्याम्।
विभूतिपाटीरविलेपनाभ्यां नमो नम: शंकरपार्वतीभ्याम् ॥3॥

नम: शिवाभ्यां जगदीश्वराभ्यां जगत्पतिभ्यां जयविग्रहाभ्याम्।
जम्भारिमुख्यैरभिवन्दिताभ्यां नमो नम: शंकरपार्वतीभ्याम् ॥4॥

नम: शिवाभ्यां परमौषधाभ्यां पञ्चाक्षरी पञ्जररञ्जिताभ्याम्।
प्रपञ्च सृष्टिस्थिति संहृताभ्यां नमो नम: शंकरपार्वतीभ्याम् ॥5॥

नम: शिवाभ्यामतिसुन्दराभ्यां अत्यन्तमासक्तहृदम्बुजाभ्याम्।
अशेषलोकैकहितंकराभ्यां नमो नम: शंकरपार्वतीभ्याम् ॥6॥

नम: शिवाभ्यां कलिनाशनाभ्यां कंकालकल्याणवपुर्धराभ्याम्।
कैलासशैलस्थितदेवताभ्यां नमो नम: शंकरपार्वतीभ्याम् ॥7॥

नम: शिवाभ्यामशुभापहाभ्यां अशेषलोकैकविशेषिताभ्याम्।
अकुण्ठिताभ्यां स्मृतिसंभृताभ्यां नमो नम: शंकरपार्वतीभ्याम् ॥8॥

नम: शिवाभ्यां रथवाहनाभ्यां रवीन्दुवैश्वानरलोचनाभ्याम्।
राका शशांकाभ मुखाम्बुजाभ्यां नमो नम: शंकरपार्वतीभ्याम् ॥9॥

नम: शिवाभ्यां जटिलन्धराभ्यां जरामृतिभ्यां च विवर्जिताभ्याम्।
जनार्दनाब्जोद्भवपूजिताभ्यां नमो नम: शंकरपार्वतीभ्याम् ॥10॥

नम: शिवाभ्यां विषमेक्षणाभ्यां बिल्वच्छदा-मल्लिकदामभृद्भ्याम्।
शोभावती शान्तवतीश्वराभ्यां नमो नम: शंकरपार्वतीभ्याम् ॥11॥

नम: शिवाभ्यां पशुपालकाभ्यां जगत्रयीरक्षण बद्धहृद्भ्याम्।
समस्त देवासुरपूजिताभ्यां नमो नम: शंकरपार्वतीभ्याम् ॥12॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ ॥

भवान्यष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥1॥

भवाब्धावपारे महादु:खभीरु:
प्रपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्त:।
कुसंसारपाशप्रबद्ध: सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥2॥

न जानामि दानं न च ध्यान योगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥3॥

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मात:
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥4॥

कुकर्मी कुसंगी कुबुद्धि: कुदास:
कुलाचारहीन: कदाचारलीन:।
कुदृष्टि: कुवाक्यप्रबन्ध: सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥5॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चान्यत् सदाऽहं शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥6॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥7॥

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



गंगा-स्तोत्रम्

जय जय गंगे जय हर गंगे जय जय गंगे जय हर गंगे।

देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे त्रिभुवनतारिणि तरलतरंगे।
शंकरमौलिविहारिणि विमले मम मतिरास्तां तव पदकमले ॥1॥

भागीरथि सुखदायिनि मातस्तव जल महिमा निगमे ख्यातः।
नाहं जाने तव महिमानं पाहि कृपामयि मामज्ञानम् ॥2॥

हरिपद पाद्य तरंगिणि गंगे हिमविधु मुक्ता धवल तरंगे।
दूरी कुरु मम दुष्कृति भारं कुरु कृपया भवसागर पारम् ॥3॥

तव जलममलं येन निपीतं परमपदं खलु तेन गृहीतम्।
मातर्गंगे त्वयि यो भक्तः किल तं द्रष्टुं न यमः शक्तः ॥4॥

पतितोद्धारिणि जाह्नवि गंगे खण्डितगिरिवरमण्डित भंगे।
भीष्म जननि हे मुनिवर कन्ये पतितनिवारिणि त्रिभुवन धन्ये ॥5॥

कल्पलतामिव फलदां लोके प्रणमति यस्त्वां न पतति शोके।
पारावार विहारिणि गंगे विमुख युवति कृत तरलापांगे ॥6॥

तव चेन्मातः स्रोतः स्नातः पुनरपि जठरे सोऽपि न जातः।
नरकनिवारिणि जाह्नवि गंगे कलुषविनाशिनि महिमोत्तुंगे ॥7॥

पुनरसदंगे पुण्यतरंगे जय जय जाह्नवि करुणापांगे।
इन्द्रमुकुटमणिराजित चरणे सुखदे शुभदे भृत्य शरण्ये ॥8॥

रोगं शोकं तापं पापं हर मे भगवति कुमति कलापम्।
त्रिभुवन सारे वसुधा हारे त्वमसि गतिर्मम खलु संसारे ॥9॥

अलकानन्दे परमानन्दे कुरु करुणामयि कातर वन्द्ये।
तव तट निकटे यस्य निवासः खलु वैकुण्ठे तस्य निवासः॥10॥

वरमिह नीरे कमठो मीनः किं वा तीरे शरटः क्षीणः।
अथवा श्वपचो मलिनो दीनस्तव न हि दूरे नृपतिकुलीनः ॥11॥

भो भुवनेश्वरि पुण्ये धन्ये देवि द्रवमयि मुनिवर कन्ये।
जय जय गंगे जय हर गंगे जय जय गंगे जय हर गंगे ॥12॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

यमुनाष्टकम्

मुरारिकायकालिमाललामवारिधारिणी तृणीकृतत्रिविष्टपा त्रिलोकशोकहारिणी।
मनोऽनुकूलकूलकुञ्जपुञ्जधूतदुर्मदा धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥1॥

मलापहारिवारिपूरभूरिमण्डितामृता भृशं प्रपातकप्रभञ्जनातिपण्डितानिशम्।
सुनन्दनन्दनांगसंगरागरञ्जिता हिता धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥2॥

लसत्तरंगसंगधूतभूतजातपातका नवीनमाधुरीधुरीणभक्तिजातचातका।
तटान्तवासदासहंससंसृता हि कामदा धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥3॥

विहाररासखेदभेदधीरतीरमारुता गता गिरामगोचरे यदीयनीरचारुता।
प्रवाहसाहचर्यपूतमेदिनीनदीनदा धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥4॥

तरंगसंगसैकताञ्चितान्तरा सदासिता शरन्निशाकरांशुमञ्जुमञ्जरीसभाजिता।
भवार्चनाय चारुणाम्बुनाधुना विशारदा धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥5॥

जलान्तकेलिकारिचारुराधिकांगरागिणी स्वभर्तुरन्यदुर्लभांगसंगतांशभागिनी।
स्वदत्तसुप्तसप्तसिन्धुभेदनातिकोविदा धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥6॥

जलच्युताच्युतांगरागलम्पटालिशालिनी विलोलराधिकाकचान्तचम्पकालिमालिनी।
सदावगाहनावतीर्णभर्तृभृत्यनारदा धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥7॥

सदैव नन्दनन्दकेलिशालिकुञ्जमञ्जुला तटोत्थफुल्लमल्लिकाकदम्बरेणुसूज्ज्वला।
जलावगाहिनां नृणां भवाब्धिसिन्धुपारदा धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री-काली-ककारादि-अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्

ॐ काली कपालिनी कान्ता कामदा कामसुन्दरी। कालरात्रिः कालिका च कालभैरव पूजिता ॥
कुरुकुल्ला कामिनी च कमनीयस्वभाविनी। कुलीना कुलकर्त्री च कुलवर्त्मप्रकाशिनी ॥
कस्तूरीरसनीला च काम्या कामस्वरूपिणी। ककारवर्णनिलया कामधेनुः करालिका ॥
कुलकान्ता करालास्या कामार्त्ता च कलावती। कृशोदरी च कामाख्या कौमारी कुलपालिनी ॥
कुलजा कुलकन्या च कुलहा कुलपूजिता। कामेश्वरी कामकान्ता कुञ्जरेश्वरगामिनी ॥
कामदात्री कामहर्त्री कृष्णा चैव कपर्दिनी। कुमुदा कृष्णदेहा च कालिन्दी कुलपूजिता ॥
काश्यपी कृष्णमाता च कुलिशांगी कला तथा। क्रींरूपा कुलगम्या च कमला कृष्णपूजिता ॥
कृशांगी किन्नरी कर्त्री कलकण्ठी च कार्तिकी। कम्बुकण्ठी कौलिनी च कुमुदा कामजीविनी ॥
कुलस्त्री कीर्तिका कृत्या कीर्तिश्च कुलपालिका। कामदेवकला कल्पलता कामांगवर्धिनी ॥
कुन्ता च कुमुदप्रीता कदम्बकुसुमोत्सुका। कादम्बिनी कमलिनी कृष्णानन्दप्रदायिनी ॥
कुमारीपूजनरता कुमारीगणशोभिता। कुमारीरञ्जनरता कुमारीव्रतधारिणी ॥
कंकाली कमनीया च कामशास्त्रविशारदा। कपालखट्वांगधरा कालभैरवरूपिणी ॥
कोटरी कोटराक्षी च काशीकैलास वासिनी। कात्यायनी कार्यकरी काव्यशास्त्रप्रमोदिनी ॥
कामाकर्षणरूपा च कामपीठनिवासिनी। कंकिनी काकिनी क्रीडा कुत्सिता कलहप्रिया ॥
कुण्डगोलोद्भवप्राणा कौशिकी कीर्तिवर्द्धिनी। कुम्भस्तनी कटाक्षा च काव्या कोकनदप्रिया।
कान्तारवासिनी कान्तिः कठिना कृष्णवल्लभा ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री-तारा-अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्

ॐ तारिणी तरला तन्वी तारा तरुणवल्लरी। तीररूपा तरी श्यामा तनुक्षीणपयोधरा ॥
तुरीया तरला तीव्रगमना नीलवाहिनी। उग्रतारा जया चण्डी श्रीमदेकजटा शिवा ॥
तरुणी शाम्भवी छिन्नभाला च भद्रतारिणी। उग्रा चोग्रप्रभा नीला कृष्णा नीलसरस्वती ॥
द्वितीया शोभना नित्या नवीना नित्यनूतना। चण्डिका विजयाराध्या देवी गगनवाहिनी ॥
अट्टहास्या करालास्या चरास्यादितिपूजिता। सगुणा सगुणाराध्या हरीन्द्रदेवपूजिता ॥
रक्तप्रिया च रक्ताक्षी रुधिरास्य विभूषिता। बलिप्रिया बलिरता दुर्गा बलवती बला ॥
बलप्रिया बलरता बलरामप्रपूजिता। अर्धकेशेश्वरी केशा केशवासविभूषिता ॥
पद्ममाला च पद्माक्षी कामाख्या गिरिनन्दिनी। दक्षिणा चैव दक्षा च दक्षजा दक्षिणेरता ॥
वज्रपुष्पप्रिया रक्तप्रिया कुसुमभूषिता। माहेश्वरी महादेवप्रिया पंचविभूषिता ॥
इडा च पिंगला चैव सुषुम्नाप्राणरूपिणी। गान्धारी पंचमी पंचाननादि परिपूजिता ॥
तथ्यविद्या तथ्यरूपा तथ्यमार्गानुसारिणी। तत्त्वरूपा तत्त्वप्रिया तत्त्वज्ञानात्मिकानघा ॥
ताण्डवाचारसंतुष्टा ताण्डवप्रियकारिणी। तालदानरता क्रूरतापिनी तरणिप्रभा ॥
त्रयीमुक्ता त्रयीयुक्ता तर्पिता तृप्तिकारिणी। तारुण्यभावसंतुष्टा शक्तिर्भक्तानुरागिणी ॥
शिवासक्ता शिवरतिः शिवभक्तिपरायणा। ताम्रद्युतिस्ताम्ररागा ताम्रपात्रप्रभोजिनी ॥
बलभद्रप्रेमरता बलिभुग् बलिकल्पिनी। रामरूपा रामशक्ती रामरूपानुकारिणी ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री-बाला-त्रिपुर-सुन्दरी-अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्

ॐ अरुण-रूपा महा-रूपा ज्योति-रूपा महेश्वरी। पार्वती वर-रूपा च पर-ब्रह्म-स्वरूपिणी ॥
लक्ष्मी लक्ष्मी-स्वरूपा च लक्षालक्ष-स्वरूपिणी। गायत्री चैव सावित्री सन्ध्या सरस्वती श्रुती ॥
वेद-बीजा ब्रह्म-बीजा विश्व-बीजा कवि-प्रिया। इच्छा-शक्ति क्रिया-शक्ति आत्म-शक्ति भयंकरी॥
कालिका कमला काली कंकाली काल-रूपिणी। उपस्थिति-स्वरूपा च प्रलया लय-कारिणी॥
हिंगुला त्वरिता चण्डी चामुण्डा मुण्ड-मालिनी। रेणुका भद्र-काली च मातंगी शिव-शाम्भवी॥
योगदा मंगला गौरी गिरिजा गोमती गया। कामाक्षी काम-रूपा च कामिनी काम-रूपिणी ॥
योगिनी योग-रूपा च योग-ज्ञान-शिव-प्रिया। उमा कात्यायनी चण्ड्यम्बिका त्रिपुर-सुन्दरी॥
अरुणा तरुणी शान्ता सर्व-सिद्धि सुमंगला। शिवा च सिद्धि-माता च सिद्ध-विद्या हरि-प्रिया ॥
पद्मावती पद्म-वर्णा पद्माक्षी पद्म-सम्भवा। धारिणी धरित्री धात्री अगम्या गम्य-वासिनी ॥
विद्यावती मन्त्र-शक्तिः मन्त्र-सिद्धि-परायणी। विराट्-धारिणी विधात्री वाराही विश्व-रूपिणी॥
परा पश्याऽपरा मध्या दिव्य-वाद-विलासिनी। नाद-बिन्दु-कला-ज्योतिर्विजया भुवनेश्वरी॥
ऐं-कारिणी भयंकरी क्लींकारी कमल-प्रिया। सौंकारी शिव-पत्नी च पर-तत्त्व-प्रकाशिनी॥
ह्रींकारी आदि-माया च यन्त्र-मूर्त्ति-परायणी। बाला-त्रिपुर-सुन्दर्याः नाम अष्टोत्तर-शतम्॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



श्री-ललिता-अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्

ॐ कामेश्वरी काम-शक्तिः काम-सौभाग्य-दायिनी। काम-रूपा काम-कला कामिनी कमलासना॥
कमला कलना-हीना कमनीया कला-वती। पद्मपा भारती सेव्या कल्पिताऽशेष-संस्थितिः ॥
अनुत्तराऽनघाऽनन्ताद्भुत-रूपाऽनलोद्भवा। अति-लोक-चरित्राऽति-सुन्दर्यति-शुभ-प्रदा ॥
विश्वाद्या चाति-विस्ताराऽर्चन-तुष्टाऽमित-प्रभा। एक-रूपैक-वीरैक-नाथैकान्तार्चन-प्रिया ॥
एकैक-भाव-तुष्टैक-रसैकान्त-जन-प्रिया। एधमान-प्रभा वैध-भक्त-पातक-नाशिनी ॥
एलामोद-मुखनौःऽद्रि-शक्ताऽऽयुध-सम-स्थितिः। ईहा-शून्येप्सितेशादि-सेव्येशान-वरांगना॥
ईश्वराज्ञापिकेकार-भाव्येप्सित-फल-प्रदा। ईशानेति हरेशैषा चारुणाक्षीश्वरेश्वरी ॥
ललिता ललना-रूपा लय-हीना लसत-तनुः। लय-सर्वालय-क्षोणिर्लय-कर्त्री लयात्मिका ॥
लघिमा लघु-मध्याढ्या लल-माना लघु-द्रुता। हयारूढा हताऽमित्रा हर-कान्ता हरि-स्तुता ॥
हय-ग्रीवेष्टदा हाला-प्रिया हर्ष-समुद्भवा। हर्षणा हल्लकाभांगी हस्त्यन्तैश्वर्य-दायिनी ॥
हल-हस्तार्चित-पदा हविर्दान-प्रसादिनी। रामा रामार्चिता राज्ञी रम्या रव-मयी रतिः ॥
रक्षिणी रमणी राकाऽऽदित्यादि-मण्डल-प्रिया। रक्षिताऽखिल-लोकेशी रक्षो-गण-निषूदिनी ॥
अन्तान्त-कारिण्यम्भोज-क्रियान्तक-भयंकरी। अम्बु-रूपाऽम्बुज-कराऽम्बुज-जात-वर-प्रदा ॥
अन्तः-पूजा-क्रियान्तःस्था अन्तर्ध्यान-वचो-मयी। अन्तकाऽराति-वामांक-स्थिताऽन्तः-सुख-रूपिणी॥
सर्वज्ञा सर्वगा सारा समा सम-सुखा सती। सन्ततिः सन्तता सोमा सर्वा सांख्या सनातनी ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री-षोडशी-अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्

ॐ त्रिपुरा षोडशी माता त्र्यक्षरा त्रितया त्रयी। सुन्दरी सुमुखी सेव्या सामवेदपरायणा ॥
शारदा शब्दनिलया सागरा सरिदम्बरा। शुद्धा शुद्धतनु: साध्वी शिवध्यानपरायणा ॥
स्वामिनी शम्भुवनिता शाम्भवी च सरस्वती। समुद्रमथिनी शीघ्रगामिनी शीघ्रसिद्धिदा ॥
साधुसेव्या साधुगम्या साधुसन्तुष्टमानसा। खट्वाङ्गधारिणी खर्वा खड्गखर्परधारिणी॥
षड्वर्गभावरहिता षड्वर्गपरिचारिका। षड्वर्गा च षडंगा च षोढा षोडशवार्षिकी ॥
क्रतुरूपा क्रतुमती ऋभुक्षक्रतुमण्डिता। कवर्गादिपवर्गान्ता अन्त:स्था अन्तरूपिणी ॥
अकाराकार रहिता कालमृत्युजरापहा। तन्वी तत्त्वेश्वरी तारा त्रिवर्षा ज्ञानरूपिणी ॥
काली कराली कामेशी छायासंज्ञाप्यरुन्धती। निर्विकल्पा महावेगा महोत्साहा महोदरी ॥
मेधा बलाका विमला विमलज्ञानदायिनी। गौरी वसुन्धरा गोप्त्री गवां पतिनिषेविता ॥
भगांगा भगरूपा च भक्तिभाव परायणा। छिन्नमस्ता महाधूमा तथा धूम्रविभूषणा ॥
धर्मकर्मादिरहिता धर्मकर्मपरायणा। सीता मातंगिनी मेधा मधुदैत्यविनाशिनी ॥
भैरवी भुवना माताऽभयदा भवसुन्दरी। भावुका बगला कृत्या बाला त्रिपुरसुन्दरी ॥
रोहिणी रेवती रम्या रम्भा रावणवन्दिता। शतयज्ञमयी सत्त्वा शतक्रतुवरप्रदा ॥
शतचन्द्रानना देवी सहस्रादित्यसन्निभा। सोमसूर्याग्निनयना व्याघ्रचर्माम्बरावृता।
अर्द्धेन्दुधारिणी मत्ता मदिरा मदिरेक्षणा ॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ ॥



श्री-भुवनेश्वरी-अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्

ॐ महामाया महाविद्या महायोगा महोत्कटा। माहेश्वरी कुमारी च ब्रह्माणी ब्रह्मरूपिणी ॥
वागीश्वरी योगरूपा योगिनी कोटिसेविता। जया च विजया चैव कौमारी सर्वमंगला ॥
हिंगुला च विलासी च ज्वालिनी ज्वालरूपिणी। ईश्वरी क्रूरसंहारी कुलमार्गप्रदायिनी ॥
वैष्णवी सुभगाकारा सुकुल्या कुलपूजिता। वामांगा वामाचारा च वामदेवप्रिया तथा ॥
डाकिनीयोगिनीरूपा भूतेशी भूतनायिका। पद्मावती पद्मनेत्रा प्रबुद्धा च सरस्वती ॥
भूचरी खेचरी माया मातंगी भुवनेश्वरी। कान्ता पतिव्रता साक्षी सुचक्षुः कुण्डवासिनी ॥
उमा कुमारी लोकेशी सुकेशी पद्मरागिनी। इन्द्राणी ब्रह्मचाण्डाली चण्डिका वायुवल्लभा॥
सर्वधातुमयीमूर्तिर्जलरूपा जलोदरी। आकाशी रणगा चैव नृकपालविभूषणा ॥
नर्मदा मोक्षदा चैव धर्मकामार्थदायिनी। गायत्री चाथ सावित्री त्रिसन्ध्या तीर्थगामिनी ॥
अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा। पौर्णमासी कुहूरूपा तिथिमूर्त्तिस्वरूपिणी ॥
सुरारिनाशकारी च उग्ररूपा च वत्सला। अनला अर्द्धमात्रा च अरुणायतलोचना ॥
लज्जा सरस्वती विद्या भवानी पापनाशिनी। नागपाशधरा मूर्त्तिरगाधा धृतकुण्डला ॥
क्षत्ररूपा क्षयकरी तेजस्विनी शुचिस्मिता। अव्यक्ता व्यक्तलोका च शम्भुरूपा मनस्विनी॥
मातंगी मत्तमातंगी महादेवप्रिया सदा। दैत्यघ्नी चैव वाराही सर्वशास्त्रमयी शुभा ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री-भैरवी-अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्

ॐ भैरवी भैरवाराध्या भूतिदा भूतभावना। कार्या ब्राह्मी कामधेनु: सर्वसम्पत्प्रदायिनी ॥
त्रैलोक्यवन्दिता देवी महिषासुरमर्दिनी। मोहघ्नी मालतीमाला महापातकनाशिनी ॥
क्रोधिनी क्रोधनिलया क्रोधरक्तेक्षणा कुहू:। त्रिपुरा त्रिपुराधारा त्रिनेत्रा भीमभैरवी ॥
देवकी देवमाता च देवदुष्टविनाशिनी। दामोदरप्रिया दीर्घा दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ॥
लम्बोदरी लम्बकर्णा प्रलम्बितपयोधरा। प्रत्यंगिरा प्रतिपदा प्रणतक्लेशनाशिनी ॥
प्रभावती गुणवती गणमाता गुह्येश्वरी। क्षीराब्धितनया क्षेम्या जगत्त्राणविधायिनी ॥
महामारी महामोहा महाक्रोधा महानदी। महापातकसंहन्र्त्री महामोहप्रदायिनी ॥
विकराला महाकाला कालरूपा कलावती। कपालखट्वांगधरा खड्गखर्परधारिणी ॥
कुमारी कुंकुमप्रीता कुंकुमारुणरञ्जिता। कौमोदकी कुमुदिनी कीर्त्या कीर्तिप्रदायिनी ॥
नवीना नीरदा नित्या नन्दिकेश्वरपालिनी। घर्घरा घर्घरारावा घोरा घोरस्वरूपिणी ॥
कलिघ्नी कलिधर्मघ्नी कलिकौतुकनाशिनी। किशोरी केशवप्रीता क्लेशसंघनिवारिणी ॥
महोत्तमा महामत्ता महाविद्या महीमयी। महायज्ञा महावाणी महामन्दरधारिणी ॥
मोक्षदा मोहदा मोहा भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी। अट्टाट्टहासनिरता क्वणन्नूपुरधारिणी ॥
दीर्घदंष्ट्रा दीर्घमुखी दीर्घघोणा च दीर्घिका। दनुजान्तकरी दुष्टा दु:खदारिद्र्यभञ्जिनी ॥
दुराचारा च दोषघ्नी दमपत्नी दयापरा। मनोभवा मनुमयी मनुवंशप्रवर्द्धिनी।
श्यामा श्यामतनु: शोभा सौम्या शम्भुविलासिनी ॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ ॥



श्री-छिन्नमस्ता-अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्

ॐ छिन्नमस्ता महाविद्या महाभीमा महोदरी। चण्डेश्वरी चण्डमाता चण्डमुण्डप्रभञ्जिनी॥
महाचण्डा चण्डरूपा चण्डिका चण्डखण्डिनी। क्रोधिनी क्रोधजननी क्रोधरूपा कुहू: कला॥
कोपातुरा कोपयुता कोपसंहारकारिणी। वज्रवैरोचनी वज्रा वज्रकल्पा च डाकिनी ॥
डाकिनीकर्मनिरता डाकिनीकर्मपूजिता। डाकिनीसंगनिरता डाकिनीप्रेमपूरिता ॥
खट्वांगधारिणी खर्वा खड्गखर्प्परधारिणी। प्रेतासना प्रेतयुता प्रेतसंगविहारिणी ॥
छिन्नमुण्डधरा छिन्नचण्डविद्या च चित्रिणी। घोररूपा घोरदृष्टिर्घोररावा घनोदरी ॥
योगिनी योगनिरता जपयज्ञपरायणा। योनिचक्रमयी योनिर्योनिचक्रप्रवर्तिनी ॥
योनिमुद्रा योनिगम्या योनियन्त्रनिवासिनी। यन्त्ररूपा यन्त्रमयी यन्त्रेशी यन्त्रपूजिता ॥
कीर्त्या कपर्दिनी काली कंकाली कलविकारिणी। आरक्ता रक्तनयना रक्तपानपरायणा ॥
भवानी भूतिदा भूतिर्भूतिदात्री च भैरवी। भैरवाचारनिरता भूतभैरवसेविता ॥
भीमा भीमेश्वरी देवी भीमनादपरायणा। भवाराध्या भवनुता भवसागरतारिणी ॥
भद्रकाली भद्रतनुर्भद्ररूपा च भद्रिका। भद्ररूपा महाभद्रा सुभद्रा भद्रपालिनी ॥
सुभव्या भव्यवदना सुमुखी सिद्धसेविता। सिद्धिदा सिद्धिनिवहा सिद्धासिद्धनिषेविता ॥
शुभदा सुभगा शुद्धा शुद्धसत्त्वा शुभावहा। श्रेष्ठा दृष्टिमयी देवी दृष्टिसंहारकारिणी ॥
शर्वाणी सर्वगा सर्वा सर्वमंगलकारिणी। शिवा शान्ता शान्तिरूपा मृडानी मदनातुरा ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥



श्री-धूमावती-अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्

ॐ धूमावती धूम्रवर्णा धूम्रपानपरायणा। धूम्राक्षमथिनी धन्या धन्यस्थाननिवासिनी ॥
अघोराचारसन्तुष्टा अघोराचारमण्डिता। अघोरमन्त्रसम्प्रीता अघोरमन्त्रसम्पूजिता ॥
अट्टाट्टहासनिरता मलिनाम्बरधारिणी। वृद्धा विरूपा विधवा विद्या च विरलाद्विजा ॥
प्रवृद्धघोणा कुमुखी कुटिला कुटिलेक्षणा। कराली च करालास्या कंकाली शूर्पधारिणी ॥
काकध्वजरथारूढा केवला कठिना कुहूः। क्षुत्पिपासार्द्दिता नित्या ललज्जिह्वा दिगम्बरा ॥
दीर्घोदरी दीर्घरवा दीर्घांगी दीर्घमस्तका। विमुक्तकुन्तला कीर्त्या कैलासस्थानवासिनी ॥
क्रूरा कालस्वरूपा च कालचक्रप्रवर्तिनी। विवर्णा चञ्चला दुष्टा दुष्टविध्वंसकारिणी ॥
चण्डी चण्डस्वरूपा च चामुण्डा चण्डनिःस्वना। चण्डवेगा चण्डगतिः चण्डमुण्डविनाशिनी ॥
चाण्डालिनी चित्ररेखा चित्रांगी चित्ररूपिणी। कृष्णा कपर्दिनी कुल्ला कृष्णारूपा क्रियावती ॥
कुम्भस्तनी महोन्मत्ता मदिरापानविह्वला। चतुर्भुजा ललज्जिह्वा शत्रुसंहारकारिणी ॥
शवारूढा शवगता श्मशानस्थानवासिनी। दुराराध्या दुराचारा दुर्जनप्रीतिदायिनी ॥
निर्मांसा च निराकारा धूमहस्ता वरान्विता। कलहा च कलिप्रीता कलिकल्मषनाशिनी ॥
महाकालस्वरूपा च महाकालप्रपूजिता। महादेवप्रियामेधा महासंकटनाशिनी ॥
भक्तप्रिया भक्तगतिः भक्तशत्रुविनाशिनी। भैरवी भुवना भीमा भारती भुवनात्मिका ॥
भूरुण्डा भीमनयना त्रिनेत्रा बहुरूपिणी। त्रिलोकेशी त्रिकालज्ञा त्रिस्वरूपा त्रयीतनुः।
त्रिमूर्त्तिश्च तथा तन्वी त्रिशक्तिश्च त्रिशूलिनी ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री-बगला-अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्

ॐ बगला विष्णुवनिता विष्णुशंकरभामिनी। बहुला वेदमाता च महाविष्णुप्रसूरपि ॥
महामत्स्या महाकूर्मा महावाराहरूपिणी। नारसिंहप्रिया रम्या वामना वटुरूपिणी ॥
जामदग्न्यस्वरूपा च रामा रामप्रपूजिता। कृष्णा कपर्दिनी कृत्या कलहा कलकारिणी ॥
बुद्धिरूपा बुद्धभार्य्या बौद्धपाखण्डखण्डिनी। कल्किरूपा कलिहरा कलिदुर्गतिनाशिनी॥
कोटिसूर्यप्रतीकाशा कोटिकन्दर्पमोहिनी। केवला कठिना काली कलाकैवल्यदायिनी ॥
केशवी केशवाराध्या किशोरी केशवस्तुता। रुद्ररूपा रुद्रमूर्त्तिः रुद्राणी रुद्रदेवता ॥
नक्षत्ररूपा नक्षत्रा नक्षत्रेशप्रपूजिता। नक्षत्रेशप्रिया नित्या नक्षत्रपतिवन्दिता ॥
नागिनी नागजननी नागराजप्रवन्दिता। नागेश्वरी नागकन्या नागरी च नगात्मजा ॥
नगाधिराजतनया नगराजप्रपूजिता। नवीना नीरदा पीता श्यामा सौन्दर्यकारिणी ॥
रक्ता नीला घना शुभ्रा श्वेता सौभाग्यदायिनी। सुन्दरी सौभगा सौम्या स्वर्णाभा स्वर्गतिप्रदा ॥
रिपुत्रासकरी रेखा शत्रुसंहारकारिणी। भामिनी च तथा माया स्तम्भिनी मोहिनी शुभा ॥
रागद्वेषकरी रात्री रौरवध्वंसकारिणी। यक्षिणी सिद्धनिवहा सिद्धेशा सिद्धिरूपिणी ॥
लंकापतिध्वंसकरी लंकेशरिपुवन्दिता। लंकानाथकुलहरा महारावणहारिणी ॥
देवदानवसिद्धौघपूजिता परमेश्वरी। पराणुरूपा परमा परतन्त्रविनाशिनी ॥
वरदा वरदाराध्या वरदानपरायणा। वरदेशप्रियावीरा वीरभूषणभूषिता ॥
वसुदा बहुदा वाणी ब्रह्मरूपा वरानना। बलदा पीतवसना पीतभूषणभूषिता।
पीतपुष्पप्रिया पीतहारा पीतस्वरूपिणी ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री-मातंगी-अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्

ॐ महामत्तमातंगिनी सिद्धिरूपा तथा योगिनी भद्रकाली रमा च।
भवानी भयप्रीतिदा भूतियुक्ता भवाराधिता भूतिसम्पत्करी च ॥

धनाधीशमाता धनागारदृष्टिर्धनेशार्चिता धीरवापी वरांगी।
प्रकृष्टा प्रभारूपिणी कामरूपा प्रहृष्टा महाकीर्तिदा कर्णनाली ॥

कराली भगा घोररूपा भगांगी भगाह्वा भगप्रीतिदा भीमरूपा।
भवानी महाकौशिकी कोशपूर्णा किशोरी किशोरप्रिया नन्दीहा ॥

महाकारणा कारणा कर्मशीला कपाली प्रसिद्धा महासिद्धखण्डा।
मकारप्रिया मानरूपा महेशी मलोल्लासिनी लास्यलीलालयांगी ॥

क्षमा क्षेमशीला क्षपाकारिणी चाक्षयप्रीतिदा भूतियुक्ता भवानी।
भवाराधिता भूतिसत्यात्मिका च प्रभोद्भासिता भानुभास्वत्करा च ॥

धराधीषमाता धनागारदृष्टिर्धनेशार्चिता धीवरा धीवरांगी।
प्रकृष्टप्रभारूपिणी प्राणरूपा प्रकृष्टस्वरूपा स्वरूपप्रिया च ॥

चलत्कुण्डला कामिनीकान्तयुक्ता कपालाऽचला कालकोद्धारिणी च।
कदम्बप्रिया कोटरी कोटदेहा क्रमा कीर्तिदा कर्णरूपा च काक्षी ॥

क्षमांगी क्षयप्रेमरूपा क्षया च क्षयाक्षा क्षयाह्वा क्षयप्रान्तरा च।
क्षरत्कामिनी क्षारिणी क्षीरपूर्णा शिवांगी च शाकम्भरी शाकदेहा ॥

महाशाकयज्ञा फलप्राशका च शकाह्वा शकाह्वाशकाख्या शका च।
शकाक्षान्तरोषा सुरोषा सुरेखा महाशेषयज्ञोपवीतप्रिया च ॥

जयन्ती जया जाग्रती योग्यरूपा जयांगा जपध्यान-सन्तुष्टसंज्ञा।
जय प्राणरूपा जय स्वर्णदेहा जय ज्वालिनी यामिनी याम्यरूपा ॥

जगन्मातृरूपा जगप्रेक्षणा च स्वधावौषडन्ता विलम्बाविलम्बा।
षडंगा महालम्बरूपाऽसिहस्ता पद-हारिणी हारिणी हारिणी च ॥

महामंगला मंगलप्रेमकीर्तिः निशुम्भच्छिदा शुम्भदर्पत्वहा च।
तथाऽनन्दबीजादिमुक्तिस्वरूपा तथा चण्डमुण्डापदा मुख्यचण्डा ॥

प्रचण्डाऽप्रचण्डा महाचण्डवेगा चलच्चामरा चामरा चन्द्रकीर्तिः।
सुचामीकरा चित्रभूषोज्ज्वलांगी सुसंगीतगीतं च पायादपायात् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री-कमला-अष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रम्

ॐ महामाया महालक्ष्मी महावाणी महेश्वरी। महादेवी महारात्रिः महिषासुरमर्दिनी ॥
कालरात्रिः कुहूः पूर्णा नन्दाद्या भद्रिका निशा। जया रिक्ता महाशक्तिः देवमाता कृशोदरी ॥
शचीन्द्राणी शक्रनुता शंकरप्रियवल्लभा। महावराहजननी मदनोन्मथिनी मही ॥
वैकुण्ठनाथरमणी विष्णुवक्षःस्थलस्थिता। विश्वेश्वरी विश्वमाता वरदाऽभयदा शिवा ॥
शूलिनी चक्रिणी पद्मा पाशिनी शंखधारिणी। गदिनी मुण्डमाला च कमला करुणालया ॥
पद्माक्षधारिणी ह्यम्बा महाविष्णुप्रियंकरी। गोलोकनाथरमणी गोलोकेश्वरपूजिता ॥
गया गंगा च यमुना गोमती गरुडासना। गण्डकी सरयूस्तापी रेवा चैव पयस्विनी ॥
नर्मदा चैव कावेरी केदारस्थलवासिनी। किशोरी केशवनुता महेन्द्रपरिवन्दिता ॥
ब्रह्मादिदेवनिर्माणकारिणी देवपूजिता। कोटिब्रह्माण्डमध्यस्था कोटिब्रह्माण्डकारिणी ॥
श्रुतिरूपा श्रुतिकरी श्रुतिस्मृतिपरायणा। इन्दिरा सिन्धुतनया मातंगी लोकमातृका ॥
त्रिलोकजननी तन्त्रा तन्त्रमन्त्रस्वरूपिणी। तरुणी च तमोहन्त्री मंगला मंगलायना ॥
मधुकैटभमथिनी शुम्भासुरविनाशिनी। निशुम्भादिहरा माता हरिशंकरपूजिता ॥
सर्वदेवमयीसर्वा शरणागतपालिनी। शरण्या शम्भुवनिता सिन्धुतीरनिवासिनी ॥
गन्धर्वगानरसिका गीतागोविन्दवल्लभा। त्रैलोक्यपालिनी तत्त्वरूपा तारुण्यपूरिता ॥
चन्द्रावली चन्द्रमुखी चन्द्रिका चन्द्रपूजिता। चन्द्रा शशांकभगिनी गीतवाद्यपरायणा ।
सृष्टिरूपा सृष्टिकरी सृष्टिसंहारकारिणी ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



कालिकाष्टकम्

ध्यानम्

गलद्-रक्तमुण्डावली-कण्ठमाला, महाघोररावा सुदंष्ट्रा कराला ।
विवस्त्रा श्मशानालया मुक्तकेशी, महाकाल-कामाकुलाकालिकेयम् ॥1॥

भुजे वामयुग्मे शिरोऽसी दधाना, वरं दक्षयुग्मेऽभयं वै तथैव ।
सुमध्याऽपि तुंगस्तनाभारनम्रा, लसद्रक्तसृक्कद्वया सुस्मितास्या ॥2॥

शवद्वन्द्वकर्णावतंसा सुकेशी, लसत् प्रेतपाणि-प्रयुक्तैक-काञ्ची ।
शवाकार-मञ्चाधिरूढा शिवाभिश्चतुर्दिक्षु शब्दायमानाऽभिरेजे ॥3॥

स्तुतिः

विरंच्यादिदेवास्त्रयस्ते गुणांस्त्रीन् , समाराध्य कालि! प्रधाना बभूव:।
अनादिं सुरादिं मखादिं भवादिं, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवा:॥1॥

जगन्मोहनीयं तु वाग्वादिनीयं, सुहृत् पोषिणीं शत्रुसंहारणीयम् ।
वच: स्तम्भनीयं किमुच्चाटनीयं, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवा:॥2॥

इयं स्वर्गदात्री पुन: कल्पवल्ली, मनोजांस्तु कामान् यथार्थं प्रकुर्यात् ।
कथा ते कृतार्था भवन्तीति नित्यं, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवा:॥3॥

सुरापानमत्ते! सुभक्तानुरक्ते! लसत् पूतचित्ते सदाविर्भवस्ते ।
जप-ध्यान-पूजा-सुधाधौतपंका:, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवा:॥4॥

चिदानन्द-कन्दं हसन् मन्दमन्दं, शरच्चन्द्रकोटि-प्रभापुंज-बिम्बम् ।
मुनीनां कवीनां हृदि द्योतमानं, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवा:॥5॥

महा-मेघ-काली सुरक्ताऽपि शुभ्रा, कदाचिद् विचित्राकृतिर्योगमाया ।
न बाला न वृद्धा न कामातुराऽपि, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवा:॥6॥

क्षमस्वापराधं महागुप्तभावं, मया लोकमध्ये प्रकाशीकृतं यत् ।
तव ध्यानपूतेन चापल्य-भावात्, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवा:॥7॥

यदि ध्यानयुक्त: पठेत् यो मनुष्यस्तदा सर्वलोके विशालो भवेच्च ।
गृहे चाऽष्टसिद्धिमृते चापि मुक्ति:, स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवा:॥8॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ॥

काली-कवचम्

रहस्यं शृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे ।
श्रीजगन्मंगलं नाम कवचं मन्त्रविग्रहम् ॥1॥

पठित्वा धारयित्वा च त्रैलोक्यं मोहयेत्क्षणात् ।
नारायणोऽपि यद्धृत्वा नारी भूत्वा महेश्वरम् ॥2॥

योगिनं क्षोभमनयद् यद् धृत्वा च रघूत्तमः।
वर-तृप्तो जघानैव रावणादि-निशाचरान् ॥3॥

यस्य प्रसादादीशोऽहं त्रैलोक्य-विजयी विभुः।
धनाधिपः कुबेरोऽपि सुरेशोऽभूच्छचीपतिः॥4॥

एवं सकला देवाः सर्वसिद्धीश्वराः प्रिये ।
श्रीजगन्मंगलस्याऽस्य कवचस्य ऋषिः शिवः॥5॥

छन्दोऽनुष्टुप् देवता च कालिका दक्षिणेरिता ।
जगतां मोहने दुष्टविजये भुक्ति-मुक्तिषु ॥6॥

योषिदाकर्षणे चैव विनियोगः प्रकीर्तितः।
शिरो मे कालिका पातु क्रींकारैकाक्षरी परा ॥7॥

क्रीं क्रीं क्रीं मे ललाटं च कालिका खड्गधारिणी ।
हूं हूं पातु नेत्रयुगं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुति मम ॥8॥

दक्षिणे कालिका पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरी ।
क्रीं क्रीं क्रीं रसनां पातु हूं हूं पातु कपोलकम् ॥9॥

वदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहा-स्वरूपिणी ।
द्वाविंशत्यक्षरी स्कन्धौ महाविद्या सुखप्रदा ॥10॥

खड्ग-मुण्डधरा काली सर्वांगमभितोऽवतु ।
क्रीं हूं ह्रीं त्र्यक्षरी पातु चामुण्डा हृदये मम ॥11॥

ऐं हूं ओं ऐं स्तनद्वन्द्वं ह्रीं फट् स्वाहा ककुत्स्थलम् ।
अष्टाक्षरी महाविद्या भुजौ पातु सकर्तृका ॥12॥

क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रींह्रींकारी पातु षडक्षरी मम ।
क्रीं नाभिं मध्यदेशं च दक्षिणे कालिकाऽवतु ॥13॥

क्रीं स्वाहा पातु पृष्ठं च कालिका सा दशाक्षरी ।
क्रीं मे गुह्यं सदा पातु कालिकायै नमस्ततः ॥14॥

सप्ताक्षरी महाविद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता ।
ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके हूं हूं पातु कटिद्वयम् ॥15॥

काली दशाक्षरी विद्या स्वाहा मामूरुयुग्मकम् ।
ॐ क्रीं क्रीं मे स्वाहा पातु कालिका जानुनी सदा ॥16॥

कालीहृन् नामविद्येयं चतुर्वर्ग-फलप्रदा ।
क्रीं ह्रीं ह्रीं पातु सा गुल्फं दक्षिणे कालिकाऽवतु ॥17॥

क्रीं ह्रूं ह्रीं स्वाहा पदं पातु चतुर्दशाक्षरी मम ।
खड्ग-मुण्डधरा काली वरदाभय-धारिणी ॥18॥

विद्याभिः सकलाभिः सा सर्वांगमभितोऽवतु ।
काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी ॥19॥

विप्रचित्ता तथोग्रोग्रप्रभा दीप्ता घनत्विषा ।
नीला घना बलाका च मात्रा मुद्रा मिता च माम् ॥20॥

एताः सर्वाः खड्गधरा मुण्डमाला-विभूषणाः।
रक्षन्तु दिग्-विदिक्षु मां ब्राह्मी नारायणी तथा ॥21॥

माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चाऽपराजिता ।
वाराही नारसिंही च सर्वाश्चाऽमितभूषणाः॥23॥

रक्षन्तु स्वायुधैर्दिक्षु विदिक्षु मां यथा तथा ।
इति ते कथितं दिव्यं कवचं परमाद्भुतम् ॥24॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



काली-हृदयम्

ध्यायेत् कालीं महामायां त्रिनेत्रा-बहुरूपिणीम् ।
चतुर्भुजां लल्लज्जिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम् ॥1॥

नीलोत्पलदलप्रख्यां शत्रुसंघविदारिणीम् ।
नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं वरदं तथा ॥2॥

बिभ्राणां रक्तवदनां द्रंष्ट्रालीं घोररूपिणीम् ।
अट्टाट्टहासनिरतं सर्वदा च दिगम्बराम् ॥3॥

शवासनस्थितां देवीं मुण्डमाला-विभूषिताम् ।
इति ध्यात्वा महादेवीं ततस्तु हृदयं पठेत् ॥4॥

ॐ कालिका घोररूपाद्या सर्वकामफलप्रदा ।
सर्वदेवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे ॥5॥

ह्रीं-ह्रीं स्वरूपिणी श्रेष्ठा त्रिषु लोकेषु दुर्लभा ।
तव स्नेहान्मयाख्यातं न देयं यस्य कस्यचित् ॥6॥

अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि निशामय परात्मिके ।
यस्य विज्ञानमात्रेण जीवन्मुक्तो भविष्यति ॥7॥

नाग-यज्ञोपवीतां च चन्द्रार्द्धकृतशेखराम् ।
जटाजूटां च सञ्चिन्त्य महाकालसमीपगाम् ॥8॥

एवं न्यासादय: सर्वे ये प्रकुर्वन्ति मानव:।
प्राप्नुवन्ति च ते मोक्षं सत्यं-सत्यं वरानने ॥9॥

यन्त्रं शृणु परं देव्या: सर्वार्थ-सिद्धिदायकम् ।
गोप्याद् गोप्यतरं गोप्यं गोप्याद् गोप्यतरं महत् ॥10॥

त्रिकोणं पञ्चकं चाऽष्टकमलं भूपुरान्वितम् ।
मुण्डपंक्तिं च ज्वालां च कालियन्त्रं सुसिद्धिदम् ॥11॥

मन्त्रं तु पूर्वकथितं धारयस्व सदा प्रिये ।
देव्या दक्षिण-काल्यास्तु नाममालां निशामय ॥12॥

काली दक्षिणकाली च कृष्णरूपा परात्मिका ।
मुण्डमाली विशालाक्षी सृष्टिसंहारकारिका ॥13॥

स्थितिरूपा महामाया योगनिद्रा भगात्मिका ।
भागसर्पि: पानरता भगोद्योता भगांगजा ॥14॥



आद्या सदा नवा घोरा महातेजाः करालिका ।
प्रेतवाहा सिद्धिलक्ष्मीरनिरुद्धा सरस्वती ॥15॥

एतानि नाममाल्यानि ये पठन्ति दिने-दिने ।
तेषां दासस्य दासोऽहं सत्यं-सत्यं महेश्वरि ॥16॥

कालीं कालहरां देवीं कंकालबीजरूपिणीम् ।
काकरूपां कलातीतां कालिकां दक्षिणां भजे ॥17॥

कुण्डगोलप्रियां देवीं स्वयंभूकुसुमेरताम् ।
रतिप्रियां महारौद्रीं कालिकां प्रणमाम्यहम् ॥18॥

दूतीप्रियां महादूतीं दूतीयोगेश्वरी पराम् ।
दूतीयोगोद्भवरतां दूतीरूपां नमाम्यहम् ॥19॥

क्रीं मन्त्रेण जलं जप्त्वा सप्तधा सेचनेन तु ।
सर्वे रोगा विनश्यन्ति नाऽत्र कार्या विचारणा ॥20॥

क्रीं स्वाहान्तै-र्महामन्त्रैश्चन्दनं साधयेत्ततः ।
तिलकं क्रियते प्राज्ञैर्लोको वश्यो भवेत् सदा ॥21॥

क्रीं-हूं-ह्रीं मन्त्रजप्तेन चाऽक्षत सप्तभि: प्रिये ।
महाभयविनाशश्च जायते नाऽत्र संशय: ॥22॥

क्रीं-ह्रीं-ह्रूं-स्वाहामन्त्रेण श्मशानाऽग्निं च मन्त्रयेत् ।
शत्रोर्गृहे प्रतिक्षिप्त्वा शत्रोमृत्युर्भविष्यति ॥23॥

हूं-ह्रीं-क्रीं चैव उच्चाटे पुष्पं संशोध्य सप्तधा ।
रिपूणां चैव चोच्चाटन्नयत्येव न संशय: ॥24॥

आकर्षणे च क्रीं-क्रीं-क्रीं जप्त्वाऽक्षतं प्रतिक्षिपेत् ।
सहस्त्रयोजनस्था च शीघ्रमागच्छति प्रिये ॥25॥

क्रीं-क्रीं-क्रीं-ह्रूं-ह्रूं-ह्रीं-ह्रीं च कज्जलं शोधितं तथा।
तिलकेन जगन्मोहं सप्तधा मन्त्रमाचरेत् ॥26॥

हृदयं परमेशानि सर्वपापहरं परम् ।
अश्वमेधादिदानानां कोटि-कोटि-गुणोत्तरम् ॥27॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ ॥



शिव स्तोत्र



श्री रुद्रप्रश्नः

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नमः। या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शरव्या या तव तया नो रुद्र मृडय। या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा शन्तमया गिरिशंताभिचा-कशीहि। यामिषुं गिरिशंत हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि ँसीः पुरुषं जगत्। शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ँ सुमना असत्। अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहीँश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्यः। असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चेमा ँ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषा ँ हेड ईमहे। असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नुदहार्यः। उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः। नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्त्वानोऽहं तेभ्योऽकरन्नमः। प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्नि योर्ज्याम् । याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप। अवतत्य धनुस्त्व ँ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव। विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवा ँ उत। अनेशन्नस्येषव आभुरस्य निषंगथिः। या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिब्भुज। नमस्ते अस्त्वायुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने। परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम् ॥ 1 ॥

शंभवे नमः। नमस्ते अस्तु भगवन्विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय त्रिकाग्निकालाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युंजयाय सर्वेश्वराय सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः॥ नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पतये नमो नमः सस्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमो नमो

बभ्लुशाय विव्याधिनेऽन्नानां पतये नमो नमो हरिकेशा-योपवीतिने पुष्टानां पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो नमो रुद्रायाततताविने क्षेत्राणां पतये नमो नमः सूतायाहन्त्याय वनानां पतये नमो नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनां पतये नमो नम उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनां पतये नमो नमः कृत्स्नवीताय धावते सत्त्वनां पतये नमः ॥2॥

नमः सहमानाय निव्याधिन आव्याधिनीनां पतये नमो नमः ककुभाय निषङ्गिणे स्तेनानां पतये नमो नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणां पतये नमो नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमो नमः सृकाविभ्यो जिघाँसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो नमोऽसिमद्भ्यो नक्तंचरद्भ्यः प्रकृन्तानां पतये नमो नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो नम इषुमद्भ्यो धन्वाविभ्यश्च वो नमो नम आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नम आयच्छद्भ्यो विसृजद्भ्यश्च वो नमो नमोऽस्यद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमो नम आसीनेभ्यः शयानेभ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमो नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमो अश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमः ॥3॥

नम आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम उगणाभ्यस्तृँहतीभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यः, क्षुल्लकेभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्योऽरथेभ्यश्च वो नमो नमो रथेभ्यो रथपतिभ्यश्च वो नमो नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमः, क्षत्तृभ्यः संग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमः पुञ्जिष्टेभ्यो निषादेभ्यश्च वो नमो नम इषुकृद्भ्यो धन्वकृद्भ्यश्च वो नमो नमो मृगयुभ्यः श्वनिभ्यश्च वो नमो नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमः ॥4॥

नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च संवृध्वने च नमो अग्रियाय च प्रथमाय च नम आशवे चाजिराय च नमः शीघ्रियाय च शीभ्याय च नम ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमः स्रोतस्याय च द्वीप्याय च ॥5॥

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्नियाय च नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नम उर्वर्याय च खल्याय च नमः श्लोक्याय चाऽवसान्याय च नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नम आशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभिन्दते च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमो बिल्मिने च कवचिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च ॥6॥ नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो दूताय च प्रहिताय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः सूद्याय च सरस्याय च नमो नाद्याय च वैशन्ताय च नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नम ईध्रियाय चातप्याय च नमो वात्याय च रेष्मियाय च नमो वास्तव्याय च वास्तु पाय च ॥7॥

नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च नमः शङ्गाय च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमो अग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय नमश्शंभवे च मयोभवे च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नम आतार्याय चालाद्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च

नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च ॥8॥ नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च नमः किꣳशिलाय च क्षयणाय च नमः कपर्दिने च पुलस्तये च नमो गोष्ठ्याय च गृह्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च नमो ह्रदय्याय च निवेष्प्याय च नमः पाꣳसव्याय च रजस्याय च नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऊर्व्याय च सूर्म्याय च नमः पर्ण्याय च पर्णशद्याय च नमोऽपगुरमाणाय चाभिघ्नते च नम आख्खिदते च प्रख्खिदते च नमो वः किरिकेभ्यो देवानाꣳहृदयेभ्यो नमो विक्षीणकेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यो नम आमीवत्केभ्यः ॥9॥

द्रापे अन्धसस्पते दरिद्रन्नीललोहित। एषां पुरुषाणामेषां पशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किंचनाममत्। या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहभेषजी। शिवा रुद्रस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे। इमाꣳरुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतिम्। यथा नः शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्। मृडा नो रुद्रोत नो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुरायजे पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतौ। मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नोऽवधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नस्तनुवो रुद्र रीरिषः। मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवधीर्हविष्मन्तो नमसा विधेम ते। आरात्ते गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्नमस्मे ते अस्तु। रक्षा च नो अधि च देव ब्रूह्यधा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः। स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगन्न भीममुपहत्नुमुग्रम्। मृडा जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यन्ते अस्मन्निवपन्तु सेनाः। परिणो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मति रघायोः। अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृडय। मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्ष आयुधन्निधाय कृत्तिं वसान आचर पिनाकं बिभ्रदागहि। विकिरिद विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्रꣳहेतयोन्यमस्मन्निवपन्तु ताः। सहस्राणि सहस्रधा बाहुवोस्तव हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि ॥10॥

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। अस्मिन्महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवा अधि। नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षमाचराः। नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा उपश्रिताः। ये वृक्षेषु सस्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः। ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। ये अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्। ये पथां पथिरक्षय ऐलबृदायव्युधः। ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्गिणः। य एतावन्तश्च भूयाꣳसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। नमो रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येऽन्तरिक्षे ये दिवि येषामन्नं वातो वर्षमिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि ॥ 11 ॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु। तमु ष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वस्य क्षयति भेषजस्य। यक्ष्वामहे सौमनसाय रुद्रं नमोभिर्देवमसुरं दुवस्य। अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः। अयं मे विश्वभेषजोऽयꣳ शिवाभिमर्शनः। ये ते सहस्रमयुतं पाशा मृत्यो मर्त्याय हन्तवे। तान्-यज्ञस्य मायया सर्वानव यजामहे। मृत्यवे स्वाहा मृत्यवे स्वाहा। ॐ नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युर्मे पाहि॥

प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मा विशान्तकः। तेनान्नेनाप्यायस्व ॥ सदाशिवोम्।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



चमकप्रश्नः

ॐ अग्नाविष्णू सजोषसेमावर्धन्तु वां गिरः। द्युम्नैर्वाजेभिरागतम्। वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रावश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवश्च मे प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तं च म आधीतं च मे वाक्च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च म ओजश्च मे सहश्च म आयुश्च मे जरा च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थानि च मे परूँषि च मे शरीराणि च मे ॥1॥ ज्यैष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्ष्मा च मे द्राघुया च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे वशश्च मे त्विषिश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच्च मे सुगं च मे सुपथं च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे क्लृप्तं च मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च मे ॥2॥

शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भद्रं च मे श्रेयश्च मे वस्यश्च मे यशश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे यन्ता च मे धर्ता च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च म ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुगं च मे शयनं च मे सूषा च मे सुदिनं च मे ॥3॥

ऊर्क्च मे सूनृता च मे पयश्च मे रसश्च मे घृतं च मे मधु च मे सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्च मे वृष्टिश्च मे जैत्रं च म औद्भिद्यं च मे रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे विभु च मे प्रभु च मे बहु च मे भूयश्च मे पूर्णं च मे पूर्णतरं च मेऽक्षितिश्च मे कूयवाश्च मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे गोधूमाश्च मे मसुराश्च मे प्रियंगवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे ॥4॥ अश्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यं च मेऽयश्च मे सीसं च मे त्रपुश्च मे श्यामं च मे लोहं च मेऽग्निश्च म आपश्च मे वीरुधश्च म ओषधयश्च मे कृष्टपच्यं च मेऽकृष्टपच्यं च मे ग्राम्याश्च मे पशव आरण्याश्च यज्ञेन कल्पन्तां वित्तं च मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे वसु च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमश्च म इतिश्च मे गतिश्च मे ।।5॥ अग्निश्च म इन्द्रश्च मे सोमश्च म इन्द्रश्च मे सविता च म इन्द्रश्च मे सरस्वती च म इन्द्रश्च मे पूषा च म इन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे मित्रश्च म इन्द्रश्च मे वरुणश्च म इन्द्रश्च मे त्वष्टा च म इन्द्रश्च मे धाता च म इन्द्रश्च मे विष्णुश्च म इन्द्रश्च मेऽश्विनौ च म इन्द्रश्च मे मरुतश्च म इन्द्रश्च मे विश्वे च मे

देवा इन्द्रश्च मे पृथिवी च म इन्द्रश्च मेऽन्तरिक्षं च म इन्द्रश्च मे द्यौश्च म इन्द्रश्च मे दिश्श्च म इन्द्रश्च मे मूर्धा च म इन्द्रश्च मे प्रजापतिश्च म इन्द्रश्च मे ॥ 6 ॥

अꣳशुश्च मे रश्मिश्च मेऽदाभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म उपाꣳशुश्च मेऽन्तर्यामश्च म ऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रावरुणश्च म आश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च म आग्रयणश्च मे वैश्वदेवश्च मे ध्रुवश्च मे वैश्वानरश्च म ऋतुग्रहाश्च मेऽतिग्राह्याश्च म ऐन्द्राग्नश्च मे वैश्वदेवश्च मे मरुत्वतीयाश्च मे माहेन्द्रश्च म आदित्यश्च मे सावित्रश्च मे सारस्वतश्च मे पौष्णश्च मे पात्नीवतश्च मे हारियोजनश्च मे ॥ 7 ॥

इध्मश्च मे बर्हिश्च मे वेदिश्च मे धिष्णियाश्च मे स्रुचश्च मे चमसाश्च मे ग्रावाणश्च मे स्वरवश्च म उपरवाश्च मेऽधिषवणे च मे द्रोणकलशश्च मे वायव्यानि च मे पूतभृच्च म आधवनीयश्च म आग्नीध्रं च मे हविर्धानं च मे गृहाश्च मे सदश्च मे पुरोडाशाश्च मे पचताश्च मेऽवभृथश्च मे स्वगाकारश्च मे ॥ 8 ॥

अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मे शक्वरीरङ्गुलयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्तामृक्च मे साम च मे स्तोमश्च मे यजुश्च मे दीक्षा च मे तपश्च म ऋतुश्च मे व्रतं च मेऽहोरात्रयोर्वृष्ट्या बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पेताम् ॥ 9 ॥

गर्भाश्च मे वत्साश्च मे त्र्यविश्च मे त्र्यवीच मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे पञ्चाविश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्यवाट् च मे तुर्यौही च मे पष्ठवाट् च मे पष्ठौही च म उक्षा च मे वशा च म ऋषभश्च मे वेहच्च मेऽनड्वाञ्च मे धेनुश्च म आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतामपानो यज्ञेन कल्पतां व्यानो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पताꣳश्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् ॥ 10 ॥

एका च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे सप्त च मे नव च म एकादश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे नवदश च म एकविꣳशतिश्च मे त्रयोविꣳशतिश्च मे पञ्चविꣳशतिश्च मे सप्तविꣳशतिश्च मे नवविꣳशतिश्च म एकत्रिꣳश्च्च मे त्रयस्त्रिꣳशच्च मे चतस्रश्च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे षोडश च मे विꣳशतिश्च मे चतुर्विꣳशतिश्च मेऽष्टाविꣳशतिश्च मे द्वात्रिꣳशच्च मे षट्त्रिꣳशच्च मे चत्वारिꣳशच्च मे चतुश्चत्वारिꣳशच्च मेऽष्टाचत्वारिꣳशच्च मे वाजश्च प्रसवश्चापिजश्च क्रतुश्च सुवश्च मूर्धा च व्यश्नियश्चान्त्यायनश्चान्त्यश्च भौवनश्च भुवनश्चाधिपतिश्च ॥ 11 ॥ ॐ इडा देवहूर्मनुर्यज्ञनीर्बृहस्पतिरुक्थामदानि शꣳसिषद्विश्वे देवाः सूक्तवाचः पृथिविमातर्मा मा हिꣳसीर्मधु मनिष्ये मधु जनिष्ये मधु वक्ष्यामि मधु वदिष्यामि मधुमतीं देवेभ्यो वाचमुद्यासꣳशुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मा देवा अवन्तु शोभायै पितरोऽनुमदन्तु ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

श्री-शिवमहिम्नः स्तोत्रम्

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥1॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोः-
अतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
सः कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥2॥

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन्किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन! बुद्धिर्व्यवसिता ॥3॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥4॥

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥5॥

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगताम्-
अधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर! संशेरत इमे ॥6॥

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्याद् ऋजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥7॥

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥8॥

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥9॥

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चिर्हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरीश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥10॥

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरःपद्म श्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥11॥

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥12॥

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सतीम्
अधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयोर्
न कस्या उन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥13॥

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥14॥

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।

स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्-
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥15॥

मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम्।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥16॥

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमित्-
यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥17॥

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिः-
विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः॥18॥

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयोः-
यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥19॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥20॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृताम्-
ऋषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥21॥

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥22॥



स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत्-
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटनाद्-
अवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥23॥

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराश्-
चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥24॥

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥25॥

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहः
त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥26॥

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरान्-
अकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभि:
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥27॥

भव: शर्वो रुद्र: पशुपतिरथोग्र: सह महान्
तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते ॥28॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नम: क्षोधिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नम:।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नम: सर्वस्मै ते तदिदमितिसर्वाय च नम: ॥29॥

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नम:
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नम:।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नम:
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नम: ॥30॥

कृशपरिणति चेत: क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धि:।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥31॥

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्व कालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥32॥

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले:
ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।
सकलगणवरिष्ठ: पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तै: स्तोत्रमेतच्चकार ॥33॥

अहरहरनवद्यं धूर्जटे: स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्त: पुमान्य:।

स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्त्तिमांश्च ॥34॥

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः।
महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥35॥

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम् ॥36॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मंत्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥37॥

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशिधरमौलेर्देवदेवस्य दासः।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥38॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥39॥

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥40॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥41॥

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर! ॥42॥

हरिः ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

वेदसार-शिव-स्तोत्रम्

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं, गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम्।
जटाजूटमध्ये स्फुरद्-गांग-वारिं, महादेवमेकं स्मरामि स्मरारिम् ॥1॥

महेशं सुरेशं सुरारार्तिनाशं, विभुं विश्वनाथं विभूत्यंगभूषम्।
विरूपाक्षमिन्द्वर्कवह्नि-त्रिनेत्रं सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्त्रम् ॥2॥

गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं, गवेन्द्राधिरूढं गुणातीतरूपम्।
भवं भास्वरं भस्मना भूषितांगं, भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्त्रम् ॥3॥

शिवाकान्त शम्भो शशांकार्धमौले महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन्।
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूपः प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप ॥4॥

परात्मानमेकं जगद्-बीजमाद्यं निरीहं निराकारमोंकारवेद्यम्।
यतो जायते पाल्यते येन विश्वं तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम् ॥5॥

न भूमिर्न चापो न वह्निर्न वायुः न चाकाशमास्ते न तन्द्रा न निद्रा।
न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो न यस्यास्ति मूर्त्तिस्त्रिमूर्त्तिं तमीडे ॥6॥

अजं शाश्वतं कारणं कारणानां शिवं केवलं भासकं भासकानाम्।
तुरीयं तमः पारमाद्यन्तहीनं प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम् ॥7॥

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्त्ते नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्त्ते।
नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य ॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



शिव-मानस-पूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदांकितं चन्दनम्।
जातिचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥ 1 ॥

सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम्।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥ 2 ॥

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदंगकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा।
साष्टांगप्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया
संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥ 3 ॥

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥ 4 ॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥ 5 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

महामृत्युञ्जय मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

शिव-अपराध-क्षमापन-स्तोत्रम्

आदौ कर्मप्रसंगात् कलयति कलुषं मातृकुक्षौ स्थितं मां
विण्मूत्रामेध्यमध्ये क्वथयति नितरां जाठरो जातवेदाः।
यद्यद्वै तत्र दुःखं व्यथयति नितरां शक्यते केन वक्तुं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥1॥

बाल्ये दुःखातिरेको मललुलितवपुः स्तन्यपाने पिपासा
नो शक्तश्चेन्द्रियेभ्यो भवगुणजनिता जन्तवो मां तुदन्ति।
नानारोगादिदुःखाद्रुदनपरवशः शंकरं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥2॥

प्रौढोऽहं यौवनस्थो विषयविषधरैः पञ्चभिर्मर्मसन्धौ
दष्टो नष्टो विवेकः सुतधनयुवतिस्वादसौख्ये निषण्णः।
शैवीचिन्ताविहीनं मम हृदयमहो मानगर्वाधिरूढं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥3॥

वार्द्धक्ये चेन्द्रियाणां विगतगतिमतिश्चाधिदैवादितापैः
पापै रोगैर्वियोगैस्त्वनवसितवपुः प्रौढिहीनं च दीनम्।
मिथ्यामोहाभिलाषैर्भ्रमति मम मनो धूर्जटेर्ध्यानशून्यं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥4॥

नो शक्यं स्मार्तकर्म प्रतिपदगहनप्रत्यवायाकुलाख्यं
श्रौते वार्ता कथं मे द्विजकुलविहिते ब्रह्ममार्गे सुसारे।
नास्था धर्मे विचारः श्रवणमननयोः किं निदिध्यासितव्यं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥5॥

स्नात्वा प्रत्यूषकाले स्नपनविधिविधौ नाहृतं गांगतोयं
पूजार्थं वा कदाचिद्बहुतरगहनात्खण्डबिल्वीदलानि।
नानीता पद्ममाला सरसि विकसिता गन्धपुष्पे त्वदर्थं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥6॥

दुग्धैर्मध्वाज्ययुक्तैर्दधिसितसहितैः स्नापितं नैव लिंगं
नो लिप्तं चन्दनाद्यैः कनकविरचितैः पूजितं न प्रसूनैः।
धूपैः कर्पूरदीपैर्विविधरसयुतैर्नैव भक्ष्योपहारैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥7॥

ध्यात्वा चित्ते शिवाख्यं प्रचुरतरधनं नैव दत्तं द्विजेभ्यो
हव्यं ते लक्षसंख्यैर्हुतवहवदने नार्पितं बीजमन्त्रैः।
नो तप्तं गांगतीरे व्रतजपनियमैः रुद्रजाप्यैर्न वेदैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥8॥

स्थित्वा स्थाने सरोजे प्रणवमयमरुत्कुण्डले सूक्ष्ममार्गे
शान्ते स्वान्ते प्रलीने प्रकटितविभवे ज्योतिरूपे पराख्ये।
लिंगज्ञे ब्रह्मवाक्ये सकलतनुगतं शंकरं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥9॥

नग्नो निःसंगशुद्धस्त्रिगुणविरहितो ध्वस्तमोहान्धकारो
नासाग्रे न्यस्तदृष्टिर्विदितभवगुणो नैव दृष्टः कदाचित्।
उन्मन्यावस्थया त्वां विगतकलिमलं शंकरं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥10॥

चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गंगाधरे शंकरे
सर्पैर्भूषितकण्ठकर्णविवरे नेत्रोत्थवैश्वानरे।
दन्तित्वक्कृतसुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्यसारे हरे
मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमखिलामन्यैस्तु किं कर्मभिः॥11॥

किं वानेन धनेन वाजिकरिभिः प्राप्तेन राज्येन किं
किं वा पुत्रकलत्रमित्रपशुभिर्देहेन गेहेन किम्।
ज्ञात्वैतत्क्षणभंगुरं सपदि रे त्याज्यं मनो दूरतः
स्वात्मार्थं गुरुवाक्यतो भज भज श्रीपार्वतीवल्लभम् ॥12॥

आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनं
प्रत्यायान्ति गताः पुनर्न दिवसाः कालो जगद्भक्षकः।
लक्ष्मीस्तोयतरंगभंगचपला विद्युच्चलं जीवितं
तस्मान्मां शरणागतं शरणद त्वं रक्ष रक्षाधुना ॥13॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥14॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

शिवनामावल्यष्टकम्

हे चन्द्रचूड मदनान्तक शूलपाणे, स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शम्भो।
भूतेश भीतभयसूदन मामनाथं, संसार-दु:ख-गहनाज्जगदीश रक्ष ॥1॥

हे पार्वती हृदयवल्लभचन्द्रमौले, भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाप।
हे वामदेव भव रुद्र पिनाकपाणे, संसार-दु:ख-गहनाज्जगदीश रक्ष ॥2॥

हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पञ्चवक्त्र, लोकेश शेषवलय प्रमथेश शर्व।
हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां, संसार-दु:ख-गहनाज्जगदीश रक्ष ॥3॥

हे विश्वनाथ शिवशंकर देवदेव, गंगाधर प्रमथनायक नन्दिकेश।
बाणेश्वरान्धकरिपो हर लोकनाथ, संसार-दु:ख-गहनाज्जगदीश रक्ष ॥4॥

वाराणसीपुरपते मणिकर्णिकेश, वीरेश दक्षमखकाल विभो गणेश।
सर्वज्ञ सर्वहृदयैकनिवास नाथ, संसार-दु:ख-गहनाज्जगदीश रक्ष ॥5॥

श्री मन्महेश्वर कृपामय हे दयालो, हे व्योमकेश शितिकण्ठ गणाधिनाथ।
भस्मांगराग नृकपालकलापमाल, संसार-दु:ख-गहनाज्जगदीश रक्ष ॥6॥

कैलासशैलविनिवास वृषाकपे हे, मृत्युञ्जय त्रिनयन त्रिजगन्निवास।
नारायणप्रिय मदापह शक्तिनाथ, संसार-दु:ख-गहनाज्जगदीश रक्ष ॥7॥

विश्वेश विश्वभयनाशक विश्वरूप, विश्वात्मक त्रिभुवनैकगुणाधिवास।
हे विश्वनाथ करुणामय दीनबन्धो, संसार-दु:ख-गहनाज्जगदीश रक्ष ॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

द्वादश ज्योतिर्लिंगानि

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारममलेश्वरम् ॥1॥

परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम्
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥2॥

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये ॥3॥

शिव-ताण्डव-स्तोत्रम्

जटाटवी-गलज्जल-प्रवाह-पावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य-लम्बितां भुजंग-तुंग-मालिकाम्।
डमड्-डमड् डमड् ड्मड्-निनाद-वड्डमर्वयम्
चकार-चण्ड ताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥ 1 ॥

जटाकटाहसम्भ्रम-भ्रमन्निलिम्प निर्झरी
विलोल-वीचि-वल्लरी विराजमान-मूर्द्धनि।
धगद्-धगद्-धगद्-ज्वलल्ललाट-पट्ट पावके
किशोर-चन्द्र-शेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥ 2 ॥

धरा-धरेन्द्र नन्दिनी विलास बन्धु बन्धुर-
स्फुरत् दिगन्त सन्तति प्रमोदमान मानसे।
कृपा-कटाक्ष-धोरणी निरुद्ध दुर्धरापदि
क्वचिद्-दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥ 3 ॥

जटा-भुजंग-पिंगल-स्फुरत्-फणा-मणि-प्रभा-
कदम्ब-कुंकुम-द्रव-प्रलिप्त-दिग्वधूमुखे।
मदान्ध-सिन्धुर-स्फुरत्-त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो-विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥ 4 ॥

सहस्र-लोचन-प्रभृत्य शेष लेख शेखर-
प्रसून-धूलि-धोरणी विधूसरांघ्रिपीठभूः।
भुजंगराजमालया निबद्ध-जाट-जूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोर-बन्धु शेखरः ॥ 5 ॥

ललाट-चत्वरज्वलद् धनञ्जय-स्फुलिंगभा-
निपीत-पञ्च-सायकं नमन्निलिम्प-नायकम्।
सुधा-मयूख-लेखया-विराजमान-शेखरं
महाकपालि-सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः ॥ 6 ॥

कराल-भाल पट्टिका धगद्-धगद्-धगद्-ज्वलद्-
धनञ्जयाहुती-कृत प्रचण्ड पञ्च-सायके।
धरा-धरेन्द्र-नन्दिनी कुचाग्रचित्र पत्रक-
प्रकल्पनैक-शिल्पिनी त्रिलोचने रतिर्मम ॥ 7 ॥



नवीन-मेघ-मण्डली-निरुद्ध-दुर्धरस्फुरत्-
कुहू-निशीथिनीतमः-प्रबन्ध-बद्ध-कन्धरः।
निलिम्प-निर्झरीधरस्तनोतु कृत्ति-सिन्धुरः
कला-निधान-बन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ॥ 8 ॥

प्रफुल्ल-नील-पंकज-प्रपञ्च-कालिम-प्रभा-
वलम्बि-कण्ठ कन्दली-रुचि-प्रबद्ध-कन्धरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥ 9 ॥

अखर्व-सर्व-मंगला कला-कदम्ब-मञ्जरी-
रस-प्रवाह-माधुरी-विजृम्भणा मधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥ 10 ॥

जयत्वदभ्र-विभ्रम-भ्रमद्-भुजंगमश्वसद्-
विनिर्गमत्-क्रमस्फुरत्-कराल-भाल-हव्यवाट्।
धिमिद्-धिमिद्-धिमिद् ध्वनन्-मृदंगतुंग-मंगल
ध्वनि-क्रम प्रवर्तित-प्रचण्ड ताण्डवः शिवः ॥ 11 ॥

दृषद् विचित्रतल्पयोर्भुजंग-मौक्तिक-स्रजोः-
गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः-सुहृद्-विपक्ष-पक्षयोः।
तृणारविन्द-चक्षुषोः प्रजा-मही-महेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ॥ 12 ॥

कदा निलिम्प-निर्झरी-निकुञ्ज-कोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः-सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन्।
विलोल-लोल-लोचनो ललाम-भाल-लग्नकः
शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥ 13 ॥

रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं, विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम् ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ॥ 1 ॥

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं गिराज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकालकालं कृपालं गुणागार संसारपारं नतोऽहम् ॥ 2 ॥

तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरं मनोभूत कोटि प्रभा श्रीशरीरम् ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजंगा ॥ 3 ॥

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥ 4 ॥

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम् ।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥ 5 ॥

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी सदासज्जनानन्ददाता पुरारि ।
चिदानन्दसन्दोह मोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारि ॥ 6 ॥

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् ॥ 7 ॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यम् ।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ॥ 8 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री-शिवाष्टकम्

प्रभुमीशमनीशमशेषगुणं गुणहीनमहीशगराभरणम्।
रणनिर्जितदुर्जयदैत्यपुरं प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥ 1 ॥

गिरिराजसुतान्वितवामतनुं तनुनिन्दितराजितकोटिविधुम्।
विधिविष्णुशिरोधृतपादयुगं प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥ 2 ॥

शशलांछितरञ्जितसन्मुकुटं कटिलम्बितसुन्दरकृत्तिपटम्।
सुरशैवलिनीकृतपूतजटं प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥ 3 ॥

नयनत्रयभूषितचारुमुखं मुखपद्मपराजितकोटिविधुम्।
विधुखण्डविमण्डितभालतटं प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥ 4 ॥

वृषराजनिकेतनमादिगुरुं गरलाशनमाजिविषाणधरम्।
प्रमथाधिपसेवकरञ्जनकं प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥ 5 ॥

मकरध्वजमत्तमतङ्गहरं करिचर्मगनागविबोधकरम्।
वरमार्गणशूलविषाणधरं प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥ 6 ॥

जगदुद्भवपालननाशकरं त्रिदिवेशशिरोमणिधृष्टपदम्।
प्रियमानवसाधुजनैकगतिं प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥ 7 ॥

हृदस्थतमः प्रकारपहरं नृमनोजनिताघविनाशकरम्।
भजतोऽखिलदुःखसमिद्धहरं प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥ 8 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



लिंगाष्टकम्



ब्रह्म मुरारि सुरार्चित लिंगं निर्मल भासित शोभित लिंगम्।
जन्मज दु:ख विनाशन लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 1 ॥

देव मुनि प्रवरार्चित लिंगं काम-दहन करुणाकर लिंगम्।
रावण दर्प विनाशन लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम्॥ 2 ॥

सर्व सुगन्धि सुलेपित लिंगं बुद्धि-विवर्द्धन कारण लिंगम्।
सिद्धसुरासुर वन्दित लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 3 ॥

कनक महामणि भूषित लिंगं फणिपति-वेष्टित शोभित लिंगम्।
दक्ष सुयज्ञ विनाशन लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 4 ॥

कुंकुम चन्दन लेपित लिंगं पंकज हार सुशोभित लिंगम्।
संचित पाप विनाशन लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 5 ॥

देवगणार्चित सेवित लिंगं भावैर्भक्तिभिरेव च लिंगम्।
दिनकर कोटि प्रभाकर लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 6 ॥

अष्टदलो परिवेष्टित लिंगं सर्व समुद्भव कारण लिंगम्।
अष्ट दरिद्र विनाशन लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 7 ॥

सुरगुरु सुरवर पूजित लिंगं सुरतरु पुष्प सदार्चित लिंगम्।
परात्परं परमात्मक लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ 8 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

शिवपञ्चाक्षर-स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥ 1 ॥

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्प सुपूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥ 2 ॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ॥ 3 ॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमाय मुनीन्द्र देवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥ 4 ॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥ 5 ॥

शिवषडक्षर-स्तोत्रम्

ॐकारं बिन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः॥

नमन्ति ऋषयो देवाः नमन्त्यप्सरसांगणाः।
नराः नमन्ति देवेशं नकाराय नमो नमः॥

महादेवं महात्मानं महाध्यानपरायणम् ।
महापापहरं देवं मकाराय नमो नमः॥

शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारकम् ।
शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः ॥

वाहनं वृषभो यस्य वासुकी कण्ठभूषणम् ।
वामे शक्तिधरं देवं वकाराय नमो नमः ॥

यत्र यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः।
यो गुरुः सर्वदेवानां यकाराय नमो नमः ॥

नमः शिवाय नमो नमः।
नमः शिवाय नमो नमः।

शिव-सहस्रनाम-स्तोत्रम्

मूल पाठ

स्थिरः स्थाणुः प्रभुर्भीमः प्रवरो वरदो वरः। सर्वात्मा सर्वविख्यातः सर्वः सर्वकरो भवः॥ 31॥
जटी चर्मी शिखण्डी च सर्वांगः सर्वभावनः। हरश्च हरिणाक्षश्च सर्वभूतहरः प्रभुः॥
प्रवृत्तिश्च निवृत्तिश्च नियतः शाश्वतो ध्रुवः। श्मशानवासी भगवान् खचरो गोचरोऽर्दनः॥
अभिवाद्यो महाकर्मा तपस्वी भूतभावनः। उन्मत्तवेषप्रच्छन्नः सर्वलोकप्रजापतिः॥
महारूपो महाकायो वृषरूपो महायशाः। महात्मा सर्वभूतात्मा विश्वरूपो महाहनुः॥
लोकपालोऽन्तर्हितात्मा प्रसादो हयगर्दभिः। पवित्रं च महांश्चैव नियमो नियमाश्रितः॥
सर्वकर्मा स्वयम्भूत आदिरादिकरो निधिः। सहस्राक्षो विशालाक्षः सोमो नक्षत्रसाधकः॥
चन्द्रः सूर्यः शनिः केतुर्ग्रहो ग्रहपतिर्वरः। अत्रिरत्र्या नमस्कर्ता मृगबाणार्पणोऽनघः॥
महातपा घोरतपा अदीनो दीनसाधकः। संवत्सरकरो मन्त्रः प्रमाणं परमं तपः॥
योगी योज्यो महाबीजो महारेता महाबलः। सुवर्णरेताः सर्वज्ञः सुबीजो बीजवाहनः॥ 40॥

दशबाहुस्त्वनिमिषो नीलकण्ठ उमापतिः। विश्वरूपः स्वयं श्रेष्ठो बलवीरोऽबलोगणः॥
गणकर्ता गणपतिर्दिग्वासाः काम एव च। मन्त्रवित् परमो मन्त्रः सर्वभावकरो हरः॥
कमण्डलुधरो धन्वी बाणहस्तः कपालवान्। अशनी शतघ्नी खड्गी पट्टिशी चायुधी महान्॥
स्रुवहस्तः सुरूपश्च तेजस्तेजस्करो निधिः। उष्णीषी च सुवक्त्रश्च उदग्रो विनतस्तथा॥
दीर्घश्च हरिकेशश्च सुतीर्थः कृष्ण एव च। शृगालरूपः सिद्धार्थो मुण्डः सर्वशुभंकरः॥
अजश्च बहुरूपश्च गन्धधारी कपर्द्यपि। ऊर्ध्वरेता ऊर्ध्वलिंग ऊर्ध्वशायी नभःस्थलः॥
त्रिजटी चीरवासाश्च रुद्रः सेनापतिर्विभुः। अहश्चरो नक्तंचरस्तिग्ममन्युः सुवर्चसः॥
गजहा दैत्यहा कालो लोकधाता गुणाकरः। सिंहशार्दूलरूपश्च आर्द्रचर्माम्बरावृतः॥
कालयोगी महानादः सर्वकामश्चतुष्पथः। निशाचरः प्रेतचारी भूतचारी महेश्वरः॥
बहुभूतो बहुधरः स्वर्भानुरमितो गतिः। नृत्यप्रियो नित्यनर्तो नर्तकः सर्वलालसः॥ 50॥

घोरो महातपाः पाशो नित्यो गिरिरुहो नभः। सहस्रहस्तो विजयो व्यवसायो ह्यतन्द्रितः॥
अधर्षणो धर्षणात्मा यज्ञहा कामनाशकः। दक्षयागापहारी च सुसहो मध्यमस्तथा॥
तेजोऽपहारी बलहा मुदितोऽर्थोऽजितोऽवरः। गम्भीरघोषो गम्भीरो गम्भीरबलवाहनः॥
न्यग्रोधरूपो न्यग्रोधो वृक्षकर्णस्थितिर्विभुः। सुतीक्ष्णदशनश्चैव महाकायो महाननः॥
विष्वक्सेनो हरिर्यज्ञः संयुगापीडवाहनः। तीक्ष्णतापश्च हर्यश्वः सहायः कर्मकालवित्॥
विष्णुप्रसादितो यज्ञः समुद्रो वडवामुखः। हुताशनसहायश्च प्रशान्तात्मा हुताशनः॥
उग्रतेजा महातेजा जन्यो विजयकालवित्। ज्योतिषामयनं सिद्धिः सर्वविग्रह एव च॥
शिखी मुण्डी जटी ज्वाली मूर्तिजो मूर्द्धगो बली। वेणवी पणवी ताली खली कालकटंकटः॥
नक्षत्रविग्रहमतिर्गुणबुद्धिर्लयोऽगमः। प्रजापतिर्विश्वबाहुर्विभागः सर्वगोऽमुखः॥
विमोचनः सुसरणो हिरण्यकवचोद्भवः। मेढ्रजो बलचारी च महीचारी स्रुतस्तथा॥ 60॥

सर्वतूर्यनिनादी च सर्वातोद्यपरिग्रहः। व्यालरूपो गुहावासी गुहो माली तरंगवित्॥
त्रिदशस्त्रिकालधृक् कर्म सर्वबन्धविमोचनः। बन्धनस्त्वसुरेन्द्राणां युधिशत्रुविनाशनः॥
सांख्यप्रसादो दुर्वासाः सर्वसाधुनिषेवितः। प्रस्कन्दनो विभागज्ञोऽतुल्यो यज्ञविभागवित्॥
सर्ववासः सर्वचारी दुर्वासा वासवोऽमरः। हैमो हेमकरोऽयज्ञः सर्वधारी धरोत्तमः॥
लोहिताक्षो महाक्षश्च विजयाक्षो विशारदः। संग्रहो निग्रहः कर्ता सर्पचीरनिवासनः॥
मुख्योऽमुख्यश्च देहश्च काहलिः सर्वकामदः। सर्वकालप्रसादश्च सुबलो बलरूपधृक्॥
सर्वकामवरश्चैव सर्वदः सर्वतोमुखः। आकाशनिर्विरूपश्च निपाती ह्यवशः खगः॥
रौद्ररूपोंऽशुरादित्यो बहुरश्मिः सुवर्चसी। वसुवेगो महावेगो मनोवेगो निशाचरः॥
सर्ववासी श्रियावासी उपदेशकरोऽकरः। मुनिरात्मनिरालोकः सम्भग्नश्च सहस्त्रदः॥
पक्षी च पक्षरूपश्च अतिदीप्तो विशाम्पतिः। उन्मादो मदनः कामो ह्यश्वत्थोऽर्थकरो यशः ॥ 70॥

वामदेवश्च वामश्च प्राग् दक्षिणश्च वामनः। सिद्धयोगी महर्षिश्च सिद्धार्थः सिद्धसाधकः॥
भिक्षुश्च भिक्षुरूपश्च विपणो मृदुरव्ययः। महासेनो विशाखश्च षष्टिभागो गवां पतिः॥
वज्रहस्तश्च विष्कम्भी चमूस्तम्भन एव च। वृत्तावृत्तकरस्तालो मधुर्मधुकलोचनः॥
वाचस्पत्यो वाजसनो नित्यमाश्रमपूजितः। ब्रह्मचारी लोकचारी सर्वचारी विचारवित्॥
ईशान ईश्वरः कालो निशाचारी पिनाकवान्। निमित्तस्थो निमित्तं च नन्दिर्नन्दिकरो हरिः॥
नन्दीश्वरश्च नन्दी च नन्दनो नन्दिवर्द्धनः। भगहारी निहन्ता च कालो ब्रह्मा पितामहः॥
चतुर्मुखो महालिंगश्चारुलिंगस्तथैव च। लिंगाध्यक्षः सुराध्यक्षो योगाध्यक्षो युगावहः॥
बीजाध्यक्षो बीजकर्ता अध्यात्मानुगतो बलः। इतिहासः सकल्पश्च गौतमोऽथ निशाकरः॥
दम्भो ह्यदम्भो वैदम्भो वश्यो वशकरः कलिः। लोककर्ता पशुपतिर्महाकर्ता ह्यनौषधः॥
अक्षरं परमं ब्रह्म बलवच्छक्र एव च। नीतिर्ह्यनीतिः शुद्धात्मा शुद्धो मान्यो गतागतः॥ 80॥

बहुप्रसादः सुस्वप्नो दर्पणोऽथ त्वमित्रजित्। वेदकारो मन्त्रकारो विद्वान् समरमर्दनः॥
महामेघनिवासी च महाघोरो वशी करः। अग्निज्वालो महाज्वालो अतिधूम्रो हुतो हविः॥
वृषणः शंकरो नित्यं वर्चस्वी धूमकेतनः। नीलस्तथांगलुब्धश्च शोभनो निरवग्रहः॥
स्वस्तिदः स्वस्तिभावश्च भागी भागकरो लघुः। उत्संगश्च महांगश्च महागर्भपरायणः॥
कृष्णवर्णः सुवर्णश्च इन्द्रियं सर्वदेहिनाम्। महापादो महाहस्तो महाकायो महायशाः॥
महामूर्धा महामात्रो महानेत्रो निशालयः। महान्तको महाकर्णो महोष्ठश्च महाहनुः॥
महानासो महाकम्बुर्महाग्रीवः श्मशानभाक्। महावक्षा महोरस्को ह्यन्तरात्मा मृगालयः॥
लम्बनो लम्बितोष्ठश्च महामायः पयोनिधिः। महादन्तो महादंष्ट्रो महाजिह्वो महामुखः॥
महानखो महारोमा महाकोशो महाजटः। प्रसन्नश्च प्रसादश्च प्रत्ययो गिरिसाधनः॥
स्नेहनोऽस्नेहनश्चैव अजितश्च महामुनिः। वृक्षाकारो वृक्षकेतुरनलो वायुवाहनः॥90॥

गण्डली मेरुधामा च देवाधिपतिरेव च। अथर्वशीर्षः सामास्य ऋक्सहस्त्रामितेक्षणः॥
यजुः पादभुजो गुह्यः प्रकाशो जंगमस्तथा। अमोघार्थः प्रसादश्च अभिगम्यः सुदर्शनः॥

उपकारः प्रियः सर्वः कनकः काञ्चनच्छविः। नाभिर्नन्दिकरो भावः पुष्करस्थपतिः स्थिरः॥
द्वादशस्त्रासनश्चाद्यो यज्ञो यज्ञसमाहितः। नक्तं कलिश्च कालश्च मकरः कालपूजितः॥
सगणो गणकारश्च भूतवाहनसारथिः। भस्मशयो भस्मगोप्ता भस्मभूतस्तरुर्गणः॥
लोकपालस्तथालोको महात्मा सर्वपूजितः। शुक्लस्त्रिशुक्लः सम्पन्नः शुचिर्भूतनिषेवितः॥
आश्रमस्थः क्रियावस्थो विश्वकर्ममतिर्वरः। विशालशाखस्ताम्रोष्ठो ह्यम्बुजालः सुनिश्चलः॥
कपिलः कपिशः शुक्ल आयुश्चैव परोऽपरः। गन्धर्वो ह्यदितिस्तार्क्ष्यः सुविज्ञेयः सुशारदः॥
परश्वधायुधो देवो अनुकारी सुबान्धवः। तुम्बवीणो महाक्रोध ऊर्ध्वरेता जलेशयः॥
उग्रो वंशकरो वंशो वंशनादो ह्यनिन्दितः। सर्वांगरूपो मायावी सुहृदो ह्यनिलोऽनलः॥ 100॥

बन्धनो बन्धकर्ता च सुबन्धनविमोचनः। सयज्ञारिः सकामारिर्महादंष्ट्रो महायुधः॥
बहुधा निन्दितः शर्वः शंकरः शंकरोऽधनः। अमरेशो महादेवो विश्वदेवः सुरारिहा॥
अहिर्बुध्न्योऽनिलाभश्च चेकितानो हविस्तथा। अजैकपाच्च कापाली त्रिशंकुरजितः शिवः॥
धन्वन्तरिर्धूमकेतुः स्कन्दो वैश्रवणस्तथा। धाता शक्रश्च विष्णुश्च मित्रस्त्वष्टा ध्रुवो धरः॥
प्रभावः सर्वगो वायुरर्यमा सविता रविः। उषंगुश्च विधाता च मान्धाता भूतभावनः॥
विभुर्वर्णविभावी च सर्वकामगुणावहः। पद्मनाभो महागर्भश्चन्द्र वक्त्रोऽनिलोऽनलः॥
बलवांश्चोपशान्तश्च पुराणः पुण्यचञ्चुरी। कुरुकर्ता कुरुवासी कुरुभूतो गुणौषधः॥
सर्वाशयो दर्भचारी सर्वेषां प्राणिनां पतिः। देवदेवः सुखासक्तः सदसत्सर्वरत्नवित्॥
कैलासगिरिवासी च हिमवद्गिरिसंश्रयः। कूलहारी कूलकर्ता बहुविद्यो बहुप्रदः॥
वणिजो वर्धकी वृक्षो बकुलश्चन्दनश्छदः। सारग्रीवो महाजत्रुरलोलश्च महौषधः॥ 110॥

सिद्धार्थकारी सिद्धार्थश्छन्दोव्याकरणोत्तरः। सिंहनादः सिंहदंष्ट्रः सिंहगः सिंहवाहनः॥
प्रभावात्मा जगत्कालस्थालो लोकहितस्तरुः। सारंगो नवचक्रांगः केतुमाली सभावनः॥
भूतालयो भूतपतिरहोरात्रमनिन्दितः॥
वाहिता सर्वभूतानां निलयश्च विभुर्भवः। अमोघः संयतो ह्यश्वो भोजनः प्राणधारणः॥
धृतिमान् मतिमान् दक्षः सत्कृतश्च युगाधिपः। गोपालिर्गोपतिर्ग्रामो गोचर्मवसनो हरिः॥
हिरण्यबाहुश्च तथा गुहापालः प्रवेशिनाम्। प्रकृष्टारिर्महाहर्षो जितकामो जितेन्द्रियः॥
गान्धारश्च सुवासश्च तपःसक्तो रतिर्नरः। महागीतो महानृत्यो ह्यपसरोगणसेवितः॥
महाकेतुर्महाधातुर्नैकसानुचरश्चलः। आवेदनीय आदेशः सर्वगन्धसुखावहः॥
तोरणस्तारणो वातः परिधी पतिखेचरः। संयोगो वर्धनो वृद्धो अतिवृद्धो गुणाधिकः॥
नित्य आत्मसहायश्च देवासुरपतिः पतिः। युक्तश्च युक्तबाहुश्च देवो दिविसुपर्वणः॥ 120॥

आषाढश्च सुषाढश्च ध्रुवोऽथ हरिणो हरः। वपुरावर्तमानेभ्यो वसुश्रेष्ठो महापथः॥
शिरोहारी विमर्शश्च सर्वलक्षणलक्षितः। अक्षश्च रथयोगी च सर्वयोगी महाबलः ॥
समाम्नायोऽसमाम्नायस्तीर्थदेवो महारथः। निर्जीवो जीवनो मन्त्रः शुभाक्षो बहुकर्कशः॥
रत्नप्रभूतो रत्नांगो महार्णवनिपानवित्। मूलं विशालो ह्यमृतो व्यक्ताव्यक्तस्तपोनिधिः॥



आरोहणोऽधिरोहश्च शीलधारी महायशा:। सेनाकल्पो महाकल्पो योगो युगकरो हरि:॥
युगरूपो महारूपो महानागहनोऽवध:। न्यायनिर्वपण: पाद: पण्डितो ह्यचलोपम:॥
बहुमालो महामाल: शशी हरसुलोचन:। विस्तारो लवण: कूपस्त्रियुग: सफलोदय:॥
त्रिलोचनो विषण्णांगो मणिविद्धो जटाधर:। बिन्दुर्विसर्ग: सुमुख: शर: सर्वायुध: सह:॥
निवेदन: सुखाजात: सुगन्धारो महाधुन:। गन्धपाली च भगवानुत्थान: सर्वकर्मणाम्॥
मन्थानो बहुलो वायु: सकल: सर्वलोचन:। ततस्ताल: करस्थाली ऊर्ध्वसंहननो महान्॥ 130॥

छत्रं सुच्छत्रो विख्यातो लोक: सर्वाश्रय: क्रम:। मुण्डो विरूपो विकृतो दण्डी कुण्डी विकुर्वण:॥
हर्यक्ष: ककुभो वज्री शतजिह्व: सहस्रपात्। सहस्रमूर्धा देवेन्द्र: सर्वदेवमयो गुरु:॥
सहस्रबाहु: सर्वांग: शरण्य: सर्वलोककृत्। पवित्रं त्रिककुन्मन्त्र: कनिष्ठ: कृष्णपिंगल:॥
ब्रह्मदण्डविनिर्माता शतघ्नीपाशशक्तिमान्। पद्मगर्भो महागर्भो ब्रह्मगर्भो जलोद्भव:॥
गभस्तिर्ब्रह्मकृद् ब्रह्मी ब्रह्मविद् ब्राह्मणो गति:। अनन्तरूपो नैकात्मा तिग्मतेजा: स्वयम्भुव:॥
ऊर्ध्वगात्मा पशुपतिर्वातरंहा मनोजव:। चन्दनी पद्मनालाग्र: सुरभ्युत्तरणो नर:॥
कर्णिकारमहास्रग्वी नीलमौलि: पिनाकधृत्। उमापतिरुमाकान्तो जाह्नवीधृदुमाधव:॥
वरो वराहो वरदो वरेण्य: सुमहास्वन:। महाप्रसादो दमन: शत्रुहा श्वेतपिंगल:॥
पीतात्मा परमात्मा च प्रयतात्मा प्रधानधृत्। सर्वपार्श्वमुखस्त्र्यक्षो धर्मसाधारणो वर:॥
चराचरात्मा सूक्ष्मात्मा अमृतो गोवृषेश्वर:। साध्यर्षिर्वसुरादित्यो विवस्वान् सवितामृत:॥ 140॥

व्यास: सर्ग: सुसंक्षेपो विस्तर: पर्ययो नर:। ऋतु: संवत्सरो मास: पक्ष: संख्यासमापन:॥
कला: काष्ठा लवा मात्रा मुहूर्ताह: क्षपा: क्षणा:। विश्वक्षेत्रं प्रजाबीजं लिंगमाद्यस्तु निर्गम:॥
सदसद् व्यक्तमव्यक्तं पिता माता पितामह:। स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं त्रिविष्टपम्॥
निर्वाणं ह्लादनश्चैव ब्रह्मलोक: परा गति:। देवासुरविनिर्माता देवासुरपरायण:॥
देवासुरगुरुर्देवो देवासुरनमस्कृत:। देवासुरमहामात्रो देवासुरगणाश्रय:॥
देवासुरगणाध्यक्षो देवासुरगणाग्रणी:। देवातिदेवो देवर्षिर्देवासुरवरप्रद:॥
देवासुरेश्वेरो विश्वो देवासुरमहेश्वर:। सर्वदेवमयोऽचिन्त्यो देवतात्माऽऽत्मसम्भव:॥
उद्भित् त्रिविक्रमो वैद्यो विरजो नीरजोऽमर:। ईड्यो हस्तीश्वरो व्याघ्रो देवसिंहो नरर्षभ:॥
विबुधोऽग्रवर: सूक्ष्म: सर्वदेवस्तपोमय:। सुयुक्त: शोभनो वज्री प्रासानां प्रभवोऽव्यय:॥
गुह: कान्तो निज: सर्ग: पवित्रं सर्वपावन:। शृंगी शृंगप्रियो बभ्रू राजराजो निरामय:॥ 150॥

अभिराम: सुरगणो विराम: सर्वसाधन:। ललाटाक्षो विश्वदेवो हरिणो ब्रह्मवर्चस:॥
स्थावराणां पतिश्चैव नियमेन्द्रियवर्धन:। सिद्धार्थ: सिद्धभूतार्थोऽचिन्त्य: सत्यव्रत: शुचि:॥
व्रताधिप: परं ब्रह्म भक्तानां परमा गति:। विमुक्तो मुक्ततेजाश्च श्रीमाञ्श्रीवर्धनो जगत्॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:॥ हरि: ॐ॥

शिव-सहस्त्र-नामावलिः

ॐ स्थिराय नमः
ॐ स्थाणवे नमः
ॐ प्रभवे नमः
ॐ भीमाय नमः
ॐ प्रवराय नमः
ॐ वरदाय नमः
ॐ वराय नमः
ॐ सर्वात्मने नमः
ॐ सर्वविख्याताय नमः
ॐ सर्वस्मै नमः 10
ॐ सर्वकराय नमः
ॐ भवाय नमः
ॐ जटिने नमः
ॐ चर्मिणे नमः
ॐ शिखण्डिने नमः
ॐ सर्वाङ्गाय नमः
ॐ सर्वभावाय नमः
ॐ हराय नमः
ॐ हरिणाक्षाय नमः
ॐ सर्वभूतहराय नमः 20
ॐ प्रभवे नमः
ॐ प्रवृत्तये नमः
ॐ निवृत्तये नमः
ॐ नियताय नमः
ॐ शाश्वताय नमः
ॐ ध्रुवाय नमः
ॐ श्मशानवासिने नमः
ॐ भगवते नमः
ॐ खेचराय नमः
ॐ गोचराय नमः 30
ॐ अर्दनाय नमः
ॐ अभिवाद्याय नमः
ॐ महाकर्मणे नमः
ॐ तपस्विने नमः
ॐ भूतभावनाय नमः
ॐ उन्मत्तवेषप्रच्छन्नाय नमः
ॐ सर्वलोकप्रजापतये नमः
ॐ महारूपाय नमः
ॐ महाकायाय नमः
ॐ वृषरूपाय नमः 40
ॐ महायशसे नमः
ॐ महात्मने नमः
ॐ सर्वभूतात्मने नमः
ॐ विश्वरूपाय नमः
ॐ महाहनवे नमः
ॐ लोकपालाय नमः
ॐ अन्तर्हितात्मने नमः
ॐ प्रसादाय नमः
ॐ हयगर्दभाय नमः
ॐ पवित्राय नमः 50
ॐ महते नमः
ॐ नियमाय नमः
ॐ नियमाश्रिताय नमः
ॐ सर्वकर्मणे नमः
ॐ स्वयम्भूताय नमः
ॐ आदये नमः
ॐ आदिकराय नमः
ॐ निधये नमः
ॐ सहस्त्राक्षाय नमः
ॐ विशालाक्षाय नमः 60
ॐ सोमाय नमः
ॐ नक्षत्रसाधकाय नमः

ॐ चन्द्राय नमः
ॐ सूर्याय नमः
ॐ शनये नमः
ॐ केतवे नमः
ॐ ग्रहाय नमः
ॐ ग्रहपतये नमः
ॐ वराय नमः
ॐ अत्रये नमः 70
ॐ अत्र्यानमस्कर्त्रे नमः
ॐ मृगबाणार्पणाय नमः
ॐ अनघाय नमः
ॐ महातपसे नमः
ॐ घोरतपसे नमः
ॐ अदीनाय नमः
ॐ दीनसाधककराय नमः
ॐ संवत्सरकराय नमः
ॐ मन्त्राय नमः
ॐ प्रमाणाय नमः 80
ॐ परमन्तपाय नमः
ॐ योगिने नमः
ॐ योज्याय नमः
ॐ महाबीजाय नमः
ॐ महारेतसे नमः
ॐ महाबलाय नमः
ॐ सुवर्णरेतसे नमः
ॐ सर्वज्ञाय नमः
ॐ सुबीजाय नमः
ॐ बीजवाहनाय नमः 90
ॐ दशबाहवे नमः
ॐ अनिमिषाय नमः
ॐ नीलकण्ठाय नमः
ॐ उमापतये नमः
ॐ विश्वरूपाय नमः
ॐ स्वयंश्रेष्ठाय नमः
ॐ बलवीराय नमः
ॐ अबलोगणाय नमः
ॐ गणकर्त्रे नमः
ॐ गणपतये नमः 100
ॐ दिग्वाससे नमः
ॐ कामाय नमः
ॐ मन्त्रविदे नमः
ॐ परममन्त्राय नमः
ॐ सर्वभावकराय नमः
ॐ हराय नमः
ॐ कमण्डलुधराय नमः
ॐ धन्विने नमः
ॐ बाणहस्ताय नमः
ॐ कपालवते नमः 110
ॐ अशनिने नमः
ॐ शतघ्निने नमः
ॐ खड्गिने नमः
ॐ पट्टिशिने नमः
ॐ आयुधिने नमः
ॐ महते नमः
ॐ स्रुवहस्ताय नमः
ॐ सुरूपाय नमः
ॐ तेजसे नमः
ॐ तेजस्करनिधये नमः 120
ॐ उष्णीषिणे नमः
ॐ सुवक्त्राय नमः
ॐ उदग्राय नमः
ॐ विनताय नमः
ॐ दीर्घाय नमः
ॐ हरिकेशाय नमः
ॐ सुतीर्थाय नमः
ॐ कृष्णाय नमः

ॐ शृगालरूपाय नमः
ॐ सिद्धार्थाय नमः 130
ॐ मुण्डाय नमः
ॐ सर्वशुभंकराय नमः
ॐ अजाय नमः
ॐ बहुरूपाय नमः
ॐ गन्धधारिणे नमः
ॐ कपर्दिने नमः
ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः
ॐ ऊर्ध्वलिंगाय नमः
ॐ ऊर्ध्वशायिने नमः
ॐ नभस्थलाय नमः 140
ॐ त्रिजटाय नमः
ॐ चीरवाससे नमः
ॐ रुद्राय नमः
ॐ सेनापतये नमः
ॐ विभवे नमः
ॐ अहश्चराय नमः
ॐ नक्तञ्चराय नमः
ॐ तिग्ममन्यवे नमः
ॐ सुवर्चसाय नमः
ॐ गजघ्ने नमः 150
ॐ दैत्यघ्ने नमः
ॐ कालाय नमः
ॐ लोकधात्रे नमः
ॐ गुणाकराय नमः
ॐ सिंहशार्दूलरूपाय नमः
ॐ आर्द्रचर्माम्बरावृताय नमः
ॐ कालयोगिने नमः
ॐ महानादाय नमः
ॐ सर्वकामाय नमः
ॐ चतुष्पथाय नमः 160
ॐ निशाचराय नमः
ॐ प्रेतचारिणे नमः
ॐ भूतचारिणे नमः
ॐ महेश्वराय नमः
ॐ बहुभूताय नमः
ॐ बहुधराय नमः
ॐ स्वर्भानवे नमः
ॐ अमिताय नमः
ॐ गतये नमः
ॐ नृत्यप्रियाय नमः 170
ॐ नित्यनर्ताय नमः
ॐ नर्तकाय नमः
ॐ सर्वलालसाय नमः
ॐ घोराय नमः
ॐ महातपसे नमः
ॐ पाशाय नमः
ॐ नित्याय नमः
ॐ गिरिरुहाय नमः
ॐ नभसे नमः
ॐ सहस्रहस्ताय नमः 180
ॐ विजयाय नमः
ॐ व्यवसायाय नमः
ॐ अतन्द्रिताय नमः
ॐ अधर्षणाय नमः
ॐ धर्षणात्मने नमः
ॐ यज्ञघ्ने नमः
ॐ कामनाशकाय नमः
ॐ दक्षयागापहारिणे नमः
ॐ सुसहाय नमः
ॐ मध्यमाय नमः 190
ॐ तेजोपहारिणे नमः
ॐ बलघ्ने नमः
ॐ मुदिताय नमः
ॐ अर्थाय नमः

ॐ अजिताय नमः
ॐ अवराय नमः
ॐ गम्भीरघोषाय नमः
ॐ गम्भीराय नमः
ॐ गम्भीरबलवाहनाय नमः
ॐ न्यग्रोधरूपाय नमः 200
ॐ न्यग्रोधाय नमः
ॐ वृक्षकर्णस्थितये नमः
ॐ विभवे नमः
ॐ सुतीक्ष्णदशनाय नमः
ॐ महाकायाय नमः
ॐ महाननाय नमः
ॐ विष्वक्सेनाय नमः
ॐ हरये नमः
ॐ यज्ञाय नमः
ॐ संयुगापीडवाहनाय नमः 210
ॐ तीक्ष्णतापाय नमः
ॐ हर्यश्वाय नमः
ॐ सहायाय नमः
ॐ कर्मकालविदे नमः
ॐ विष्णुप्रसादिताय नमः
ॐ यज्ञाय नमः
ॐ समुद्राय नमः
ॐ वडवामुखाय नमः
ॐ हुताशनसहायाय नमः
ॐ प्रशान्तात्मने नमः 220
ॐ हुताशनाय नमः
ॐ उग्रतेजसे नमः
ॐ महातेजसे नमः
ॐ जन्याय नमः
ॐ विजयकालविदे नमः
ॐ ज्योतिषामयनाय नमः
ॐ सिद्धये नमः
ॐ सर्वविग्रहाय नमः
ॐ शिखिने नमः
ॐ मुण्डिने नमः 230
ॐ जटिने नमः
ॐ ज्वालिने नमः
ॐ मूर्त्तिजाय नमः
ॐ मूर्द्धगाय नमः
ॐ बलिने नमः
ॐ वेणविने नमः
ॐ पणविने नमः
ॐ तालिने नमः
ॐ खलिने नमः
ॐ कालकटंकटाय नमः 240
ॐ नक्षत्रविग्रहमतये नमः
ॐ गुणबुद्धये नमः
ॐ लयाय नमः
ॐ अगमाय नमः
ॐ प्रजापतये नमः
ॐ विश्वबाहवे नमः
ॐ विभागाय नमः
ॐ सर्वगाय नमः
ॐ अमुखाय नमः
ॐ विमोचनाय नमः 250
ॐ सुसरणाय नमः
ॐ हिरण्यकवचोद्भवाय नमः
ॐ मेढ्रजाय नमः
ॐ बलचारिणे नमः
ॐ महीचारिणे नमः
ॐ स्त्रुताय नमः
ॐ सर्वतूर्यनिनादिने नमः
ॐ सर्वतोद्यपरिग्रहाय नमः
ॐ व्यालरूपाय नमः
ॐ गुहावासिने नमः 260

ॐ गुहाय नमः
ॐ मालिने नमः
ॐ तरंगविदे नमः
ॐ त्रिदशाय नमः
ॐ त्रिकालधृगे नमः
ॐ कर्मसर्वबन्ध-विमोचनाय नमः
ॐ असुरेन्द्राणां बन्धनाय नमः
ॐ युधि शत्रुविनाशिने नमः
ॐ सांख्यप्रसादाय नमः
ॐ दुर्वाससे नमः 270
ॐ सर्वसाधुनिषेविताय नमः
ॐ प्रस्कन्दनाय नमः
ॐ विभागज्ञाय नमः
ॐ अतुल्याय नमः
ॐ यज्ञविभागविदे नमः
ॐ सर्वचारिणे नमः
ॐ सर्ववासाय नमः
ॐ दुर्वाससे नमः
ॐ वासवाय नमः
ॐ अमराय नमः 280
ॐ हैमाय नमः
ॐ हेमकराय नमः
ॐ अयज्ञसर्वधारिणे नमः
ॐ धरोत्तमाय नमः
ॐ लोहिताक्षाय नमः
ॐ महाक्षाय नमः
ॐ विजयाक्षाय नमः
ॐ विशारदाय नमः
ॐ संग्रहाय नमः
ॐ निग्रहाय नमः 290
ॐ कर्त्रे नमः
ॐ सर्पचीरनिवसनाय नमः
ॐ मुख्याय नमः
ॐ अमुख्याय नमः
ॐ देहाय नमः
ॐ काहलये नमः
ॐ सर्वकामदाय नमः
ॐ सर्वकालप्रसादाय नमः
ॐ सुबलाय नमः
ॐ बलरूपधृगे नमः 300
ॐ सर्वकामवराय नमः
ॐ सर्वदाय नमः
ॐ सर्वतोमुखाय नमः
ॐ आकाशनिर्विरूपाय नमः
ॐ निपातिने नमः
ॐ अवशाय नमः
ॐ खगाय नमः
ॐ रौद्ररूपाय नमः
ॐ अंशवे नमः
ॐ आदित्याय नमः 310
ॐ बहुरश्मये नमः
ॐ सुवर्चसिने नमः
ॐ वसुवेगाय नमः
ॐ महावेगाय नमः
ॐ मनोवेगाय नमः
ॐ निशाचराय नमः
ॐ सर्ववासिने नमः
ॐ श्रियावासिने नमः
ॐ उपदेशकराय नमः
ॐ अकराय नमः 320
ॐ मुनये नमः
ॐ आत्मनिरालोकाय नमः
ॐ संभग्नाय नमः
ॐ सहस्रदाय नमः
ॐ पक्षिणे नमः
ॐ पक्षरूपाय नमः

ॐ अतिदीप्ताय नमः
ॐ विशाम्पतये नमः
ॐ उन्मादाय नमः
ॐ मदनाय नमः 330
ॐ कामाय नमः
ॐ अश्वत्थाय नमः
ॐ अर्थकराय नमः
ॐ यशसे नमः
ॐ वामदेवाय नमः
ॐ वामाय नमः
ॐ प्राचे नमः
ॐ दक्षिणाय नमः
ॐ वामनाय नमः
ॐ सिद्धयोगिने नमः 340
ॐ महर्षये नमः
ॐ सिद्धार्थाय नमः
ॐ सिद्धसाधकाय नमः
ॐ भिक्षवे नमः
ॐ भिक्षुरूपाय नमः
ॐ विपणाय नमः
ॐ मृदवे नमः
ॐ अव्ययाय नमः
ॐ महासेनाय नमः
ॐ विशाखाय नमः 350
ॐ षष्टिभागाय नमः
ॐ गवाम्पतये नमः
ॐ वज्रहस्ताय नमः
ॐ विष्कम्भिने नमः
ॐ चमूस्तम्भनाय नमः
ॐ वृत्तावृत्तकराय नमः
ॐ तालाय नमः
ॐ मधवे नमः
ॐ मधुकलोचनाय नमः
ॐ वाचस्पतये नमः 360
ॐ वाजसनाय नमः
ॐ नित्यमाश्रमपूजिताय नमः
ॐ ब्रह्मचारिणे नमः
ॐ लोकचारिणे नमः
ॐ सर्वचारिणे नमः
ॐ विचारविदे नमः
ॐ ईशानाय नमः
ॐ ईश्वराय नमः
ॐ कालाय नमः
ॐ निशाचारिणे नमः 370
ॐ पिनाकधृगे नमः
ॐ निमित्तस्थाय नमः
ॐ निमित्ताय नमः
ॐ नन्दये नमः
ॐ नन्दिकराय नमः
ॐ हरये नमः
ॐ नन्दीश्वराय नमः
ॐ नन्दिने नमः
ॐ नन्दनाय नमः
ॐ नन्दिवर्धनाय नमः 380
ॐ भगहारिणे नमः
ॐ निहन्त्रे नमः
ॐ कालाय नमः
ॐ ब्रह्मणे नमः
ॐ पितामहाय नमः
ॐ चतुर्मुखाय नमः
ॐ महालिंगाय नमः
ॐ चारुलिंगाय नमः
ॐ लिंगाध्यक्षाय नमः
ॐ सुराध्यक्षाय नमः 390
ॐ योगाध्यक्षाय नमः
ॐ युगावहाय नमः

ॐ बीजाध्यक्षाय नमः
ॐ बीजकर्त्रे नमः
ॐ अध्यात्मानुगताय नमः
ॐ बलाय नमः
ॐ इतिहासाय नमः
ॐ सकल्पाय नमः
ॐ गौतमाय नमः
ॐ निशाकराय नमः 400
ॐ दम्भाय नमः
ॐ अदम्भाय नमः
ॐ वैदम्भाय नमः
ॐ वश्याय नमः
ॐ वशकराय नमः
ॐ कलये नमः
ॐ लोककर्त्रे नमः
ॐ पशुपतये नमः
ॐ महाकर्त्रे नमः
ॐ अनौषधाय नमः 410
ॐ अक्षराय नमः
ॐ परब्रह्मणे नमः
ॐ बलवते नमः
ॐ शक्राय नमः
ॐ नीतये नमः
ॐ अनीतये नमः
ॐ शुद्धात्मने नमः
ॐ मान्याय नमः
ॐ शुद्धाय नमः
ॐ गतागताय नमः 420
ॐ बहुप्रसादाय नमः
ॐ सुस्वप्नाय नमः
ॐ दर्पणाय नमः
ॐ अमित्रजिते नमः
ॐ वेदकाराय नमः
ॐ मन्त्रकाराय नमः
ॐ विदुषे नमः
ॐ समरमर्दनाय नमः
ॐ महामेघनिवासिने नमः
ॐ महाघोराय नमः 430
ॐ वशिने नमः
ॐ कराय नमः
ॐ अग्निज्वालाय नमः
ॐ महाज्वालाय नमः
ॐ अतिधूम्राय नमः
ॐ हुताय नमः
ॐ हविषे नमः
ॐ वृषणाय नमः
ॐ शंकराय नमः
ॐ नित्यंवर्चस्विने नमः 440
ॐ धूमकेतनाय नमः
ॐ नीलाय नमः
ॐ अंगलुब्धाय नमः
ॐ शोभनाय नमः
ॐ निरवग्रहाय नमः
ॐ स्वस्तिदायकाय नमः
ॐ स्वस्तिभावाय नमः
ॐ भागिने नमः
ॐ भागकराय नमः
ॐ लघवे नमः 450
ॐ उत्संगाय नमः
ॐ महांगाय नमः
ॐ महागर्भपरायणाय नमः
ॐ कृष्णवर्णाय नमः
ॐ सुवर्णाय नमः
ॐ सर्वदेहिनामिन्द्रियाय नमः
ॐ महापादाय नमः
ॐ महाहस्ताय नमः

ॐ महाकायाय नमः
ॐ महायशसे नमः 460
ॐ महामूर्ध्ने नमः
ॐ महामात्राय नमः
ॐ महानेत्राय नमः
ॐ निशालयाय नमः
ॐ महान्तकाय नमः
ॐ महाकर्णाय नमः
ॐ महोष्ठाय नमः
ॐ महाहनवे नमः
ॐ महानासाय नमः
ॐ महाकम्बवे नमः 470
ॐ महाग्रीवाय नमः
ॐ श्मशानभाजे नमः
ॐ महावक्षसे नमः
ॐ महोरस्काय नमः
ॐ अन्तरात्मने नमः
ॐ मृगालयाय नमः
ॐ लम्बनाय नमः
ॐ लम्बितोष्ठाय नमः
ॐ महामायाय नमः
ॐ पयोनिधये नमः 480
ॐ महादन्ताय नमः
ॐ महादंष्ट्राय नमः
ॐ महाजिह्वाय नमः
ॐ महामुखाय नमः
ॐ महानखाय नमः
ॐ महारोम्णे नमः
ॐ महाकोशाय नमः
ॐ महाजटाय नमः
ॐ प्रसन्नाय नमः
ॐ प्रसादाय नमः 490
ॐ प्रत्ययाय नमः
ॐ गिरिसाधनाय नमः
ॐ स्नेहनाय नमः
ॐ अस्नेहनाय नमः
ॐ अजिताय नमः
ॐ महामुनये नमः
ॐ वृक्षाकाराय नमः
ॐ वृक्षकेतवे नमः
ॐ अनलाय नमः
ॐ वायुवाहनाय नमः 500
ॐ गण्डलिने नमः
ॐ मेरुधाम्ने नमः
ॐ देवाधिपतये नमः
ॐ अथर्वशीर्षाय नमः
ॐ सामास्याय नमः
ॐ ऋक्सहस्रामितेक्षणाय नमः
ॐ यजुःपादभुजाय नमः
ॐ गुह्याय नमः
ॐ प्रकाशाय नमः
ॐ जंगमाय नमः 510
ॐ अमोघार्थाय नमः
ॐ प्रसादाय नमः
ॐ अभिगम्याय नमः
ॐ सुदर्शनाय नमः
ॐ उपकाराय नमः
ॐ प्रियाय नमः
ॐ सर्वाय नमः
ॐ कनकाय नमः
ॐ काञ्चनच्छवये नमः
ॐ नाभये नमः 520
ॐ नन्दिकराय नमः
ॐ भावाय नमः
ॐ पुष्करस्थपतये नमः
ॐ स्थिराय नमः

ॐ द्वादशाय नमः
ॐ त्रासनाय नमः
ॐ आद्याय नमः
ॐ यज्ञाय नमः
ॐ यज्ञसमाहिताय नमः
ॐ नक्तंस्वरूपाय नमः 530
ॐ कलये नमः
ॐ कालाय नमः
ॐ मकराय नमः
ॐ कालपूजिताय नमः
ॐ सगणाय नमः
ॐ गणकाराय नमः
ॐ भूतवाहनसारथये नमः
ॐ भस्मशयाय नमः
ॐ भस्मगोप्त्रे नमः
ॐ भस्मभूताय नमः 540
ॐ तरवे नमः
ॐ गणाय नमः
ॐ लोकपालाय नमः
ॐ अलोकाय नमः
ॐ महात्मने नमः
ॐ सर्वपूजिताय नमः
ॐ शुक्लाय नमः
ॐ त्रिशुक्लाय नमः
ॐ सम्पन्नाय नमः
ॐ शुचये नमः 550
ॐ भूतनिषेविताय नमः
ॐ आश्रमस्थाय नमः
ॐ क्रियावस्थाय नमः
ॐ विश्वकर्ममतये नमः
ॐ वराय नमः
ॐ विशालशाखाय नमः
ॐ ताम्रोष्ठाय नमः
ॐ अम्बुजालाय नमः
ॐ सुनिश्चलाय नमः
ॐ कपिलाय नमः 560
ॐ कपिशाय नमः
ॐ शुक्लाय नमः
ॐ आयुषे नमः
ॐ पराय नमः
ॐ अपराय नमः
ॐ गन्धर्वाय नमः
ॐ अदितये नमः
ॐ तार्क्ष्याय नमः
ॐ सुविज्ञेयाय नमः
ॐ सुशारदाय नमः 570
ॐ परश्वधायुधाय नमः
ॐ देवाय नमः
ॐ अनुकारिणे नमः
ॐ सुबान्धवाय नमः
ॐ तुम्बवीणाय नमः
ॐ महाक्रोधाय नमः
ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः
ॐ जलेशयाय नमः
ॐ उग्राय नमः
ॐ वंशकराय नमः 580
ॐ वंशाय नमः
ॐ वंशनादाय नमः
ॐ अनिन्दिताय नमः
ॐ सर्वांगरूपाय नमः
ॐ मायाविने नमः
ॐ सुहृदे नमः
ॐ अनिलाय नमः
ॐ अनलाय नमः
ॐ बन्धनाय नमः
ॐ बन्धकर्त्रे नमः 590

ॐ सुबन्धनविमोचनाय नम:
ॐ सयज्ञारये नम:
ॐ सकामारये नम:
ॐ महादंष्ट्राय नम:
ॐ महायुधाय नम:
ॐ बहुधानिन्दिताय नम:
ॐ शर्वाय नम:
ॐ शंकराय नम:
ॐ शं कराय नम:
ॐ अधनाय नम: 600
ॐ अमरेशाय नम:
ॐ महादेवाय नम:
ॐ विश्वदेवाय नम:
ॐ सुरारिघ्ने नम:
ॐ अहिर्बुध्न्याय नम:
ॐ अनिलाभाय नम:
ॐ चेकितानाय नम:
ॐ हविषे नम:
ॐ अजैकपादे नम:
ॐ कापालिने नम: 610
ॐ त्रिशंकवे नम:
ॐ अजिताय नम:
ॐ शिवाय नम:
ॐ धन्वन्तरये नम:
ॐ धूमकेतवे नम:
ॐ स्कन्दाय नम:
ॐ वैश्रवणाय नम:
ॐ धात्रे नम:
ॐ शक्राय नम:
ॐ विष्णवे नम: 620
ॐ मित्राय नम:
ॐ त्वष्ट्रे नम:
ॐ ध्रुवाय नम:
ॐ धराय नम:
ॐ प्रभावाय नम:
ॐ सर्वगोवायवे नम:
ॐ अर्यम्णे नम:
ॐ सवित्रे नम:
ॐ रवये नम:
ॐ उषंगवे नम: 630
ॐ विधात्रे नम:
ॐ मानधात्रे नम:
ॐ भूतभावनाय नम:
ॐ विभवे नम:
ॐ वर्णविभाविने नम:
ॐ सर्वकामगुणावहाय नम:
ॐ पद्मनाभाय नम:
ॐ महागर्भाय नम:
ॐ चन्द्रवक्त्राय नम:
ॐ अनिलाय नम: 640
ॐ अनलाय नम:
ॐ बलवते नम:
ॐ उपशान्ताय नम:
ॐ पुराणाय नम:
ॐ पुण्यचञ्चवे नम:
ॐ 'ई' रूपाय नम:
ॐ कुरुकर्त्रे नम:
ॐ कुरुवासिने नम:
ॐ कुरुभूताय नम:
ॐ गुणौषधाय नम: 650
ॐ सर्वाशयाय नम:
ॐ दर्भचारिणे नम:
ॐ सर्वप्राणिपतये नम:
ॐ देवदेवाय नम:
ॐ सुखासक्ताय नम:
ॐ 'सत्' स्वरूपाय नम:

ॐ 'असत्' रूपाय नम:
ॐ सर्वरत्नविदे नम:
ॐ कैलासगिरिवासिने नम:
ॐ हिमवद्गिरिसंश्रयाय नम: 660
ॐ कूलहारिणे नम:
ॐ कुलकर्त्रे नम:
ॐ बहुविद्याय नम:
ॐ बहुप्रदाय नम:
ॐ वणिजाय नम:
ॐ वर्धकिने नम:
ॐ वृक्षाय नम:
ॐ बकुलाय नम:
ॐ चन्दनाय नम:
ॐ छदाय नम: 670
ॐ सारग्रीवाय नम:
ॐ महाजत्रवे नम:
ॐ अलोलाय नम:
ॐ महौषधाय नम:
ॐ सिद्धार्थकारिणे नम:
ॐ छन्दोव्याकरणोत्तर-सिद्धार्थाय नम:
ॐ सिंहनादाय नम:
ॐ सिंहदंष्ट्राय नम:
ॐ सिंहगाय नम:
ॐ सिंहवाहनाय नम: 680
ॐ प्रभावात्मने नम:
ॐ जगत्कालस्थलाय नम:
ॐ लोकहिताय नम:
ॐ तरवे नम:
ॐ सारंगाय नम:
ॐ नवचक्रांगाय नम:
ॐ केतुमालिने नम:
ॐ सभावनाय नम:
ॐ भूतालयाय नम:
ॐ भूतपतये नम: 690
ॐ अहोरात्राय नम:
ॐ अनिन्दिताय नम:
ॐ सर्वभूतवाहित्रे नम:
ॐ सर्वभूतनिलयाय नम:
ॐ विभवे नम:
ॐ भवाय नम:
ॐ अमोघाय नम:
ॐ संयताय नम:
ॐ अश्वाय नम:
ॐ भोजनाय नम: 700
ॐ प्राणधारणाय नम:
ॐ धृतिमते नम:
ॐ मतिमते नम:
ॐ दक्षाय नम:
ॐ सत्कृताय नम:
ॐ युगाधिपाय नम:
ॐ गोपाल्यै नम:
ॐ गोपतये नम:
ॐ ग्रामाय नम:
ॐ गोचर्मवसनाय नम: 710
ॐ हरये नम:
ॐ हिरण्यबाहवे नम:
ॐ प्रवेशिनांगुहापालाय नम:
ॐ प्रकृष्टारये नम:
ॐ महाहर्षाय नम:
ॐ जितकामाय नम:
ॐ जितेन्द्रियाय नम:
ॐ गान्धाराय नम:
ॐ सुवासाय नम:
ॐ तप:सक्ताय नम: 720
ॐ रतये नम:
ॐ नराय नम:

ॐ महागीताय नम:
ॐ महानृत्याय नम:
ॐ अप्सरोगणसेविताय नम:
ॐ महाकेतवे नम:
ॐ महाधातवे नम:
ॐ नैकसानुचराय नम:
ॐ चलाय नम:
ॐ आवेदनीयाय नम: 730
ॐ आदेशाय नम:
ॐ सर्वगन्धसुखावहाय नम:
ॐ तोरणाय नम:
ॐ तारणाय नम:
ॐ वाताय नम:
ॐ परिधये नम:
ॐ पतिखेचराय नम:
ॐ संयोगवर्धनाय नम:
ॐ वृद्धाय नम:
ॐ गुणाधिकाय नम: 740
ॐ अतिवृद्धाय नम:
ॐ नित्यात्मसहायाय नम:
ॐ देवासुरपतये नम:
ॐ पत्ये नम:
ॐ युक्ताय नम:
ॐ युक्तबाहवे नम:
ॐ दिविसुपर्वदेवाय नम:
ॐ आषाढाय नम:
ॐ सुषाढाय नम:
ॐ ध्रुवाय नम: 750
ॐ हरिणाय नम:
ॐ हराय नम:
ॐ आवर्तमानवपुषे नम:
ॐ वसुश्रेष्ठाय नम:
ॐ महापथाय नम:
ॐ विमर्षशिरोहारिणे नम:
ॐ सर्वलक्षणलक्षिताय नम:
ॐ अक्षरथयोगिने नम:
ॐ सर्वयोगिने नम:
ॐ महाबलाय नम: 760
ॐ समाम्नायाय नम:
ॐ असमाम्नायाय नम:
ॐ तीर्थदेवाय नम:
ॐ महारथाय नम:
ॐ निर्जीवाय नम:
ॐ जीवनाय नम:
ॐ मन्त्राय नम:
ॐ शुभाक्षाय नम:
ॐ बहुकर्कशाय नम:
ॐ रत्नप्रभूताय नम: 770
ॐ रत्नांगाय नम:
ॐ महार्णवनिपानविदे नम:
ॐ मूलाय नम:
ॐ विशालाय नम:
ॐ अमृताय नम:
ॐ व्यक्ताऽव्यक्ताय नम:
ॐ तपोनिधये नम:
ॐ आरोहणाय नम:
ॐ अधिरोहाय नम:
ॐ शीलधारिणे नम: 780
ॐ महायशसे नम:
ॐ सेनाकल्पाय नम:
ॐ महाकल्पाय नम:
ॐ योगाय नम:
ॐ युगकराय नम:
ॐ हरये नम:
ॐ युगरूपाय नम:
ॐ महारूपाय नम:

ॐ महानागहतकाय नमः
ॐ अवधाय नमः 790
ॐ न्यायनिर्वपणाय नमः
ॐ पादाय नमः
ॐ पण्डिताय नमः
ॐ अचलोपमाय नमः
ॐ बहुमालाय नमः
ॐ महामालाय नमः
ॐ शशिहरसुलोचनाय नमः
ॐ विस्तारलवणकूपाय नमः
ॐ त्रियुगाय नमः
ॐ सफलोदयाय नमः 800
ॐ त्रिलोचनाय नमः
ॐ विषण्डांगाय नमः
ॐ मणिविद्धाय नमः
ॐ जटाधराय नमः
ॐ बिन्दवे नमः
ॐ विसर्गाय नमः
ॐ सुमुखाय नमः
ॐ शराय नमः
ॐ सर्वायुधाय नमः
ॐ सहाय नमः 810
ॐ निवेदनाय नमः
ॐ सुखाजाताय नमः
ॐ सुगन्धराय नमः
ॐ महाधनुषे नमः
ॐ गन्धपालिभगवते नमः
ॐ सर्वकर्मोत्थानाय नमः
ॐ मन्थानबहुलवायवे नमः
ॐ सकलाय नमः
ॐ सर्वलोचनाय नमः
ॐ तलस्तालाय नमः 820
ॐ करस्थालिने नमः
ॐ ऊर्ध्वसंहननाय नमः
ॐ महते नमः
ॐ छात्राय नमः
ॐ सुच्छत्राय नमः
ॐ विख्यातलोकाय नमः
ॐ सर्वाश्रयक्रमाय नमः
ॐ मुण्डाय नमः
ॐ विरूपाय नमः
ॐ विकृताय नमः 830
ॐ दण्डिने नमः
ॐ कुण्डिने नमः
ॐ विकुर्वणाय नमः
ॐ हर्यक्षाय नमः
ॐ ककुभाय नमः
ॐ वज्रिणे नमः
ॐ शतजिह्वाय नमः
ॐ सहस्त्रपदे नमः
ॐ सहस्त्रमूर्ध्ने नमः
ॐ देवेन्द्राय नमः 840
ॐ सर्वदेवमयाय नमः
ॐ गुरवे नमः
ॐ सहस्त्रबाहवे नमः
ॐ सर्वांगाय नमः
ॐ शरण्याय नमः
ॐ सर्वलोककृते नमः
ॐ पवित्राय नमः
ॐ त्रिककुन्मन्त्राय नमः
ॐ कनिष्ठाय नमः
ॐ कृष्णपिंगलाय नमः 850
ॐ ब्रह्मदण्डविनिर्मात्रे नमः
ॐ शतघ्नीपाशशक्तिमते नमः
ॐ पद्मगर्भाय नमः
ॐ महागर्भाय नमः

ॐ ब्रह्मगर्भाय नमः
ॐ जलोद्भवाय नमः
ॐ गभस्तये नमः
ॐ ब्रह्मकृते नमः
ॐ ब्रह्मिणे नमः
ॐ ब्रह्मविदे नमः 860
ॐ ब्राह्मणाय नमः
ॐ गतये नमः
ॐ अनन्तरूपाय नमः
ॐ नैकात्मने नमः
ॐ स्वयंभुवतिग्मतेजसे नमः
ॐ ऊर्ध्वगात्मने नमः
ॐ पशुपतये नमः
ॐ वातरंहसे नमः
ॐ मनोजवाय नमः
ॐ चन्दनिने नमः 870
ॐ पद्मनालाग्राय नमः
ॐ सुरभ्युत्तारणाय नमः
ॐ नराय नमः
ॐ कर्णिकारमहास्त्रग्विणे नमः
ॐ नीलमौलये नमः
ॐ पिनाकधृषे नमः
ॐ उमापतये नमः
ॐ उमाकान्ताय नमः
ॐ जाह्नवीधृषे नमः
ॐ उमाधवाय नमः 880
ॐ वरवराहाय नमः
ॐ वरदाय नमः
ॐ वरेण्याय नमः
ॐ सुमहास्वनाय नमः
ॐ महाप्रसादाय नमः
ॐ दमनाय नमः
ॐ शत्रुघ्ने नमः
ॐ श्वेतपिंगलाय नमः
ॐ पीतात्मने नमः
ॐ परमात्मने नमः 890
ॐ प्रयतात्मने नमः
ॐ प्रधानधृषे नमः
ॐ सर्वपार्श्वमुखाय नमः
ॐ त्र्यक्षाय नमः
ॐ धर्मसाधारणवराय नमः
ॐ चराचरात्मने नमः
ॐ सूक्ष्मात्मने नमः
ॐ अमृतगोवृषेश्वराय नमः
ॐ साध्यर्षये नमः
ॐ आदित्यवसवे नमः 900
ॐ विवस्वत्सवित्रमृताय नमः
ॐ व्यासाय नमः
ॐ सर्गसुसंक्षेपविस्तराय नमः
ॐ पर्ययोनराय नमः
ॐ ऋतवे नमः
ॐ संवत्सराय नमः
ॐ मासाय नमः
ॐ पक्षाय नमः
ॐ संख्यासमापनाय नमः
ॐ कलायै नमः 910
ॐ काष्ठायै नमः
ॐ लवेभ्यो नमः
ॐ मात्रेभ्यो नमः
ॐ मुहूर्ताहःक्षपाभ्यो नमः
ॐ क्षणेभ्यो नमः
ॐ विश्वक्षेत्राय नमः
ॐ प्रजाबीजाय नमः
ॐ लिंगाय नमः
ॐ आद्यनिर्गमाय नमः
ॐ 'सत्' स्वरूपाय नमः 920

ॐ 'असत्' रूपाय नम:
ॐ व्यक्ताय नम:
ॐ अव्यक्ताय नम:
ॐ पित्रे नम:
ॐ मात्रे नम:
ॐ पितामहाय नम:
ॐ स्वर्गद्वाराय नम:
ॐ प्रजाद्वाराय नम:
ॐ मोक्षद्वाराय नम:
ॐ त्रिविष्टपाय नम: 930
ॐ निर्वाणाय नम:
ॐ ह्लादनाय नम:
ॐ ब्रह्मलोकाय नम:
ॐ परागतये नम:
ॐ देवासुरविनिर्मात्रे नम:
ॐ देवासुरपरायणाय नम:
ॐ देवासुरगुरवे नम:
ॐ देवाय नम:
ॐ देवासुरनमस्कृताय नम:
ॐ देवासुरमहामात्राय नम: 940
ॐ देवासुरगणाश्रयाय नम:
ॐ देवासुरगणाध्यक्षाय नम:
ॐ देवासुरगणाग्रण्ये नम:
ॐ देवातिदेवाय नम:
ॐ देवर्षये नम:
ॐ देवासुरवरप्रदाय नम:
ॐ देवासुरेश्वराय नम:
ॐ विश्वाय नम:
ॐ देवासुरमहेश्वराय नम:
ॐ सर्वदेवमयाय नम: 950
ॐ अचिन्त्याय नम:
ॐ देवतात्मने नम:
ॐ आत्मसम्भवाय नम:

ॐ उद्भिदे नम:
ॐ त्रिविक्रमाय नम:
ॐ वैद्याय नम:
ॐ विरजाय नम:
ॐ नीरजाय नम:
ॐ अमराय नम:
ॐ ईड्याय नम: 960
ॐ हस्तीश्वराय नम:
ॐ व्याघ्राय नम:
ॐ देवसिंहाय नम:
ॐ नरर्षभाय नम:
ॐ विबुधाय नम:
ॐ अग्रवराय नम:
ॐ सूक्ष्माय नम:
ॐ सर्वदेवाय नम:
ॐ तपोमयाय नम:
ॐ सुयुक्ताय नम: 970
ॐ शोभनाय नम:
ॐ वज्रिणे नम:
ॐ प्रासानाम्प्रभवाय नम:
ॐ अव्ययाय नम:
ॐ गुहाय नम:
ॐ कान्ताय नम:
ॐ निजसर्गाय नम:
ॐ पवित्राय नम:
ॐ सर्वपावनाय नम:
ॐ शृंगिणे नम: 980
ॐ शृंगप्रियाय नम:
ॐ बभ्रवे नम:
ॐ राजराजाय नम:
ॐ निरामयाय नम:
ॐ अभिरामाय नम:
ॐ सुरगणाय नम:



ॐ विरामाय नमः
ॐ सर्वसाधनाय नमः
ॐ ललाटाक्षाय नमः
ॐ विश्वदेवाय नमः 990
ॐ हरिणाय नमः
ॐ ब्रह्मवर्चसे नमः
ॐ स्थावरपतये नमः
ॐ नियमेन्द्रियवर्धनाय नमः
ॐ सिद्धार्थाय नमः
ॐ सिद्धभूतार्थाय नमः
ॐ अचिन्त्याय नमः
ॐ सत्यव्रताय नमः

ॐ शुचये नमः
ॐ व्रताधिपाय नमः 1000
ॐ पराय नमः
ॐ ब्रह्मणे नमः
ॐ भक्तानांपरमागतये नमः
ॐ विमुक्ताय नमः
ॐ मुक्ततेजसे नमः
ॐ श्रीमते नमः
ॐ श्रीवर्धनाय नमः
ॐ जगते नमः 1008

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

शिव-अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

1. ॐ शिवाय नमः
2. ॐ महेश्वराय नमः
3. ॐ शम्भवे नमः
4. ॐ पिनाकिने नमः
5. ॐ शशिशेखराय नमः
6. ॐ वामदेवाय नमः
7. ॐ विरूपाक्षाय नमः
8. ॐ कपर्दिने नमः
9. ॐ नीललोहिताय नमः
10. ॐ शंकराय नमः
11. ॐ शूलपाणये नमः
12. ॐ खट्वांगिने नमः
13. ॐ विष्णुवल्लभाय नमः
14. ॐ शिपिविष्टाय नमः
15. ॐ अम्बिकानाथाय नमः
16. ॐ श्रीकण्ठाय नमः
17. ॐ भक्तवत्सलाय नमः
18. ॐ भवाय नमः
19. ॐ शर्वाय नमः
20. ॐ उग्राय नमः
21. ॐ कपालिने नमः
22. ॐ कामारये नमः
23. ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः
24. ॐ गंगाधराय नमः
25. ॐ ललाटाक्षाय नमः
26. ॐ कालकालाय नमः
27. ॐ कृपानिधये नमः
28. ॐ भीमाय नमः
29. ॐ परशुहस्ताय नमः
30. ॐ मृगपाणये नमः
31. ॐ जटाधराय नमः
32. ॐ कैलासवासिने नमः
33. ॐ कवचिने नमः
34. ॐ कठोराय नमः
35. ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः
36. ॐ वृषांकाय नमः
37. ॐ वृषभारूढाय नमः
38. ॐ भस्मोद् धूलितविग्रहाय नमः
39. ॐ त्रिलोकेशाय नमः
40. ॐ शितिकण्ठाय नमः
41. ॐ त्रयीमूर्तये नमः
42. ॐ सर्वज्ञाय नमः
43. ॐ परमात्मने नमः
44. ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः
45. ॐ हविषे नमः
46. ॐ यज्ञमयाय नमः
47. ॐ सोमाय नमः
48. ॐ पञ्चवक्त्राय नमः
49. ॐ सदाशिवाय नमः
50. ॐ विश्वेश्वराय नमः
51. ॐ वीरभद्राय नमः
52. ॐ गणनाथाय नमः
53. ॐ प्रजापतये नमः
54. ॐ हिरण्यरेतसे नमः
55. ॐ दुर्धर्षाय नमः
56. ॐ गिरीशाय नमः
57. ॐ गिरिशाय नमः
58. ॐ अनघाय नमः
59. ॐ भुजंगभूषणाय नमः
60. ॐ भर्गाय नमः
61. ॐ गिरिधन्विने नमः
62. ॐ कृत्तिवाससे नमः



63. ॐ पुरारातये नमः
64. ॐ भगवते नमः
65. ॐ हरये नमः
66. ॐ सामप्रियाय नमः
67. ॐ स्वरमयाय नमः
68. ॐ प्रमथाधिपाय नमः
69. ॐ मृत्युञ्जयाय नमः
70. ॐ सूक्ष्मतनवे नमः
71. ॐ जगद्व्यापिने नमः
72. ॐ जगद्गुरवे नमः
73. ॐ व्योमकेशाय नमः
74. ॐ महासेनजनकाय नमः
75. ॐ चारुविक्रमाय नमः
76. ॐ रुद्राय नमः
77. ॐ भूतपतये नमः
78. ॐ स्थाणवे नमः
79. ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः
80. ॐ दिगम्बराय नमः
81. ॐ अष्टमूर्तये नमः
82. ॐ अनेकात्मने नमः
83. ॐ शुद्धविग्रहाय नमः
84. ॐ शाश्वताय नमः
85. ॐ खण्डपरशवे नमः
86. ॐ अजाय नमः
87. ॐ पाशविमोचकाय नमः
88. ॐ मृडाय नमः
89. ॐ पशुपतये नमः
90. ॐ देवाय नमः
91. ॐ अव्ययाय नमः
92. ॐ सहस्राक्षाय नमः
93. ॐ पूषदन्तभिदे नमः
94. ॐ अव्यग्राय नमः
95. ॐ दक्षाध्वरहराय नमः
96. ॐ हराय नमः
97. ॐ भगनेत्रभिदे नमः
98. ॐ अव्यक्ताय नमः
99. ॐ शिवाप्रियाय नमः
100. ॐ अनीश्वराय नमः
101. ॐ सहस्रपदे नमः
102. ॐ सात्त्विकाय नमः
103. ॐ अपवर्गप्रदाय नमः
104. ॐ अनन्ताय नमः
105. ॐ तारकाय नमः
106. ॐ परमेश्वराय नमः
107. ॐ गिरिप्रियाय नमः
108. ॐ महादेवाय नमः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

विष्णु स्तोत्र



नारायण-सूक्तम्

ॐ॥ सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशम्भुवम्। विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं पदम्। विश्वतः परमान्नित्यं विश्वं नारायण ँ हरिम्। विश्वमेवेदं पुरुष-स्तद्विश्व-मुपजीवति ॥1॥ पतिं विश्वस्यात्मेश्वर ँ शाश्वत ँ शिवमच्युतम्। नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणम् ॥2॥ नारायणः परो ज्योतिरात्मा नारायणः परः। नारायणपरं ब्रह्म तत्त्वं-नारायणः परः। नारायणपरो ध्याता ध्यानं नारायणः परः ॥3॥ यच्च किञ्चिज्जगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा। अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः ॥4॥

अनन्तमव्ययं कवि ँ समुद्रेऽन्तं विश्वशम्भुवम्। पद्मकोश-प्रतीकाश ँ हृदयं चाप्यधोमुखम् ॥5॥ अधो निष्ट्या वितस्त्यान्ते नाभ्यामुपरि तिष्ठति। ज्वालमालाकुलं भाती विश्वस्यायतनं महत् ॥6॥ सन्तत ँ शिलाभिस्तु लम्बत्याकोशसन्निभम्। तस्यान्ते सुषिर ँ सूक्ष्मं तस्मिन् सर्वं प्रतिष्ठितम् ॥7॥ तस्य मध्ये महानग्नि-र्विश्वार्चि-र्विश्वतोमुखः। सोऽग्रभुग्विभजन्तिष्ठ-न्नाहारमजरः कविः ॥8॥

तिर्यगूर्ध्वमधश्शायी रश्मयस्तस्य सन्तता। सन्तापयति स्वं देहमापादतलमस्तकः। तस्य मध्ये वह्निशिखा अणीयोर्ध्वा व्यवस्थितः॥9॥ नीलतो-यदमध्य-स्थाद्विद्युल्लेखेव भास्वरा। नीवारशूकवत्तन्वी पीता भास्वत्यणूपमा ॥10॥ तस्याः शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः। स ब्रह्म स शिवः स हरिः सेन्द्रः सोऽक्षरः परमः स्वराट् ॥11॥

ऋत ँसत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमः॥

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



पुरुष-सूक्तम्

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठद्-दशाङ्गुलम्। पुरुष एवेदꣳ सर्वम्। यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहति। एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायाꣳश्च पूरुषः ॥1॥

पादोऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि। त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादोऽस्येहाभवात्पुनः। ततो विष्वंव्यक्रामत्। साशनानशने अभि। तस्माद्विराडजायत। विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत। पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥2॥

यत्पुरुषेण हविषा। देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मश्शरद्धविः सप्तास्यासन्परिधयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबध्नन्पुरुषं पशुम्। तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमग्रतः ॥3॥

तेन देवा अयजन्त। साध्या ऋषयश्च ये। तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। संभृतं पृषदाज्यम्। पशूꣳस्ताꣳश्चक्रे वायव्यान्। आरण्यान्ग्राम्याश्च ये। तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत ॥4॥

तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः। यत्पुरुषं व्यदधुः। कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू। का वूरू पादावुच्येते। ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः ॥5॥

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्याꣳ शूद्रो अजायत। चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरजायत। नाभ्या आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोकाꣳअकल्पयन् ॥6॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तुपारे। सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते। धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार। शक्रः प्रविद्वान्-



प्रदिशश्चतस्त्रः। तमेवं विद्वानमृत इह भवति। नान्यः पन्था अयनाय विद्यते। यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥7॥

अद्भ्यः संभूतः पृथिव्यै रसाच्च। विश्वकर्मणः समवर्तताधि। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति। तत्पुरुषस्य विश्वमाजानमग्रे। वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेवं विद्वानमृत इह भवति। नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय। प्रजापति-श्चरति गर्भे अन्तः। अजायमानो बहुधा विजायते ॥8॥

तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्। मरीचीनां पदमिच्छन्ति वेधसः। यो देवेभ्य आतपति। यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातः। नमो रुचाय ब्राह्मये। रुचं ब्राह्मं जनयन्तः। देवा अग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्य देवा असन् वशे ॥9॥

ह्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ। अहोरात्रे पार्श्वे। नक्षत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम्। इष्टं मनिषाण। अमुं मनिषाण। सर्वं मनिषाण ॥10॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

श्री-दशावतार-स्तोत्रम्

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम्। विहितवहित्रचरित्रमखेदम् ॥
केशव धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे ॥ 1 ॥

क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे। धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे ॥
केशव धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे ॥ 2 ॥

वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना। शशिनि कलंककलेव निमग्ना ॥
केशव धृतसूकररूप जय जगदीश हरे ॥ 3 ॥

तव करकमलवरे नखमद्भुतशृंगम्। दलितहिरण्यकशिपुतनुभृंगम् ॥
केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे ॥ 4 ॥

छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन। पदनखनीरजनितजनपावन ॥
केशव धृतवामनरूप जय जगदीश हरे ॥ 5 ॥

क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापम्। स्नपयसि पयसि शमितभवतापम् ॥
केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे ॥ 6 ॥

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयम्। दशमुखमौलिबलिं रमणीयम् ॥
केशव धृतरघुपतिवेष जय जगदीश हरे ॥ 7 ॥

वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभम्। हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम् ॥
केशव धृतहलधररूप जय जगदीश हरे ॥ 8 ॥

निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम्। सदयहृदयदर्शितपशुघातम् ॥
केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे ॥ 9 ॥

म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम्। धूमकेतुमिव किमपि करालम् ॥
केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे ॥ 10 ॥

श्री जयदेवकवेरिदमुदितमुदारम्। शृणु सुखदं शुभदं भवसारम् ॥
केशव धृतदशविधरूप जय जगदीश हरे ॥ 11 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ ॥

श्री-विष्णु-सहस्रनाम-स्तोत्रम्

मूल पाठ

ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः। भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः॥ 14 ॥
पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः। अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥
योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः। नारसिंहवपुः श्रीमान्केशवः पुरुषोत्तमः॥
सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः। सम्भवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः॥
स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः। अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः॥
अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः। विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः॥
अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः। प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मंगलं परम्॥ 20 ॥

ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः। हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः॥
ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः। अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥
सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः। अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः॥
अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः। वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः॥
वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मा सम्मितः समः। अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः॥
रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः। अमृतः शाश्वतस्थाणुर्वरारोहो महातपाः॥
सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः। वेदो वेदविदव्यंगो वेदांगो वेदवित्कविः॥
लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः। चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः॥
भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः। अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः॥
उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः। अतीन्द्रः संग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः॥ 30 ॥

वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः। अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः॥
महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः। अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥
महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः। अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः॥
मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः। हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः॥
अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमान्स्थिरः। अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा॥
गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः। निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः॥
अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान्न्यायो नेता समीरणः। सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥
आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः। अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः॥
सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः। सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः॥
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः। सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः॥40 ॥

वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः। वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः॥
सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः। नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः॥

ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः। ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः॥
अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः। औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः॥
भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः। कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः॥
युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः। अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित्॥
इष्टोऽविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः। क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः॥
अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः। अपां निधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः॥
स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः। वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः॥
अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः। अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः॥ 50॥

पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत्। महर्द्धिर्ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः॥
अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः। सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान्समितिञ्जयः॥
विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः। महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः॥
उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः। करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः॥
व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः। परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः॥
रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयोऽनयः। वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः॥
वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः। हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः॥
ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः। उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः॥
विस्तारः स्थावरस्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम्। अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः॥
अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महामखः। नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः॥ 60॥

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः। सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम्॥
सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत्। मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः॥
स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत्। वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः॥
धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम्। अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः॥
गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः। आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः॥
उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः। शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः॥
सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुसत्तमः। विनयो जयः सत्यसंधो दाशार्हः सात्वतां पतिः॥
जीवो विनयितासाक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः। अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः॥
अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः। आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः॥
महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः। त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृंगः कृतान्तकृत्॥70॥

महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकांगदी। गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः॥
वेधाः स्वांगोऽजितः कृष्णो दृढः संकर्षणोऽच्युतः। वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः॥
भगवान् भगहानन्दी वनमाली हलायुधः। आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः॥
सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः। दिविस्पृक्सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः॥

त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक्। संन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणम्॥
शुभांगः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः। गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः॥
अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः। श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतां वरः॥
श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः। श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः॥
स्वक्षः स्वंगः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः। विजितात्माविधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः॥
उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः। भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः॥ 80॥

अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः। अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः॥
कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः। त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः॥
कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः। अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनंजयः॥
ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः। ब्रह्मविद्ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः॥
महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः। महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः॥
स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः। पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः॥
मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः। वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः॥
सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः। शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः॥
भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः। दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः॥
विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान्। अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः॥ 90॥

एको नैकः सवः कः किं यत्तत्पदमनुत्तमम्। लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः॥
सुवर्णवर्णो हेमांगो वरांगश्चन्दनांगदी। वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः॥
अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक्। सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः॥
तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः। प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृंगो गदाग्रजः॥
चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः। चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥
समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः। दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥
शुभांगो लोकसारंगः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः। इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः॥
उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः। अर्को वाजसनः शृंगी जयन्तः सर्वविज्जयी ॥
सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः। महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः॥
कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः। अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः॥100॥

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः। न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः॥
सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः। अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः॥
अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान्। अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्द्धनः॥
भारभृत्कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः। आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः॥
धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः। अपराजितः सर्वसहो नियन्ता नियमो यमः॥
सत्त्ववान्सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः। अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत्प्रीतिवर्धनः॥

विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः। रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः॥
अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः। अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः॥
सनात्सनातनतमः कपिलः कपिरप्ययः। स्वस्तिदःस्वस्तिकृत्स्वस्तिस्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः॥
अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः। शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः॥110॥

अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः। विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः॥
उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः। वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः॥
अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः। चतुरस्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः॥
अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिरांगदः। जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः॥
आधारनिलयो धाता पुष्पहासः प्रजागरः। ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः॥
प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत्प्राणजीवनः। तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः॥
भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः। यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञांगो यज्ञवाहनः॥
यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः। यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च॥
आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः। देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः॥
शंखभृन्नन्दकी चक्री शार्ंगधन्वा गदाधरः। रथांगपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः॥120॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



श्री-विष्णु-सहस्त्र-नामावलिः

ॐ विश्वस्मै नमः
ॐ विष्णवे नमः
ॐ वषट्काराय नमः
ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः
ॐ भूतकृते नमः
ॐ भूतभृते नमः
ॐ भावाय नमः
ॐ भूतात्मने नमः
ॐ भूतभावनाय नमः
ॐ पूतात्मने नमः 10
ॐ परमात्मने नमः
ॐ मुक्तानां परमायै गतये नमः
ॐ अव्ययाय नमः
ॐ पुरुषाय नमः
ॐ साक्षिणे नमः
ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः
ॐ अक्षराय नमः
ॐ योगाय नमः
ॐ योगविदां नेत्रे नमः
ॐ प्रधानपुरुषेश्वराय नमः 20
ॐ नारसिंहवपुषे नमः
ॐ श्रीमते नमः
ॐ केशवाय नमः
ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
ॐ सर्वस्मै नमः
ॐ शर्वाय नमः
ॐ शिवाय नमः
ॐ स्थाणवे नमः
ॐ भूतादये नमः
ॐ निधये अव्ययाय नमः 30
ॐ सम्भवाय नमः
ॐ भावनाय नमः
ॐ भर्त्रे नमः
ॐ प्रभवाय नमः
ॐ प्रभवे नमः
ॐ ईश्वराय नमः
ॐ स्वयम्भुवे नमः
ॐ शम्भवे नमः
ॐ आदित्याय नमः
ॐ पुष्कराक्षाय नमः 40
ॐ महास्वनाय नमः
ॐ अनादिनिधनाय नमः
ॐ धात्रे नमः
ॐ विधात्रे नमः
ॐ धातवे उत्तमाय नमः
ॐ अप्रमेयाय नमः
ॐ हृषीकेशाय नमः
ॐ पद्मनाभाय नमः
ॐ अमरप्रभवे नमः
ॐ विश्वकर्मणे नमः 50
ॐ मनवे नमः
ॐ त्वष्ट्रे नमः
ॐ स्थविष्ठाय नमः
ॐ स्थविराय ध्रुवाय नमः
ॐ अग्राह्याय नमः
ॐ शाश्वताय नमः
ॐ कृष्णाय नमः
ॐ लोहिताक्षाय नमः
ॐ प्रतर्दनाय नमः
ॐ प्रभूताय नमः 60

ॐ त्रिककुब्धाम्ने नमः
ॐ पवित्राय नमः
ॐ परम्मंगलाय नमः
ॐ ईशानाय नमः
ॐ प्राणदाय नमः
ॐ प्राणाय नमः
ॐ ज्येष्ठाय नमः
ॐ श्रेष्ठाय नमः
ॐ प्रजापतये नमः
ॐ हिरण्यगर्भाय नमः 70
ॐ भूगर्भाय नमः
ॐ माधवाय नमः
ॐ मधुसूदनाय नमः
ॐ ईश्वराय नमः
ॐ विक्रमिणे नमः
ॐ धन्विने नमः
ॐ मेधाविने नमः
ॐ विक्रमाय नमः
ॐ क्रमाय नमः
ॐ अनुत्तमाय नमः 80
ॐ दुराधर्षाय नमः
ॐ कृतज्ञाय नमः
ॐ कृतये नमः
ॐ आत्मवते नमः
ॐ सुरेशाय नमः
ॐ शरणाय नमः
ॐ शर्मणे नमः
ॐ विश्वरेतसे नमः
ॐ प्रजाभवाय नमः
ॐ अह्ने नमः 90
ॐ संवत्सराय नमः
ॐ व्यालाय नमः
ॐ प्रत्ययाय नमः
ॐ सर्वदर्शनाय नमः
ॐ अजाय नमः
ॐ सर्वेश्वराय नमः
ॐ सिद्धाय नमः
ॐ सिद्धये नमः
ॐ सर्वादये नमः
ॐ अच्युताय नमः 100
ॐ वृषाकपये नमः
ॐ अमेयात्मने नमः
ॐ सर्वयोगविनिःसृताय नमः
ॐ वसवे नमः
ॐ वसुमनसे नमः
ॐ सत्याय नमः
ॐ समात्मने नमः
ॐ असम्मिताय नमः
ॐ समाय नमः
ॐ अमोघाय नमः 110
ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः
ॐ वृषकर्मणे नमः
ॐ वृषाकृतये नमः
ॐ रुद्राय नमः
ॐ बहुशिरसे नमः
ॐ बभ्रवे नमः
ॐ विश्वयोनये नमः
ॐ शुचिश्रवसे नमः
ॐ अमृताय नमः
ॐ शाश्वतस्थाणवे नमः 120
ॐ वरारोहाय नमः
ॐ महातपसे नमः
ॐ सर्वगाय नमः
ॐ सर्वविद्भानवे नमः
ॐ विष्वक्सेनाय नमः
ॐ जनार्दनाय नमः

ॐ वेदाय नमः
ॐ वेदविदे नमः
ॐ अव्यंगाय नमः
ॐ वेदांगाय नमः 130
ॐ वेदविदे नमः
ॐ कवये नमः
ॐ लोकाध्यक्षाय नमः
ॐ सुराध्यक्षाय नमः
ॐ धर्माध्यक्षाय नमः
ॐ कृताकृताय नमः
ॐ चतुरात्मने नमः
ॐ चतुर्व्यूहाय नमः
ॐ चतुर्दंष्ट्राय नमः
ॐ चतुर्भुजाय नमः 140
ॐ भ्राजिष्णवे नमः
ॐ भोजनाय नमः
ॐ भोक्त्रे नमः
ॐ सहिष्णवे नमः
ॐ जगदादिजाय नमः
ॐ अनघाय नमः
ॐ विजयाय नमः
ॐ जेत्रे नमः
ॐ विश्वयोनये नमः
ॐ पुनर्वसवे नमः 150
ॐ उपेन्द्राय नमः
ॐ वामनाय नमः
ॐ प्रांशवे नमः
ॐ अमोघाय नमः
ॐ शुचये नमः
ॐ ऊर्जिताय नमः
ॐ अतीन्द्राय नमः
ॐ संग्रहाय नमः
ॐ सर्गाय नमः
ॐ धृतात्मने नमः 160
ॐ नियमाय नमः
ॐ यमाय नमः
ॐ वेद्याय नमः
ॐ वैद्याय नमः
ॐ सदायोगिने नमः
ॐ वीरघ्ने नमः
ॐ माधवाय नमः
ॐ मधवे नमः
ॐ अतीन्द्रियाय नमः
ॐ महामायाय नमः 170
ॐ महोत्साहाय नमः
ॐ महाबलाय नमः
ॐ महाबुद्धये नमः
ॐ महावीर्याय नमः
ॐ महाशक्तये नमः
ॐ महाद्युतये नमः
ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः
ॐ श्रीमते नमः
ॐ अमेयात्मने नमः
ॐ महाद्रिधृषे नमः 180
ॐ महेष्वासाय नमः
ॐ महीभर्त्रे नमः
ॐ श्रीनिवासाय नमः
ॐ सतां गतये नमः
ॐ अनिरुद्धाय नमः
ॐ सुरानन्दाय नमः
ॐ गोविन्दाय नमः
ॐ गोविदाम्पतये नमः
ॐ मरीचये नमः
ॐ दमनाय नमः 190
ॐ हंसाय नमः
ॐ सुपर्णाय नमः

ॐ भुजगोत्तमाय नम:
ॐ हिरण्यनाभाय नम:
ॐ सुतपसे नम:
ॐ पद्मनाभाय नम:
ॐ प्रजापतये नम:
ॐ अमृत्यवे नम:
ॐ सर्वदृशे नम:
ॐ सिंहाय नम: 200
ॐ संधात्रे नम:
ॐ संधिमते नम:
ॐ स्थिराय नम:
ॐ अजाय नम:
ॐ दुर्मर्षणाय नम:
ॐ शास्त्रे नम:
ॐ विश्रुतात्मने नम:
ॐ सुरारिघ्ने नम:
ॐ गुरवे नम:
ॐ गुरुतमाय नम: 210
ॐ धाम्ने नम:
ॐ सत्याय नम:
ॐ सत्यपराक्रमाय नम:
ॐ निमिषाय नम:
ॐ अनिमिषाय नम:
ॐ स्रग्विणे नम:
ॐ वाचस्पतये उदारधिये नम:
ॐ अग्रण्ये नम:
ॐ ग्रामण्ये नम:
ॐ श्रीमते नम: 220
ॐ न्यायाय नम:
ॐ नेत्रे नम:
ॐ समीरणाय नम:
ॐ सहस्रमूर्ध्ने नम:
ॐ विश्वात्मने नम:
ॐ सहस्राक्षाय नम:
ॐ सहस्रपदे नम:
ॐ आवर्त्तनाय नम:
ॐ निवृत्तात्मने नम:
ॐ संवृताय नम: 230
ॐ सम्प्रमर्दनाय नम:
ॐ अह:संवर्तकाय नम:
ॐ वह्नये नम:
ॐ अनिलाय नम:
ॐ धरणीधराय नम:
ॐ सुप्रसादाय नम:
ॐ प्रसन्नात्मने नम:
ॐ विश्वधृषे नम:
ॐ विश्वभुजे नम:
ॐ विभवे नम: 240
ॐ सत्कर्त्रे नम:
ॐ सत्कृताय नम:
ॐ साधवे नम:
ॐ जह्नवे नम:
ॐ नारायणाय नम:
ॐ नराय नम:
ॐ असंख्येयाय नम:
ॐ अप्रमेयात्मने नम:
ॐ विशिष्टाय नम:
ॐ शिष्टकृते नम: 250
ॐ शुचये नम:
ॐ सिद्धार्थाय नम:
ॐ सिद्धसंकल्पाय नम:
ॐ सिद्धिदाय नम:
ॐ सिद्धिसाधनाय नम:
ॐ वृषाहिणे नम:
ॐ वृषभाय नम:
ॐ विष्णवे नम:

ॐ वृषपर्वणे नमः
ॐ वृषोदराय नमः 260
ॐ वर्धनाय नमः
ॐ वर्धमानाय नमः
ॐ विविक्ताय नमः
ॐ श्रुतिसागराय नमः
ॐ सुभुजाय नमः
ॐ दुर्धराय नमः
ॐ वाग्मिने नमः
ॐ महेन्द्राय नमः
ॐ वसुदाय नमः
ॐ वसवे नमः 270
ॐ नैकरूपाय नमः
ॐ बृहद्रूपाय नमः
ॐ शिपिविष्टाय नमः
ॐ प्रकाशनाय नमः
ॐ ओजस्तेजो-द्युतिधराय नमः
ॐ प्रकाशात्मने नमः
ॐ प्रतापनाय नमः
ॐ ऋद्धाय नमः
ॐ स्पष्टाक्षराय नमः
ॐ मन्त्राय नमः 280
ॐ चन्द्रांशवे नमः
ॐ भास्करद्युतये नमः
ॐ अमृतांशूद्भवाय नमः
ॐ भानवे नमः
ॐ शशबिन्दवे नमः
ॐ सुरेश्वराय नमः
ॐ औषधाय नमः
ॐ जगतः सेतवे नमः
ॐ सत्यधर्मपराक्रमाय नमः
ॐ भूतभव्यभवन्नाथाय नमः 290
ॐ पवनाय नमः
ॐ पावनाय नमः
ॐ अनलाय नमः
ॐ कामघ्ने नमः
ॐ कामकृते नमः
ॐ कान्ताय नमः
ॐ कामाय नमः
ॐ कामप्रदाय नमः
ॐ प्रभवे नमः
ॐ युगादिकृते नमः 300
ॐ युगावर्ताय नमः
ॐ नैकमायाय नमः
ॐ महाशनाय नमः
ॐ अदृश्याय नमः
ॐ अव्यक्तरूपाय नमः
ॐ सहस्रजिते नमः
ॐ अनन्तजिते नमः
ॐ इष्टाय नमः
ॐ अविशिष्टाय नमः
ॐ शिष्टेष्टाय नमः 310
ॐ शिखण्डिने नमः
ॐ नहुषाय नमः
ॐ वृषाय नमः
ॐ क्रोधघ्ने नमः
ॐ क्रोधकृत्कर्त्रे नमः
ॐ विश्वबाहवे नमः
ॐ महीधराय नमः
ॐ अच्युताय नमः
ॐ प्रथिताय नमः
ॐ प्राणाय नमः 320
ॐ प्राणदाय नमः
ॐ वासवानुजाय नमः
ॐ अपां निधये नमः
ॐ अधिष्ठानाय नमः

ॐ अप्रमत्ताय नमः
ॐ प्रतिष्ठिताय नमः
ॐ स्कन्दाय नमः
ॐ स्कन्दधराय नमः
ॐ धुर्याय नमः
ॐ वरदाय नमः 330
ॐ वायुवाहनाय नमः
ॐ वासुदेवाय नमः
ॐ बृहद्भानवे नमः
ॐ आदिदेवाय नमः
ॐ पुरन्दराय नमः
ॐ अशोकाय नमः
ॐ तारणाय नमः
ॐ ताराय नमः
ॐ शूराय नमः
ॐ शौरये नमः 340
ॐ जनेश्वराय नमः
ॐ अनुकूलाय नमः
ॐ शतावर्ताय नमः
ॐ पद्मिने नमः
ॐ पद्मनिभेक्षणाय नमः
ॐ पद्मनाभाय नमः
ॐ अरविन्दाक्षाय नमः
ॐ पद्मगर्भाय नमः
ॐ शरीरभृते नमः
ॐ महर्द्धये नमः 350
ॐ ऋद्धाय नमः
ॐ वृद्धात्मने नमः
ॐ महाक्षाय नमः
ॐ गरुडध्वजाय नमः
ॐ अतुलाय नमः
ॐ शरभाय नमः
ॐ भीमाय नमः
ॐ समयज्ञाय नमः
ॐ हविर्हरये नमः
ॐ सर्वलक्षणलक्षण्याय नमः 360
ॐ लक्ष्मीवते नमः
ॐ समितिञ्जयाय नमः
ॐ विक्षराय नमः
ॐ रोहिताय नमः
ॐ मार्गाय नमः
ॐ हेतवे नमः
ॐ दामोदराय नमः
ॐ सहाय नमः
ॐ महीधराय नमः
ॐ महाभागाय नमः 370
ॐ वेगवते नमः
ॐ अमिताशनाय नमः
ॐ उद्भवाय नमः
ॐ क्षोभणाय नमः
ॐ देवाय नमः
ॐ श्रीगर्भाय नमः
ॐ परमेश्वराय नमः
ॐ करणाय नमः
ॐ कारणाय नमः
ॐ कर्त्रे नमः 380
ॐ विकर्त्रे नमः
ॐ गहनाय नमः
ॐ गुहाय नमः
ॐ व्यवसायाय नमः
ॐ व्यवस्थानाय नमः
ॐ संस्थानाय नमः
ॐ स्थानदाय नमः
ॐ ध्रुवाय नमः
ॐ परर्द्धये नमः
ॐ परमस्पष्टाय नमः 390

ॐ तुष्टाय नमः
ॐ पुष्टाय नमः
ॐ शुभेक्षणाय नमः
ॐ रामाय नमः
ॐ विरामाय नमः
ॐ विरजाय नमः
ॐ मार्गाय नमः
ॐ नेयाय नमः
ॐ नयाय नमः
ॐ अनयाय नमः 400
ॐ वीराय नमः
ॐ शक्तिमतां श्रेष्ठाय नमः
ॐ धर्माय नमः
ॐ धर्मविदुत्तमाय नमः
ॐ वैकुण्ठाय नमः
ॐ पुरुषाय नमः
ॐ प्राणाय नमः
ॐ प्राणदाय नमः
ॐ प्रणवाय नमः
ॐ पृथवे नमः 410
ॐ हिरण्यगर्भाय नमः
ॐ शत्रुघ्नाय नमः
ॐ व्याप्ताय नमः
ॐ वायवे नमः
ॐ अधोक्षजाय नमः
ॐ ऋतवे नमः
ॐ सुदर्शनाय नमः
ॐ कालाय नमः
ॐ परमेष्ठिने नमः
ॐ परिग्रहाय नमः 420
ॐ उग्राय नमः
ॐ संवत्सराय नमः
ॐ दक्षाय नमः
ॐ विश्रामाय नमः
ॐ विश्वदक्षिणाय नमः
ॐ विस्ताराय नमः
ॐ स्थावरस्थाणवे नमः
ॐ प्रमाणाय नमः
ॐ बीजमव्ययाय नमः
ॐ अर्थाय नमः 430
ॐ अनर्थाय नमः
ॐ महाकोशाय नमः
ॐ महाभोगाय नमः
ॐ महाधनाय नमः
ॐ अनिर्विण्णाय नमः
ॐ स्थविष्ठाय नमः
ॐ अभुवे नमः
ॐ धर्मयूपाय नमः
ॐ महामखाय नमः
ॐ नक्षत्रनेमये नमः 440
ॐ नक्षत्रिणे नमः
ॐ क्षमाय नमः
ॐ क्षामाय नमः
ॐ समीहनाय नमः
ॐ यज्ञाय नमः
ॐ इज्याय नमः
ॐ महेज्याय नमः
ॐ क्रतवे नमः
ॐ सत्राय नमः
ॐ सतांगतये नमः 450
ॐ सर्वदर्शिने नमः
ॐ विमुक्तात्मने नमः
ॐ सर्वज्ञाय नमः
ॐ ज्ञानमुत्तमाय नमः
ॐ सुव्रताय नमः
ॐ सुमुखाय नमः

ॐ सूक्ष्माय नमः
ॐ सुघोषाय नमः
ॐ सुखदाय नमः
ॐ सुहृदे नमः 460
ॐ मनोहराय नमः
ॐ जितक्रोधाय नमः
ॐ वीरबाहवे नमः
ॐ विदारणाय नमः
ॐ स्वापनाय नमः
ॐ स्ववशाय नमः
ॐ व्यापिने नमः
ॐ नैकात्मने नमः
ॐ नैककर्मकृते नमः
ॐ वत्सराय नमः 470
ॐ वत्सलाय नमः
ॐ वत्सिने नमः
ॐ रत्नगर्भाय नमः
ॐ धनेश्वराय नमः
ॐ धर्मगोपाय नमः
ॐ धर्मकृते नमः
ॐ धर्मिणे नमः
ॐ 'सत्' स्वरूपाय नमः
ॐ 'असत्' रूपाय नमः
ॐ क्षराय नमः 480
ॐ अक्षराय नमः
ॐ अविज्ञात्रे नमः
ॐ सहस्रांशवे नमः
ॐ विधात्रे नमः
ॐ कृतलक्षणाय नमः
ॐ गभस्तिनेमये नमः
ॐ सत्त्वस्थाय नमः
ॐ सिंहाय नमः
ॐ भूतमहेश्वराय नमः
ॐ आदिदेवाय नमः 490
ॐ महादेवाय नमः
ॐ देवेशाय नमः
ॐ देवभृद्गुरवे नमः
ॐ उत्तराय नमः
ॐ गोपतये नमः
ॐ गोप्त्रे नमः
ॐ ज्ञानगम्याय नमः
ॐ पुरातनाय नमः
ॐ शरीरभूतभृते नमः
ॐ भोक्त्रे नमः 500
ॐ कपीन्द्राय नमः
ॐ भूरिदक्षिणाय नमः
ॐ सोमपाय नमः
ॐ अमृतपाय नमः
ॐ सोमाय नमः
ॐ पुरुजिते नमः
ॐ पुरुसत्तमाय नमः
ॐ विनयाय नमः
ॐ जयाय नमः
ॐ सत्यसन्धाय नमः 510
ॐ दाशार्हाय नमः
ॐ सात्त्वताम्पतये नमः
ॐ जीवाय नमः
ॐ विनयितासाक्षिणे नमः
ॐ मुकुन्दाय नमः
ॐ अमितविक्रमाय नमः
ॐ अम्भोनिधये नमः
ॐ अनन्तात्मने नमः
ॐ महोदधिशयाय नमः
ॐ अन्तकाय नमः 520
ॐ अजाय नमः
ॐ महार्हाय नमः

ॐ स्वाभाव्याय नम:
ॐ जितामित्राय नम:
ॐ प्रमोदनाय नम:
ॐ आनन्दाय नम:
ॐ नन्दनाय नम:
ॐ नन्दाय नम:
ॐ सत्यधर्मणे नम:
ॐ त्रिविक्रमाय नम: 530
ॐ महर्षये कपिलाचार्याय नम:
ॐ कृतज्ञाय नम:
ॐ मेदिनीपतये नम:
ॐ त्रिपदाय नम:
ॐ त्रिदशाध्यक्षाय नम:
ॐ महाशृंगाय नम:
ॐ कृतान्तकृते नम:
ॐ महावराहाय नम:
ॐ गोविन्दाय नम:
ॐ सुषेणाय नम: 540
ॐ कनकांगदिने नम:
ॐ गुह्याय नम:
ॐ गभीराय नम:
ॐ गहनाय नम:
ॐ गुप्ताय नम:
ॐ चक्रगदाधराय नम:
ॐ वेधसे नम:
ॐ स्वांगाय नम:
ॐ अजिताय नम:
ॐ कृष्णाय नम: 550
ॐ दृढाय नम:
ॐ संकर्षणोऽच्युताय नम:
ॐ वरुणाय नम:
ॐ वारुणाय नम:
ॐ वृक्षाय नम:
ॐ पुष्कराक्षाय नम:
ॐ महामनसे नम:
ॐ भगवते नम:
ॐ भगघ्ने नम:
ॐ आनन्दिने नम: 560
ॐ वनमालिने नम:
ॐ हलायुधाय नम:
ॐ आदित्याय नम:
ॐ ज्योतिरादित्याय नम:
ॐ सहिष्णवे नम:
ॐ गतिसत्तमाय नम:
ॐ सुधन्वने नम:
ॐ खण्डपरशवे नम:
ॐ दारुणाय नम:
ॐ द्रविणप्रदाय नम: 570
ॐ दिविस्पृशे नम:
ॐ सर्वदृग्व्यासाय नम:
ॐ वाचस्पतिरयोनिजाय नम:
ॐ त्रिसामायै नम:
ॐ सामगाय नम:
ॐ साम्ने नम:
ॐ निर्वाणाय नम:
ॐ भेषजाय नम:
ॐ भिषजे नम:
ॐ संन्यासकृते नम: 580
ॐ शमाय नम:
ॐ शान्ताय नम:
ॐ निष्ठायै नम:
ॐ शान्त्यै नम:
ॐ परायणाय नम:
ॐ शुभांगाय नम:
ॐ शान्तिदाय नम:
ॐ स्रष्ट्रे नम:

ॐ कुमुदाय नमः
ॐ कुवलेशयाय नमः 590
ॐ गोहिताय नमः
ॐ गोपतये नमः
ॐ गोप्त्रे नमः
ॐ वृषभाक्षाय नमः
ॐ वृषप्रियाय नमः
ॐ अनिवर्तिने नमः
ॐ निवृत्तात्मने नमः
ॐ संक्षेप्त्रे नमः
ॐ क्षेमकृते नमः
ॐ शिवाय नमः 600
ॐ श्रीवत्सवक्षसे नमः
ॐ श्रीवासाय नमः
ॐ श्रीपतये नमः
ॐ श्रीमतांवराय नमः
ॐ श्रीदाय नमः
ॐ श्रीशाय नमः
ॐ श्रीनिवासाय नमः
ॐ श्रीनिधये नमः
ॐ श्रीविभावनाय नमः
ॐ श्रीधराय नमः 610
ॐ श्रीकराय नमः
ॐ श्रेयसे नमः
ॐ श्रीमते नमः
ॐ लोकत्रयाश्रयाय नमः
ॐ स्वक्षाय नमः
ॐ स्वंगाय नमः
ॐ शतानन्दाय नमः
ॐ नन्दिने नमः
ॐ ज्योतिर्गणेश्वराय नमः
ॐ विजितात्मने नमः 620
ॐ अविधेयात्मने नमः
ॐ सत्कीर्तये नमः
ॐ छिन्नसंशयाय नमः
ॐ उदीर्णाय नमः
ॐ सर्वतश्चक्षुषे नमः
ॐ अनीशाय नमः
ॐ शाश्वतस्थिराय नमः
ॐ भूशयाय नमः
ॐ भूषणाय नमः
ॐ भूतये नमः 630
ॐ विशोकाय नमः
ॐ शोकनाशनाय नमः
ॐ अर्चिष्मते नमः
ॐ अर्चिताय नमः
ॐ कुम्भाय नमः
ॐ विशुद्धात्मने नमः
ॐ विशोधनाय नमः
ॐ अनिरुद्धाय नमः
ॐ अप्रतिरथाय नमः
ॐ प्रद्युम्नाय नमः 640
ॐ अमितविक्रमाय नमः
ॐ कालनेमिनिघ्ने नमः
ॐ वीराय नमः
ॐ शौरये नमः
ॐ शूरजनेश्वराय नमः
ॐ त्रिलोकात्मने नमः
ॐ त्रिलोकेशाय नमः
ॐ केशवाय नमः
ॐ केशिघ्ने नमः
ॐ हरये नमः 650
ॐ कामदेवाय नमः
ॐ कामपालाय नमः
ॐ कामिने नमः
ॐ कान्ताय नमः

ॐ कृतागमाय नमः
ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः
ॐ विष्णवे नमः
ॐ वीराय नमः
ॐ अनन्ताय नमः
ॐ धनञ्जयाय नमः 660
ॐ ब्रह्मण्याय नमः
ॐ ब्रह्मकृते नमः
ॐ ब्राह्मिणे नमः
ॐ ब्रह्मणे नमः
ॐ ब्रह्मविवर्धनाय नमः
ॐ ब्रह्मविदे नमः
ॐ ब्राह्मणाय नमः
ॐ ब्रह्मिणे नमः
ॐ ब्रह्मज्ञाय नमः
ॐ ब्राह्मणप्रियाय नमः 670
ॐ महाक्रमाय नमः
ॐ महाकर्मणे नमः
ॐ महातेजसे नमः
ॐ महोरगाय नमः
ॐ महाक्रतवे नमः
ॐ महायज्वने नमः
ॐ महायज्ञाय नमः
ॐ महाहविषे नमः
ॐ स्तव्याय नमः
ॐ स्तवप्रियाय नमः 680
ॐ स्तोत्राय नमः
ॐ स्तुतये नमः
ॐ स्तोत्रे नमः
ॐ रणप्रियाय नमः
ॐ पूर्णाय नमः
ॐ पूरयित्रे नमः
ॐ पुण्याय नमः
ॐ पुण्यकीर्तये नमः
ॐ अनामयाय नमः
ॐ मनोजवाय नमः 690
ॐ तीर्थकराय नमः
ॐ वसुरेतसे नमः
ॐ वसुप्रदाय नमः
ॐ वसुमनसे नमः
ॐ वासुदेवाय नमः
ॐ वसवे नमः
ॐ वसुप्रदाय नमः
ॐ हविषे नमः
ॐ सद्गतये नमः
ॐ सत्कृतये नमः 700
ॐ सत्तायै नमः
ॐ सद्भूतये नमः
ॐ सत्परायणाय नमः
ॐ शूरसेनाय नमः
ॐ यदुश्रेष्ठाय नमः
ॐ सन्निवासाय नमः
ॐ सुयामुनाय नमः
ॐ भूतावासाय नमः
ॐ वासुदेवाय नमः
ॐ सर्वासुनिलयाय नमः 710
ॐ अनलाय नमः
ॐ दर्पघ्ने नमः
ॐ दर्पदाय नमः
ॐ दृप्ताय नमः
ॐ दुर्धराय नमः
ॐ अपराजिताय नमः
ॐ विश्वमूर्त्तये नमः
ॐ महामूर्त्तये नमः
ॐ दीप्तमूर्त्तये नमः
ॐ अमूर्त्तिमते नमः 720

ॐ अनेकमूर्त्तये नम:
ॐ अव्यक्ताय नम:
ॐ शतमूर्त्तये नम:
ॐ शताननाय नम:
ॐ एकस्मै नम:
ॐ नैकस्मै नम:
ॐ सवाय नम:
ॐ काय नम:
ॐ कस्मै नम:
ॐ यस्मै नम: 730
ॐ तस्मै नम:
ॐ पदमनुत्तमाय नम:
ॐ लोकबन्धवे नम:
ॐ लोकनाथाय नम:
ॐ माधवाय नम:
ॐ भक्तवत्सलाय नम:
ॐ सुवर्णवर्णाय नम:
ॐ हेमांगाय नम:
ॐ वरांगाय नम:
ॐ चन्दनांगदिने नम: 740
ॐ वीरघ्ने नम:
ॐ विषमाय नम:
ॐ शून्याय नम:
ॐ घृताशिषे नम:
ॐ अचलाय नम:
ॐ चलाय नम:
ॐ अमानिने नम:
ॐ मानदाय नम:
ॐ मान्याय नम:
ॐ लोकस्वामिने नम: 750
ॐ त्रिलोकधृषे नम:
ॐ सुमेधसे नम:
ॐ मेधजाय नम:
ॐ धन्याय नम:
ॐ सत्यमेधसे नम:
ॐ धराधराय नम:
ॐ तेजोवृषाय नम:
ॐ द्युतिधराय नम:
ॐ सर्वशस्त्रभृतांवराय नम:
ॐ प्रग्रहाय नम: 760
ॐ निग्रहाय नम:
ॐ व्यग्राय नम:
ॐ नैकश्रृंगाय नम:
ॐ गदाग्रजाय नम:
ॐ चतुर्मूर्त्तये नम:
ॐ चतुर्बाहवे नम:
ॐ चतुर्व्यूहाय नम:
ॐ चतुर्गतये नम:
ॐ चतुरात्मने नम:
ॐ चतुर्भावाय नम: 770
ॐ चतुर्वेदविदे नम:
ॐ एकपदे नम:
ॐ समावर्ताय नम:
ॐ अनिवृत्तात्मने नम:
ॐ दुर्जयाय नम:
ॐ दुरतिक्रमाय नम:
ॐ दुर्लभाय नम:
ॐ दुर्गमाय नम:
ॐ दुर्गाय नम:
ॐ दुरावासाय नम: 780
ॐ दुरारिघ्ने नम:
ॐ शुभांगाय नम:
ॐ लोकसारंगाय नम:
ॐ सुतन्तवे नम:
ॐ तन्तुवर्धनाय नम:
ॐ इन्द्रकर्मणे नम:

ॐ महाकर्मणे नमः
ॐ कृतकर्मणे नमः
ॐ कृतागमाय नमः
ॐ उद्भवाय नमः 790
ॐ सुन्दराय नमः
ॐ सुन्दाय नमः
ॐ रत्ननाभाय नमः
ॐ सुलोचनाय नमः
ॐ अर्काय नमः
ॐ वाजसनाय नमः
ॐ शृंगिणे नमः
ॐ जयन्ताय नमः
ॐ सर्वविज्जयिने नमः
ॐ सुवर्णबिन्दवे नमः 800
ॐ अक्षोभ्याय नमः
ॐ सर्ववागीश्वरेश्वराय नमः
ॐ महाह्रदाय नमः
ॐ महागर्ताय नमः
ॐ महाभूताय नमः
ॐ महानिधये नमः
ॐ कुमुदाय नमः
ॐ कुन्दराय नमः
ॐ कुन्दाय नमः
ॐ पर्जन्याय नमः 810
ॐ पावनाय नमः
ॐ अनिलाय नमः
ॐ अमृताशाय नमः
ॐ अमृतवपुषे नमः
ॐ सर्वज्ञाय नमः
ॐ सर्वतोमुखाय नमः
ॐ सुलभाय नमः
ॐ सुव्रताय नमः
ॐ सिद्धाय नमः
ॐ शत्रुजिते नमः 820
ॐ शत्रुतापनाय नमः
ॐ न्यग्रोधाय नमः
ॐ उदुम्बराय नमः
ॐ अश्वत्थाय नमः
ॐ चाणूरान्ध्रनिषूदनाय नमः
ॐ सहस्रार्चिषे नमः
ॐ सप्तजिह्वाय नमः
ॐ सप्तैधसे नमः
ॐ सप्तवाहनाय नमः
ॐ अमूर्तये नमः 830
ॐ अनघाय नमः
ॐ अचिन्त्याय नमः
ॐ भयकृते नमः
ॐ भयनाशनाय नमः
ॐ अणवे नमः
ॐ बृहते नमः
ॐ कृशाय नमः
ॐ स्थूलाय नमः
ॐ गुणभृते नमः
ॐ निर्गुणाय नमः 840
ॐ महते नमः
ॐ अधृताय नमः
ॐ स्वधृताय नमः
ॐ स्वास्याय नमः
ॐ प्राग्वंशाय नमः
ॐ वंशवर्धनाय नमः
ॐ भारभृते नमः
ॐ कथिताय नमः
ॐ योगिने नमः
ॐ योगीशाय नमः 850
ॐ सर्वकामदाय नमः
ॐ आश्रमाय नमः

ॐ श्रमणाय नमः
ॐ क्षामाय नमः
ॐ सुपर्णाय नमः
ॐ वायुवाहनाय नमः
ॐ धनुर्धराय नमः
ॐ धनुर्वेदाय नमः
ॐ दण्डाय नमः
ॐ दमयित्रे नमः 860
ॐ दमाय नमः
ॐ अपराजिताय नमः
ॐ सर्वसहाय नमः
ॐ नियन्त्रे नमः
ॐ अनियमाय नमः
ॐ अयमाय नमः
ॐ सत्त्ववते नमः
ॐ सात्त्विकाय नमः
ॐ सत्याय नमः
ॐ सत्यधर्मपरायणाय नमः 870
ॐ अभिप्रायाय नमः
ॐ प्रियार्हाय नमः
ॐ अर्हाय नमः
ॐ प्रियकृते नमः
ॐ प्रीतिवर्धनाय नमः
ॐ विहायसगतये नमः
ॐ ज्योतिषे नमः
ॐ सुरुचये नमः
ॐ हुतभुजे नमः
ॐ विभवे नमः 880
ॐ रवये नमः
ॐ विरोचनाय नमः
ॐ सूर्याय नमः
ॐ सवित्रे नमः
ॐ रविलोचनाय नमः
ॐ अनन्ताय नमः
ॐ हुतभुजे नमः
ॐ भोक्त्रे नमः
ॐ सुखदाय नमः
ॐ नैकजाय नमः 890
ॐ अग्रजाय नमः
ॐ अनिर्विण्णाय नमः
ॐ सदामर्षिणे नमः
ॐ लोकाधिष्ठानाय नमः
ॐ अद्भुताय नमः
ॐ सनाते नमः
ॐ सनातनतमाय नमः
ॐ कपिलाय नमः
ॐ कपये नमः
ॐ आप्यायनाय नमः 900
ॐ स्वस्तिदाय नमः
ॐ स्वस्तिकृते नमः
ॐ स्वस्तिने नमः
ॐ स्वस्तिभुजे नमः
ॐ स्वस्तिदक्षिणाय नमः
ॐ अरौद्राय नमः
ॐ कुण्डलिने नमः
ॐ चक्रिणे नमः
ॐ विक्रमिणे नमः
ॐ ऊर्जितशासनाय नमः 910
ॐ शब्दातिगाय नमः
ॐ शब्दसहाय नमः
ॐ शिशिराय नमः
ॐ शर्वरीकराय नमः
ॐ अक्रूराय नमः
ॐ पेशलाय नमः
ॐ दक्षाय नमः
ॐ दक्षिणाय नमः

ॐ क्षमिणां वराय नम:
ॐ विद्वत्तमाय नम: 920
ॐ वीतभयाय नम:
ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय नम:
ॐ उत्तारणाय नम:
ॐ दुष्कृतिघ्ने नम:
ॐ पुण्याय नम:
ॐ दु:स्वप्ननाशनाय नम:
ॐ वीरघ्ने नम:
ॐ रक्षणाय नम:
ॐ सन्ताय नम:
ॐ जीवनाय नम: 930
ॐ पर्यवस्थिताय नम:
ॐ अनन्तरूपाय नम:
ॐ अनन्तश्रिये नम:
ॐ जितमन्यवे नम:
ॐ भयापहाय नम:
ॐ चतुरस्राय नम:
ॐ गभीरात्मने नम:
ॐ विदिशाय नम:
ॐ व्यादिशाय नम:
ॐ दिशाय नम: 940
ॐ अनादये नम:
ॐ भूर्भुवाय नम:
ॐ लक्ष्म्यै नम:
ॐ सुवीराय नम:
ॐ रुचिरांगदाय नम:
ॐ जननाय नम:
ॐ जनजन्मादये नम:
ॐ भीमाय नम:
ॐ भीमपराक्रमाय नम:
ॐ आधारनिलयाय नम: 950
ॐ अधात्रे नम:
ॐ पुष्पहासाय नम:
ॐ प्रजागराय नम:
ॐ ऊर्ध्वगाय नम:
ॐ सत्पथाचाराय नम:
ॐ प्राणदाय नम:
ॐ प्रणवाय नम:
ॐ पणाय नम:
ॐ प्रमाणाय नम:
ॐ प्राणनिलयाय नम: 960
ॐ प्राणभृते नम:
ॐ प्राणजीवनाय नम:
ॐ तत्त्वाय नम:
ॐ तत्त्वविदे नम:
ॐ एकात्मने नम:
ॐ जन्ममृत्युजरातिगाय नम:
ॐ भूर्भुव:स्वस्तरवे नम:
ॐ ताराय नम:
ॐ सवित्रे नम:
ॐ प्रपितामहाय नम: 970
ॐ यज्ञाय नम:
ॐ यज्ञपतये नम:
ॐ यज्वने नम:
ॐ यज्ञांगाय नम:
ॐ यज्ञवाहनाय नम:
ॐ यज्ञभृते नम:
ॐ यज्ञकृते नम:
ॐ यज्ञिने नम:
ॐ यज्ञभुजे नम:
ॐ यज्ञसाधनाय नम: 980
ॐ यज्ञान्तकृते नम:
ॐ यज्ञगुह्याय नम:
ॐ अन्नाय नम:
ॐ अन्नादाय नम:



ॐ आत्मयोनये नमः
ॐ स्वयंजाताय नमः
ॐ वैखानाय नमः
ॐ सामगायनाय नमः
ॐ देवकीनन्दनाय नमः
ॐ स्त्रष्ट्रे नमः 990
ॐ क्षितीशाय नमः
ॐ पापनाशनाय नमः
ॐ शंखभृते नमः
ॐ नन्दकिने नमः
ॐ चक्रिणे नमः
ॐ शार्गंधन्वने नमः
ॐ गदाधराय नमः
ॐ रथांगपाणये नमः
ॐ अक्षोभ्याय नमः
ॐ सर्वप्रहरणायुधाय नमः 1000

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ हरिः ॐ ॥


राम स्तोत्र

नाम-रामायणम्

बालकाण्डम्

शुद्ध ब्रह्म परात्पर राम। कालात्मक परमेश्वर राम ॥
शेषतल्पसुखनिद्रित राम। ब्रह्माद्यमर-प्रार्थित राम ॥
चण्डकिरण-कुलमण्डन राम। श्रीमद्दशरथ-नन्दन राम ॥
कौशल्या-सुखवर्द्धन राम। विश्वामित्र-प्रियधन राम ॥
घोर-ताटका-घातक राम। मारीचादि निपातक राम ॥
कौशिक-मख-संरक्षक राम। श्रीमदहल्योद्धारक राम ॥
गौतम-मुनि-सम्पूजित राम। सुरमुनिवरगण-संस्तुत राम ॥
नाविक-धावित मृदु-पद राम। मिथिलापुर-जनमोहक राम ॥
विदेह-मानस-रञ्जक राम। त्र्यम्बक-कार्मुक-भञ्जक राम ॥
सीतार्पित-वर-मालिक राम। कृतवैवाहिक-कौतुक राम ॥
भार्गव-दर्प विनाशक राम। श्रीमदयोध्या-पालक राम ॥

अयोध्याकाण्डम्

अगणित-गुणगण-भूषित राम। अवनी-तनया-कामित राम ॥
राका-चन्द्र-समानन राम। पितृ-वाक्याश्रित-कानन राम ॥
प्रिय-गुह-विनिवेदित पद राम। तत्क्षालित-निज मृदुपद राम ॥
भरद्वाज-मुखानन्दक राम। चित्रकूटाद्रि-निकेतन राम ॥
दशरथ-संतत-चिन्तित राम। कैकेयी-तनयार्थित राम ॥
विरचित-निज-पितृकर्मक राम। भरतार्पित-निज-पादुक राम ॥

अरण्यकाण्डम्

दण्डक-वन-जन-पावन राम। दुष्ट-विराध-विनाशन राम ॥
शरभंग-सुतीक्ष्ण-अर्चित राम। अगस्त्यानुग्रह-वर्धित राम ॥
गृध्राधिप-संसेवित राम। पंचवटी-तट-सुस्थित राम ॥
शूर्पणखार्त्ति-विधायक राम। खर-दूषण-मुख-सूदक राम ॥
सीताप्रिय-हरिणानुग राम। मारीचार्ति-कृदाशुग राम ॥
अपहृत-सीतान्वेषक राम। गृध्राधिप-गतिदायक राम ॥
शबरी-दत्त-फलाशन राम। कबन्धबाहुच्छेदन राम ॥

किष्किन्धाकाण्डम्

हनुमत्-सेवित-निजपद राम। नतसुग्रीवाभीष्टद राम ॥
गर्वित-बालि संहारक राम। वानर-दूत-प्रेषक राम ॥
हितकर-लक्ष्मण-संयुत राम। कपिवर-संतत-संस्मृत राम ॥

सुन्दरकाण्डम्

तद्गति-विघ्न-ध्वंसक राम। सीताप्राणाधारक राम ॥
दुष्टदशानन-दूषित राम। शिष्ट-हनुमद्-भूषित राम ॥
सीतावेदितकाकावन राम। कृत-चूडामणि-दर्शन राम ॥
कपिवर-वचनाश्वासित राम। रावण-निधन-प्रस्थित राम ॥

युद्धकाण्डम्

वानर-सैन्य-समावृत राम। शोषित सरिदीशार्थित राम ॥
विभीषणाभयदायक राम। पर्वत-सेतु-निबन्धक राम ॥
कुम्भकर्णशिरश्छेदक राम। राक्षस-संघ-विमर्दक राम ॥
अहिमहिरावण-चारण राम। संहृत-दशमुख-रावण राम ॥
विधिभवमुखसुरसंस्तुत राम। खस्थित-दशरथ-वीक्षित राम ॥
सीतादर्शन-मोदित राम। अभिषिक्त-विभीषणनत राम ॥
पुष्पकयानारोहण राम। भरद्वाजाभिनिषेवन राम ॥
भरत-प्राणप्रियकर राम। साकेतपुरी विभूषण राम ॥
सकल-स्वीयसमानत राम। रत्नलसत्-पीठास्थित राम ॥
पट्टाभिषेकालंकृत राम। पार्थिवकुल सम्मानित राम ॥
विभीषणार्पित रञ्जक राम। कीशकुलानुग्रहकर राम ॥
सकलजीवसंरक्षक राम। समस्त लोकोद्धारक राम ॥

उत्तरकाण्डम्

आगत-मुनिगण-संस्तुत राम। विश्रुत-दशकण्ठोद्भव राम ॥
सीतालिंगन-निर्वृत राम। नीति-सुरक्षित-जनपद राम ॥
विपिन-त्याजित-जनकजा राम। कारित-लवणासुर-वध राम ॥
स्वर्गत-शम्बुक-संस्तुत राम। स्वतनय-कुशलव-नन्दित राम ॥
अश्वमेध-क्रतु-दीक्षित राम। कालावेदित-सुरपद राम ॥



आयोध्यकजनमुक्तिद राम। विधिमुख-विबुधानन्दक राम ॥
तेजोमय-निज-रूपक राम। संसृतिबन्धविमोचक राम ॥
धर्मस्थापन-तत्पर राम। भक्तिपरायणमुक्तिद राम ॥
सर्वचराचर-पालक राम। सर्व-भवामयवारक राम ॥
वैकुण्ठालय-संस्थित राम। नित्यानन्दपदस्थित राम ॥
राम राम जय राजा राम। राम राम जय सीता राम ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

श्री-रामरक्षा-स्तोत्रम्

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥1॥
ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम्।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम् ॥2॥
सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरान्तकम्।
स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् ॥3॥
रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम्।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः ॥4॥
कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ॥5॥
जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः ॥6॥
करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित्।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः ॥7॥
सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः।
ऊरू रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत् ॥8॥
जानुनी सेतुकृत्पातु जंघे दशमुखान्तकः।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ॥9॥
एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत् ॥10॥
पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः ॥11॥
रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥12॥
जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम्।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥13॥
वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत्।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमंगलम् ॥14॥
आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः।
तथा लिखितवान्प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः ॥15॥

आराम: कल्पवृक्षाणां विराम: सकलापदाम्।
अभिरामस्त्रिलोकानां राम: श्रीमान्स न: प्रभु: ॥16॥
तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ॥17॥
फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥18॥
शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम्।
रक्ष:कुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ॥19॥
आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशा वक्षयाशुगनिषंगसंगिनौ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणौ अग्रत:पथि सदैव गच्छताम् ॥20॥
सन्नद्ध: कवची खड्गी चापबाणधरो युवा।
गच्छन्मनोरथान्नश्च राम: पातु सलक्ष्मण: ॥21॥
रामो दाशरथि: शूरो लक्ष्मणानुचरो बली।
काकुत्स्थ: पुरुष: पूर्ण: कौसल्येयो रघूत्तम: ॥22॥
वेदान्तवेद्यो यज्ञेश: पुराणपुरुषोत्तम:।
जानकीवल्लभ: श्रीमानप्रमेयपराक्रम: ॥23॥
इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्त: श्रद्धयान्वित:।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशय: ॥24॥
रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम्।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नरा: ॥25॥
रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम्।
राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्त्तिं
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥26॥
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीताया: पतये नम: ॥27॥

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम ॥28॥
श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि।

श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥29॥
माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुः
नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥30॥

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥31॥

लोकाभिरामं रणरंगधीरं
राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं
श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥32॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥33॥

कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥34॥
आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥35॥
भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम्।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम् ॥36॥
रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥37॥
राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥38॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

श्री-हनुमान-चालीसा



श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा ॥

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
संकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन ॥

बिद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लषन सीता मन बसिया ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचन्द्र के काज सँवारे ॥

लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा ॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥



राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रच्छक काहू को डर ना ॥

आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै ॥

नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥

सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोई लावै। सोइ अमित जीवन फल पावै ॥

चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
अंत काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥

और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥

जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई ॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय मँह डेरा ॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

श्रीहनुमत्-अष्टोत्तरशतनामावलिः

1. ॐ आञ्जनेयाय नमः
2. ॐ महावीराय नमः
3. ॐ हनूमते नमः
4. ॐ मारुतात्मजाय नमः
5. ॐ तत्त्वज्ञानप्रदायकाय नमः
6. ॐ सीतामुद्राप्रदायकाय नमः
7. ॐ अशोकवनिकाच्छेत्रे नमः
8. ॐ सर्वमायाविभञ्जनाय नमः
9. ॐ सर्वबन्धविमोक्त्रे नमः
10. ॐ रक्षोविध्वंसकारकाय नमः
11. ॐ परविद्यापरिहाराय नमः
12. ॐ परशौर्यविनाशनाय नमः
13. ॐ परमन्त्रनिराकर्त्रे नमः
14. ॐ परयन्त्रप्रभेदकाय नमः
15. ॐ सर्वग्रहविनाशिने नमः
16. ॐ भीमसेनसहायकृते नमः
17. ॐ सर्वदुःखहराय नमः
18. ॐ सर्वलोकचारिणे नमः
19. ॐ मनोजवाय नमः
20. ॐ पारिजातद्रुमूलस्थाय नमः
21. ॐ सर्वमन्त्रस्वरूपवते नमः
22. ॐ सर्वतन्त्रस्वरूपिणे नमः
23. ॐ सर्वयन्त्रात्मकाय नमः
24. ॐ कपीश्वराय नमः
25. ॐ महाकायाय नमः
26. ॐ सर्वरोगहराय नमः
27. ॐ प्रभवे नमः
28. ॐ बलसिद्धिकराय नमः
29. ॐ सर्वविद्यासम्पत्प्रदायकाय नमः
30. ॐ कपिसेनानायकाय नमः
31. ॐ भविष्यच्चतुराननाय नमः
32. ॐ कुमारब्रह्मचारिणे नमः
33. ॐ रत्नकुण्डलदीप्तिमते नमः
34. ॐ सञ्चलद्बालसन्नद्धलम्बमान-शिखोज्ज्वलाय नमः
35. ॐ गन्धर्वविद्यातत्त्वज्ञाय नमः
36. ॐ महाबलपराक्रमाय नमः
37. ॐ कारागृहविमोक्त्रे नमः
38. ॐ शृङ्खलाबन्धमोचकाय नमः
39. ॐ सागरोत्तारकाय नमः
40. ॐ प्राज्ञाय नमः
41. ॐ रामदूताय नमः
42. ॐ प्रतापवते नमः
43. ॐ वानराय नमः
44. ॐ केसरिसुताय नमः
45. ॐ सीताशोकनिवारणाय नमः
46. ॐ अञ्जनागर्भसम्भूताय नमः
47. ॐ बालार्कसदृशाननाय नमः
48. ॐ विभीषणप्रियकराय नमः
49. ॐ दशग्रीवकुलान्तकाय नमः
50. ॐ लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः
51. ॐ वज्रकायाय नमः
52. ॐ महाद्युतये नमः
53. ॐ चिरजीविने नमः
54. ॐ रामभक्ताय नमः
55. ॐ दैत्यकार्यविघातकाय नमः
56. ॐ अक्षहन्त्रे नमः
57. ॐ काञ्चनाभाय नमः
58. ॐ पञ्चवक्त्राय नमः
59. ॐ महातपसे नमः
60. ॐ लङ्किनीभञ्जनाय नमः
61. ॐ श्रीमते नमः

62. ॐ सिंहिकाप्राणभञ्जनाय नमः
63. ॐ गन्धमादनशैलस्थाय नमः
64. ॐ लंकापुरविदाहकाय नमः
65. ॐ सुग्रीवसचिवाय नमः
66. ॐ धीराय नमः
67. ॐ शूराय नमः
68. ॐ दैत्यकुलान्तकाय नमः
69. ॐ सुरार्चिताय नमः
70. ॐ महातेजसे नमः
71. ॐ रामचूडामणिप्रदाय नमः
72. ॐ कामरूपिणे नमः
73. ॐ पिङ्गलाक्षाय नमः
74. ॐ वार्धिमैनाकपूजिताय नमः
75. ॐ कवलीकृतमार्तण्डमण्डलाय नमः
76. ॐ विजितेन्द्रियाय नमः
77. ॐ रामसुग्रीवसन्धात्रे नमः
78. ॐ महारावणमर्दनाय नमः
79. ॐ स्फटिकाभाय नमः
80. ॐ वागधीशाय नमः
81. ॐ नवव्याकृतिपण्डिताय नमः
82. ॐ चतुर्बाहवे नमः
83. ॐ दीनबन्धवे नमः
84. ॐ महात्मने नमः
85. ॐ भक्तवत्सलाय नमः
86. ॐ सञ्जीवननगाहर्त्रे नमः
87. ॐ शुचये नमः
88. ॐ वाग्मिने नमः
89. ॐ दृढव्रताय नमः
90. ॐ कालनेमिप्रमथनाय नमः
91. ॐ हरिमर्कटमर्कटाय नमः
92. ॐ दान्ताय नमः
93. ॐ शान्ताय नमः
94. ॐ प्रसन्नात्मने नमः
95. ॐ शतकण्ठमदापहृते नमः
96. ॐ योगिने नमः
97. ॐ रामकथालोलाय नमः
98. ॐ सीतान्वेषणपण्डिताय नमः
99. ॐ वज्रदंष्ट्राय नमः
100. ॐ वज्रनखाय नमः
101. ॐ रुद्रवीर्यसमुद्भवाय नमः
102. ॐ इन्द्रजित्प्रहितामोघब्रह्मास्त्र-विनिवारकाय नमः
103. ॐ पार्थध्वजाग्रसंवासिने नमः
104. ॐ शरपञ्जरभेदकाय नमः
105. ॐ दशबाहवे नमः
106. ॐ लोकपूज्याय नमः
107. ॐ जाम्बवत्प्रीतिवर्धनाय नमः
108. ॐ सीतासमेत श्रीरामपादसेवा-धुरन्धराय नमः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ हरिः ॐ ॥



श्री हनुमत्कवचम्

श्रीराम उवाच

हनुमान् पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः।
पातु प्रतीच्यां रक्षोघ्नः पातु सागरपारगः॥1॥
उदीच्यामूर्ध्वगः पातु केसरीप्रियनन्दनः।
अधस्ताद् विष्णुभक्तस्तु पातु मध्यं च पावनिः॥2॥
अवान्तरदिशः पातु सीताशोकविनाशनः।
लंकाविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरन्तरम् ॥3॥
सुग्रीवसचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः।
भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम् ॥4॥
नेत्रेच्छायापहारी च पातु नः प्लवगेश्वरः।
कपोले कर्णमूले च पातु श्रीरामकिंकरः॥5॥
नासाग्रमञ्जनीसूनुः पातु वक्त्रं हरीश्वरः।
वाचं रुद्रप्रियः पातु जिह्वां पिंगललोचनः॥6॥
पातु दन्तान् फाल्गुनेष्टाश्चिबुकं दैत्यपादहा ।
पातु कण्ठं च दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरार्चितः॥7॥
भुजौ पातु महातेजाः करौ तु चरणायुधः।
नखान् नखायुधः पातु कुक्षिं पातु कपीश्वरः॥8॥
वक्षो मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः।
लंकाविभञ्जनः पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम् ॥9॥
नाभिं च रामदूतस्तु कटिं पात्वनिलात्मजः।
गुह्यं पातु महाप्राज्ञो लिंगं पातु शिवप्रियः॥10॥
ऊरु च जानुनी पातु लंकाप्रसादभञ्जनः।
जंघे पातु कपिश्रेष्ठो गुल्फौ पातु महाबलः॥11॥
अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः।
अंगान्यमितसत्त्वाढ्यः पातु पादांगुलीस्तथा ॥12॥
सर्वांगानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवान् ।
हनुमत्कवचं यस्तु पठेद् विद्वान् विचक्षणः।
स एव पुरुषश्रेष्ठो भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥13॥

श्रीराम-अष्टोत्तरशतनामावलिः

1. ॐ श्रीरामाय नमः
2. ॐ रामभद्राय नमः
3. ॐ रामचन्द्राय नमः
4. ॐ शाश्वताय नमः
5. ॐ राजीवलोचनाय नमः
6. ॐ श्रीमते नमः
7. ॐ राजेन्द्राय नमः
8. ॐ रघुपुङ्गवाय नमः
9. ॐ जानकीवल्लभाय नमः
10. ॐ जैत्राय नमः
11. ॐ जितामित्राय नमः
12. ॐ जनार्दनाय नमः
13. ॐ विश्वामित्रप्रियाय नमः
14. ॐ दान्ताय नमः
15. ॐ शरणत्राणतत्पराय नमः
16. ॐ वालिप्रमथनाय नमः
17. ॐ वाग्मिने नमः
18. ॐ सत्यवाचे नमः
19. ॐ सत्यविक्रमाय नमः
20. ॐ सत्यव्रताय नमः
21. ॐ व्रतधराय नमः
22. ॐ सदा हनुमदाश्रिताय नमः
23. ॐ कौसलेयाय नमः
24. ॐ खरध्वंसिने नमः
25. ॐ विराधवधपण्डिताय नमः
26. ॐ विभीषणपरित्रात्रे नमः
27. ॐ हरकोदण्डखण्डनाय नमः
28. ॐ सप्ततालप्रभेत्त्रे नमः
29. ॐ दशग्रीवशिरोहराय नमः
30. ॐ जामदग्न्यमहादर्पदलनाय नमः
31. ॐ ताटकान्तकाय नमः
32. ॐ वेदान्तसाराय नमः
33. ॐ वेदात्मने नमः
34. ॐ भवरोगस्य भेषजाय नमः
35. ॐ दूषणत्रिशिरोहन्त्रे नमः
36. ॐ त्रिमूर्तये नमः
37. ॐ त्रिगुणात्मकाय नमः
38. ॐ त्रिविक्रमाय नमः
39. ॐ त्रिलोकात्मने नमः
40. ॐ पुण्यचारित्रकीर्तनाय नमः
41. ॐ त्रिलोकरक्षकाय नमः
42. ॐ धन्विने नमः
43. ॐ दण्डकारण्यकर्तनाय नमः
44. ॐ अहल्याशापशमनाय नमः
45. ॐ पितृभक्ताय नमः
46. ॐ वरप्रदाय नमः
47. ॐ जितेन्द्रियाय नमः
48. ॐ जितक्रोधाय नमः
49. ॐ जितामित्राय नमः
50. ॐ जगद्गुरवे नमः
51. ॐ ऋक्षवानरसङ्घातिने नमः
52. ॐ चित्रकूटसमाश्रयाय नमः
53. ॐ जयन्तत्राणवरदाय नमः
54. ॐ सुमित्रापुत्रसेविताय नमः
55. ॐ सर्वदेवादिदेवाय नमः
56. ॐ मृतवानरजीवनाय नमः
57. ॐ मायामारीचहन्त्रे नमः
58. ॐ महादेवाय नमः
59. ॐ महाभुजाय नमः
60. ॐ सर्वदेवस्तुताय नमः
61. ॐ सौम्याय नमः
62. ॐ ब्रह्मण्याय नमः

63. ॐ मुनिसंस्तुताय नमः
64. ॐ महायोगाय नमः
65. ॐ महोदाराय नमः
66. ॐ सुग्रीवेप्सितराज्यदाय नमः
67. ॐ सर्वपुण्याधिकफलाय नमः
68. ॐ स्मृतसर्वाघनाशनाय नमः
69. ॐ अनादये नमः
70. ॐ आदिपूरुषाय नमः
71. ॐ महापुरुषाय नमः
72. ॐ पुण्योदयाय नमः
73. ॐ दयासाराय नमः
74. ॐ पुराणपुरुषोत्तमाय नमः
75. ॐ स्मितवक्त्राय नमः
76. ॐ स्मिताभाषिणे नमः
77. ॐ पूर्वभाषिणे नमः
78. ॐ राघवाय नमः
79. ॐ अनन्तगुणगम्भीराय नमः
80. ॐ धीरोदात्तगुणोत्तमाय नमः
81. ॐ मायामानुषचारित्राय नमः
82. ॐ महादेवादिपूजिताय नमः
83. ॐ सेतुकृते नमः
84. ॐ जितवारीशाय नमः
85. ॐ सर्वतीर्थमयाय नमः
86. ॐ हरये नमः
87. ॐ श्यामाङ्गाय नमः
88. ॐ सुन्दराय नमः
89. ॐ शूराय नमः
90. ॐ पीतवाससे नमः
91. ॐ धनुर्धराय नमः
92. ॐ सर्वयज्ञाधिपाय नमः
93. ॐ यज्विने नमः
94. ॐ जरामरणवर्जिताय नमः
95. ॐ शिवलिङ्गप्रतिष्ठात्रे नमः
96. ॐ सर्वापगुणवर्जिताय नमः
97. ॐ परमात्मने नमः
98. ॐ परस्मै ब्रह्मणे नमः
99. ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः
100. ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः
101. ॐ परस्मै धाम्ने नमः
102. ॐ पराकाशाय नमः
103. ॐ परात्पराय नमः
104. ॐ परेशाय नमः
105. ॐ पारगाय नमः
106. ॐ पाराय नमः
107. ॐ सर्वदेवात्मकाय नमः
108. ॐ पराय नमः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ हरिः ॐ ॥



श्री-राम-स्तुति



श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण-भव-भय दारुणम्,
नवकञ्ज-लोचन कञ्ज-मुख, कर-कञ्ज, पदकञ्जारुणम् ॥ 1 ॥

कन्दर्प अगणित अमित छबि नव नील नीरद सुन्दरम्,
पट पीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि नौमि जनकसुतावरम् ॥ 2 ॥

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव-दैत्य-वंश-निकन्दनम्,
रघुनन्द आनन्दकन्द कोसलचन्द दशरथ-नन्दनम् ॥ 3 ॥

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारु-अंग-विभूषणम्,
आजानुभुज शर-चाप-धर संग्राम-जित-खरदूषणम् ॥ 4 ॥

इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रञ्जनम्,
मम हृदय-कञ्ज निवास कुरु कामादि-खल-दल-गञ्जनम् ॥ 5 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

श्री रामचरित मानस मंत्र पाठ

बालकाण्ड

श्लोक – वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥ 1 ॥
भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥ 2 ॥
वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम्।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥ 3 ॥
सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ।
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥ 4 ॥
उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥ 5 ॥
यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुराः
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥ 6 ॥

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।
स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा
भाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति ॥ 7 ॥

सोरठा – जो सुमिरत सिधि होइ गननायक करिबर बदन।
करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ॥ 1 ॥
मूक होइ बाचाल पंगु चढ़इ गिरिबर गहन।
जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलिमल दहन ॥ 2 ॥
नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन।
करउ सो मम उर धाम सदा छीरसागर सयन ॥ 3 ॥
कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन।
जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन ॥ 4 ॥
बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर ॥ 5 ॥

छन्द – जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता ॥
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई ॥
जय जय अबिनासी सब घट बासी ब्यापक परमानंदा।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा ॥
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगत मोह मुनिबृंदा।
निसि बासर ध्यावहिं गुन गन गावहिं जयति सच्चिदानंदा ॥
जेहिं सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा ॥
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुरजूथा ॥
सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना ॥
भव बारिधि मंदर सब बिधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा ॥

छन्द – भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी ॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी ॥
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता ॥
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ॥
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥

अयोध्याकाण्ड

यस्यांके च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट्।
सोऽयं भूतिविभूषण: सुरवर: सर्वाधिप: सर्वदा
शर्व: सर्वगत: शिव: शशिनिभ: श्रीशंकर: पातु माम् ॥ 1 ॥
प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्ले वनवासदु:खत:।
मुखाम्बुजश्री रघुनन्दनस्य मे सदास्तु सा मञ्जुलमंगलप्रदा ॥ 2 ॥
नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगं सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥ 3 ॥

अरण्यकाण्ड

मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधे: पूर्णेन्दुमानन्ददं
वैराग्याम्बुजभास्करं ह्यघघनध्वान्तापहं तापहम्।
मोहाम्भोधरपूगपाटनविधौ स्व:सम्भवं शंकरं
वन्दे ब्रह्मकुलं कलंकशमनं श्रीरामभूपप्रियम् ॥ 1 ॥
सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुं पीताम्बरं सुन्दरं
पाणौ बाणशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं वरम्।
राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं
सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥ 2 ॥

किष्किन्धाकाण्ड

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ।
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्मौ हितौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि न:॥ 1 ॥
ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा।
संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं
धन्यास्ते कृतिन: पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥ 2 ॥

सुन्दरकाण्ड

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम्।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥ 1 ॥
नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुंगव निर्भरां मे कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥ 2 ॥
अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥ 3 ॥

लंकाकाण्ड

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं
योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारम्।
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं
वन्दे कन्दावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपम् ॥ 1 ॥
शंखेन्द्वाभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं
कालव्यालकरालभूषणधरं गंगाशशांकप्रियम्।
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं कन्दर्पहं शंकरम् ॥ 2 ॥
यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम्।
खलानां दण्डकृद्योऽसौ शंकरः शं तनोतु मे ॥ 3 ॥

उत्तरकाण्ड

केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम्।
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम् ॥ 1 ॥
कोसलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ कोमलावजमहेशवन्दितौ।
जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्य मनभृंगसंगिनौ ॥ 2 ॥
कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम्।
कारुणीककलकञ्जलोचनं नौमि शंकरमनंगमोचनम् ॥ 3 ॥



श्री रामायणजी की आरती

आरति श्रीरामायनजी की। कीरति कलित ललित सिय पी की ॥

गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीक बिग्यान बिसारद।
सुक सनकादि सेष अरु सारद। बरनि पवनसुत कीरति नीकी ॥1॥

गावत वेद पुराण अष्टदस। छओ सास्त्र सब ग्रन्थन को रस।
मुनि जन धन संतन को सरबस। सार अंस संमत सबही की ॥2॥

गावत संतत संभु भवानी। अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी।
व्यास आदि कबिबर्ज बखानी। कागभुसुंडि गरुड के ही की ॥3॥

कलिमल हरनि बिषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।
दलन रोग भव मूरि अमी की। तात मात सब बिधि तुलसी की ॥4॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

नमामि भक्त वत्सलं

नमामि भक्त वत्सलं। कृपालु शील कोमलं॥
भजामि ते पदांबुजं। अकामिनां स्वधामदं॥
निकाम श्याम सुंदरं। भवाम्बुनाथ मंदरं॥
प्रफुल्ल कंज लोचनं। मदादि दोष मोचनं॥

प्रलंब बाहु विक्रमं। प्रभोऽप्रमेय वैभवं॥
निषंग चाप सायकं। धरं त्रिलोक नायकं॥
दिनेश वंश मंडनं। महेश चाप खंडनं॥
मुनींद्र संत रंजनं। सुरारि बृंद भंजनं॥

मनोज वैरि वंदितं। अजादि देव सेवितं॥
विशुद्ध बोध विग्रहं। समस्त दूषणापहं॥
नमामि इंदिरा पतिं। सुखाकरं सतां गतिं॥
भजे सशक्ति सानुजं। शची पति प्रियानुजं॥

त्वदंघ्रि मूल ये नराः। भजंति हीन मत्सराः॥
पतंति नो भवार्णवे। वितर्क वीचि संकुले॥
विविक्त वासिनः सदा। भजंति मुक्तये मुदा॥
निरस्य इंद्रियादिकं। प्रयांति ते गतिं स्वकं॥

तमेकमद्भुतं प्रभुं। निरीहमीश्वरं विभुं॥
जगद्गुरुं च शाश्वतं। तुरीयमेव केवलं॥
भजामि भाव वल्लभं। कुयोगिनां सुदुर्लभं॥
स्वभक्त कल्प पादपं। समं सुसेव्यमन्वहं॥

अनूप रूप भूपतिं। नतोऽहमुर्विजा पतिं॥
प्रसीद मे नमामि ते। पदाब्ज भक्ति देहि मे॥
पठंति ये स्तवं इदं। नरादरेण ते पदं॥
व्रजंति नात्र संशयं। त्वदीय भक्ति संयुताः॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ॥

कृष्ण स्तोत्र



अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं
कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं
जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ॥ 1 ॥

अच्युतं केशवं सत्यभामाधवं
माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम्।
इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं
देवकीनन्दनं नन्दजं सन्दधे ॥ 2 ॥

विष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे
रुक्मिणीरागिणे जानकीजानये।
वल्लवीवल्लभायार्चितायात्मने
कंसविध्वंसिने वंशिने ते नमः ॥ 3 ॥

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण
श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज
द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक ॥ 4 ॥

राक्षसक्षोभितः सीतया शोभितो
दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणः।
लक्ष्मणेनान्वितो वानरैः सेवितो-
ऽगस्त्यसम्पूजितो राघवः पातु माम् ॥ 5 ॥

धेनुकारिष्टकानिष्टकृद्द्वेषिहा
केशिहा कंसहृद्वंशिकावादकः।
पूतनाकोपकः सूरजाखेलनो
बालगोपालकः पातु मां सर्वदा ॥ 6 ॥

विद्युदुद्योतवत्प्रस्फुरद्वाससं
प्रावृडम्भोदवत्प्रोल्लसद्विग्रहम्।
वन्यया मालया शोभितोर:स्थलं
लोहितांघ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे ॥ 7॥

कुञ्चितै: कुन्तलैर्भ्राजमानाननं
रत्नमौलिं लसत्कुण्डलं गण्डयो:।
हारकेयूरकं कंकणप्रोज्ज्वलं
किंकिणीमञ्जुलं श्यामलं तं भजे ॥ 8॥

श्री गोपाल वन्दन

हे मानस भज रे गोपालम्।
भज गोपालं भजन-सुचेलं त्रिजगन्मूलं दितिसुतकालम्।
आगम-सारं योग-विचारं भोग-शरीरं भुवनोद्धारम् ॥

धृत-मंदारं नंदकिशोरं हत-चाणूरं हंस-विहारम्।
कदन-कठोरं कलुष विदूरं मदन-कुमारं मधु-संहारम्।
हे मानस ....॥



गोविन्दाष्टकम्

चिदानन्दाकारं श्रुतिसरससारं समरसं
निराधाराधारं भवजलधिपारं परगुणम् ।
रमाग्रीवाहारं व्रजवनविहारं हरनुतं
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥1॥

महाम्भोधिस्थानं स्थिरचरनिदानं दिविजपं
सुधाधारापानं विहगपतियानं यमरतम् ।
मनोज्ञं सुज्ञानं मुनिजननिधानं ध्रुवपदं
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥2॥

धिया धीरैर्ध्येयं श्रवणपुटपेयं यतिवरैः
महावाक्यैर्ज्ञेयं त्रिभुवनविधेयं विधिपरम् ।
मनोमानामेयं सपदि हृदि नेयं नवतनुं
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥3॥

महामायाजालं विमलवनमालं मलहरं
सुभालं गोपालं निहतशिशुपालं शशिमुखम् ।
कलातीतं कालं गतिहतमरालं मुररिपुं
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥4॥

नभोबिम्बस्फीतं निगमगणगीतं समगतिं
सुरौघैः सम्प्रीतं दितिजविपरीतं पुरिशयम् ।
गिरां मार्गातीतं स्वदितनवनीतं नयकरं
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥5॥

परेशं पद्मेशं शिवकमलजेशं शिवकरं
द्विजेशं देवेशं तनुकुटिलकेशं कलिहरम् ।
खगेशं नागेशं निखिलभुवनेशं नगधरं
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥6॥



रमाकान्तं कान्तं भवभयभयान्तं भवसुखं
दुराशान्तं शान्तं निखिल हृदि भान्तं भुवनपम्।
विवादान्तं दान्तं दनुजनिचयान्तं सुचरितं
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥7॥

जगज्ज्येष्ठं श्रेष्ठं सुरपतिकनिष्ठं क्रतुपतिं
बलिष्ठं भूयिष्ठं त्रिभुवनवरिष्ठं वरवहम्।
स्वनिष्ठं धर्मिष्ठं गुरुगुणगरिष्ठं गुरुवरं
सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥

कृष्णाष्टकम्

श्रियाश्लिष्टो विष्णुः स्थिरचरवपुर्वेदविषयो
धियां साक्षी शुद्धो हरिरसुरहन्ताब्जनयनम्।
गदी शंखी चक्री विमलवनमाली स्थिररुचिः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ 1 ॥

यतः सर्वं जातं वियदनिलमुख्यं जगदिदं
स्थितौ निःशेषं योऽवति निजसुखांशेन मधुहा।
लये सर्वं स्वस्मिन् हरति कलया यस्तु स विभुः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ 2 ॥

असूनायम्यादौ यमनियममुख्यैः सुकरणैः
निरुद्ध्येदं चित्तं हृदि विमलमानीय सकलम्।
यमीड्यं पश्यन्ति प्रवरमतयो मायिनमसौ
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ 3 ॥

पृथिव्यां तिष्ठन् यो यमयति महीं वेद न धरा
यमित्यादौ वेदो वदति जगतामीशममलम्।
नियन्तारं ध्येयं मुनिसुरनृणां मोक्षदमसौ
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ 4 ॥

महेन्द्रादिर्देवो जयति दितिजान् यस्य बलतो
न कस्य स्वातन्त्र्यं क्वचिदपि कृतौ यत्कृतिमृते।
कवित्वादेर्गर्वं परिहरति योऽसौ विजयिनः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ 5 ॥

विना यस्य ध्यानं व्रजति पशुतां सूकरमुखां
विना यस्य ज्ञानं जनिमृतिभयं याति जनता।
विना यस्य स्मृत्या कृमिशतजनिं याति स विभुः
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषयः ॥ 6 ॥



नरातंकोत्तंक: शरणशरणो भ्रान्तिहरणो
घनश्याम: कामो व्रजशिशुवयस्योऽर्जुनसख:।
स्वयम्भूर्भूतानां जनक उचिताचारसुखद:
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय: ॥7॥

यदा धर्मग्लानिर्भवति जगतां क्षोभकरणी
तदा लोकस्वामी प्रकटितवपु: सेतुधृगज:।
सतां धाता स्वच्छो निगमगणगीतो व्रजपति:
शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षिविषय: ॥8॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:॥ हरि: ॐ॥

श्रीकृष्णाष्टकम्

भजे व्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं
स्वभक्त-चित्तरञ्जनं सदैव नन्दनन्दनम् ।
सुपिच्छ-गुच्छ-मस्तकं सुनाद वेणुहस्तकं
अनंग-रंगसागरं नमामि कृष्णनागरम् ॥ 1 ॥

मनोजगर्वमोचनं विशाल-लोल-लोचनं
विधूतगोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम् ।
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं
महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णवारणम् ॥ 2 ॥

कदम्बसूनकुण्डलं सुचारु-गण्डमण्डलं
व्रजांगनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम् ।
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया
युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकम् ॥ 3 ॥

सदैव पादपंकजं मदीयमानसे निजं
दधानमुक्तमालकं नमामि नन्दबालकम् ।
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं
समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम् ॥ 4 ॥

भुवो भरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकं
यशोमतीकिशोरकं नमामि चित्तचोरकम् ।
दृगन्तकान्तभंगिनं सदासदालसंगिनं
दिने दिने नवं नवं नमामि नन्दसम्भवम् ॥ 5 ॥

गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरं
सुरद्विषन्निकन्दनं नमामि गोपनन्दनम् ।
नवीनगोपनागरं नवीनकेलिलम्पटं
तडित्प्रभालसत्पटं नमामि मेघसुन्दरम् ॥ 6 ॥

समस्तगोपनन्दनं हृदम्बुजैकमोदनं
प्रसन्नभानुशोभनं नमामि कुञ्जमध्यगम् ।
निकामकामदायकं दृगन्तचारुसायकं
रसालवेणुगायकं नमामि कुञ्जनायकम् ॥ 7 ॥

विदग्ध-गोपिकामनो-मनोज्ञ-तल्पशायिनं
नमामि कुञ्जकानने प्रवृद्ध-वह्नि-पायिनम् ।
किशोरकान्तिरञ्जितं दृगञ्जनं सुशोभितं
गजेन्द्रमोक्षकारिणं नमामि श्रीविहारिणम् ॥ 8 ॥

यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा, मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम् ।
प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्यधीत्य यः पुमान्, भवेत्स नन्द-नन्दने भवे भवे सुभक्तिमान् ॥ 9 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



गोविन्द-दामोदर-स्तोत्रम्

करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥ 1 ॥

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे! हे नाथ नारायण वासुदेव।
जिह्वे! पिबस्वामृतमेतदेव गोविन्द दामोदर माधवेति ॥ 2 ॥

विक्रेतुकामाखिल-गोपकन्या मुरारिपादार्पितचित्तवृत्तिः।
दध्यादिकं मोहवशादवोचद् गोविन्द दामोदर माधवेति ॥ 3 ॥

गृहे गृहे गोपवधूकदम्बाः सर्वे मिलित्वा समवाययोगे।
पुण्यानि नामानि पठन्ति नित्यं गोविन्द दामोदर माधवेति ॥ 4 ॥

सुखं शयाना निलये निजेऽपि नामानि विष्णोः प्रवदन्ति मर्त्याः।
ते निश्चितं तन्मयतां व्रजन्ति गोविन्द दामोदर माधवेति ॥ 5 ॥

जिह्वे! सदैवं भज सुन्दराणि नामानि कृष्णस्य मनोहराणि।
समस्तभक्तार्तिविनाशनानि गोविन्द दामोदर माधवेति ॥ 6 ॥

सुखावसाने इदमेव सारं दुःखावसाने इदमेव ज्ञेयम्।
देहावसाने इदमेव जाप्यं गोविन्द दामोदर माधवेति ॥ 7 ॥

श्रीकृष्ण राधावर गोकुलेश गोपाल गोवर्धन नाथ विष्णो।
जिह्वे! पिबस्वामृतमेतदेव गोविन्द दामोदर माधवेति ॥ 8 ॥

त्वामेव याचे मम देहि जिह्वे समागते दण्डधरे कृतान्ते।
वक्तव्यमेवं मधुरं सुभक्त्या गोविन्द दामोदर माधवेति ॥ 9 ॥

जिह्वे! रसज्ञे मधुरप्रिया त्वं सत्यं हितं त्वां परमं वदामि।
आवर्णयेथा मधुराक्षराणि गोविन्द दामोदर माधवेति ॥ 10 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

श्री राधाकृपा-कटाक्ष

मुनीन्द्र-वृन्द-वन्दिते, त्रिलोक-शोक-हारिणि,
प्रसन्न-वक्त्र-पंकजे, निकुंज-भू-विलासिनि।
व्रजेन्द्र-भानु-नन्दिनि, व्रजेन्द्र-सूनु-संगते,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम् ॥1॥

अशोक-वृक्ष-वल्लरी-वितान-मण्ड-पस्थिते,
प्रवाल-बाल-पल्लव, प्रभारूणांघ्रि कोमले।
वराभय-स्फुरत्-करे, प्रभूत-सम्पदालये,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम् ॥2॥

अनंग-रंग-मंगल-प्रसंग भंगुरभ्रुवां।
सुविभ्रमैः ससम्भ्रमैः दृगन्त-बाण-पातनैः।
निरन्तरं वशीकृत-प्रतीत-नन्दनन्दने,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम् ॥3॥

तडित्-सुवर्ण-चम्पक-प्रदीप्त-गौर-विग्रहे,
मुख-प्रभा-परास्त-कोटि-शारदेन्दु-मंडले।
विचित्र-चित्र-संचरच्-चकोर-शाव-लोचने,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम् ॥4॥

मदोन्मदातियौवने, प्रमोद-मान-मण्डिते,
प्रियानुराग-रंजिते, कला-विलास पण्डिते।
अनन्य-धन्य-कुंजराज-काम-केलि-कोविदे,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम् ॥5॥

अशेष-हाव-भाव-धीर-हीर-हार-भूषिते,
प्रभूत-शातकुम्भ-कुम्भ-कुम्भि-कुम्भ-सुस्तनि।
प्रशस्त-मन्द-हास्य-चूर्ण-पूर्ण-सौख्य-सागरे,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम् ॥6॥

मृणाल-बाल-वल्लरी-तरंग-रंग दोर्लते,
लताग्र-लास्य-लोल-नील-लोचनावलोकने।
ललल्-लुलन्-मिलन्-मनोज्ञ, मुग्ध-मोहनाश्रये,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम् ॥7॥



सुवर्ण-मालिकांचिते-त्रिरेख-कम्बु-कण्ठगे,
त्रिसूत्र-मंगलीगुण-त्रिरत्न-दीप्ति-दीधिते।
सलोल-नील-कुन्तले, प्रसून-गुच्छ-गुम्फिते,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ 8 ॥

नितम्ब-बिम्ब-लम्बमान, पुष्प-मेखला-गुणे,
प्रशस्त-रत्न-किंकिणी-कलाप-मध्य-मंजुले।
करीन्द्र-शुण्ड-दण्डिका-वरोह सौभगोरुके,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ 9 ॥

अनेक-मन्त्र-नाद-मंजु-नूपुरा-रवस्खलत्,
समाज-राजहंस-वंश-निक्वणातिगौरवे।
विलोल-हेम-वल्लरी-विडम्बि-चारु-चंक्रमे,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ 10 ॥

अनन्त-कोटि-विष्णुलोक-नम्र-पद्मजार्चिते,
हिमाद्रिजा-पुलोमजा-विरंचिजा-वरप्रदे।
अपार-सिद्धि-वृद्धि दिग्ध-सत्पदांगुली नखे,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ 11 ॥

मखेश्वरि क्रियेश्वरि, स्वधेश्वरि, सुरेश्वरि,
त्रिवेद-भारतीश्वरि, प्रमाण-शासनेश्वरि।
रमेश्वरि क्षमेश्वरि, प्रमोद-काननेश्वरि,
व्रजेश्वरि व्रजाधिपे, श्रीराधिके नमोऽस्तुते ॥ 12 ॥

इतीदमद्भुत-स्तवं निशम्य भानुनन्दिनि,
करोतु सन्ततं जनं कृपाकटाक्षभाजनम्।
भवेत्तदैव संचित-त्रिरूप-कर्म-नाशनं,
लभेत्तदा व्रजेन्द्र-सूनु-मण्डल-प्रवेशनम् ॥ 13 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

मोहमुद्गर

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढमते।
सम्प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ्करणे ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं।

मूढ जहीहि धनागमतृष्णां कुरु सद्बुद्धिं मनसि वितृष्णाम्।
यल्लभसे निजकर्मोपात्तं वित्तं तेन विनोदय चित्तम् ॥ 1 ॥

नारीस्तनभरनाभिनिवेशं दृष्ट्वा-माया-मोहावेशम्।
एतन्मांस-वसादि-विकारं मनसि विचिन्तय बारम्बारम् ॥ 2 ॥

नलिनीदलगतसलिलं तरलं तद्वज्जीवितमतिशय चपलम्।
विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तं लोकं शोकहतं च समस्तम् ॥ 3 ॥

यावद्वित्तोपार्जनसक्तः तावत् निज परिवारो रक्तः।
पश्चात् धावति जर्जर देहे वार्तां पृच्छति कोऽपि न गेहे ॥ 4 ॥

यावत्पवनो निवसति देहे तावत्पृच्छति कुशलं गेहे।
गतवति वायौ देहापाये भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये ॥ 5 ॥

बालस्तावत् क्रीडासक्तः तरुणस्तावत् तरुणीसक्तः।
वृद्धस्तावत् चिन्तामग्नः पारे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः ॥ 6 ॥

का ते कान्ता कस्ते पुत्रः संसारोऽयं अतीव विचित्रः।
कस्य त्वं कः कुत आयातः तत्त्वं चिन्तय यदिदं भ्रातः ॥ 7 ॥

सत्संगत्वे निःसंगत्वं निःसंगत्वे निर्मोहत्वं।
निर्मोहत्वे निश्चलतत्त्वं निश्चलतत्त्वे जीवन्मुक्तिः ॥ 8 ॥

वयसि गते कः कामविकारः शुष्के नीरे कः कासारः।
क्षीणे वित्ते कः परिवारो ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः ॥ 9 ॥

मा कुरु धन-जन-यौवन-गर्वं हरति निमेषात्कालः सर्वम्।
मायामयमिदमखिलं हित्वा ब्रह्म पदं त्वं प्रविश विदित्वा ॥ 10 ॥

दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुः तदपि न मुञ्चति आशावायुः ॥ 11 ॥

का ते कान्ता धनगतचिन्ता वातुल किं तव नास्ति नियन्ता।
त्रिजगति सज्जन संगतिरेका भवति भवार्णवतरणे नौका ॥ 12 ॥

जटिलो मुण्डी लुञ्चित केशः काषायाम्बर-बहुकृतवेषः।
पश्यन्नपि च न पश्यति मूढः उदर निमित्तं बहुकृत वेषः ॥ 13 ॥

अंगं गलितं पलितं मुण्डं दशन विहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि न मुञ्चति आशापिण्डम् ॥ 14 ॥

अग्रे वह्निः पृष्ठे भानू रात्रौ चिबुक-समर्पित-जानुः।
करतलभिक्षा तरुतलवासः तदपि न मुञ्चति आशापाशः ॥ 15 ॥

कुरुते गंगासागरगमनं व्रत परिपालनमथवा दानम्।
ज्ञानविहीनः सर्वमतेन मुक्तिः न भवति जन्मशतेन ॥ 16 ॥

सुर-मन्दिर-तरु-मूल-निवासः शय्या भूतलमजिनं वासः।
सर्व-परिग्रह-भोग-त्यागः कस्य सुखं न करोति विरागः ॥ 17 ॥

योगरतो वा भोगरतो वा संगरतो वा संगविहीनः।
यस्य ब्रह्मणि रमते चित्तं नन्दति नन्दति नन्दति एव ॥ 18 ॥

भगवद्गीता किञ्चिदधीता गंगा-जल-लव-कणिका-पीता।
सकृदपि येन मुरारिसमर्चा तस्य यमः किं कुरुते चर्चाम् ॥ 19 ॥

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननीजठरे शयनम्।
इह संसारे बहुदुस्तारे कृपयापारे पाहि मुरारे ॥ 20 ॥

रथ्याचर्पट-विरचित-कन्थः पुण्यापुण्य-विवर्जित-पन्थः।
योगी योग नियोजित चित्तः रमते बालोन्मत्तवदेव ॥ 21 ॥

कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः का मे जननी को मे तातः।
इतिपरिभावय सर्वमसारं विश्वं त्यक्त्वा स्वप्नविचारम् ॥ 22 ॥

त्वयि मयि चान्यत्रैको विष्णुः व्यर्थं कुप्यसि सर्वसहिष्णुः।
सर्वस्मिन्नपि पश्यात्मानं सर्वत्रोत्सृज भेदाज्ञानम् ॥ 23 ॥

शत्रौ मित्रे पुत्रे बन्धौ मा कुरु यत्नं विग्रहसन्धौ।
भव समचित्तः सर्वत्र त्वं वांछसि अचिराद् यदि विष्णुत्वम् ॥ 24 ॥

कामं क्रोधं लोभं मोहं त्यक्त्वात्मानं भावय कोऽहम्।
आत्मज्ञानविहीना मूढाः ते पच्यन्ते नरकनिगूढाः ॥ 25 ॥

गेयं गीतानामसहस्रं ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम्।
नेयं सज्जनसंगे चित्तं देयं दीनजनाय च वित्तम् ॥ 26 ॥

सुखतः क्रियते रामाभोगः पश्चाद्धन्त शरीरे रोगः।
यद्यपि लोके मरणं शरणं तदपि न मुञ्चति पापाचरणम् ॥ 27 ॥

अर्थमनर्थं भावय नित्यं नास्ति ततः सुखलेशः सत्यम्।
पुत्रादपि धनभाजां भीतिः सर्वत्रैषा विहिता रीतिः ॥ 28 ॥

प्राणायामं प्रत्याहारं नित्यानित्यविवेकविचारम्।
जाप्यसमेतसमाधिविधानं कुरु अवधानं महदवधानम् ॥ 29 ॥

पुनरपि रजनी पुनरपि दिवसः पुनरपि पक्षः पुनरपि मासः।
पुनरपि अयनं पुनरपि वर्षं तदपि न मुञ्चति आशामर्षम् ॥ 30 ॥

गुरु-चरणाम्बुज-निर्भर-भक्तः संसारादचिराद्भव मुक्तः।
सेन्द्रिय-मानस-नियमादेवं द्रक्ष्यसि निजहृदयस्थं देवम् ॥ 31 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ ॥



देहि पदम्



जय शंखगदाधर नीलकलेवर, पीतपटाम्बर देहि पदम्।
जय चन्दनचर्चित कुण्डलमण्डित कौस्तुभशोभित देहि पदम् ॥ 1 ॥

जय पंकज लोचन मारविमोहन पापविखण्डन देहि पदम्।
जय वेणुनिनादक रासविहारक बंकिम सुन्दर देहि पदम् ॥ 2 ॥

जय धीर धुरन्धर अद्भुत सुन्दर दैवतसेवित देहि पदम्।
जय विश्वविमोहन मानसमोहन संसृतिकारण देहि पदम् ॥ 3 ॥

जय भक्त जनाश्रय नित्य सुधालय अन्तिम बान्धव देहि पदम्।
जय दुर्जयशासन केलिपरायण कालियमर्दन देहि पदम् ॥ 4 ॥

जय नित्य निरामय दीन दयामय चिन्मय माधव देहि पदम्।
जय पामरपावन धर्मपरायण दानवसूदन देहि पदम् ॥ 5 ॥

जय वेद विदांवर गोपवधूप्रिय वृन्दावनधन देहि पदम्।
जय सेवकवत्सल करुणासागर मुरलीमनोहर देहि पदम् ॥ 6 ॥

जय गोकुलभूषण कंसनिषूदन शाश्वत जीवन देहि पदम्।
जय योगपरायण संसृतिवारण ब्रह्म निरंजन देहि पदम् ॥ 7 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

मधुराष्टकम्



अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ 1 ॥

वसनं मधुरं चरितं मधुरं वचनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ 2 ॥

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ 3 ॥

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ 4 ॥

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ 5 ॥

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ 6 ॥

गोपी मधुरा लीला मधुरा राधा मधुरा मिलनं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ 7 ॥

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ 8 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ ॥

श्री-कृष्ण-शत-नाम-स्तोत्रम्

श्रीकृष्ण: कमलानाथो वासुदेव: सनातन:।
वसुदेवात्मज: पुण्यो लीलामानुषविग्रह: ॥ 1 ॥

श्रीवत्सकौस्तुभधरो यशोदावत्सलो हरि:।
चतुर्भुजात्तचक्रासिगदाशंखाद्युदायुध: ॥ 2 ॥

देवकीनन्दन: श्रीशो नन्दगोपप्रियात्मज:।
यमुनावेगसंहारी बलभद्रप्रियानुज: ॥ 3 ॥

पूतनाजीवितहर: शकटासुरभञ्जन:।
नन्दव्रजजनानन्दी सच्चिदानन्दविग्रह: ॥ 4 ॥

नवनीतविलिप्तांगो नवनीतनटोऽनघ:।
नवनीतनवाहारो मुचुकुन्दप्रसादक: ॥ 5 ॥

षोडशस्त्रीसहस्रेशस्त्रिभंगी मधुराकृति:।
शुकवागमृताब्धीन्दुर्गोविन्दो योगिनां पति: ॥ 6 ॥

वत्सवाटचरोऽनन्तो धेनुकासुरभञ्जन:।
तृणीकृततृणावर्तो यमलार्जुनभञ्जन: ॥ 7 ॥

उत्तालतालभेत्ता च तमालश्यामलाकृति:।
गोपगोपीश्वरो योगी कोटिसूर्यसमप्रभ: ॥ 8 ॥

इलापति: परं ज्योतिर्यादवेन्द्रो यदूद्वह:।
वनमाली पीतवासा: पारिजातापहारक: ॥ 9 ॥

गोवर्धनाचलोद्धर्ता गोपाल: सर्वपालक:।
अजो निरञ्जन: कामजनक: कञ्जलोचन: ॥ 10 ॥

मधुहा मधुरानाथो द्वारकानायको बली।
बृन्दावनान्तसंचारी तुलसीदामभूषण: ॥ 11 ॥

स्यमन्तकमणेर्हर्ता नरनारायणात्मक:।
कुब्जाकृष्णाम्बरधरो मायी परमपूरुष: ॥ 12 ॥

मुष्टिकासुरचाणूरमल्लयुद्धविशारद:।
संसारवैरी कंसारिर्मुरारिर्नरकान्तक: ॥ 13 ॥



अनादिब्रह्मचारी च कृष्णाव्यसनकर्षकः।
शिशुपालशिरश्छेत्ता दुर्योधनकुलान्तकः ॥ 14 ॥

विदुराक्रूरवरदो विश्वरूपप्रदर्शकः।
सत्यवाक्सत्यसंकल्पः सत्यभामारतो जयी ॥ 15 ॥

सुभद्रापूर्वजो विष्णुर्भीष्ममुक्तिप्रदायकः।
जगद्गुरुर्जगन्नाथो वेणुनादविशारदः ॥ 16 ॥

वृषभासुरविध्वंसी बाणासुरकरान्तकः।
युधिष्ठिरप्रतिष्ठाता बर्हिबर्हावतंसकः ॥ 17 ॥

पार्थसारथिरव्यक्तो गीतामृतमहोदधिः।
कालीयफणिमाणिक्यरञ्जितश्रीपदाम्बुजः ॥ 18 ॥

दामोदरो यज्ञभोक्ता दानवेन्द्रविनाशकः।
नारायणः परंब्रह्म पन्नगाशनवाहनः ॥ 19 ॥

जलक्रीडासमासक्तो गोपीवस्त्रापहारकः।
पुण्यश्लोकस्तीर्थपादो वेदवेद्यो दयानिधिः ॥ 20 ॥

सर्वतीर्थात्मकः सर्वग्रहरूपी परात्परः।
एवं श्रीकृष्णदेवस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ 21 ॥

कृष्णनामामृतं नाम परमानन्दकारकम्।
अत्युपद्रवदोषघ्नं परमायुष्यवर्धनम् ॥ 22 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ ॥

श्री-कृष्ण-अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

1. ॐ श्रीकृष्णाय नमः
2. ॐ कमलानाथाय नमः
3. ॐ वासुदेवाय नमः
4. ॐ सनातनाय नमः
5. ॐ वसुदेवात्मजाय नमः
6. ॐ पुण्याय नमः
7. ॐ लीलामानुषविग्रहाय नमः
8. ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः
9. ॐ यशोदावत्सलाय नमः
10. ॐ हरये नमः
11. ॐ चतुर्भुजात्तचक्रासिगदा-
शंखाद्युदायुधाय नमः
12. ॐ देवकीनन्दनाय नमः
13. ॐ श्रीशाय नमः
14. ॐ नन्दगोपप्रियात्मजाय नमः
15. ॐ यमुनावेगसंहारिणे नमः
16. ॐ बलभद्रप्रियानुजाय नमः
17. ॐ पूतनाजीवितहराय नमः
18. ॐ शकटासुरभञ्जनाय नमः
19. ॐ नन्दव्रजजनानन्दिने नमः
20. ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः
21. ॐ नवनीतविलिप्तांगाय नमः
22. ॐ नवनीतनटाय नमः
23. ॐ अनघाय नमः
24. ॐ नवनीतनवाहाराय नमः
25. ॐ मुचुकुन्दप्रसादकाय नमः
26. ॐ षोडशस्त्रीसहस्रेशाय नमः
27. ॐ त्रिभंगीमधुराकृतये नमः
28. ॐ शुकवागमृताब्धीन्दवे नमः
29. ॐ गोविन्दाय नमः
30. ॐ योगिनां पत्ये नमः
31. ॐ वत्सवाटचराय नमः
32. ॐ अनन्ताय नमः
33. ॐ धेनुकासुरमर्दनाय नमः
34. ॐ तृणीकृततृणावर्त्ताय नमः
35. ॐ यमलार्जुनभञ्जनाय नमः
36. ॐ उत्तालतालभेत्त्रे नमः
37. ॐ तमालश्यामलाकृतये नमः
38. ॐ गोपगोपीश्वराय नमः
39. ॐ योगिने नमः
40. ॐ कोटिसूर्यसमप्रभाय नमः
41. ॐ इलापतये नमः
42. ॐ परंज्योतिषे नमः
43. ॐ यादवेन्द्राय नमः
44. ॐ यदूद्वहाय नमः
45. ॐ वनमालिने नमः
46. ॐ पीतवाससे नमः
47. ॐ पारिजातापहारकाय नमः
48. ॐ गोवर्धनाचलोद्धर्त्रे नमः
49. ॐ गोपालाय नमः
50. ॐ सर्वपालकाय नमः
51. ॐ अजाय नमः
52. ॐ निरंजनाय नमः
53. ॐ कामजनकाय नमः
54. ॐ कञ्जलोचनाय नमः
55. ॐ मधुघ्ने नमः
56. ॐ मथुरानाथाय नमः
57. ॐ द्वारकानायकाय नमः
58. ॐ बलिने नमः
59. ॐ वृन्दावनान्तस्संचारिणे नमः
60. ॐ तुलसीदामभूषणाय नमः
61. ॐ स्यमन्तकमणेर्हर्त्रे नमः

62. ॐ नरनारायणात्मकाय नम:
63. ॐ कुब्जाकृष्टाम्बरधराय नम:
64. ॐ मायिने नम:
65. ॐ परमपूरुषाय नम:
66. ॐ मुष्टिकासुर चाणूर मल्लयुद्धविशारदाय नम:
67. ॐ संसारवैरिणे नम:
68. ॐ कंसारये नम:
69. ॐ मुरारये नम:
70. ॐ नरकान्तकाय नम:
71. ॐ अनादिब्रह्मचारिणे नम:
72. ॐ कृष्णाव्यसनकर्षकाय नम:
73. ॐ शिशुपालशिरश्छेत्रे नम:
74. ॐ दुर्योधनकुलान्तकाय नम:
75. ॐ विदुराक्रूरवरदाय नम:
76. ॐ विश्वरूपप्रदर्शकाय नम:
77. ॐ सत्यवाचे नम:
78. ॐ सत्यसंकल्पाय नम:
79. ॐ सत्यभामारताय नम:
80. ॐ जयिने नम:
81. ॐ सुभद्रापूर्वजाय नम:
82. ॐ विष्णवे नम:
83. ॐ भीष्ममुक्तिप्रदायकाय नम:
84. ॐ जगद्गुरवे नम:
85. ॐ जगन्नाथाय नम:
86. ॐ वेणुनादविशारदाय नम:
87. ॐ वृषभासुरविध्वंसिने नम:
88. ॐ बाणासुरकरान्तकाय नम:
89. ॐ युधिष्ठिरप्रतिष्ठात्रे नम:
90. ॐ बर्हिबर्हावतंसकाय नम:
91. ॐ पार्थसारथये नम:
92. ॐ अव्यक्ताय नम:
93. ॐ गीतामृतमहोदधये नम:
94. ॐ कालीयफणमाणिक्य-रंजितश्रीपदाम्बुजाय नम:
95. ॐ दामोदराय नम:
96. ॐ यज्ञभोक्त्रे नम:
97. ॐ दानवेन्द्रविनाशकाय नम:
98. ॐ नारायणाय नम:
99. ॐ परब्रह्मणे नम:
100. ॐ पन्नगाशनवाहनाय नम:
101. ॐ जलक्रीडासमासक्त-गोपीवस्त्रापहारकाय नम:
102. ॐ पुण्यश्लोकाय नम:
103. ॐ तीर्थपादाय नम:
104. ॐ वेदवेद्याय नम:
105. ॐ दयानिधये नम:
106. ॐ सर्वतीर्थात्मकाय नम:
107. ॐ सर्वग्रहरूपिणे नम:
108. ॐ परात्पराय नम:

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥

॥ हरि: ॐ ॥



गीता-अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

1. ॐ श्रीमद् भगवद् गीतायै नमः
2. ॐ श्री कृष्णामृतवाण्यै नमः
3. ॐ पार्थाय प्रतिबोधितायै नमः
4. ॐ व्यासेन ग्रथितायै नमः
5. ॐ संजयवर्णितायै नमः
6. ॐ महाभारतमध्यस्थितायै नमः
7. ॐ कुरुक्षेत्रे उपदिष्टायै नमः
8. ॐ भगवत्यै नमः
9. ॐ अम्बरूपायै नमः
10. ॐ अद्वैतामृतवर्षिण्यै नमः
11. ॐ भवद्वेषिण्यै नमः
12. ॐ अष्टादशाध्यायिन्यै नमः
13. ॐ सर्वोपनिषत्सारायै नमः
14. ॐ ब्रह्मविद्यायै नमः
15. ॐ योगशास्त्ररूपायै नमः
16. ॐ श्रीकृष्णार्जुनसंवादरूपायै नमः
17. ॐ श्रीकृष्णहृदयायै नमः
18. ॐ सुन्दरायै नमः
19. ॐ मधुरायै नमः
20. ॐ पुनीतायै नमः
21. ॐ कर्ममर्मप्रकाशिन्यै नमः
22. ॐ कामासक्तिहरायै नमः
23. ॐ तत्त्वज्ञानप्रकाशिन्यै नमः
24. ॐ निश्चलभक्तिविधायिन्यै नमः
25. ॐ निर्मलायै नमः
26. ॐ कलिमलहारिण्यै नमः
27. ॐ रागद्वेषविदारिण्यै नमः
28. ॐ मोदकारिण्यै नमः
29. ॐ भवभयहारिण्यै नमः
30. ॐ तारिण्यै नमः
31. ॐ परमानन्दप्रदायै नमः
32. ॐ अज्ञाननाशिन्यै नमः
33. ॐ आसुरभावविनाशिन्यै नमः
34. ॐ दैवीसम्पत्प्रदायै नमः
35. ॐ हरिभक्तप्रियायै नमः
36. ॐ सर्वशास्त्रस्वामिन्यै नमः
37. ॐ दयासुधावर्षिण्यै नमः
38. ॐ हरिपदप्रेमदायिन्यै नमः
39. ॐ श्रीप्रदायै नमः
40. ॐ विजयप्रदायै नमः
41. ॐ भूतिदायै नमः
42. ॐ नीतिदायै नमः
43. ॐ सनातनायै नमः
44. ॐ सर्वधर्मस्वरूपिण्यै नमः
45. ॐ समस्तसिद्धिदायै नमः
46. ॐ सन्मार्गदर्शिकायै नमः
47. ॐ त्रिलोकपूज्यायै नमः
48. ॐ अर्जुनविषादहारिण्यै नमः
49. ॐ प्रसादप्रदायै नमः
50. ॐ नित्यात्मस्वरूपदर्शिकायै नमः
51. ॐ अनित्यदेहसंसाररूपदर्शिकायै नमः
52. ॐ पुनर्जन्मरहस्यप्रकटिकायै नमः
53. ॐ स्वधर्मप्रबोधिन्यै नमः
54. ॐ स्थितप्रज्ञलक्षणदर्शिकायै नमः
55. ॐ कर्मयोगप्रकाशिकायै नमः
56. ॐ यज्ञभावनाप्रकाशिन्यै नमः
57. ॐ विविधयज्ञप्रदर्शिकायै नमः
58. ॐ चित्तशुद्धिदायै नमः
59. ॐ कामनाशोपायबोधिकायै नमः
60. ॐ अवतारतत्त्वविचारिण्यै नमः
61. ॐ ज्ञानप्राप्तिसाधनोपदेशिकायै नमः
62. ॐ ध्यानयोगबोधिन्यै नमः



63. ॐ मनोनिग्रहमार्गप्रदीपिकायै नमः
64. ॐ सर्वविधसाधकहितकारिण्यै नमः
65. ॐ ज्ञानविज्ञानप्रकाशिकायै नमः
66. ॐ परापरप्रकृतिबोधिकायै नमः
67. ॐ सृष्टिरहस्यप्रकटिकायै नमः
68. ॐ चतुर्विधभक्तलक्षणदर्शिकायै नमः
69. ॐ भुक्तिमुक्तिदायै नमः
70. ॐ जीवजगदीश्वरस्वरूपबोधिकायै नमः
71. ॐ प्रणवध्यानोपदेशिकायै नमः
72. ॐ कर्मोपासनफलदर्शिकायै नमः
73. ॐ राजविद्यायै नमः
74. ॐ राजगुह्यायै नमः
75. ॐ प्रत्यक्षावगमायै नमः
76. ॐ धर्म्यायै नमः
77. ॐ सुलभायै नमः
78. ॐ योगक्षेमकारिण्यै नमः
79. ॐ भगवद् विभूतिविस्तारिकायै नमः
80. ॐ विश्वरूपदर्शनयोगयुक्तायै नमः
81. ॐ भगवदैश्वर्यप्रदर्शिकायै नमः
82. ॐ भक्तिदायै नमः
83. ॐ भक्तिविवर्धिन्यै नमः
84. ॐ भक्तलक्षणबोधिकायै नमः
85. ॐ सगुणनिर्गुणप्रकाशिन्यै नमः
86. ॐ क्षेत्रक्षेत्रज्ञविवेककारिण्यै नमः
87. ॐ दृढवैराग्यकारिण्यै नमः
88. ॐ गुणत्रयविभागदर्शिकायै नमः
89. ॐ गुणातीतपुरुषलक्षणदर्शिकायै नमः
90. ॐ अश्वत्थवृक्षवर्णनकारिण्यै नमः
91. ॐ संसारवृक्षच्छेदनोपायबोधिन्यै नमः
92. ॐ त्रिविधश्रद्धास्वरूपप्रकाशिकायै नमः
93. ॐ त्यागसंन्यासतत्त्वदर्शिकायै नमः
94. ॐ यज्ञदानतपःस्वरूपबोधिन्यै नमः
95. ॐ ज्ञानकर्मकर्तास्वरूपबोधिकायै नमः
96. ॐ शरणागतिरहस्यप्रदर्शिकायै नमः
97. ॐ आश्चर्यरूपायै नमः
98. ॐ विस्मयकारिण्यै नमः
99. ॐ आह्लादकारिण्यै नमः
100. ॐ भक्तिहीनजनागम्यायै नमः
101. ॐ जगदोद्धारायै नमः
102. ॐ दिव्यदृष्टिप्रदायै नमः
103. ॐ धर्मसंस्थापिकायै नमः
104. ॐ भक्तजनसेव्यायै नमः
105. ॐ सर्वदेवस्तुतायै नमः
106. ॐ ज्ञानगंगायै नमः
107. ॐ श्रीकृष्णप्रियतमायै नमः
108. ॐ सर्वमंगलायै नमः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥

नवग्रह स्तोत्र



श्री-सूर्य-अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

1. ॐ ह्रीं अरुणाय नमः
2. ॐ ह्रीं शरण्याय नमः
3. ॐ ह्रीं करुणा-रस-सिन्धवे नमः
4. ॐ ह्रीं असमान-बलाय नमः
5. ॐ ह्रीं आर्त-रक्षकाय नमः
6. ॐ ह्रीं आदित्याय नमः
7. ॐ ह्रीं आदि-भूताय नमः
8. ॐ ह्रीं अखिलागम-वेदिने नमः
9. ॐ ह्रीं अच्युताय नमः
10. ॐ ह्रीं अखिलज्ञाय नमः
11. ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः
12. ॐ ह्रीं इनाय नमः
13. ॐ ह्रीं विश्व-रूपाय नमः
14. ॐ ह्रीं इज्याय नमः
15. ॐ ह्रीं इन्द्राय नमः
16. ॐ ह्रीं भानवे नमः
17. ॐ ह्रीं इन्दिरा-मन्दिराप्ताय नमः
18. ॐ ह्रीं वन्दनीयाय नमः
19. ॐ ह्रीं ईशाय नमः
20. ॐ ह्रीं सु-प्रसन्नाय नमः
21. ॐ ह्रीं सुशीलाय नमः
22. ॐ ह्रीं सु-वर्चसे नमः
23. ॐ ह्रीं वसु-प्रदाय नमः
24. ॐ ह्रीं वसवे नमः
25. ॐ ह्रीं वासुदेवाय नमः
26. ॐ ह्रीं उज्ज्वलाय नमः
27. ॐ ह्रीं उग्र-रूपाय नमः
28. ॐ ह्रीं ऊर्ध्वगाय नमः
29. ॐ ह्रीं विवस्वते नमः
30. ॐ ह्रीं उद्यत्किरण-जालाय नमः
31. ॐ ह्रीं हृषीकेशाय नमः
32. ॐ ह्रीं ऊर्जस्वलाय नमः
33. ॐ ह्रीं वीराय नमः
34. ॐ ह्रीं निर्जराय नमः
35. ॐ ह्रीं जयाय नमः
36. ॐ ह्रीं ऊरु-द्वय-भाव-रूप-युक्त-सारथये नमः
37. ॐ ह्रीं ऋषि-बन्धाय नमः
38. ॐ ह्रीं रुग्-हन्त्रे नमः
39. ॐ ह्रीं ऋक्ष-चक्र-चराय नमः
40. ॐ ह्रीं ऋजु-स्वभाव-चित्ताय नमः
41. ॐ ह्रीं नित्य-स्तुत्याय नमः
42. ॐ ह्रीं ऋकार-मातृका-वर्ण-रूपाय नमः
43. ॐ ह्रीं उज्ज्वलत्-तेजसे नमः
44. ॐ ह्रीं ऋक्षादि-नाथ-मित्राय नमः
45. ॐ ह्रीं पुष्कराक्षाय नमः
46. ॐ ह्रीं लुप्त-दन्ताय नमः
47. ॐ ह्रीं शान्ताय नमः
48. ॐ ह्रीं कान्तिदाय नमः
49. ॐ ह्रीं घनाय नमः
50. ॐ ह्रीं कनत्-कनक-भूषाय नमः
51. ॐ ह्रीं खद्योताय नमः
52. ॐ ह्रीं ऊनिताखिल-दैत्याय नमः
53. ॐ ह्रीं सत्यानन्द-स्वरूपिणे नमः
54. ॐ ह्रीं अप-वर्ग-प्रदाय नमः
55. ॐ ह्रीं आर्त-शरण्याय नमः
56. ॐ ह्रीं एकाकिने नमः
57. ॐ ह्रीं भगवते नमः
58. ॐ ह्रीं सृष्टि-स्थित्यन्त-कारिणे नमः
59. ॐ ह्रीं गुणात्मने नमः
60. ॐ ह्रीं घृणि-भृते नमः

61. ॐ ह्रीं बृहते नमः
62. ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः
63. ॐ ह्रीं ऐश्वर्यदाय नमः
64. ॐ ह्रीं शर्वाय नमः
65. ॐ ह्रीं हरिदश्वाय नमः
66. ॐ ह्रीं शौरये नमः
67. ॐ ह्रीं दश-दिक्-सम्प्रकाशाय नमः
68. ॐ ह्रीं भक्त-वश्याय नमः
69. ॐ ह्रीं ऊर्जस्कराय नमः
70. ॐ ह्रीं जयिने नमः
71. ॐ ह्रीं जगदानन्द-हेतवे नमः
72. ॐ ह्रीं जन्म-मृत्यु-जरा-व्याधि-वर्जिताय नमः
73. ॐ ह्रीं उच्च-स्थान-समारूढ-रथस्थाय नमः
74. ॐ ह्रीं असुरारये नमः
75. ॐ ह्रीं कमनीय-कराय नमः
76. ॐ ह्रीं अब्ज-वल्लभाय नमः
77. ॐ ह्रीं अन्तर्बहिः-प्रकाशाय नमः
78. ॐ ह्रीं अचिन्त्याय नमः
79. ॐ ह्रीं आत्म-रूपिणे नमः
80. ॐ ह्रीं अच्युताय नमः
81. ॐ ह्रीं अमरेशाय नमः
82. ॐ ह्रीं परस्मै ज्योतिषे नमः
83. ॐ ह्रीं अहस्कराय नमः
84. ॐ ह्रीं रवये नमः
85. ॐ ह्रीं हरये नमः
86. ॐ ह्रीं परमात्मने नमः
87. ॐ ह्रीं तरुणाय नमः
88. ॐ ह्रीं वरेण्याय नमः
89. ॐ ह्रीं ग्रहाणांपतये नमः
90. ॐ ह्रीं भास्कराय नमः
91. ॐ ह्रीं आदि-मध्यान्त-रहिताय नमः
92. ॐ ह्रीं सौख्य-प्रदाय नमः
93. ॐ ह्रीं सकल-जगतांपतये नमः
94. ॐ ह्रीं सूर्याय नमः
95. ॐ ह्रीं कवये नमः
96. ॐ ह्रीं नारायणाय नमः
97. ॐ ह्रीं परेशाय नमः
98. ॐ ह्रीं तेजो-रूपाय नमः
99. ॐ ह्रीं श्रीहिरण्य-गर्भाय नमः
100. ॐ ह्रीं सम्पत्कराय नमः
101. ॐ ह्रीं इष्टार्थदाय नमः
102. ॐ ह्रीं अनुप्रसन्नाय नमः
103. ॐ ह्रीं श्रीमते नमः
104. ॐ ह्रीं श्रेयसे नमः
105. ॐ ह्रीं भक्त-कोटि-सौख्य-प्रदायिने नमः
106. ॐ ह्रीं निखिलागम-वेद्याय नमः
107. ॐ ह्रीं नित्यानन्दाय नमः
108. ॐ ह्रीं छाया-उषा-देवी-समेताय नमः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



श्री-सोम (चन्द्र)-अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

1. ॐ सौं श्रीमते नमः
2. ॐ सौं शश-धराय नमः
3. ॐ सौं चन्द्राय नमः
4. ॐ सौं ताराधीशाय नमः
5. ॐ सौं निशाकराय नमः
6. ॐ सौं सुधा-निधये नमः
7. ॐ सौं सदाऽऽराध्याय नमः
8. ॐ सौं सत्पतये नमः
9. ॐ सौं साधु-पूजिताय नमः
10. ॐ सौं जितेन्द्रियाय नमः
11. ॐ सौं जयोद्योगाय नमः
12. ॐ सौं ज्योतिश्चक्र-प्रवर्तकाय नमः
13. ॐ सौं विकर्तनानुजाय नमः
14. ॐ सौं वीराय नमः
15. ॐ सौं विश्वेशाय नमः
16. ॐ सौं विदुषां पतये नमः
17. ॐ सौं दोषा-कराय नमः
18. ॐ सौं दुष्ट-दूराय नमः
19. ॐ सौं पुष्टि-मते नमः
20. ॐ सौं शिष्ट-पालकाय नमः
21. ॐ सौं अष्ट-मूर्ति-प्रियाय नमः
22. ॐ सौं अनन्ताय नमः
23. ॐ सौं कष्ट-दारु-कुठाराय नमः
24. ॐ सौं स्व-प्रकाशाय नमः
25. ॐ सौं प्रकाशत्मने नमः
26. ॐ सौं द्यु-चराय नमः
27. ॐ सौं देव-भोजनाय नमः
28. ॐ सौं कलाधराय नमः
29. ॐ सौं काल-हेतवे नमः
30. ॐ सौं काम-कृते नमः
31. ॐ सौं काम-दायकाय नमः
32. ॐ सौं मृत्यु-संहारकाय नमः
33. ॐ सौं अमर्त्याय नमः
34. ॐ सौं नित्यानुष्ठानदाय नमः
35. ॐ सौं क्षपाकाराय नमः
36. ॐ सौं क्षीण-पापाय नमः
37. ॐ सौं क्षय-वृद्धि-समन्विताय नमः
38. ॐ सौं जैवातृकाय नमः
39. ॐ सौं शुचये नमः
40. ॐ सौं शुभ्राय नमः
41. ॐ सौं जयिने नमः
42. ॐ सौं जय-फल-प्रदाय नमः
43. ॐ सौं सुधा-मयाय नमः
44. ॐ सौं सुर-स्वामिने नमः
45. ॐ सौं भुक्तिदाय नमः
46. ॐ सौं भद्राय नमः
47. ॐ सौं भक्तानामिष्ट-दायकाय नमः
48. ॐ सौं भक्त-दारिद्र-भञ्जनाय नमः
49. ॐ सौं साम-गान-प्रियाय नमः
50. ॐ सौं सर्व-रक्षकाय नमः
51. ॐ सौं सागरोद्-भवाय नमः
52. ॐ सौं भयान्त-कृते नमः
53. ॐ सौं भवित-गम्याय नमः
54. ॐ सौं भव-बन्ध-विमोचकाय नमः
55. ॐ सौं जगत्-प्रकाश-करणाय नमः
56. ॐ सौं जगदानन्द-कारणाय नमः
57. ॐ सौं निःसपत्नाय नमः
58. ॐ सौं निराहाराय नमः
59. ॐ सौं निर्विकाराय नमः
60. ॐ सौं निरामयाय नमः
61. ॐ सौं भू-छायाऽऽच्छादिताय नमः
62. ॐ सौं भव्याय नमः

63. ॐ सौं भुवन-प्रतिपालकाय नमः
64. ॐ सौं सकलार्ति-हराय नमः
65. ॐ सौं सौम्य-जनकाय नमः
66. ॐ सौं साधु-वन्दिताय नमः
67. ॐ सौं सर्वागमज्ञाय नमः
68. ॐ सौं सर्वज्ञाय नमः
69. ॐ सौं सनकादि-मुनि-स्तुताय नमः
70. ॐ सौं सित-छत्र-ध्वजोपेताय नमः
71. ॐ सौं सितांगाय नमः
72. ॐ सौं श्वेत-माल्याम्बर-धराय नमः
73. ॐ सौं सित-भूषणाय नमः
74. ॐ सौं श्वेत-गन्धानुलेपनाय नमः
75. ॐ सौं दशाश्व-रथ-संरूढाय नमः
76. ॐ सौं दण्ड-पाणये नमः
77. ॐ सौं धनुर्धराय नमः
78. ॐ सौं कुन्द-पुष्पोज्ज्वलाकाराय नमः
79. ॐ सौं नयनाब्ज-समुद्-भवाय नमः
80. ॐ सौं आत्रेय-गोत्रजाय नमः
81. ॐ सौं अत्यन्त-विनयाय नमः
82. ॐ सौं प्रिय-दायकाय नमः
83. ॐ सौं करुणा-रस-सम्पूर्णाय नमः
84. ॐ सौं कर्कटक-प्रभवे नमः
85. ॐ सौं चतुरस्त्र-समारूढाय नमः
86. ॐ सौं अव्ययाय नमः
87. ॐ सौं चतुराय नमः
88. ॐ सौं दिव्य-वाहनाय नमः
89. ॐ सौं विवस्वन्मण्डलाज्ञेय-वासाय नमः
90. ॐ सौं वसु-समृद्धिदाय नमः
91. ॐ सौं महेश्वर-प्रियाय नमः
92. ॐ सौं दान्ताय नमः
93. ॐ सौं मेरु-गोत्र-प्रदक्षिणाय नमः
94. ॐ सौं ग्रह-मण्डल-मध्यस्थाय नमः
95. ॐ सौं ग्रसितार्काय नमः
96. ॐ सौं द्विज-राजाय नमः
97. ॐ सौं द्युतित-काय नमः
98. ॐ सौं द्वि-भुजाय नमः
99. ॐ सौं द्विज-पूजिताय नमः
100. ॐ सौं औदुम्बर-नगावासाय नमः
101. ॐ सौं उदाराय नमः
102. ॐ सौं रोहिणी-पतये नमः
103. ॐ सौं नित्योदयाय नमः
104. ॐ सौं मुनि-स्तुताय नमः
105. ॐ सौं नित्यानन्द-फल-प्रदाय नमः
106. ॐ सौं सकलाह्लादन-कराय नमः
107. ॐ सौं पलाश-समिध-प्रियाय नमः
108. ॐ सौं चन्द्रमसे नमः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री-मंगल-अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

1. ॐ मं मही-सुताय नमः
2. ॐ मं महा-भागाय नमः
3. ॐ मं मंगलाय नमः
4. ॐ मं मंगल-प्रदाय नमः
5. ॐ मं महा-वीराय नमः
6. ॐ मं महा-शूराय नमः
7. ॐ मं महा-बल-पराक्रमाय नमः
8. ॐ मं महा-रौद्राय नमः
9. ॐ मं महा-भद्राय नमः
10. ॐ मं माननीयाय नमः
11. ॐ मं दया-कराय नमः
12. ॐ मं मानदाय नमः
13. ॐ मं अमर्षणाय नमः
14. ॐ मं क्रूराय नमः
15. ॐ मं ताप-पाप-विवर्जिताय नमः
16. ॐ मं सु-प्रतीपाय नमः
17. ॐ मं सु-ताम्राक्षाय नमः
18. ॐ मं सुब्रह्मण्याय नमः
19. ॐ मं धर्मात्मजाय नमः
20. ॐ मं वक्तृ-सभादि-गमनाय नमः
21. ॐ मं वरेण्याय नमः
22. ॐ मं वरदाय नमः
23. ॐ मं सुखिने नमः
24. ॐ मं वीर-भद्राय नमः
25. ॐ मं विरूपाक्षाय नमः
26. ॐ मं विदूरस्थाय नमः
27. ॐ मं विभा-वसवे नमः
28. ॐ मं नक्षत्र-चक्र-सञ्चारिणे नमः
29. ॐ मं नक्षत्र-रूपाय नमः
30. ॐ मं क्षात्र-वर्जिताय नमः
31. ॐ मं क्षय-वृद्धि-वनिर्मुक्ताय नमः
32. ॐ मं क्षमा-युक्ताय नमः
33. ॐ मं विचक्षणाय नमः
34. ॐ मं अक्षीण-फलदाय नमः
35. ॐ मं चक्षुर्गोचराय नमः
36. ॐ मं शुभ-लक्षणाय नमः
37. ॐ मं वीत-रागाय नमः
38. ॐ मं वीत-भयाय नमः
39. ॐ मं वीचि-विरावाय नमः
40. ॐ मं विश्व-कारणाय नमः
41. ॐ मं नक्षत्र-राशि-सञ्चारिणे नमः
42. ॐ मं नाना-भय-निकृन्तनाय नमः
43. ॐ मं कमनीयाय नमः
44. ॐ मं दया-साराय नमः
45. ॐ मं कनत्-कनक-भूषणाय नमः
46. ॐ मं भय-त्राणाय नमः
47. ॐ मं भव्य-फलदाय नमः
48. ॐ मं भक्ताभय-वर-प्रदाय नमः
49. ॐ मं शत्रु-हन्त्रे नमः
50. ॐ मं शमोपेताय नमः
51. ॐ मं शरणागत-पोषणाय नमः
52. ॐ मं साहसिने नमः
53. ॐ मं सद्-गुणाध्यक्षाय नमः
54. ॐ मं साधवे नमः
55. ॐ मं समर-दुर्जयाय नमः
56. ॐ मं दुष्ट-दूराय नमः
57. ॐ मं शिष्ट-पूज्याय नमः
58. ॐ मं सर्व-कष्ट-निवारणाय नमः
59. ॐ मं दुश्चेष्टा-वारकाय नमः
60. ॐ मं दुःख-भञ्जनाय नमः
61. ॐ मं दुर्धर्षाय नमः
62. ॐ मं हरये नमः

63. ॐ मं दु:स्वप्न-हन्त्रे नम:
64. ॐ मं दुर्धराय नम:
65. ॐ मं दुष्ट-गर्व-विमोचनाय नम:
66. ॐ मं भरद्वाज-कुलोद्भूताय नम:
67. ॐ मं भू-सुताय नम:
68. ॐ मं भव्य-भूषणाय नम:
69. ॐ मं रक्ताम्बराय नम:
70. ॐ मं रक्त-वपुषे नम:
71. ॐ मं भक्त-पालन-तत्पराय नम:
72. ॐ मं चतुर्भुजाय नम:
73. ॐ मं गदा-धारिणे नम:
74. ॐ मं मेष-वाहनाय नम:
75. ॐ मं अमिताशनाय नम:
76. ॐ मं शक्ति-शूल-धराय नम:
77. ॐ मं शक्ताय नम:
78. ॐ मं शस्त्र-विद्या-विशारदाय नम:
79. ॐ मं तार्किकाय नम:
80. ॐ मं तामसाधाराय नम:
81. ॐ मं तपस्विने नम:
82. ॐ मं ताम्र-लोचनाय नम:
83. ॐ मं तप्त-काञ्चन-संकाशाय नम:
84. ॐ मं रक्त-किंजुल्क-सन्निभाय नम:
85. ॐ मं गोत्राधि-देवाय नम:
86. ॐ मं गो-मध्य-चराय नम:
87. ॐ मं गुण-विभूषणाय नम:
88. ॐ मं असृजे नम:
89. ॐ मं अंगारकाय नम:
90. ॐ मं अवन्ति-देशाधीशाय नम:
91. ॐ मं जनार्दनाय नम:
92. ॐ मं सूर्य-याम्य-प्रदेशस्थाय नम:
93. ॐ मं यौवनाय नम:
94. ॐ मं याम्य-दिङ्-मुखाय नम:
95. ॐ मं लोहितांगाय नम:
96. ॐ मं त्रि-दशाधिप-सन्नुताय नम:
97. ॐ मं शुचये नम:
98. ॐ मं शुचि-कराय नम:
99. ॐ मं शूराय नम:
100. ॐ मं शुचि-वश्याय नम:
101. ॐ मं शुभावहाय नम:
102. ॐ मं मेष-वृश्चिक-राशीशाय नम:
103. ॐ मं मेधाविने नम:
104. ॐ मं मित-भाषणाय नम:
105. ॐ मं सुख-प्रदाय नम:
106. ॐ मं सु-रूपाक्षाय नम:
107. ॐ मं सर्वाभीष्ट-फल-प्रदाय नम:
108. ॐ मं सर्व-रोगापहारकाय नम:

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:॥ हरि: ॐ॥



श्री-बुध-अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

1. ॐ बुं बुधाय नमः
2. ॐ बुं बुधार्चिताय नमः
3. ॐ बुं सौम्याय नमः
4. ॐ बुं दृढ-फलाय नमः
5. ॐ बुं श्रुति-जाल-प्रबोधकाय नमः
6. ॐ बुं सत्य-वासाय नमः
7. ॐ बुं सत्य-वचसे नमः
8. ॐ बुं श्रेयसां पतये नमः
9. ॐ बुं अव्ययाय नमः
10. ॐ बुं शशि-सुताय नमः
11. ॐ बुं सोमजाय नमः
12. ॐ बुं सुखदाय नमः
13. ॐ बुं श्रीमते नमः
14. ॐ बुं सोम-वंश प्रदीपकाय नमः
15. ॐ बुं वेद-विदे नमः
16. ॐ बुं वेद-तत्त्वज्ञाय नमः
17. ॐ बुं वेदान्त-ज्ञान-भास्वराय नमः
18. ॐ बुं विद्या-विचक्षण-विभवे नमः
19. ॐ बुं विद्वत्पति-कराय नमः
20. ॐ बुं ऋजवे नमः
21. ॐ बुं विश्वानुकूल-सञ्चारिणे नमः
22. ॐ बुं विशेष-विनयान्विताय नमः
23. ॐ बुं विविधागम-सारज्ञाय नमः
24. ॐ बुं वीर्य-वते नमः
25. ॐ बुं विगत-ज्वराय नमः
26. ॐ बुं त्रि-वर्ग-फलदाय नमः
27. ॐ बुं अनन्ताय नमः
28. ॐ बुं त्रिदशाधिप-पूजिताय नमः
29. ॐ बुं बुद्धि-मते नमः
30. ॐ बुं बहु-शास्त्रज्ञाय नमः
31. ॐ बुं बलिने नमः
32. ॐ बुं बन्ध-विमोचनाय नमः
33. ॐ बुं बोधनाय नमः
34. ॐ बुं वक्राति-वक्र-गमनाय नमः
35. ॐ बुं वासवाय नमः
36. ॐ बुं वसुधाधिपाय नमः
37. ॐ बुं प्रसाद-वदनाय नमः
38. ॐ बुं वन्द्याय नमः
39. ॐ बुं वरेण्याय नमः
40. ॐ बुं वाग्-विलक्षणाय नमः
41. ॐ बुं सत्य-वते नमः
42. ॐ बुं सत्य-सन्धाय नमः
43. ॐ बुं सत्य-संकल्पाय नमः
44. ॐ बुं सदाधाराय नमः
45. ॐ बुं सर्व-रोग-प्रशमनाय नमः
46. ॐ बुं सर्व-मृत्यु-निवारकाय नमः
47. ॐ बुं वाणिज्य-निपुणाय नमः
48. ॐ बुं वश्याय नमः
49. ॐ बुं वातांगिने नमः
50. ॐ बुं वात-रोग-हृते नमः
51. ॐ बुं स्थूलाय नमः
52. ॐ बुं स्थैर्य-गुणाध्यक्षाय नमः
53. ॐ बुं स्थूल-सूक्ष्मादि-कारणाय नमः
54. ॐ बुं अप्रकाशाय नमः
55. ॐ बुं प्रकाशात्मने नमः
56. ॐ बुं धनाय नमः
57. ॐ बुं गगन-भूषणाय नमः
58. ॐ बुं विधि-स्तुताय नमः
59. ॐ बुं विशालाक्षाय नमः
60. ॐ बुं विद्वज्जन-मनोहराय नमः
61. ॐ बुं चारु-शीलाय नमः
62. ॐ बुं स्व-प्रकाशाय नमः

63. ॐ बुं चपलाय नमः
64. ॐ बुं जितेन्द्रियाय नमः
65. ॐ बुं उदङ्-मुखाय नमः
66. ॐ बुं मखासक्ताय नमः
67. ॐ बुं मगधाधिपतये नमः
68. ॐ बुं हरये नमः
69. ॐ बुं सौम्य-वत्सर-सञ्जाताय नमः
70. ॐ बुं सोम-प्रिय-कराय नमः
71. ॐ बुं सुफल-प्रदाय नमः
72. ॐ बुं सुखिने नमः
73. ॐ बुं सिंहादि-रूढाय नमः
74. ॐ बुं सर्वज्ञाय नमः
75. ॐ बुं शिखि-वर्णाय नमः
76. ॐ बुं शिवंकराय नमः
77. ॐ बुं पीताम्बराय नमः
78. ॐ बुं पीत-वपुषे नमः
79. ॐ बुं खड्ग-चर्म-धराय नमः
80. ॐ बुं कार्य-कर्त्रे नमः
81. ॐ बुं कलुष-हराय नमः
82. ॐ बुं आत्रेय-गोत्रजाय नमः
83. ॐ बुं अत्यन्त-विनयाय नमः
84. ॐ बुं विश्व-पावनाय नमः
85. ॐ बुं चाम्पेय-पुष्प-संकाशाय नमः-
86. ॐ बुं चारणाय नमः
87. ॐ बुं चारु-भूषणाय नमः
88. ॐ बुं वीत-रागाय नमः
89. ॐ बुं वीत-भयाय नमः
90. ॐ बुं विशुद्धाय नमः
91. ॐ बुं कनक-प्रभाय नमः
92. ॐ बुं बन्धु-प्रियाय नमः
93. ॐ बुं बन्ध-मुक्ताय नमः
94. ॐ बुं बाण-मण्डल-संश्रिताय नमः
95. ॐ बुं अर्केशान-निवासस्थाय नमः
96. ॐ बुं तर्क-शास्त्र-विशारदाय नमः
97. ॐ बुं प्रशान्ताय नमः
98. ॐ बुं प्रीति-संयुक्ताय नमः
99. ॐ बुं प्रिय-कृते नमः
100. ॐ बुं प्रिय-भाषणाय नमः
101. ॐ बुं मेधाविने नमः
102. ॐ बुं माधवासक्ताय नमः
103. ॐ बुं मिथुनाधिपतये नमः
104. ॐ बुं सुधिये नमः
105. ॐ बुं कन्या-राशि-प्रियाय नमः
106. ॐ बुं काम-प्रदाय नमः
107. ॐ बुं घन-फलाशाय नमः
108. ॐ बुं रोहिणेयाय नमः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



श्री-वृहस्पति-अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

1. ॐ वृं गुरवे नमः
2. ॐ वृं गुण-वराय नमः
3. ॐ वृं गोप्त्रे नमः
4. ॐ वृं गोचराय नमः
5. ॐ वृं गो-पति-प्रियाय नमः
6. ॐ वृं गुणिने नमः
7. ॐ वृं गुणवतां श्रेष्ठाय नमः
8. ॐ वृं गुरुणां गुरवे नमः
9. ॐ वृं अव्ययाय नमः
10. ॐ वृं जेत्रे नमः
11. ॐ वृं जयन्ताय नमः
12. ॐ वृं जयदाय नमः
13. ॐ वृं जीवाय नमः
14. ॐ वृं अनन्ताय नमः
15. ॐ वृं जयावहाय नमः
16. ॐ वृं आंगीरसाय नमः
17. ॐ वृं अध्वरासक्ताय नमः
18. ॐ वृं विविक्ताय नमः
19. ॐ वृं अध्वर-कृत्-पराय नमः
20. ॐ वृं वाचस्पतये नमः
21. ॐ वृं वशिने नमः
22. ॐ वृं वश्याय नमः
23. ॐ वृं वरिष्ठाय नमः
24. ॐ वृं वाग्-विचक्षणाय नमः
25. ॐ वृं चित्त-शुद्धि-कराय नमः
26. ॐ वृं श्रीमते नमः
27. ॐ वृं चैत्राय नमः
28. ॐ वृं चित्र-शिखण्डिजाय नमः
29. ॐ वृं बृहद्रथाय नमः
30. ॐ वृं बृहद्-भानवे नमः
31. ॐ वृं वृहस्पतये नमः
32. ॐ वृं अभीष्टदाय नमः
33. ॐ वृं सुराचार्याय नमः
34. ॐ वृं सुराध्यक्षाय नमः
35. ॐ वृं सुर-कार्य-हित-कराय नमः
36. ॐ वृं गीर्वाण-पोषकाय नमः
37. ॐ वृं धन्याय नमः
38. ॐ वृं गीष्पतये नमः
39. ॐ वृं गिरीशाय नमः
40. ॐ वृं अनघाय नमः
41. ॐ वृं धीवराय नमः
42. ॐ वृं दिव्य-भूषणाय नमः
43. ॐ वृं देव-पूजिताय नमः
44. ॐ वृं धनुर्धराय नमः
45. ॐ वृं दैत्य-हन्त्रे नमः
46. ॐ वृं दया-साराय नमः
47. ॐ वृं दया-कराय नमः
48. ॐ वृं दारिद्र्य-विनाशनाय नमः
49. ॐ वृं धन्याय नमः
50. ॐ वृं धिषणाय नमः
51. ॐ वृं दक्षिणायन-सम्भवाय नमः
52. ॐ वृं धनुर्वीराधिपाय नमः
53. ॐ वृं देवाय नमः
54. ॐ वृं धनुर्बाण-धराय नमः
55. ॐ वृं हरये नमः
56. ॐ वृं अंगीरसाब्द-सञ्जाताय नमः
57. ॐ वृं अंगिरस-कुलोद्भवाय नमः
58. ॐ वृं सिन्धु-देशाधिपाय नमः
59. ॐ वृं धी-मते नमः
60. ॐ वृं स्वर्ण-कायाय नमः
61. ॐ वृं चतुर्भुजाय नमः
62. ॐ वृं हेमांगदाय नमः

63. ॐ वृं हेम-वपुषे नमः
64. ॐ वृं हेम-भूषण-भूषिताय नमः
65. ॐ वृं पुष्य-नाथाय नमः
66. ॐ वृं पुष्य-राग-मणि-मण्डन-मण्डिताय नमः
67. ॐ वृं काश-पुष्प-समानाभाय नमः
68. ॐ वृं कलि-दोष-निवारकाय नमः
69. ॐ वृं इन्द्रादि-देव-देवेशाय नमः
70. ॐ वृं देवताऽभीष्ट-दायकाय नमः
71. ॐ वृं असमान-बलाय नमः
72. ॐ वृं सत्त्व-गुण-सम्पद्विभावसवे नमः
73. ॐ वृं भूसुराभीष्ट-फलदाय नमः
74. ॐ वृं भूरि-यशसे नमः
75. ॐ वृं पुण्य-विवर्धनाय नमः
76. ॐ वृं धर्म-रूपाय नमः
77. ॐ वृं धनाध्यक्षाय नमः
78. ॐ वृं धनदाय नमः
79. ॐ वृं धर्म-पालनाय नमः
80. ॐ वृं सर्व-देवतार्थ-तत्त्वज्ञाय नमः
81. ॐ वृं सर्वापद्-विनिवारकाय नमः
82. ॐ वृं सर्व-पाप-प्रशमनाय नमः
83. ॐ वृं स्व-मतानुगतामराय नमः
84. ॐ वृं ऋग्वेद-पारगाय नमः
85. ॐ वृं सदानन्दाय नमः
86. ॐ वृं सत्य-सन्धाय नमः
87. ॐ वृं सत्य-संकल्प-मानसाय नमः
88. ॐ वृं सर्वागमज्ञाय नमः
89. ॐ वृं सर्वज्ञाय नमः
90. ॐ वृं सर्व-वेदान्त-विदुषे नमः
91. ॐ वृं ब्रह्म-पुत्राय नमः
92. ॐ वृं ब्राह्मणेशाय नमः
93. ॐ वृं ब्रह्म-विद्या-विशारदाय नमः
94. ॐ वृं समानाधिक-निर्मुक्ताय नमः
95. ॐ वृं सर्व-लोक-वशंकराय नमः
96. ॐ वृं सुरासुर-गन्धर्व वन्दिताय नमः
97. ॐ वृं सत्य-भाषणाय नमः
98. ॐ वृं सुराचार्याय नमः
99. ॐ वृं दयावते नमः
100. ॐ वृं शुभ-लक्षणाय नमः
101. ॐ वृं लोक-त्रय-गुरवे नमः
102. ॐ वृं श्रीमते नमः
103. ॐ वृं सर्वगाय नमः
104. ॐ वृं सर्वतो-विभवे नमः
105. ॐ वृं सर्वेशाय नमः
106. ॐ वृं सर्वदा तुष्टाय नमः
107. ॐ वृं सर्वगाय नमः
108. ॐ वृं सर्व-पूजिताय नमः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



श्री-शुक्र-अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

1. ॐ शुं शुक्राय नमः
2. ॐ शुं शुचये नमः
3. ॐ शुं शुभ-गुणाय नमः
4. ॐ शुं शुभदाय नमः
5. ॐ शुं शुभ-लक्षणाय नमः
6. ॐ शुं शोभनाक्षाय नमः
7. ॐ शुं शुभ-ग्रहाय नमः
8. ॐ शुं शुभ्र-वाहाय नमः
9. ॐ शुं शुद्ध-स्फटिक-भास्वराय नमः
10. ॐ शुं दीनार्ति-हराय नमः
11. ॐ शुं दैत्य-गुरवे नमः
12. ॐ शुं देवाभिनन्दिताय नमः
13. ॐ शुं काव्यासक्ताय नमः
14. ॐ शुं काम-पालाय नमः
15. ॐ शुं कवये नमः
16. ॐ शुं कल्याण-दायकाय नमः
17. ॐ शुं भद्र-मूर्तये नमः
18. ॐ शुं भद्र-गुणाय नमः
19. ॐ शुं भार्गवाय नमः
20. ॐ शुं भक्त-पालनाय नमः
21. ॐ शुं भोगदाय नमः
22. ॐ शुं भुवनाध्यक्षाय नमः
23. ॐ शुं चारु-शीलाय नमः
24. ॐ शुं चारु-चन्द्र-निभाननाय नमः
25. ॐ शुं निधये नमः
26. ॐ शुं निखिल-शास्त्रज्ञाय नमः
27. ॐ शुं नीति-विद्या-धुरन्धराय नमः
28. ॐ शुं सर्व-लक्षण-सम्पन्नाय नमः
29. ॐ शुं सर्व-पूजिताय नमः
30. ॐ शुं सर्वावगुण-वर्जिताय नमः
31. ॐ शुं समानाधिक-निर्मुक्ताय नमः
32. ॐ शुं सकलागम-पारगाय नमः
33. ॐ शुं भृगवे नमः
34. ॐ शुं भोग-कराय नमः
35. ॐ शुं भूसुर-पालन-तत्पराय नमः
36. ॐ शुं मनस्विने नमः
37. ॐ शुं मानदाय नमः
38. ॐ शुं मान्याय नमः
39. ॐ शुं मायातीताय नमः
40. ॐ शुं महाशयाय नमः
41. ॐ शुं बलि-प्रसन्नाय नमः
42. ॐ शुं अभयदाय नमः
43. ॐ शुं बलिने नमः
44. ॐ शुं बल-पराक्रमाय नमः
45. ॐ शुं भव-पाश-परित्यागाय नमः
46. ॐ शुं बलि-बन्ध-विमोचनाय नमः
47. ॐ शुं धनाशयाय नमः
48. ॐ शुं धनाध्यक्षाय नमः
49. ॐ शुं कम्बु-ग्रीवाय नमः
50. ॐ शुं कला-धराय नमः
51. ॐ शुं कारुण्य-रस-पूर्णाय नमः
52. ॐ शुं कल्याण-गुण-वर्धनाय नमः
53. ॐ शुं श्वेताम्बराय नमः
54. ॐ शुं श्वेत-वपुषे नमः
55. ॐ शुं चतुर्भुज-समन्विताय नमः
56. ॐ शुं अक्ष-माला-धराय नमः
57. ॐ शुं अचिन्त्याय नमः
58. ॐ शुं अक्षीण-गुण-भासुराय नमः
59. ॐ शुं नक्षत्र-गण-सञ्चाराय नमः
60. ॐ शुं नयदाय नमः
61. ॐ शुं नीति-मार्गदाय नमः
62. ॐ शुं वर्ष-प्रदाय नमः

63. ॐ शुं हृषीकेशाय नमः
64. ॐ शुं क्लेश-नाश-कराय नमः
65. ॐ शुं कवये नमः
66. ॐ शुं चिन्तितार्थ-प्रदाय नमः
67. ॐ शुं शान्ति-मते नमः
68. ॐ शुं चित्त समाधि कृते नमः
69. ॐ शुं आधि-व्याधि-हराय नमः
70. ॐ शुं भूरि-विक्रमाय नमः
71. ॐ शुं पुण्य-दायकाय नमः
72. ॐ शुं पुराण-पुरुषाय नमः
73. ॐ शुं पूज्याय नमः
74. ॐ शुं पुरुहूतादि-सन्नुताय नमः
75. ॐ शुं अजेयाय नमः
76. ॐ शुं विजितारातये नमः
77. ॐ शुं विविधाभरणोज्ज्वलाय नमः
78. ॐ शुं कुन्द-पुष्प-प्रतीकाशाय नमः
79. ॐ शुं मन्द-हासाय नमः
80. ॐ शुं महा-मनसे नमः
81. ॐ शुं मुक्ता-फल-समानाभाय नमः
82. ॐ शुं मुक्तिदाय नमः
83. ॐ शुं मुनि-सन्नुताय नमः
84. ॐ शुं रत्न-सिंहासनारूढाय नमः
85. ॐ शुं रथस्थाय नमः
86. ॐ शुं रजत-प्रभाय नमः
87. ॐ शुं सूर्य-प्राग्-देश-सञ्चाराय नमः
88. ॐ शुं सुर-शत्रु-सुहृदे नमः
89. ॐ शुं कशये नमः
90. ॐ शुं तुला-वृषभ-राशीशाय नमः
91. ॐ शुं दुर्धराय नमः
92. ॐ शुं धर्म-पालनाय नमः
93. ॐ शुं भाग्यदाय नमः
94. ॐ शुं भव्य-चारित्राय नमः
95. ॐ शुं भव-बन्ध-विमोचनाय नमः
96. ॐ शुं गौड-देशेश्वराय नमः
97. ॐ शुं गोप्त्रे नमः
98. ॐ शुं गुणिने नमः
99. ॐ शुं गुण-विभूषणाय नमः
100. ॐ शुं ज्येष्ठा-नक्षत्र-सम्भूताय नमः
101. ॐ शुं ज्येष्ठाय नमः
102. ॐ शुं श्रेष्ठाय नमः
103. ॐ शुं शुचि-स्थिताय नमः
104. ॐ शुं अपवर्ग-प्रदाय नमः
105. ॐ शुं अनन्ताय नमः
106. ॐ शुं सन्तान-फल-दायकाय नमः
107. ॐ शुं सर्वैश्वर्य-प्रदायकाय नमः
108. ॐ शुं सर्व-गीर्वाण-सन्नुताय नमः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



श्री-शनि-अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

1. ॐ शं शनैश्चराय नमः
2. ॐ शं शान्ताय नमः
3. ॐ शं सर्वाभीष्ट-प्रदायिने नमः
4. ॐ शं शरण्याय नमः
5. ॐ शं वरेण्याय नमः
6. ॐ शं सर्वेशाय नमः
7. ॐ शं सैन्याय नमः
8. ॐ शं सुर-वन्द्याय नमः
9. ॐ शं सुर-लोक-विहारिणे नमः
10. ॐ शं सुखासनोपविष्टाय नमः
11. ॐ शं सुन्दराय नमः
12. ॐ शं घनाय नमः
13. ॐ शं घन-रूपाय नमः
14. ॐ शं घनाभरण-धारिणे नमः
15. ॐ शं खद्योताय नमः
16. ॐ शं मन्दाय नमः
17. ॐ शं मन्द-चेष्टाय नमः
18. ॐ शं महनीय-गुणात्मने नमः
19. ॐ शं मर्त्य-पावन-पादाय नमः
20. ॐ शं महेशाय नमः
21. ॐ शं छाया-पुत्राय नमः
22. ॐ शं शर्वाय नमः
23. ॐ शं शत-तूणीर-धारिणे नमः
24. ॐ शं शुष्काय नमः
25. ॐ शं चर-स्थिर-स्वभावाय नमः
26. ॐ शं चञ्चलाय नमः
27. ॐ शं नील-वर्णाय नमः
28. ॐ शं नित्याय नमः
29. ॐ शं नीलाञ्जन-निभाय नमः
30. ॐ शं नीलाम्बर-विभूषाय नमः
31. ॐ शं निश्चलाय नमः
32. ॐ शं वेद्याय नमः
33. ॐ शं विधि-रूपाय नमः
34. ॐ शं विरोधाधार-भूमये नमः
35. ॐ शं वेदास्वाद-स्वभावाय नमः
36. ॐ शं वज्र-देहाय नमः
37. ॐ शं वैराग्यदाय नमः
38. ॐ शं वीराय नमः
39. ॐ शं वीत-रोग-भयाय नमः
40. ॐ शं विपत्परं-परेशाय नमः
41. ॐ शं विश्व-वन्द्याय नमः
42. ॐ शं गृध्र-वाहनाय नमः
43. ॐ शं गूढाय नमः
44. ॐ शं कर्मांगाय नमः
45. ॐ शं कुरूपिणे नमः
46. ॐ शं कुत्सिताय नमः
47. ॐ शं गुणाढ्याय नमः
48. ॐ शं गोचराय नमः
49. ॐ शं अविद्या-मूल-नाशनाय नमः
50. ॐ शं विद्याऽविद्या-स्वरूपिणे नमः
51. ॐ शं आयुष्य-कारणाय नमः
52. ॐ शं आपदुद्धर्ते नमः
53. ॐ शं विष्णु-भक्ताय नमः
54. ॐ शं वशिने नमः
55. ॐ शं विविधागम-वेदिने नमः
56. ॐ शं विधि-स्तुत्याय नमः
57. ॐ शं वन्द्याय नमः
58. ॐ शं विरूपाक्षाय नमः
59. ॐ शं वरिष्ठाय नमः
60. ॐ शं गरिष्ठाय नमः
61. ॐ शं वज्रांकुश-धराय नमः
62. ॐ शं वरदाय नमः

63. ॐ शं अभय-हस्ताय नमः
64. ॐ शं वामनाय नमः
65. ॐ शं ज्येष्ठा-पत्नी-समेताय नमः
66. ॐ शं श्रेष्ठाय नमः
67. ॐ शं मित-भाषिणे नमः
68. ॐ शं कष्टौघ-नाशिने नमः
69. ॐ शं आर्य-पुष्टिदाय नमः
70. ॐ शं स्तुत्याय नमः
71. ॐ शं स्तोत्र-कामाय नमः
72. ॐ शं भक्ति-वश्याय नमः
73. ॐ शं भानवे नमः
74. ॐ शं भानु-पुत्राय नमः
75. ॐ शं भव्याय नमः
76. ॐ शं पावनाय नमः
77. ॐ शं धनुर्मण्डल-संस्थिताय नमः
78. ॐ शं धनदाय नमः
79. ॐ शं धनुष्मते नमः
80. ॐ शं तनु-प्रकाश-देहाय नमः
81. ॐ शं तामसाय नमः
82. ॐ शं अशेष-जन-वन्द्याय नमः
83. ॐ शं विशेष-फल-दायिने नमः
84. ॐ शं वशीकृत-जनेशाय नमः
85. ॐ शं पशूनां पतये नमः
86. ॐ शं खेचराय नमः
87. ॐ शं घन-नीलाम्बराय नमः
88. ॐ शं काठिन्य-मानसाय नमः
89. ॐ शं आर्य-गण-स्तुताय नमः
90. ॐ शं नीलच्छत्राय नमः
91. ॐ शं नित्याय नमः
92. ॐ शं निर्गुणाय नमः
93. ॐ शं गुणात्मने नमः
94. ॐ शं निरामयाय नमः
95. ॐ शं निन्द्याय नमः
96. ॐ शं वन्दनीयाय नमः
97. ॐ शं धीराय नमः
98. ॐ शं दिव्य देहाय नमः
99. ॐ शं दीनार्ति-हरणाय नमः
100. ॐ शं दैन्य नाशनाय नमः
101. ॐ शं आर्य-जन-गण्याय नमः
102. ॐ शं क्रूराय नमः
103. ॐ शं क्रूर-चेष्टाय नमः
104. ॐ शं काम-क्रोध-कराय नमः
105. ॐ शं कलत्र-पुत्र-शत्रुत्व-कारणाय नमः
106. ॐ शं परितोषित-भक्ताय नमः
107. ॐ शं पर-भीति-हराय नमः
108. ॐ शं भक्त-संघ-मनोभीष्ट-फलदाय नमः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



श्री-राहु-अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

1. ॐ रां राहवे नमः
2. ॐ रां सैंहिकेयाय नमः
3. ॐ रां विदु-तुन्दाय नमः
4. ॐ रां सुर-शत्रवे नमः
5. ॐ रां तमसे नमः
6. ॐ रां प्रणये नमः
7. ॐ रां गार्ग्याननाय नमः
8. ॐ रां सुरागवे नमः
9. ॐ रां नील-जीमूत-संकाशाय नमः
10. ॐ रां चतुर्भुजाय नमः
11. ॐ रां खड्ग-खेटक-धारिणे नमः
12. ॐ रां वर-दायक-हस्ताय नमः
13. ॐ रां शूलायुधाय नमः
14. ॐ रां मेघ-वर्णाय नमः
15. ॐ रां कृष्ण-ध्वज-पताक-वते नमः
16. ॐ रां दक्षिणाशा-मुखस्थाय नमः
17. ॐ रां तीक्ष्ण-दंष्ट्राकराय नमः
18. ॐ रां शूर्पाकारासनस्थाय नमः
19. ॐ रां गोमेदाभरण-प्रियाय नमः
20. ॐ रां माष-प्रियाय नमः
21. ॐ रां काश्यपर्षि-नन्दनाय नमः
22. ॐ रां भुजगेश्वराय नमः
23. ॐ रां उल्का पातयित्रे नमः
24. ॐ रां शूल-निधिपाय नमः
25. ॐ रां कृष्ण-सर्प-राज्ञे नमः
26. ॐ रां वृष-त्वरा-व्रतास्याय नमः
27. ॐ रां अर्ध-शरीराय नमः
28. ॐ रां जाड्य-प्रदाय नमः
29. ॐ रां रवीन्दु-भीकराय नमः
30. ॐ रां छाया-स्वरूपिणे नमः
31. ॐ रां काठिनांगाय नमः
32. ॐ रां द्विष-चक्र-भेदकाय नमः
33. ॐ रां करालास्याय नमः
34. ॐ रां भयंकराय नमः
35. ॐ रां क्रूर-कर्मणे नमः
36. ॐ रां तमो रूपाय नमः
37. ॐ रां श्यामात्मने नमः
38. ॐ रां नील-लोहिताय नमः
39. ॐ रां किरीटिने नमः
40. ॐ रां नील-वसनाय नमः
41. ॐ रां शनि-सामन्त-वर्त्मगाय नमः
42. ॐ रां चाण्डाल-वर्णाय नमः
43. ॐ रां आत्मर्क्ष-भवाय नमः
44. ॐ रां मेष-भवाय नमः
45. ॐ रां शनि-वत्-फलदाय नमः
46. ॐ रां शूलाय नमः
47. ॐ रां अपसव्य-गतये नमः
48. ॐ रां उप-राग-कराय नमः
49. ॐ रां सूर्येन्दुच्छवि-ह्लाद-कराय नमः
50. ॐ रां नील-पुष्प-विहाराय नमः
51. ॐ रां ग्रह-श्रेष्ठाय नमः
52. ॐ रां अष्टम-ग्रहाय नमः
53. ॐ रां कबन्ध-मात्र-देहाय नमः
54. ॐ रां यातुधान-कुलोद्भवाय नमः
55. ॐ रां गोविन्द-वर-पात्राय नमः
56. ॐ रां देव-जाति-प्रविष्टकाय नमः
57. ॐ रां क्रूराय नमः
58. ॐ रां घोराय नमः
59. ॐ रां शनेर्मित्राय नमः
60. ॐ रां शुक्र-मित्राय नमः
61. ॐ रां अगोचराय नमः
62. ॐ रां मौनये नमः

63. ॐ रां गंगा-स्नान-दात्रे नम:
64. ॐ रां स्व-गृहे भू-बलाढ्याय नम:
65. ॐ रां स्व-गृहेऽन्य-बल-हृते नम:
66. ॐ रां मातामह-कारकाय नम:
67. ॐ रां चन्द्र-युत-चाण्डाल-जन्म-सूचकाय नम:
68. ॐ रां जन्म-सिंहाय नम:
69. ॐ रां राज्य-दात्रे नम:
70. ॐ रां महा-कायाय नम:
71. ॐ रां जन्म-कर्त्रे नम:
72. ॐ रां राज्य-धात्रे नम:
73. ॐ रां मत्तका-ज्ञानदाय नम:
74. ॐ रां जन्मकान्या-राज्य-दात्रे नम:
75. ॐ रां जन्म-हानिदाय नम:
76. ॐ रां नवमे पित्र-रोगाय नम:
77. ॐ रां पञ्चमे शोक-दायकाय नम:
78. ॐ रां द्यूने कलत्र-हन्त्रे नम:
79. ॐ रां सप्तमे कलह-प्रदाय नम:
80. ॐ रां षष्ठे वित्त-दात्रे नम:
81. ॐ रां चतुर्थे वैर-दात्रे नम:
82. ॐ रां नवमे पाप-दात्रे नम:
83. ॐ रां दशमे शोक-दात्रे नम:
84. ॐ रां आदौ यश:-प्रदात्रे नम:
85. ॐ रां अन्ते वैर-प्रदात्रे नम:
86. ॐ रां कलात्मने नम:
87. ॐ रां गो-चराचराय नम:
88. ॐ रां धने ककुत्-प्रदाय नम:
89. ॐ पञ्चमे दृषद्-शृंगदाय नम:
90. ॐ रां स्वर्भानवे नम:
91. ॐ रां बलिने नम:
92. ॐ रां महा-सौख्य-प्रदात्रे नम:
93. ॐ रां चन्द्र-वैरिणे नम:
94. ॐ रां शाश्वताय नम:
95. ॐ रां सूर-शत्रवे नम:
96. ॐ रां पाप-ग्रहाय नम:
97. ॐ रां पूज्यकाय नम:
98. ॐ रां पाठीर-पुर-नाथाय नम:
99. ॐ रां पैठीनस-कुलोद्भवाय नम:
100. ॐ रां भक्त-रक्षाय नम:
101. ॐ रां राहु-मूर्तये नम:
102. ॐ रां सर्वाभीष्ट-फल-प्रदाय नम:
103. ॐ रां दीर्घाय नम:
104. ॐ रां कृष्णाय नम:
105. ॐ रां अशिरसे नम:
106. ॐ रां विष्णु-नेत्रारये नम:
107. ॐ रां देवाय नम:
108. ॐ रां दानवाय नम:

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:॥ हरि: ॐ॥



श्री-केतु-अष्टोत्तर-शत-नामावलिः

1. ॐ कें केतवे नमः
2. ॐ कें स्थूल-शिरसे नमः
3. ॐ कें शिरो-मात्राय नमः
4. ॐ कें ध्वजाकृतये नमः
5. ॐ कें नव-ग्रह-युताय नमः
6. ॐ कें सिंहिका-गर्भ-सम्भवाय नमः
7. ॐ कें महा-भीति-कराय नमः
8. ॐ कें चित्र-वर्णाय नमः
9. ॐ कें पिंगलाय नमः
10. ॐ कें फल-धूम्र-संकाशाय नमः
11. ॐ कें तीक्ष्ण-दंष्ट्राय नमः
12. ॐ कें महोरगाय नमः
13. ॐ कें रक्त-नेत्राय नमः
14. ॐ कें चित्र-कारिणे नमः
15. ॐ कें महासुराय नमः
16. ॐ कें तीव्रकोपाय नमः
17. ॐ कें पाप-कण्टकाय नमः
18. ॐ कें क्रोध-निधये नमः
19. ॐ कें छाया-ग्रह-विशेषकाय नमः
20. ॐ कें अन्त्य-ग्रहाय नमः
21. ॐ कें महा-शीर्षाय नमः
22. ॐ कें सूर्यारये नमः
23. ॐ कें पुष्प-वत्-ग्रहिणे नमः
24. ॐ कें वर-हस्ताय नमः
25. ॐ कें गदा-पाणये नमः
26. ॐ कें चित्र-शुभ्र-धराय नमः
27. ॐ कें चित्र-ध्वज-पताकाय नमः
28. ॐ कें घोराय नमः
29. ॐ कें चित्र-रथाय नमः
30. ॐ कें शिखिने नमः
31. ॐ कें कुलुत्थ-भक्षकाय नमः
32. ॐ कें वैडूर्याभरणाय नमः
33. ॐ कें उत्पात-जनकाय नमः
34. ॐ कें शुक्र-मित्राय नमः
35. ॐ कें मन्द-सखाय नमः
36. ॐ कें शिखिनेनापकाय नमः
37. ॐ कें अन्तर्वेदिने नमः
38. ॐ कें ईश्वराय नमः
39. ॐ कें जैमिनि-गोत्रजाय नमः
40. ॐ कें चित्रगुप्तात्मने नमः
41. ॐ कें दक्षिण-मुखाय नमः
42. ॐ कें मुकुन्द-वर-पात्राय नमः
43. ॐ कें असुर-कुलोद्भवाय नमः
44. ॐ कें घन-वर्णाय नमः
45. ॐ कें लम्ब-देहाय नमः
46. ॐ कें मृत्यु-पुत्राय नमः
47. ॐ कें उत्पात-रूप-धराय नमः
48. ॐ कें अदृश्याय नमः
49. ॐ कें कालाग्नि-सन्निभाय नमः
50. ॐ कें नर-पीठकाय नमः
51. ॐ कें ग्रह-कारिणे नमः
52. ॐ कें सर्वोपद्रव-कारकाय नमः
53. ॐ कें चित्र-प्रसूताय नमः
54. ॐ कें अनलाय नमः
55. ॐ कें सर्व-व्याधि-नाशनाय नमः
56. ॐ कें अपसव्य-प्रचारिणे नमः
57. ॐ कें नवमे पापदाय नमः
58. ॐ कें पञ्चमे शोकदाय नमः
59. ॐ कें उपराग-गोचराय नमः
60. ॐ कें पुरुष-कर्मणे नमः
61. ॐ कें तुरीये सुख-प्रदाय नमः
62. ॐ कें तृतीये वैरदाय नमः

63. ॐ कें पाप-ग्रहाय नमः
64. ॐ कें स्फोट-कारकाय नमः
65. ॐ कें प्राण नाथाय नमः
66. ॐ कें पञ्चमे श्रम-कारकाय नमः
67. ॐ कें द्वितीये स्फुट-वाक्-दात्रे नमः
68. ॐ कें विषाकुलित-वक्त्रकाय नमः
69. ॐ कें काम-रूपिणे नमः
70. ॐ कें सिंह-दन्ताय नमः
71. ॐ कें सत्येऽप्यनृत-वते नमः
72. ॐ कें चतुर्थे मातृ-नाशनाय नमः
73. ॐ कें नवमे पितृ-नाशनाय नमः
74. ॐ कें अन्ते वैर-प्रदाय नमः
75. ॐ कें सुता-नन्दन-बन्धकाय नमः
76. ॐ कें सर्पाक्षि-जाताय नमः
77. ॐ कें अनंगाय नमः
78. ॐ कें कर्म-राश्युद्भवाय नमः
79. ॐ कें उपान्ते कीर्तिदाय नमः
80. ॐ कें सप्तमे कलह-प्रियाय नमः
81. ॐ कें अष्टमे व्याधि-कर्त्रे नमः
82. ॐ कें धने बहु-सुख-प्रदाय नमः
83. ॐ कें जनने रोगदाय नमः
84. ॐ कें ऊर्ध्व-मूर्धजाय नमः
85. ॐ कें ग्रह-नायकाय नमः
86. ॐ कें पाप-दृष्टये नमः
87. ॐ कें खेचराय नमः
88. ॐ कें शाम्भवाय नमः
89. ॐ कें अशेष-जन-पूजिताय नमः
90. ॐ कें शाश्वताय नमः
91. ॐ कें नटाय नमः
92. ॐ कें शुभाशुभ-फल-प्रदाय नमः
93. ॐ कें धूम्राय नमः
94. ॐ कें सुधा-पायिने नमः
95. ॐ कें अजिताय नमः
96. ॐ कें भक्त-वत्सलाय नमः
97. ॐ कें सिंहासनाय नमः
98. ॐ कें केतु-मूर्तये नमः
99. ॐ कें रवीन्दु-द्युति-नाशकाय नमः
100. ॐ कें अमराय नमः
101. ॐ कें पीडकाय नमः
102. ॐ कें अमर्त्याय नमः
103. ॐ कें विष्णु-दृष्टाय नमः
104. ॐ कें असुरेश्वराय नमः
105. ॐ कें भक्त-रक्षाय नमः
106. ॐ कें वैचित्र्य-कपोत-स्यन्दनाय नमः
107. ॐ कें विचित्र-फल-दायिने नमः
108. ॐ कें भक्ताभीष्ट-फल-प्रदाय नमः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



नवग्रह-सूक्तम्

ॐ शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये ॥

ॐ भूः ॐ भुवः ओ ँ सुवः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ओ ँ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ओमापो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम्॥ ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं आदित्यादि-नवग्रहदेवता-प्रसादसिद्ध्यर्थं आदित्यादि-नवग्रहनमस्कारान् करिष्ये॥

ॐ आसत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंच। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो यातिभुवना विपश्यन्। अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्। येषामीशे पशुपतिः पशूनां चतुष्पदामुत च द्विपदाम्। निष्क्रीतोऽयं यज्ञियं भागमेतु रायस्पोषा यजमानस्य सन्तु॥ ॐ अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय आदित्याय नमः॥ 1 ॥

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतस्सोम वृष्णियम्। भवा वाजस्य संगथे। अप्सुमे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निञ्च विश्वशंभुवमापश्च विश्वभेषजीः। गौरी मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी। अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन्॥ ॐ अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय सोमाय नमः॥ 2 ॥

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति। स्योना पृथिवि भवाऽनृक्षरा निवेशनी। यच्छानश्शर्म सप्रथाः। क्षेत्रस्य पतिना वयँ हिते नेव जयामसि। गामश्वं पोषयित्वा स नो मृडातीदृशे॥ ॐ अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय अंगारकाय नमः॥ 3 ॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृह्येनमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयञ्च। पुनः कृण्वग्ग्स्त्वा पितरं युवानमन्वाता ँसीत्त्वयि तन्तुमेतम्। इदं विष्णु-र्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपा ँ सुरे। विष्णो रराटमसि विष्णोः पृष्ठमसि विष्णोश्श्नप्त्रेस्थो विष्णोस्स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवमसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ ॐ अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय बुधाय नमः॥ 4 ॥

ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यीदयच्चवसर्तप्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्। इन्द्रमरुत्व इह पाहि सोमं यथा शार्याते अपिबस्सुतस्य। तव प्रणीती तव शूरशर्मन्नाविवासन्ति कवयस्सुयज्ञाः। ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतस्सुरुचो वेन आवः। सबुध्निया उपमा अस्य विष्ठास्सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ॐ अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय बृहस्पतये नमः॥ 5 ॥

ॐ प्रवश्शुक्राय भानवे भरध्वम्। हव्यं मतिं चाग्नये सुपूतम्। यो दैव्यानि मानुषा जनूँ्षि। अन्तर्विश्वानि विद्म ना जिगाति। इन्द्राणीमासु नारिषु सुपत्नीमहमश्रवम्। न ह्यस्या अपरंचन जरसा मरते पतिः। इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः॥ ॐ अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय शुक्राय नमः॥6॥

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्त्रवन्तु नः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयग्ग्स्याम पतयो रयीणाम्। इमं यमप्रस्तरमाहि सीदांऽगिरोभिः पितृभिस्संविदानः। आत्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन् , हविषा मादयस्व॥ ॐ अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय शनैश्चराय नमः॥7॥

ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधस्सखा। कया शचिष्ठया वृता। आऽयं गौः पृश्निरक्रमीदसनन्मातरं पुनः। पितरञ्च प्रयन्त्सुवः। यत्ते देवी निरृतिराबबन्ध दाम ग्रीवास्वविचर्त्यम्। इदन्ते तद्विष्याम्यायुषो न मध्यादथाजीवः पितुमद्धि प्रमुक्तः॥ ॐ अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय राहवे नमः॥8॥

ॐ केतुंकृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः। ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्। श्येनो गृध्राणाग्स्वधितिर्वनानाँ्सोमः पवित्रमत्येति रेभन्। सचित्र चित्रं चितयन्तमस्मे चित्रक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्। चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्रचन्द्राभिर्गृणते युवस्व॥ ॐ अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितेभ्यः केतुभ्यो नमः॥9॥

॥ॐ आदित्यादि नवग्रह देवताभ्यो नमो नमः।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥

सूर्य मंत्र

1. ॐ मित्राय नमः
2. ॐ रवये नमः
3. ॐ सूर्याय नमः
4. ॐ भानवे नमः
5. ॐ खगाय नमः
6. ॐ पूष्णे नमः
7. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः
8. ॐ मरीचये नमः
9. ॐ आदित्याय नमः
10. ॐ सवित्रे नमः
11. ॐ अर्काय नमः
12. ॐ भास्कराय नमः

चाक्षुषोपनिषद् (चाक्षुषी विद्या)

ॐ अस्याश्चाक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषि:, गायत्री छन्द:, सूर्यो देवता, चक्षूरोगनिवृत्तये जपे विनियोग:।

ॐ चक्षु: चक्षु: चक्षु: तेज: स्थिरो भव। मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथा अहम् अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरु कुरु। यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षु:प्रतिरोधकदुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय।

ॐ नम: चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नम: करुणाकरायामृताय। ॐ नम: सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नम:। खेचराय नम:। महते नम:। रजसे नम:। तमसे नम:। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवाञ्छुचिरूप:। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूप:।

य इमां चाक्षुष्मतीविद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति। ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा।

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:॥ हरि: ॐ॥



नवग्रहस्तोत्रम्

जपा-कुसुम-संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥1॥

दधि-शंख-तुषाराभं क्षीरोदार्णव-सम्भवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥2॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥3॥

प्रियंगु-कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥4॥

देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥5॥

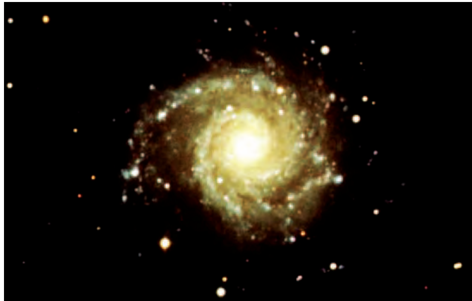
हिमकुन्द-मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥6॥

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥7॥

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥8॥

पलाश-पुष्प-संकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥9॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



विविध स्तोत्र



आदित्य-हृदयम्

राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम्।
येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे ॥ 1 ॥

आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्।
जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम् ॥ 2 ॥

सर्वमंगल-माङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
चिन्ताशोक-प्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ॥ 3 ॥

रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥ 4 ॥

सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः।
एष देवासुरगणान् लोकान् पाति गभस्तिभिः ॥ 5 ॥

एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपां पतिः ॥ 6 ॥

पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः।
वायुर्वह्निः प्रजाप्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः ॥ 7 ॥

आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्।
सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः ॥ 8 ॥

हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्त्तण्ड अंशुमान् ॥ 9 ॥

हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनो भास्करो रविः।
अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शंखः शिशिरनाशनः ॥ 10 ॥

व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुस्सामपारगः।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवंगमः ॥ 11 ॥

आतपी मण्डली मृत्युः पिंगलः सर्वतापनः।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः ॥ 12 ॥

नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन्नमोऽस्तुते ॥ 13 ॥

नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः ॥ 14 ॥

जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः।
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः ॥ 15 ॥

नम उग्राय वीराय सारंगाय नमो नमः।
नमः पद्मप्रबोधाय मार्त्तण्डाय नमो नमः ॥ 16 ॥

ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूर्यायादित्यवर्चसे।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ॥ 17 ॥

तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ॥ 18 ॥

तप्तचामीकराभाय वह्नये विश्वकर्मणे।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ॥ 19 ॥

नाशयत्येष वै भूतं तदेव सृजति प्रभुः।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ॥ 20 ॥

एष सुप्तेषु जागर्त्ति भूतेषु परिनिष्ठितः।
एष एवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम् ॥ 21 ॥

देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्व एष रविः प्रभुः ॥ 22 ॥

एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च।
कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव ॥ 23 ॥

पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम्।
एतत् त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि ॥ 24 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

निर्वाणाष्टकम्

मनो-बुद्ध्यहंकार-चित्तानि नाहं
न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे।
न वै व्योम भूमिर्न तेजो न वायु:
चिदानन्दरूप: शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ 1 ॥

न वै प्राण-संज्ञा न वै पञ्चवायु:
न वा सप्तधातुर्न वा पञ्चकोष:।
न वाक्पाणि-पादौ न चोपस्थ-पायू
चिदानन्दरूप: शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ 2 ॥

न मे राग-द्वेषौ न मे लोभ-मोहौ,
मदो नैव मे नैव मात्सर्यभाव:।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्ष:
चिदानन्दरूप: शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ 3 ॥

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दु:खं
न मन्त्रो न तीर्थो न वेदा न यज्ञा:।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता
चिदानन्दरूप: शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ 4 ॥

न मृत्युर्न शंका न मे जातिभेद:
पिता नैव मे नैव माता न जन्म।
न बन्धुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्य:
चिदानन्दरूप: शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ 5 ॥

अहं निर्विकल्पो निराकार-रूपो
विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्।
न चासंगतं नैव मुक्तिर्न बन्ध:
चिदानन्दरूप: शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ 6 ॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ ॥

ब्रह्म-ज्ञानावली-माला

असंगोऽहं असंगोऽहं असंगोऽहं पुनः पुनः।
सच्चिदानन्दरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ 1 ॥

नित्यशुद्धविमुक्तोऽहं निराकारोऽहमव्ययः।
भूमानन्दस्वरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ 2 ॥

नित्योऽहं निरवद्योऽहं निराकारोऽहमच्युतः।
परमानन्दरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ 3 ॥

शुद्धचैतन्यरूपोऽहमात्मारामोऽहमेव च।
अखण्डानन्दरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ 4 ॥

प्रत्यक्चैतन्यरूपोऽहं शान्तोऽहं प्रकृतेः परः।
शाश्वतानन्दरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ 5 ॥

तत्त्वातीतः परात्माऽहं मध्यातीतः परः शिवः।
मायातीतः परं ज्योतिरहमेवाहमव्ययः ॥ 6 ॥

नानारूपव्यतीतोऽहं चिदाकारोऽहमच्युतः।
सुखरूपस्वरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ 7 ॥

मायातत्कार्यदेहादि मम नास्त्येव सर्वदा।
स्वप्रकाशैकरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ 8 ॥

गुणत्रयव्यतीतोऽहं ब्रह्मादीनां च साक्ष्यहम्।
अनन्तानन्दरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ 9 ॥

अन्तर्यामिस्वरूपोऽहं कूटस्थः सर्वगोऽस्म्यहम्।
सर्वसाक्षिस्वरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ 10 ॥

द्वन्द्वादिसाक्षिरूपोऽहमचलोऽहं सनातनः।
परमात्मस्वरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ 11 ॥

प्रज्ञानघन एवाहं विज्ञानघन एव च।
अकर्ताहमभोक्ताऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ 12 ॥

निराधारस्वरूपोऽहं सर्वाधारोऽहमेव च।
आप्तकामस्वरूपोऽहमहमेवाहमव्ययः ॥ 13 ॥

तापत्रयविनिर्मुक्तो देहत्रयविलक्षणः।
अवस्थात्रयसाक्ष्यस्मिऽहमेवाहमव्ययः ॥ 14 ॥

दृग्दृश्यौ द्वौ पदार्थौ स्तः परस्परविलक्षणौ।
दृग्ब्रह्म दृश्यं मायेति सर्ववेदान्तडिण्डिमः॥ 15 ॥

अहं साक्षीति यो विद्याद्विविच्यैवं पुनः पुनः।
स एव मुक्तः सो विद्वानिति वेदान्तडिण्डिमः ॥ 16 ॥

घटकुण्ड्यादिकं सर्वं मृत्तिकामात्रमेव च।
तद्वद्ब्रह्म जगत्सर्वमिति वेदान्तडिण्डिमः ॥ 17 ॥

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः।
अनेन वेद्यं सच्छास्त्रमिति वेदान्तडिण्डिमः ॥ 18 ॥

अन्तर्ज्योतिर्बहिर्ज्योतिः प्रत्यक् ज्योतिः परात्परः।
ज्योतिर्ज्योतिः स्वयंज्योतिः आत्मज्योतिः शिवोऽस्म्यहम् ॥ 19 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥



हस्तामलक-स्तोत्रम्

कस्त्वं शिशो कस्य कुतोऽसि गन्ता
किं नामतेत्वं कुत आगतोऽसि।
एतन्मयोक्तं वदचार्भकस्त्वं
मत्प्रीतये प्रीतिविवर्धनोऽसि ॥ 1 ॥

नाहं मनुष्यो न च देवयक्षौ
न ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यशूद्राः।
न ब्रह्मचारी नगृहीवनस्थो
भिक्षुर्नचाहं निजबोधरूपः ॥ 2 ॥

निमित्तं मनश्चक्षुरादि प्रवृत्तौ
निरस्ताखिलोपाधिराकाशकल्पः।
रविर्लोकचेष्टानिमित्तं यथा यः
स नित्योपलब्धिस्वरूपोऽहमात्मा ॥ 3 ॥

यमग्न्युष्णवन्नित्यबोधस्वरूपं
मनश्चक्षुरादीन्यबोधात्मकानि।
प्रवर्तन्त आश्रित्य निष्कम्पमेकं
स नित्योपलब्धिस्वरूपोऽहमात्मा ॥ 4 ॥

मुखाभासको दर्पणे दृश्यमानो
मुखत्वात्पृथक्त्वेन नैवास्तिवस्तु।
चिदाभासकोधीषु जीवोऽपि तद्वत्
स नित्योपलब्धिस्वरूपोऽहमात्मा ॥ 5 ॥

यथा दर्पणाभाव आभासहानौ
मुखं विद्यते कल्पनाहीनमेकम्।
तथा धीवियोगे निराभासको यः
स नित्योपलब्धिस्वरूपोऽहमात्मा ॥ 6 ॥

मनश्चक्षुरादेर्वियुक्तः स्वयं यो
मनश्चक्षुरादेर्मनश्चक्षुरादिः।
मनश्चक्षुरादेरगम्यस्वरूपः
स नित्योपलब्धिस्वरूपोऽहमात्मा ॥ 7 ॥

य एकोविभाति स्वत: शुद्धचेता:
प्रकाशस्वरूपोऽपि नानेव धीषु।
शरावोदकस्थो यथा भानुरेक:
स नित्योपलब्धिस्वरूपोऽहमात्मा ॥ 8 ॥

यथानेकचक्षु: प्रकाशो रविर्न
क्रमेण प्रकाशीकरोति प्रकाश्यम्।
अनेकाधियो यस्तथैक: प्रबोध:
स नित्योपलब्धिस्वरूपोऽहमात्मा ॥ 9 ॥

विवस्वत्प्रभातं यथारूपमक्षं
प्रगृह्णातिनाभातमेवं विवस्वान्।
यदाभात आभासयत्यक्षमेक:
स नित्योपलब्धिस्वरूपोऽहमात्मा ॥ 10 ॥

यथा सूर्य एकोऽप्स्वनेकश्चलासु
स्थिरास्वप्यनन्यद्विभाव्यस्वरूप:।
चलासुप्रभिन्ना: सुधीष्वेवमेक:
स नित्योपलब्धिस्वरूपोऽहमात्मा ॥ 11 ॥

घनच्छन्नदृष्टिर्घनच्छन्नमर्कं
यथा निष्प्रभं मन्यते चातिमूढ:।
तथा बद्धवद्भाति यो मूढ दृष्टे:
स नित्योपलब्धिस्वरूपोऽहमात्मा ॥ 12 ॥

समस्तेषु वस्तुष्वनुस्यूतमेकं
समस्तानि वस्तूनि यं न स्पृशन्ति।
वियद्वत्सदाशुद्धमच्छस्वरूपं
स नित्योपलब्धिस्वरूपोऽहमात्मा ॥ 13 ॥

उपाधौ यथा भेदतो सन्मणीनां
तथा भेदता बुद्धिभेदेषुतेऽपि।
यथा चन्द्रिकाणां जले चञ्चलत्वं
तथा चञ्चलत्वं तवापीहविष्णो ॥ 14 ॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ॥ हरि: ॐ ॥

कौपीन-पंचकं-स्तोत्रम्

वेदान्तवाक्येषु सदा रमन्तो भिक्षान्नमात्रेण च तुष्टिमन्तः।
अशोकवन्तः करुणैकवन्तः कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ॥ 1 ॥

मूलं तरोः केवलमाश्रयन्तः पाणिद्वये भोक्तुममत्रयन्तः।
कन्थामपि स्त्रीमिव कुत्सयन्तः कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ॥ 2 ॥

देहाभिमानं परिहृत्य दूरात् आत्मानमात्मन्यवलोकयन्तः।
अहर्निशं ब्रह्मणि ये रमन्तः कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ॥ 3 ॥

स्वानन्दभावे परितुष्टिमन्तः स्वशान्तसर्वेन्द्रियवृत्तिमन्तः।
नान्तं न मध्यं न बहिः स्मरन्तः कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ॥ 4 ॥

पंचाक्षरं पावनमुच्चरन्तः पतिं पशूनां हृदि भावयन्तः।
भिक्षाशना दिक्षु परिभ्रमन्तः कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ॥ 5 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

स्वस्ति-वन्दना

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्ताम्, न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः।
गो-ब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यम्, लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥ 1 ॥

नमस्ते सते ते जगत्कारणाय, नमस्ते चिते सर्व-लोकाश्रयाय।
नमोऽद्वैत-तत्त्वाय मुक्ति-प्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ॥ 2 ॥

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं, त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम्।
त्वमेकं जगत्कर्तृ पातृप्रहर्तृ, त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ॥ 3 ॥

भयानां भयं भीषणं भीषणानाम्, गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम् ॥ 4 ॥
महोच्चैः पदानां नियन्तृ त्वमेकम्, परेषां परं रक्षणं रक्षणानाम् ॥ 5 ॥

वयं त्वां स्मरामो वयं त्वां भजामो, वयं त्वां जगत्साक्षि रूपं नमामः।
सदेकं निधानं निरालम्बमीशं, भवाम्भोधिपोतं शरण्यं व्रजामः ॥ 6 ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ हरिः ॐ ॥

उपदेश-पंचकम्

वेदो नित्यमधीयतां तदुदितं कर्म स्वनुष्ठीयतां
तेनेशस्य विधीयतामपचितिः काम्ये मतिस्त्यज्यताम्।
पापौघः परिधूयतां भवसुखे दोषोऽनुसन्धीयताम्
आत्मेच्छा व्यवसीयतां निजगृहात्तूर्णं विनिर्गम्यताम्॥ 1॥

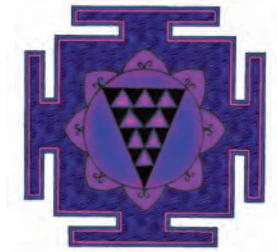
संगः सत्सु विधीयतां भगवतो भक्तिर्दृढाऽऽधीयतां
शान्त्यादिः परिचीयतां दृढतरं कर्माशु सन्त्यज्यताम्।
सद्विद्वानुपसर्प्यतां प्रतिदिनं तत्पादुका सेव्यतां
ब्रह्मैकाक्षरमर्थ्यतां श्रुतिशिरोवाक्यं समाकर्ण्यताम् ॥ 2॥

वाक्यार्थश्च विचार्यतां श्रुतिशिरःपक्षः समाश्रीयतां
दुस्तर्कात्सुविरम्यतां श्रुतिमतस्तर्कोऽनुसन्धीयताम् ।
ब्रह्मास्मीति विभाव्यतामहरहर्गर्वः परित्यज्यतां
देहेऽहम्मतिरुज्झ्यतां बुधजनैर्वादः परित्यज्यताम् ॥ 3॥

क्षुद्व्याधिश्च चिकित्स्यतां प्रतिदिनं भिक्षौषधं भुज्यतां
स्वाद्वन्नं न तु याच्यतां विधिवशात्प्राप्तेन सन्तुष्यताम् ।
शीतोष्णादि विषह्यतां न तु वृथा वाक्यं समुच्चार्यतां
औदासीन्यमभीप्स्यतां जनकृपानैष्ठुर्यमुत्सृज्यताम् ॥ 4॥

एकान्ते सुखमास्यतां परतरे चेतः समाधीयतां
पूर्णात्मा सुसमीक्ष्यतां जगदिदं तद्बाधितं दृश्यताम्।
प्राक्कर्म प्रविलाप्यतां चितिबलान्नाप्युत्तरैः श्लिष्यतां
प्रारब्धं त्विह भुज्यतामथ परब्रह्मात्मना स्थीयताम् ॥ 5॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



अग्नि-सूक्तम्

अग्नि: सप्तिं वाजंभरं ददात्यग्निर्वीरं श्रुत्यं कर्मनिष्ठाम्।
अग्नी रोदसी वि चरत् समञ्जन्नग्निर्नारीं वीरकुक्षिं पुरंधिम्॥ 1॥

अग्नेरप्नस: समिदस्तु भद्राऽग्निर्मही रोदसी आ विवेश।
अग्निरेकं चोदयत् सम-त्स्वग्निर्वृत्राणि दयते पुरूणि॥ 2॥

अग्निर्ह त्यं जरत: कर्णमावाऽग्निरद्भ्यो निरदहज्जरूथम्।
अग्निरत्रिं घर्म उरुष्यदन्त-रग्निर्नृमेधं प्रजयासृजत् सम्॥ 3॥

अग्निर्दाद्-द्रविणं वीरपेशा अग्निर्ऋषिं य: सहस्रा सनोति।
अग्निर्दिवि हव्यमा तताानाऽग्नेर्धामानि विभृता पुरुत्रा॥ 4॥

अग्निमुक्थैर्ऋषयो वि ह्वयन्तेऽग्निं नरो यामनि बाधितास:।
अग्निं वयो अन्तरिक्षे पतन्तोऽग्नि: सहस्रा परि याति गोनाम्॥ 5॥

अग्निं विश ईलते मानुषीर्या अग्निं मनुषो नहुषो वि जाता:।
अग्निर्गान्धर्वीं पथ्यामृतस्याऽग्नेर्गव्यूतिर्घृत आ निषत्ता॥ 6॥

अग्नये ब्रह्म ऋभवस्ततक्षुरग्निं महामवोचामा सुवृक्तिम्।
अग्ने प्राव जरितारं यविष्ठाऽग्ने महि द्रविणमा यजस्व॥ 7॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:॥ हरि: ॐ॥



भाग्य-सूक्तम्

ॐ प्रातरग्निं प्रातरिन्द्र॒ँ हवामहे प्रातर्मित्रा वरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भ॒ँ पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रुद्र॒ँ हुवेम ॥1॥

प्रातर्जितं भगमुग्र॒ँ हुवेम वयं पुत्र-मदितेर्यो विधर्ता।
आद्ध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह॥2॥

भग प्रणेत-र्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवददन्नः।
भगप्रणो जनय गोभि-रश्वैर्भगप्रनृभि-र्नृवन्तस्स्याम ॥3॥

उतेदानीं भगवन्तस्स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम् ।
उतोदिता मघवन्थ्सूर्यस्य वयं देवाना॒ँ सुमतौ स्याम् ॥4॥

भग एव भगवा॒ँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तस्स्याम।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीमि सनो भग पुर एता भवेह ॥5॥

समध्वरायोषसोऽनमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय ।
अर्वाचीनं वसुविदं भगन्नो रथमिवाश्वावाजिन आवहन्तु ॥6॥

अश्वावती-र्गोमती-र्नउषासो वीरवतीस्सद-मुच्छन्तु भद्राः ।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीनायूयं पात स्वस्तिभिस्सदा नः॥7॥

यो माऽग्ने भागिन॒ँ सन्त-मथाभागं चिकीर्षति।
अभागमग्ने तं कुरु मामग्ने भागिनं कुरु ॥8॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



नासदीय-सूक्तम्

नासदासीन्नो सदासीत् तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत्।
किमावरीव: कुह कस्य शर्मन्नम्भ: किमासीद्गहनं गभीरम्॥ 1॥

न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रात्र्या अह्न आसीत् प्रकेत:।
आनीदवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न पर: किं चनास॥ 2॥

तम आसीत् तमसा गूलहनग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।
तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत् तपसस्तन्महिनाजायतैकम्॥ 3॥

कामस्तदग्रे समवर्तताधि मनसो रेत: प्रथमं यदासीत्।
सतो बन्धुम्सति निरविन्दन् हृदि प्रतीप्या कवयो मनीषा॥ 4॥

तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषा मध: स्विदासीऽऽऽदुपरि स्विदासीऽऽऽत्।
रेतोधा आसन् महिमान आसन्त्स्वधा अवस्तात् प्रयति: परस्तात॥ 5॥

को अद्धा वेद क इह प्रवोचत् कुत आजाता कुत इयं विसृष्टि:।
अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाऽथा को वेद यत आबभूव॥ 6॥

इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न।
यो अस्याध्यक्ष: परमे व्योमन्त्सो अंग वेद यदि वा न वेद॥ 7॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:॥ हरि: ॐ॥

रोग-निवारण-सूक्तम्

जरायुज: प्रथम उस्त्रियो वृषा वातभ्रजा स्तनयन्नेति वृष्ट्या। स नो मृडाति तन्व ऋजुगो रुजन् य एकमोजस्त्रेधा विचक्रमे ॥1॥

अंगे अंगे शोचिषा शिश्रियाणं नमस्यन्तस्त्वा हविषा विधेम। अंकान्त्समंकान् हविषा विधेम यो अग्रभीत् पर्वास्या ग्रभीता ॥2॥

मुञ्च शीर्षक्त्या उत कास एनं परुष्परुराविवेशा यो अस्य। यो अभ्रजा वातजा यश्च शुष्मो वनस्पतीन्त्सचतां पर्वतांश्च ॥3॥

शं मे परस्मै गात्राय शमस्त्ववराय मे। शं मे चतुर्भ्यो अंगेभ्य: शमस्तु तन्वेऽऽऽ मम ॥4॥

ईशावास्योपनिषद्

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ ईशा वास्यमिदँ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम्॥ 1॥

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँ समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥ 2॥

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः।
ताँस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः॥ 3॥

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवा आप्नुवन् पूर्वमर्षत्।
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति॥ 4॥

तदेजति तन्नैजति तद् दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः॥ 5॥

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते॥ 6॥

यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद् विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः॥ 7॥

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरँ शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्
व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥ 8॥

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायाँ रताः॥ 9॥

अन्यदेवाहुर्विद्ययान्यदाहुरविद्यया।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद् विचचक्षिरे ॥ 10॥

विद्यां चाविद्यां च यस्तद् वेदोभयँ् सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते॥11॥

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्याँ् रताः॥12॥

अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात्।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे॥13॥

सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद् वेदोभयँ् सह।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते॥14॥

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये॥15॥

पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् समूह।
तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि॥16॥

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तँ् शरीरम्।
ॐऽऽऽ क्रतो स्मर कृतँ् स्मर क्रतो स्मर कृतँ् स्मर॥17॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम॥18॥

शान्ति पाठ

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



तैत्तिरीयोपनिषद्

शान्ति पाठ

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः। शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः। शं नो विष्णुरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु। तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

शीक्षावल्ली

प्रथमोऽनुवाकः

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः। शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः। शं नो विष्णुरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु। तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

द्वितीयोऽनुवाकः

शीक्षां व्याख्यास्यामः। वर्णः स्वरः। मात्रा बलम्। साम सन्तानः। इत्युक्तः शीक्षाध्यायः।

तृतीयोऽनुवाकः

सह नौ यशः सह नौ ब्रह्मवर्चसम्। अथातः सँ्हिताया उपनिषदं व्याख्यास्यामः। पञ्चस्वधिकरणेषु। अधिलोकमधिज्यौतिषमधिविद्यमधिप्रजमध्यात्मम्। ता महासँ्हिता इत्याचक्षते। अथाधिलोकम्। पृथिवी पूर्वरूपम्। द्यौरुत्तररूपम्। आकाशः सन्धिः। वायुः सन्धानम्। इत्यधिलोकम्॥1॥

अथाधिज्यौतिषम्। अग्निः पूर्वरूपम्। आदित्य उत्तररूपम्। आपः सन्धिः। वैद्युतः सन्धानम्। इत्यधिज्यौतिषम्॥2॥

अथाधिविद्यम्। आचार्यः पूर्वरूपम्। अन्तेवास्युत्तररूपम्। विद्या सन्धिः। प्रवचनँ् सन्धानम्। इत्यधिविद्यम्॥3॥

अथाधिप्रजम्। माता पूर्वरूपम्। पितोत्तररूपम्। प्रजा सन्धिः। प्रजननँ् सन्धानम्। इत्यधिप्रजम्॥4॥

अथाध्यात्मम्। अधरा हनुः पूर्वरूपम्। उत्तराहनुरुत्तररूपम्। वाक् सन्धिः। जिह्वा सन्धानम्। इत्यध्यात्मम्॥5॥

इतीमा महास्ँ हिता य एवमेता महास्ँ हिता व्याख्याता वेद। सन्धीयते प्रजया पशुभिः। ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन सुवर्गेण लोकेन॥6॥

चतुर्थोऽनुवाकः

यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपः। छन्दोभ्योऽध्यमृतात् सम्बभूव। स मेन्द्रो मेधया स्पृणोतु। अमृतस्य देव धारणो भूयासम्। शरीरं मे विचर्षणम्। जिह्वा मे मधुमत्तमा। कर्णाभ्यां भूरि विश्रुवम्। ब्रह्मणः कोशोऽसि मेधया पिहितः। श्रुतं मे गोपाय ॥1॥
आवहन्ती वितन्वाना कुर्वाणाचीरमात्मनः। वासाँसि मम गावश्च। अन्नपाने च सर्वदा। ततो मे श्रियमावह। लोमशां पशुभिः सह स्वाहा ॥2॥
आ मायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा। विमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा। प्रमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा। दमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा। शमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा॥3॥
यशो जनेऽसानि स्वाहा। श्रेयान् वस्यसोऽसानि स्वाहा। तं त्वा भग प्रविशानि स्वाहा। स मा भग प्रविश स्वाहा। तस्मिन् सहस्रशाखे नि भगाहं त्वयि मृजे स्वाहा ॥4॥
यथाऽऽपः प्रवता यन्ति यथा मासा अहर्जरम्। एवं मां ब्रह्मचारिणो धातरायन्तु सर्वतः स्वाहा। प्रतिवेशोऽसि प्र मा भाहि प्र मा पद्यस्व ॥5॥

पञ्चमोऽनुवाकः

भूर्भुवः सुवरिति वा एतास्तिस्रो व्याहृतयः। तासामु ह स्मैतां चतुर्थीं माहाचमस्यः प्रवेदयते। मह इति। तद्ब्रह्म। स आत्मा। अंगान्यन्या देवताः। भूरिति वा अयं लोकः। भुव इत्यन्तरिक्षम्। सुवरित्यसौ लोकः। मह इत्यादित्यः। आदित्येन वाव सर्वे लोका महीयन्ते ॥1॥
भूरिति वा अग्निः। भुव इति वायुः। सुवरित्यादित्यः। मह इति चन्द्रमाः। चन्द्रमसा वाव सर्वाणि ज्योतीँषि महीयन्ते। भूरिति वा ऋचः। भुव इति सामानि। सुवरिति यजूँषि। मह इति ब्रह्म। ब्रह्मणा वाव सर्वे वेदा महीयन्ते ॥2॥
भूरिति वै प्राणः। भुव इत्यपानः। सुवरिति व्यानः। मह इत्यन्नम्। अन्नेन वाव सर्वे प्राणा महीयन्ते। ता वा एताश्चतस्रश्चतुर्धा। चतस्रश्चतस्रो व्याहृतयः। ता यो वेद। स वेद ब्रह्म। सर्वेऽस्मै देवा बलिमावहन्ति ॥3॥

षष्ठोऽनुवाकः

स य एषोऽन्तर्हृदय आकाशः। तस्मिन्नयं पुरुषो मनोमयः। अमृतो हिरण्मयः॥1॥
अन्तरेण तालुके। य एष स्तन इवावलम्बते। सेन्द्रयोनिः। यत्रासौ केशान्तो विवर्तते। व्यपोह्य शीर्षकपाले। भूरित्यग्नौ प्रतिष्ठति। भुव इति वायौ। सुवरित्यादित्ये। मह इति ब्रह्मणि ॥2॥
आप्नोति स्वाराज्यम्। आप्नोति मनसस्पतिम्। वाक्पतिश्चक्षुष्पतिः। श्रोत्रपतिर्विज्ञानपतिः। एतत्ततो भवति ॥3॥

आकाशशरीरं ब्रह्म। सत्यात्म प्राणारामं मन आनन्दम्। शान्ति समृद्धममृतम्। इति प्राचीनयोग्योपास्स्व॥4॥

सप्तमोऽनुवाकः

पृथिव्यन्तरिक्षं द्यौर्दिशोऽवान्तरदिशः। अग्निर्वायुरादित्यश्चन्द्रमा नक्षत्राणि। आप ओषधयो वनस्पतय आकाश आत्मा। इत्यधिभूतम्। अथाध्यात्मम्। प्राणो व्यानोऽपान उदानः समानः। चक्षुः श्रोत्रं मनो वाक् त्वक्। चर्म माँ्सँ् स्नावास्थि मज्जा। एतदधिविधाय ऋषिरवोचत् । पांक्तं वा इदँ् सर्वम् । पांक्तेनैव पांक्तँ् स्पृणोतीति ॥1॥

अष्टमोऽनुवाकः

ओमिति ब्रह्म। ओमितीदँ् सर्वम्। ओमित्येतदनुकृतिर्ह स्म वा अप्यो श्रावयेत्याश्रावयन्ति। ओमिति सामानि गायन्ति। ओँ् शोमिति। शस्त्राणि शँ्सन्ति। ओमित्यध्वर्युः प्रतिगरं प्रतिगृणाति। ओमिति ब्रह्मा प्रसौति। ओमित्यग्निहोत्रमनुजानाति। ओमिति ब्राह्मणः प्रवक्ष्यन्नाह ब्रह्मोपाप्नवानीति। ब्रह्मैवोपाप्नोति॥1॥

नवमोऽनुवाकः

ऋतं च स्वाध्यायप्रवचने च। सत्यं च स्वाध्यायप्रवचने च। तपश्च स्वाध्यायप्रवचने च। दमश्च स्वाध्यायप्रवचने च। शमश्च स्वाध्यायप्रवचने च। अग्नयश्च स्वाध्यायप्रवचने च। अग्निहोत्रं च स्वाध्यायप्रवचने च। अतिथयश्च स्वाध्यायप्रवचने च। मानुषं च स्वाध्यायप्रवचने च। प्रजा च स्वाध्यायप्रवचने च। प्रजनश्च स्वाध्यायप्रवचने च। प्रजातिश्च स्वाध्यायप्रवचने च। सत्यमिति सत्यवचा राथीतरः। तप इति तपोनित्यः पौरुशिष्टिः। स्वाध्यायप्रवचने एवेति नाको मौद्गल्यः। तद्धि तपस्तद्धि तपः॥1॥

दशमोऽनुवाकः

अहं वृक्षस्य रेरिवा। कीर्तिः पृष्ठं गिरेरिव। ऊर्ध्वपवित्रो वाजिनीव स्वमृतमस्मि। द्रविणँ् सवर्चसम्। सुमेधा अमृतोक्षितः। इति त्रिशंकोर्वेदानुवचनम् ॥1॥

एकादशोऽनुवाकः

वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति। सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान् न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्॥1॥

मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि। तानि सेवितव्यानि। नो इतराणि। यान्यस्माकँ्सुचरितानि। तानि त्वयोपास्यानि। नो इतराणि। ये के चास्मच्छ्रेयाँ्सो ब्राह्मणाः। तेषां त्वयाऽऽसनेन प्रश्वसितव्यम्। श्रद्धया देयम्। अश्रद्धयाऽदेयम्। श्रिया देयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम् ॥2॥
अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात्। ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः। युक्ता आयुक्ताः। अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तत्र वर्तेरन्। तथा तत्र वर्तेथाः। अथाभ्याख्यातेषु। ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः। युक्ता आयुक्ताः। अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तेषु वर्तेरन्। तथा तेषु वर्तेथाः। एष आदेशः। एष उपदेशः। एषा वेदोपनिषत्। एतदनुशासनम्। एवमुपासितव्यम्। एवमुचैतदुपास्यम् ॥3॥

द्वादशोऽनुवाकः

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः। शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः। शं नो विष्णुरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मावादिषम्। ऋतमवादिषम्। सत्यमवादिषम्। तन्मामावीत्। तद्वक्तारमावीत्। आवीन्माम्। आवीद्वक्तारम्।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ब्रह्मानन्दवल्ली

शान्ति पाठ

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

प्रथमोऽनुवाकः

ब्रह्मविदाप्नोति परम्। तदेषाऽभ्युक्ता ॥1॥
सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म। यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन्। सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चितेति ॥2॥
तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः। आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथिवी। पृथिव्या ओषधयः। ओषधीभ्योऽन्नम्। अन्नात्पुरुषः। स वा एष पुरुषोऽन्नरसमयः। तस्येदमेव शिरः। अयं दक्षिणः पक्षः। अयमुत्तरः पक्षः। अयमात्मा। इदं पुच्छं प्रतिष्ठा। तदप्येष श्लोको भवति ॥3॥

द्वितीयोऽनुवाक:

अन्नाद्वै प्रजा: प्रजायन्ते। या: काश्च पृथिवीँ् श्रिता:। अथो अन्नेनैव जीवन्ति। अथैनदपि यन्त्यन्तत:। अन्नँ् हि भूतानां ज्येष्ठम्। तस्मात्सर्वौषधमुच्यते। सर्वं वै तेऽन्नमाप्नुवन्ति येऽन्नं ब्रह्मोपासते। अन्नँ् हि भूतानां ज्येष्ठम्। तस्मात्सर्वौषधमुच्यते। अन्नाद्भूतानि जायन्ते। जातान्यन्नेन वर्धन्ते। अद्यतेऽत्ति च भूतानि। तस्मादन्नं तदुच्यत इति ॥1॥

तस्माद्वा एतस्मादन्नरसमयादन्योऽन्तर आत्मा प्राणमय:। तेनैष पूर्ण:। स वा एष पुरुषविध एव। तस्य पुरुषविधतामन्वयं पुरुषविध:। तस्य प्राण एव शिर:। व्यानो दक्षिण: पक्ष:। अपान उत्तर: पक्ष:। आकाश आत्मा। पृथिवी पुच्छं प्रतिष्ठा। तदप्येष श्लोको भवति ॥2॥

तृतीयोऽनुवाक:

प्राणं देवा अनु प्राणन्ति। मनुष्या: पशवश्च ये। प्राणो हि भूतानामायु:। तस्मात्सर्वायुषमुच्यते। सर्वमेव त आयुर्यन्ति ये प्राणं ब्रह्मोपासते। प्राणो हि भूतानामायु:। तस्मात्सर्वायुषमुच्यत इति। तस्यैष एव शारीर आत्मा य: पूर्वस्य ॥1॥

तस्माद्वा एतस्मात्प्राणमयादन्योऽन्तर आत्मा मनोमय:। तेनैष पूर्ण:। स वा एष पुरुषविध एव। तस्य पुरुषविधतामन्वयं पुरुषविध:। तस्य यजुरेव शिर:। ऋग्दक्षिण: पक्ष:। सामोत्तर: पक्ष:। आदेश आत्मा। अथर्वांगिरस: पुच्छं प्रतिष्ठा। तदप्येष श्लोको भवति ॥2॥

चतुर्थोऽनुवाक:

यतो वाचो निवर्तन्ते। अप्राप्य मनसा सह। आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान्। न बिभेति कदाचनेति। तस्यैष एव शारीर आत्मा य: पूर्वस्य ॥1॥

तस्माद्वा एतस्मान्मनोमयादन्योऽन्तर आत्मा विज्ञानमयस्तेनैष पूर्ण:। स वा एष पुरुषविध एव। तस्य पुरुषविधतामन्वयं पुरुषविध:। तस्य श्रद्धैव शिर:। ऋतं दक्षिण: पक्ष:। सत्यमुत्तर: पक्ष:। योग आत्मा। मह: पुच्छं प्रतिष्ठा। तदप्येष श्लोको भवति ॥2॥

पञ्चमोऽनुवाक:

विज्ञानं यज्ञं तनुते। कर्माणि तनुतेऽपि च। विज्ञानं देवा: सर्वे। ब्रह्म ज्येष्ठमुपासते। विज्ञानं ब्रह्म चेद्वेद। तस्माच्चेन्न प्रमाद्यति। शरीरे पाप्मनो हित्वा। सर्वान्कामान्समश्नुत इति। तस्यैष एव शारीर आत्मा य: पूर्वस्य ॥1॥

तस्माद्वा एतस्माद्विज्ञानमयादन्योऽन्तर आत्माऽऽनन्दमय:। तेनैष पूर्ण:। स वा एष पुरुषविध एव। तस्य पुरुषविधतामन्वयं पुरुषविध:। तस्य प्रियमेव शिर:। मोदो दक्षिण: पक्ष:। प्रमोद उत्तर: पक्ष:। आनन्द आत्मा। ब्रह्म पुच्छं प्रतिष्ठा। तदप्येष श्लोको भवति ॥2॥

षष्ठोऽनुवाकः

असन्नेव स भवति। असद्ब्रह्मेति वेद चेत्। अस्ति ब्रह्मेति चेद्वेद। सन्तमेनं ततो विदुरिति ॥1॥ तस्यैष एव शारीर आत्मा यः पूर्वस्य ॥2॥ अथातोऽनुप्रश्नाः। उताविद्वानमुं लोकं प्रेत्य कश्चन गच्छतीऽऽऽ। आहो विद्वानमुं लोकं प्रेत्य कश्चित्समश्नुताऽऽऽ उ ॥3॥ सोऽकामयत। बहु स्यां प्रजायेयेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा इदँ सर्वमसृजत यदिदं किं च। तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्। तदनुप्रविश्य सच्च त्यच्चाभवत्। निरुक्तं चानिरुक्तं च। निलयनं चानिलयनं च। विज्ञानं चाविज्ञानं च। सत्यं चानृतं च सत्यमभवत्। यदिदं किं च। तत्सत्यमित्याचक्षते। तदप्येष श्लोको भवति ॥4॥

सप्तमोऽनुवाकः

असद्वा इदमग्र आसीत् ततो वै सदजायत। तदात्मानँ स्वयमकुरुत। तस्मात्तत्सुकृतमुच्यत इति ॥1॥ यद्वै तत्सुकृतं रसो वै सः। रसँ ह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति। को ह्येवान्यात्कः प्राण्याद् यदेष आकाश आनन्दो न स्यात्। एष ह्येवानन्दयाति ॥2॥

यदा ह्येवैष एतस्मिन्नदृश्येऽनात्म्येऽनिरुक्तेऽनिलयनेऽभयं प्रतिष्ठां विन्दते। अथ सोऽभयं गतो भवति ॥3॥ यदा ह्येवैष एतस्मिन्नुदरमन्तरं कुरुते। अथ तस्य भयं भवति। तत्त्वेव भयं विदुषो मन्वानस्य। तदप्येष श्लोको भवति ॥4॥

अष्टमोऽनुवाकः

भीषास्माद्वातः पवते। भीषोदेति सूर्यः। भीषास्मादग्निश्चेन्द्रश्च मृत्युर्धावति पञ्चम इति। सैषाऽऽनन्दस्य मीमाँसा भवति। युवा स्यात्साधुयुवाध्यायक आशिष्ठो द्रढिष्ठो बलिष्ठस्तस्येयं पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा स्यात्। स एको मानुष आनन्दः।
ते ये शतं मानुषा आनन्दाः। स एको मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दः। श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य।
ते ये शतं मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दाः। स एको देवगन्धर्वाणामानन्दः। श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य।
ते ये शतं देवगन्धर्वाणामानन्दाः। स एकः पितृणां चिरलोकलोकानामानन्दः। श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य।
ते ये शतं पितृणां चिरलोकलोकानामानन्दाः। स एक आजानजानां देवानामानन्दः। श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य।
ते ये शतमाजानजानां देवानामानन्दाः। स एकः कर्मदेवानां देवानामानन्दः। ये कर्मणा देवानपियन्ति। श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य।
ते ये शतं कर्मदेवानां देवानामानन्दाः। स एको देवानामानन्दः। श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य।
ते ये शतं देवानामानन्दाः। स एक इन्द्रस्यानन्दः। श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य।

ते ये शतमिन्द्रस्यानन्दा:। स एको बृहस्पतेरानन्द:। श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य।
ते ये शतं बृहस्पतेरानन्दा:। स एक: प्रजापतेरानन्द:। श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य।
ते ये शतं प्रजापतेरानन्दा:। स एको ब्रह्मण आनन्द:। श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य।
स यश्चायं पुरुषे यश्चासावादित्ये स एक:। स य एवंविदस्माल्लोकात्प्रेत्य। एतमन्नमय मात्मानमुपसंक्रामति। एतं प्राणमयमात्मानमुपसंक्रामति।
एतं मनोमयमात्मानमुपसंक्रामति। एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रामति।
एतमानन्दमयमात्मानमुपसंक्रामति। तदप्येष श्लोको भवति।

नवमोऽनुवाक:

यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह। आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चनेति॥1॥ एतँ् ह वाव न तपति। किमहँ् साधु नाकरवम्। किमहं पापमकरवमिति। स य एवं विद्वानेते आत्मानँ् स्पृणुते। उभे ह्येवैष एते आत्मानँ् स्पृणुते। य एवं वेद। इत्युपनिषत् ॥2॥

भृगुवल्ली

प्रथमोऽनुवाक:

भृगुर्वै वारुणि: वरुणं पितरमुपससार अधीहि भगवो ब्रह्मेति। तस्मा एतत्प्रोवाच। अन्नं प्राणं चक्षु: श्रोत्रं मनो वाचमिति। तँ् होवाच। यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति। यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति। तद्विजिज्ञासस्व। तद् ब्रह्मेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा।

द्वितीयोऽनुवाक:

अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्। अन्नाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। अन्नेन जातानि जीवन्ति। अन्नं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति। तद्विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार। अधीहि भगवो ब्रह्मेति। तँ् होवाच। तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व। तपो ब्रह्मेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा।

तृतीयोऽनुवाक:

प्राणो ब्रह्मेति व्यजानात्। प्राणद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। प्राणेन जातानि जीवन्ति। प्राणं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति। तद्विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार। अधीहि भगवो ब्रह्मेति। तँ् होवाच। तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व। तपो ब्रह्मेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा।

चतुर्थोऽनुवाक:

मनो ब्रह्मेति व्यजानात्। मनसो ह्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। मनसा जातानि जीवन्ति। मन: प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति। तद्विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार। अधीहि

भगवो ब्रह्मेति। त ँ होवाच। तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व। तपो ब्रह्मेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा।

पञ्चमोऽनुवाक:

विज्ञानं ब्रह्मेति व्यजानात्। विज्ञानाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। विज्ञानेन जातानि जीवन्ति। विज्ञानं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति। तद्विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार। अधीहि भगवो ब्रह्मेति। त ँ होवाच। तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व। तपो ब्रह्मेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा।

षष्ठोऽनुवाक:

आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्। आनन्दाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। आनन्देन जातानि जीवन्ति। आनन्दं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति। सैषा भार्गवी वारुणी विद्या परमे व्योमन् प्रतिष्ठिता। स य एवं वेद प्रतितिष्ठति। अन्नवानन्नादो भवति। महान् भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन। महान् कीर्त्या।

सप्तमोऽनुवाक:

अन्नं न निन्द्यात्। तद्व्रतम्। प्राणो वा अन्नम्। शरीरमन्नादम्। प्राणे शरीरं प्रतिष्ठितम्। शरीरे प्राण: प्रतिष्ठित:। तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम्। स य एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेद प्रतितिष्ठति। अन्नवानन्नादो भवति। महान् भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन। महान् कीर्त्या।

अष्टमोऽनुवाक:

अन्नं न परिचक्षीत। तद् व्रतम्। आपो वा अन्नम्। ज्योतिरन्नादम्। अप्सु ज्योति: प्रतिष्ठितम्। ज्योतिष्याप: प्रतिष्ठिता:। तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम्। स य एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेद प्रतितिष्ठति। अन्नवानन्नादो भवति। महान् भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन। महान् कीर्त्या।

नवमोऽनुवाक:

अन्नं बहु कुर्वीत। तद् व्रतम्। पृथिवी वा अन्नम्। आकाशोऽन्नाद:। पृथिव्यामाकाश: प्रतिष्ठित:। आकाशे पृथिवी प्रतिष्ठिता। तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम्। स य एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेद प्रतितिष्ठति। अन्नवानन्नादो भवति। महान् भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन। महान् कीर्त्या।

दशमोऽनुवाक:

न कंचन वसतौ प्रत्याचक्षीत। तद् व्रतम्। तस्माद्यया कया च विधया बह्वन्नं प्राप्नुयात्। आराध्यस्मा अन्नमित्याचक्षते। एतद्वै मुखतोऽन्न ँ राद्धम्। मुखतोऽस्मा अन्न ँ राध्यते। एतद्वै

मध्यतोऽन्न ँ्‌ राद्धम्। मध्यतोऽस्मा अन्न ँ्‌ राध्यते एतद्वा अन्ततोऽन्न ँ्‌ राद्धम्। अन्ततोऽस्मा अन्न ँ्‌ राध्यते। य एवं वेद ॥1॥

क्षेम इति वाचि। योगक्षेम इति प्राणापानयोः। कर्मेति हस्तयोः। गतिरिति पादयोः। विमुक्तिरिति पायौ। इति मानुषीः समाज्ञाः। अथ दैवीः। तृप्तिरिति वृष्टौ। बलमिति विद्युति। यश इति पशुषु। ज्योतिरिति नक्षत्रेषु। प्रजातिरमृतमानन्द इत्युपस्थे। सर्वमित्याकाशे ॥2॥

तत्प्रतिष्ठेत्युपासीत। प्रतिष्ठावान् भवति। तन्मह इत्युपासीत। महान् भवति। तन्मन इत्युपासीत। मानवान् भवति। तन्नम इत्युपासीत। नम्यन्तेऽस्मै कामाः। तद् ब्रह्मेत्युपासीत। ब्रह्मवान् भवति। तद् ब्रह्मणः परिमर इत्युपासीत। पर्येणं म्रियन्ते द्विषन्तः सपत्नाः। परियेऽप्रिया भ्रातृव्याः ॥3॥

स यश्चायं पुरुषे यश्चासावादित्ये स एकः। स य एवंवित्। अस्माल्लोकात्प्रेत्य। एतं अन्नमयमात्मानमुपसंक्रम्य। एतं प्राणमयमात्मानमुपसंक्रम्य। एतं मनोमयमात्मानमुपसंक्रम्य। एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रम्य। एतमानन्दमयमात्मानमुपसंक्रम्य। इमाँल्लोकान्कामान्नी कामरूप्यनुसंचरन्। एतत्साम गायन्नास्ते ॥4॥

हाऽऽऽवु हाऽऽऽवु हाऽऽऽवु। अहमन्नमहमन्नमहमन्नम्। अहमन्नादोऽऽ ऽहमन्नादोऽऽ ऽहमन्नादः। अह ँ्‌ श्लोककृदह ँ्‌ श्लोककृदह ँ्‌ श्लोककृत्। अहमस्मि प्रथमजा ऋताऽऽऽस्य। पूर्वं देवेभ्योऽमृतस्य नाऽऽऽभायि। यो मा ददाति स इदेव मा वाः। अहमन्नमन्नम-दन्तमाऽऽऽद्मि। अहं विश्वं भुवनमभ्यभवाम्। सुवर्ण ज्योतिः। य एवं वेद। इत्युपनिषत् ॥5॥

शान्ति पाठ

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः। शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः। शं नो विष्णुरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मावादिषम्। ऋतमवादिषम्। सत्यमवादिषम्। तन्मामावीत्। तद्वक्तारमावीत्। आवीन्माम्। आवीद्वक्तारम्।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ॥



इशु-नामावलिः

1. ॐ इशुवे नम:
2. ॐ येशवे नम:
3. ॐ पवित्र हृदयाय नम:
4. ॐ ईश्वर पुत्राय नम:
5. ॐ स्वर्गाधिपतये नम:
6. ॐ मैरी नन्दनाय नम:
7. ॐ मुक्ति दात्रे नम:
8. ॐ मेष पालकाय नम:
9. ॐ काष्ठकार सुताय नम:
10. ॐ व्याधि हराय नम:
11. ॐ जलपथ गामिने नम:
12. ॐ क्रूशारोहिताय नम:
13. ॐ पुनर्जीविताय नम:
14. ॐ इमानुएलाय नम:
15. ॐ राजाधिराजाय नम:
16. ॐ विनीत मित्राय नम:
17. ॐ मानव तनयाय नम:
18. ॐ पवित्रात्मने नम:
19. ॐ पूतात्मने नम:
20. ॐ प्रभु मेषशावकाय नम:
21. ॐ नादजाताय नम:
22. ॐ बेथ्लेहम् तारकाय नम:
23. ॐ निष्पाप गर्भागमनकारिणे नम:
24. ॐ विस्मय तारकाय नम:
25. ॐ दिव्य ज्योतये नम:
26. ॐ पथ प्रदर्शकालोकाय नम:
27. ॐ मानवोद्धारकाय नम:
28. ॐ नैज़रथवासिने नम:
29. ॐ आत्मन: निषादाय नम:
30. ॐ कुमारी पुत्राय नम:
31. ॐ कण्टक किरीटाय नम:
32. ॐ शिष्यानाम् प्रभवे नम:
33. ॐ सिद्धिकर्त्रे नम:
34. ॐ पुनर्जन्मने नम:
35. ॐ शाश्वत प्रेम्णे नम:
36. ॐ सुखदायानुरागाय नम:
37. ॐ आद्यन्ताय नम:
38. ॐ सुखदायकाय नम:
39. ॐ देवानुचराय नम:
40. ॐ सत्यात्मने नम:
41. ॐ सुचयनिताय नम:
42. ॐ करुणा सिन्धवे नम:
43. ॐ अनन्तालोकाय नम:
44. ॐ विशुद्धप्रेम्णे नम:
45. ॐ रुग्णानां भिषगाय नम:
46. ॐ देवदूताय नम:
47. ॐ सर्वेश्वराय नम:
48. ॐ करुणामयाय नम:
49. ॐ उद्धारकाय नम:
50. ॐ यशस्विने नम:
51. ॐ शान्त्या: राजसुताय नम:
52. ॐ दिव्य प्रभवे नम:
53. ॐ पवित्र शिशवे नम:
54. ॐ दिव्यार्भकाय नम:
55. ॐ देवदूताय नम:
56. ॐ ज्योति तारकाय नम:
57. ॐ निदेश-नक्षत्रजाताय नम:
58. ॐ विद्वज्जन संपूजिताय नम:
59. ॐ डेविड वंशजाय नम:
60. ॐ अब्राहम वंशजाय नम:



61. ॐ परमोच्च पुत्राय नम:
62. ॐ जगद्धिताय जन्मधारकाय अधिपाय नम:
63. ॐ मेषपाल प्रपूजिताय नम:
64. ॐ ज्योतिर्विदाम् वन्दिताय नम:
65. ॐ ईश-प्रिय पुत्राय नम:
66. ॐ विश्वकलुष विनाशिने नम:
67. ॐ नीर-सुराकर्त्रे नम:
68. ॐ पंगु शक्तिदात्रे नम:
69. ॐ अन्धजन-दृष्टि दात्रे नम:
70. ॐ लेज़रस पुनर्प्राण दात्रे नम:
71. ॐ कुष्ठ निवारकाय नम:
72. ॐ बधिर-श्रवण शक्तिकारिणे नम:
73. ॐ गैलिलीय सागर जलचारिणे नम:
74. ॐ शिष्यजन धीवरकारिणे नम:
75. ॐ दुष्कृतानाम् क्षमाकारिणे नम:
76. ॐ भग्न हृदयजनरंजनार्थ-संप्रेषिताय नम:
77. ॐ बन्दि-जनमोचनार्थ-संप्रेषिताय नम:
78. ॐ दुष्टजन विनाशकाय नम:
79. ॐ रुग्णजन-उद्धारकाय नम:
80. ॐ राक्षसजन विमोहिताय नम:
81. ॐ चत्वारिशंत् अहर्निशं निर्भुक्ताय नम:
82. ॐ स्तुति-मार्ग निदेशकाय नम:
83. ॐ सौहार्द्रय-प्रेम शिक्षकाय नम:
84. ॐ भक्तजनार्थ आत्मत्यागिने नम:
85. ॐ नीति कथा शिक्षकाय नम:
86. ॐ वस्त्रावेष्टित-भू-समाधिष्ठाय नम:
87. ॐ पुनरुत्थिताय नम:
88. ॐ शान्ति प्रदात्रे नम:
89. ॐ कषा-ताडिताय निर्वस्त्राय नम:
90. ॐ त्रिवार-भ्रंशिताय नम:
91. ॐ क्षमादात्रे नम:
92. ॐ क्रुशाकीलिताय नम:
93. ॐ जनहित-दु:खवरणाय नम:
94. ॐ पार्श्वे कुन्तप्रपीडिताय नम:
95. ॐ क्रुशारोपित प्राण-दण्डिताय नम:
96. ॐ कण्टक-किरीट मण्डिताय नम:
97. ॐ यहूदीजनाधिप अभिधान घोषिताय नम:
98. ॐ पौण्टीयस-पायलेटदण्डिताय नम:
99. ॐ साईमन-पीटर-विनिन्दिताय नम:
100. ॐ सर्वकाल मंगलकारिणे नम:
101. ॐ राजाधिराजाय क्रिष्टवे नम:

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:॥ हरि: ॐ॥

शान्ति-मंत्रम्

आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते ह नः। उशतीरिव मातरः। तस्मा अरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।

पृथिवी शान्ता साग्निना शान्ता सामे शान्ता शुचꣳ शमयतु। अन्तरिक्षꣳ शान्तं तद्वायुना शान्तं तन्मे शान्तꣳ शुचꣳ शमयतु। द्यौश्शान्ता सादित्येन शान्ता सा मे शान्ता शुचꣳ शमयतु।

पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिर्द्यौश्शान्ति-र्दिशश्शान्तिरवान्तर-दिशाश्शान्ति-रग्निश्शान्ति-र्वायुश्शान्ति-रादित्यश्शान्तिः चन्द्रमाः शान्ति-र्नक्षत्राणि-शान्ति-रापः शान्ति-रोषधयश्शान्ति-र्वनस्पतय-श्शान्ति-र्गौः शान्तिः अजाशान्ति-रश्वश्शान्तिः पुरुषश्शान्ति-र्ब्रह्म शान्ति-र्ब्राह्मणश्शान्तिः शान्तिरेव शान्तिश्शान्तिर्मे अस्तु शान्तिः।

तयाहꣳ शान्त्या सर्वशान्त्या मह्यं द्विपदे चतुष्पदे च शान्तिं करोमि शान्तिर्मे अस्तु शान्तिः॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ ॥



वैदिक शान्ति मंत्र

ॐ गणानां त्वा गणपतिँ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिस्सीद सादनम्। ॐ हंस हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि। तन्नो हंसः प्रचोदयात्। ॐ नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतये अम्बिकापतये उमापतये पशुपतये नमो नमः॥ ऋतँ सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिंगलम्। उर्ध्व रेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमः॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासम्प्रदायकर्तृभ्यो वंशऋषिभ्यो नमो गुरुभ्यः। नारायणं पद्मभवं वसिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च। व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्र-मथास्यशिष्यम्। श्री शंकराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यम्। तं त्रोटकं वार्तिककारमन्यान् अस्मत्गुरुन्सन्ततमानतोऽस्मि। श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम्। नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरम्। शंकरं शंकराचार्यं केशवं बादरायणम्। सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः। ईश्वरो गुरुरात्मेति मूर्त्तिभेदविभागिने। व्योमवद्व्याप्तदेहाय श्री दक्षिणामूर्त्तये नमः। यस्य देवे पराभक्तिः यथा देवे तथा गुरौ। तस्यैते कथिता ह्यर्था प्रकाशन्ते महात्मनः। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः। शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः। शं नो विष्णुरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु। तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपः। छन्दोभ्योऽध्यमृतात् सम्बभूव समेन्द्रो मेधया स्पृणोतु। अमृतस्य देवधारणो भूयासम्। शरीरं मे विचर्षणम्। जिह्वा मे मधुमत्तमा। कर्णाभ्यां भूरि विश्रुवम्। ब्रह्मणः कोशोऽसि मेधया पिहितः। श्रुतं मे गोपाय। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ अहं वृक्षस्य रेरिवा। कीर्तिः पृष्ठं गिरेरिव। ऊर्ध्वपवित्रो वाजिनीव स्वमृतमस्मि। द्रविणꣳ सवर्चसम्। सुमेधा अमृतोक्षितः। इतित्रिशंकोर्वेदानुवचनम्। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक् प्राणश्चक्षुः श्रोत्रमथो बलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि। सर्वं ब्रह्मौपनिषदं माहं ब्रह्म निराकुर्यां मा मा ब्रह्म निराकरोत्। अनिराकरणमस्त्वनिराकरणं मेऽस्तु। तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि सन्तु, ते मयि सन्तु। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ वाङ् मे मनसि प्रतिष्ठिता-मनो मे वाचि प्रतिष्ठितम्-आविरावीर्मएधि। वेदस्य म आणीस्थः श्रुतं मे मा प्रहासीः। अनेनाधीतेनाहोरात्रान्संदधाम्यृतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु अवतु मामवतु वक्तारमवतु वक्तारम्। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ भद्रं नो अभिवातय मनः। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः। भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ यो वै ब्रह्माणं विदधाति पूर्वम्। यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै। तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशम्। मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ तच्छंयोरावृणीमहे। गातुं यज्ञाय। गातुं यज्ञपतये। दैवी स्वस्तिरस्तु नः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदे। शं चतुष्पदे। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ हरिः ॐ ॥



शान्ति पाठ

असतो मा सद्‌गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माऽमृतं गमय।
सर्वेषां स्वस्तिर्भवतु।
सर्वेषां शान्तिर्भवतु।
सर्वेषां पूर्णं भवतु।
सर्वेषां मंगलं भवतु।
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

हरि ॐ तत्सत्





SATYANANDA YOGA
BIHAR YOGA

परमात्मा की स्तुति करने वाले मंत्र और गीत ही स्तोत्र कहलाते हैं। स्तोत्र आध्यात्मिक शिक्षाओं को मन्त्रों के स्पन्दन द्वारा संचारित करने के साधन हैं। मंत्र-द्रष्टा ऋषियों और सिद्धों की देन ये स्तोत्र चेतना की उच्च अवस्था के अनुभवों को उजागर करते हैं। श्रुति, स्मृति, पुराण और तंत्र शास्त्र के ग्रन्थों से उद्धृत ये स्तोत्र रूपी श्रद्धा-सुमन, दिव्य सत्ता के विभिन्न रूपों – गणेश, देवी, शिव, विष्णु, श्रीराम और श्रीकृष्ण के चरण कमलों में सादर समर्पित हैं।

ये स्तोत्र साधक के मन और चेतना को उन्नत तथा हृदय को नम्र और उदार बनाते हैं। इन स्तोत्रों का नियमित पाठ कर व्यक्ति दैवी शक्ति का अनुभव प्राप्त कर सकता है।



ISBN : 978-81-86336-36-6